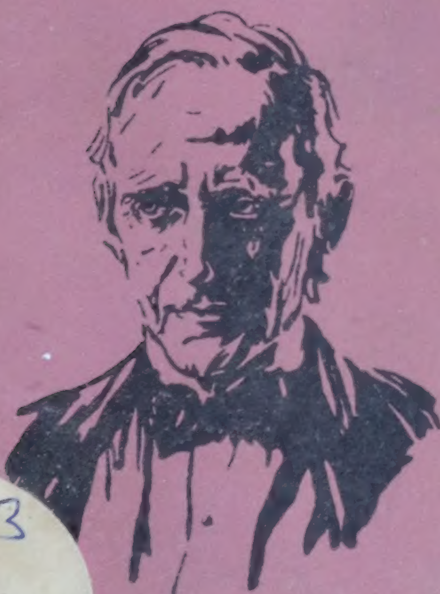
आर्थर ट्रेन

एक महान् वकील



आत्माराम एण्ड संस

टेप पढ़ने में व्यस्त थे।

मि० वेस्टबरी ने हँसते हुए उनका स्वागत किया। उन्हें मि० मक्फी जैसे सम्मानित ग्राहकों से अपनी घनिष्ठता दिखलाने में विशेष आनंद मिलता और उन्होंने परिहासपूर्वक कहा, "फरमाइए हुज़ूर ! क्या सुबह-सवेरे ही शहद के छत्ते की तलाश है?" मि० मक्फी के पतले होंठ ज़रा फड़के और मामूली-सी मुस्कराहट दिखाई दी।

"ऐसा नहीं है," मि० मक्फी ने उत्तर दिया, "शहद तो पहले ही मेरे पास है, अब तो सिर्फ उसकी क़ीमत अदा करनी है।"

उन्होंने जेब में हाथ डाला और नोट बाहर निकाल लिए।

"कल खरीदे हुए 'यूनियन पैसीफिक' के 200 शेयरों का हिसाब करना है। ये हैं साढ़े-चार प्रतिशत ब्याज वाले पच्चीस हज़ार डालर, लीजिए और रसीद दीजिए।" इतना कहकर उन्होंने नोटों में तर्जनी घुमाई और उन्हें दोबारा गिना।

"ये लीजिए पच्चीस हज़ार।" मि० मक्फी ने दोहराया।

मि० वेस्टबरी ने नोट लिए, उन्हें गिना और गर्दन हिलाई। उन्होंने कठहरे में बैठे हुए फर्म के खजांची को बुलाया। खजांची पीलिए का मरीज़ सा मालूम दे रहा था।

"प्रेसकोट, ये साढ़े-चार प्रतिशत ब्याज वाले पच्चीस हज़ार डालर के नोट ले लो और मिस्टर मक्फी को इनकी रसीद दे दो।"

"अच्छा साहब !" प्रेसकोट ने फुर्ती से जवाब दिया। मि० वेस्टबरी की उपस्थिति में ऐसा करना आवश्यक था, क्योंकि अपने कर्मचारियों के प्रति उनका व्यवहार बहुत कठोर था।

प्रेसकोट जल्दी से आगे बढ़ा। ग्राहक के ध्यान न देने पर भी विनम्रता से झुका और मालिक से नोट ले लिए। उसने नोटों को गिना और अपने कठहरे में वापस चला गया। दो-चार मिनट बाद ही वह लौट आया और उसने मि० मक्फी को रसीद सौंप दी।

"कुछ दिनों में ही शेयर सर्टिफिकेट आपके पास भेज दिए जाएँगे। इस दौरान में हम ये नोट बैंक में जमा करा देंगे और इस सिलसिले में होने वाला फायदा आपके नाम क्रेडिट कर देंगे।" मि० वेस्टबरी ने कहा।

"लेकिन इसका कोई कमीशन नहीं मिलेगा। यह शेयर बाजार का सौदा नहीं है।" मि० मक्फी ने चेतावनी दी।

"आप चिन्ता न करें, आपका हुक्म सिर-आँखों पर।" मि० वेस्टबरी ने हँसते हुए उनकी बात का समर्थन किया और उनके चले जाने पर अपने-आप कहा, "कंजूस, मक्खीचूस !"

प्रेसकोट अपने कठहरे में आ गया था, जहाँ दिन की रोशनी नहीं आ पाती थी। उसने फर्म के बहीखातों में इस सौदे का इन्दराज पूरा किया और नोटों में पिन लगाई। वह उठा और फिर कोट और हैट पहने। तब मि० वेस्टबरी को इन नोटों को बैंक में जमा करा आने की सूचना देकर, वह लिफ्ट से पहली मंज़िल तक आया। वह टेलीफोन-बूथ में गया और उसने अपनी पत्नी को टेलीफोन किया। उसे अपनी छोटी बेटी, जेनी, की बीमारी की फिक्र थी। आज सुबह, उसके दफ़्तर चले आने तक डॉक्टर नहीं आ सका था और वह अपनी पत्नी को अभी तक टेलीफोन भी नहीं कर सका था, क्योंकि उसे अपनी भावुकता के कारण यह बात पसन्द नहीं थी कि दफ़्तर के दूसरे क्लर्क उसके घर की बातें सुनें।

"मोली, तुम ही हो न। हाँ, मैं जिम बोल रहा हूँ। जेनी अब कैसी है ?"

"जिम, उसका टेम्प्रेचर एक सौ तीन डिग्री है। डॉक्टर कहता है शायद उसे फ्लू हो जाएगा। लेकिन यह वह दोपहर में देखने पर बताएगा। तुम यहाँ आ जाओ न, जिम !"

"बेचारी जेनी !" उसने कहा, "मेरा विश्वास है वह बिलकुल ठीक हो जाएगी। तुम इतनी चिन्ता मत करो। हमारी बेटी खूब पक्की है। हाँ, अभी आना मुश्किल है। अगर वेस्टबरी से इजाज़त माँगी तो वह नौकरी से ही निकाल देगा। अच्छा, मैं साढ़े बारह के आस-पास फिर टेलीफोन करूँगा। हाँ, ठीक है। अगर यहाँ से आँख बचाकर निकल सका, तो दोपहर में घर आऊँगा।"

पाँच मिनट में ही वह 'नोर्डिक ट्रस्ट भवन' पहुँच गया और संगमरमरी सीढ़ियाँ चढ़ने लगा। उसका मन नन्ही-मुन्नी बिटिया की करुण स्मृति से भरा हुआ था। वह 'ऋण-खिड़की' के सामने लगी हुई लाइन में शामिल हो

गया। वह अपनी पत्नी, मोली, के प्रति सहानुभूति अनुभव कर रहा था। मोली को ही परिवार की सारी मुसीबतों को उठाना पड़ता है। अब वह जेनी की तीमारदारी में लगी होगी। उसे वह लम्हा याद आया जब सुबह दफ़्तर आते समय वह जेनी से विदा ले रहा था। जैसे ही वह जेनी को प्यार करने के लिए उसके बिस्तरे पर झुका, जेनी के गालों पर लाली छा गई थी। फ्लू जैसी घातक बीमारी जो मनुष्य को मक्खियों की तरह मार डालती है, कुछ घण्टों में ही जेनी से चिमट जाएगी और उसके घर लौटने से पहले ही बेचारी इस दुनिया से कूच कर जाएगी। वह इन हृदय-विदारक विचारों में डूबा हुआ था। उसके माथे और आधे सिर के गंजे भाग में बचे हुए हल्के-हल्के बालों के बीच पसीने की बूँदें उभर आई थीं। क्लर्क की तीखी आवाज सुनकर वह चौंक पड़ा।

"आप होश में नहीं हैं क्या ? आखिर कुछ देने को है भी या नहीं।"

उसने देखा—वह खिड़की के सामने खड़ा था। क्लर्क के हाथों में कुछ नोट थे, जो कि जिम ने ही अनजाने सींखचों के बीच से आगे बढ़ा दिए थे।

"बात क्या है ?" उसने हकलाते हुए कहा।

"ये सिर्फ़ सोलह हज़ार हैं।" क्लर्क ने तड़ाक से उत्तर दिया, "पर्ची में लिखकर लाए हो पच्चीस हज़ार। लो, गिनो इन्हें। मैंने अभी तक इनकी पिन भी नहीं निकाली है।"

जिम प्रेसकोट के हाथ-पाँव फूल गए। वह नोटों की ओर हाथ तक न उठा सका। उसे वे नोट नज़र ही नहीं आ रहे थे। उसे अनुभव हुआ जैसे अकस्मात् उसका शरीर घुलता जा रहा था। गले में बिच्छू-बूटी की झाड़ियाँ उलझ गई थीं। पाँव लड़खड़ा रहे थे। उसने घबराकर खिड़की के सींखचे पकड़ लिए। आँखों के आगे तारे छिटकने लगे थे और उन काले-पीले धब्बों के बीच एक बड़ा-सा संगमरमरी घंटा, 'फॉक्स ट्रॉट' नामक अमरीकी नृत्य की मुद्रा में नाचता हुआ दिखाई दिया। ग्यारह बजकर पचास मिनट हुए थे। इस समय, शायद डॉक्टर जेनी को देखने के लिए घर पहुँच चुका होगा।

"अपने-आप इन्हें गिन लो और लाइन को आगे बढ़ने दो।"

वह काँप रहा था, फिर भी उसने अपने को नोट गिनने के लिए तैयार कर लिया। निस्सन्देह, केवल 16000 डालर के तीन नोट थे—दस हज़ार,

पाँच हज़ार और एक हज़ार वाले तीन नोट।

"क्या सोलह हज़ार नहीं हैं?" क्लर्क ने अबकी बार कुछ कम सख्ती से सवाल किया।

उसकी बात के समर्थन में जिम ने मुश्किल से ज़रा गर्दन हिलाई और लड़खड़ाता हुआ दीवार के पास बिछे हुए डेस्कों की ओर हट गया। उसके पास 9,000 डालर की कमी थी। कतार आगे बढ़ती गई।

क्लर्क ने नोटों के एक बंडल को गिनते हुए उसे पुकारकर कहा, "जल्दी जाओ, शायद बाकी नौ हज़ार तुम्हें अपने डेस्क पर ही मिल जाएँ।"

परन्तु जिम निश्चित रूप से जानता था कि बाकी नौ हज़ार डालर कहीं भी नहीं थे। वही तीन नोट मि० वेस्टबरी ने उसे दिए थे। गिनने में भूल हुई थी। लेकिन अब क्या किया जा सकता था क्योंकि वह अपनी कलम से 25,000 डालर की रसीद दे चुका था। उस पर कौन विश्वास करेगा। यदि ग़बन का इलज़ाम नहीं लगाया गया, तो भी इतनी बड़ी रकम गुम कर देने के लिए उसे ही जिम्मेदार ठहराया जाएगा। वह गले तक आई हुई उबकाई को संभालने का प्रयत्न करता रहा। उसने हाँफते हुए मुश्किल से साँस ली। वह मिट्टी में मिल गया था। उसने अपनी मृत्यु के वारंट पर स्वयं हस्ताक्षर किए थे और अब उन हस्ताक्षरों से मुकर जाना सम्भव न था। नोटों को वेस्टबरी ने भी गिना था। कहीं कोई ग़लती हो गई थी और इतनी बड़ी ग़लती को दूर करने के लिए समय की ज़रूरत थी। जैसे भी हो, उसे सोलह हज़ार की रकम को तो कम से कम नहीं गँवाना चाहिए। उसने मुट्ठी में भिंचे हुए नोटों को जल्दी से जेब में छिपा लिया। अब उसे कहाँ जाना होगा? दफ़्तर गया तो वहाँ वेस्टबरी गिरफ्तार कराए बिना नहीं मानेगा। वह इस दुनिया में सबसे ज़्यादा वेस्टबरी से डरता था। वह दफ़्तर नहीं जाएगा। तो क्या मि० मक्फी के पास जाए, शायद वे ही उसकी विपदा सुनकर कोई तरकीब बता दें। वह वेस्टबरी को यह बात नहीं बताएगा क्योंकि ऐसा करना उसकी दृष्टि में आत्महत्या करना ही था।

शायद वह अनजाने ही 9,000 डालर अपने कठहरे में न भूल आया हो—यह विचार डूबते हुए व्यक्ति के लिए तिनके का सहारा बन गया था। वह दबे-दबे क़दमों से अपने कठहरे में आया और उसने बेतहाशा तलाश शुरू

कर दी।

"क्या नोट बदलवा लिए ?" वेस्टबरी ने कठहरे के पास से जाते हुए पूछा।

"हाँ साहब, काम हो गया।" हताश जिम ने हकलाते हुए उत्तर दिया। हर हालत में उसे वह बात साइमन लेगरी[1] से छिपानी ही होगी।

लेकिन कठहरे में, डेस्क पर या इधर-उधर कहीं भी नोटों का नाम-निशान नहीं था। उसने हाथों और घुटनों के बल झुककर शिकारी कुत्ते के समान सारे कठहरे को छान मारा। एक-एक कोने को बारह-बीस बार ढूँढ़ा। उसकी विवशता ने उसे पागल बना दिया था। उसने दराजों को खींचा। उनमें भरी हुई वस्तुओं को नीचे गिरा दिया। बहीखातों, रजिस्टरों को हिलाया-डुलाया और इधर-उधर फेंक दिया। जहाँ-तहाँ बँधे हुए कागजों के पुलिन्दों को टटोला। लेकिन कुछ नहीं हुआ। नोट नहीं मिले। इस काम में मि० मक्फी ही उसकी मदद कर सकेंगे।

उसने घड़ी की ओर देखा। दोपहर के खाने का समय था। आज उसकी परेशानियों के अनुरूप ही उसकी भूख भी पूरे रंग में थी। ऐसी भूख उसे पूरे जीवन में आज पहली बार लगी थी। लेकिन अब भोजन के लिए फ़ुर्सत कहाँ ? उसे मि० मक्फी के पास पहुँचना चाहिए। उसने जल्दी से हैट उठाया और गली की ओर भाग चला। उसे याद आया कि वह मि० मक्फी का दफ़्तर नहीं जानता था। उसने टेलीफोन डाइरेक्टरी देखकर उनका पता मालूम कर लिया। परन्तु इसी बीच उसके मन में मोली और जेनी की याद छटपटाने लगी।

टेलीफोन पर उसकी पत्नी की घबराई हुई आवाज़ सुनाई दी, "डॉक्टर कहता है—जेनी को फ्लू है। अगर न्युमोनिया नहीं हुआ तो वह ठीक हो जाएगी। जिम, क्या तुम घर नहीं आ रहे हो ?"

"टैम्प्रेचर कितना है ?" उसने घुटती हुई वाणी में प्रश्न किया।

"एक सौ पाँच डिग्री।" पत्नी ने उत्तर दिया "तुम जल्दी आ जाओ,

---

1. 'साइमन लेगरी' : यह 'अंकिल टॉम्ज़ केबिन' नामक प्रसिद्ध उपन्यास का एक पात्र है। इसे अमेरिकी साहित्य और बोल-चाल में क्रूरता और कठोरता का प्रतीक मान लिया है।

जिम ! इस विपदा में मुझे अकेला मत छोड़ो।"

उसकी आँखों में दुनिया अँधेरी हो गई थी। वह राह टटोलता हुआ-सा चल रहा था। एक ही वक्त में बेटी, आबरू और आज़ादी छिन जाने के डर ने उसे आहत कर दिया था।

मि० मक्फी अपने दफ़्तर में नहीं थे। उसे बताया गया कि वे लंच क्लब में जा चुके थे। वह बीस मिनट के करीब प्रतीक्षा करता रहा, परन्तु मानसिक उत्तेजना के कारण पल-पल बोझल हो गया था। मि० मक्फी से मिलने वह तेज़ कदमों से लंच क्लब की ओर चल पड़ा और 'पाइन स्ट्रीट' में भद्रजनों के लिए बने हुए, धुँधली रोशनी वाले 'डाउन-टाउन एसोसिएशन भवन' में पहुँच गया। मि० मक्फी वहाँ मौजूद थे लेकिन मुलाकात मुश्किल थी क्योंकि वे तीसरी मंजिल पर अन्य दो सम्मानित व्यक्तियों के साथ लंच कर रहे थे।

प्रेसकोट ने दरबान से प्रार्थना की, "मेहरबानी करके उनसे कहिए मुझसे मिल लें।" जब वह दरबान से विनती कर रहा था तो इधर-उधर आने-जाने वाले लोग रुक-रुककर यह तमाशा देखते रहे। मि० मक्फी का उत्तर आने में काफी देर लगी। आखिरकार जवाब मिला—मि० मक्फी से मिलने के लिए उसे सबसे ऊपर की मंज़िल के हॉल में पहुँचना होगा।

"क्या बात है ?" प्रेसकोट को मि० मक्फी एक ऐसे एकांत भोजन-कक्ष में, जहाँ उस समय कोई नहीं था, ले गए और चिड़चिड़े स्वर में कहने लगे, "मैं ठीक तरह से भोजन भी नहीं कर सका। क्या तुम कुछ देर प्रतीक्षा नहीं कर सकते थे ?"

"मिस्टर मक्फी, क्या आज सुबह आपने सचमुच ही मिस्टर बेस्टबरी को पच्चीस हजार डालर दिए थे ?" उसने गिड़गिड़ाते हुए कहा।

मिस्टर मक्फी ऐसे उछले, जैसे उन्हें कोई भारी धक्का लगा था।

"क्या कहा ? बेशक पच्चीस हजार थे। मैंने स्वयं गिने थे। मिस्टर वेस्टबरी ने भी उन नोटों को गिना था। तुम्हारी दी हुई रसीद भी मेरे पास है। देखो, जाल डालने की कोशिश मत करो।"

"ऐसी बात नहीं है, मिस्टर मक्फी ! आज जब उन नोटों को लेकर मैं बैंक गया तो मालूम हुआ कि कुल सोलह हजार डालर थे। ज़रूर गिनने में मेरी ही ग़लती रही होगी।" जिम ने सफाई देते हुए कहा।

उसे झिड़कते हुए, मिस्टर मक्फी चीखकर बोले, "तो क्या मुझसे गिनने में ग़लती हुई? यह सब क्या बकवास है। तुम्हारे अपने हिसाब में कमी होगी, उसे पूरा करने के लिए तुम मेरी आँखों में धूल झोंकना चाहते हो। क्यों? बोलो! क्या मुझे अनाड़ी समझकर यहाँ आए हो? पुलिस में जाओ और ये झूठे किस्से सुनाओ।"

जिम अपमान की इस कड़वी घूँट को पी गया और आहत दृष्टि से एकटक देखते हुए कहने लगा, "लेकिन इतने ही नोट थे। जब आप···"

मिस्टर मक्फी ने उसकी बात काट दी और चीख़ उठे, "सुनो, मैं तुम्हारी बात नहीं मान सकता। तुम उस फर्म के मुनीम हो। मैं कैसे मान लूँ कि मेरे हिसाब में सोलह हज़ार जुड़ेंगे जबकि मेरे पास पच्चीस हज़ार की रसीद मौज़ूद है। तुमने क्या मुझे बेवकूफ़ समझा है? यह तमाशा करने के लिए क्या वेस्टबरी ने तुम्हें यहाँ भेजा है?"

"नहीं, अभी तक मिस्टर वेस्टबरी को यह बात मालूम ही नहीं है।" जिम ने धीमे से उत्तर दिया।

"तुमने क्यों नहीं बताया?"

"बताने से भी क्या होता? मिस्टर वेस्टबरी ने भी वे नोट गिने थे। मेरी लिखी हुई रसीद आपके पास है। अगर आप ही मेरी मदद नहीं कर सकते तो वे क्या करेंगे?"

"तो ठीक है, अभी उन्हें भी मालूम हो जाएगा।" मिस्टर मक्फी ने कमरे में टेलीफोन ढूँढ़ना शुरू कर दिया, "नौ हज़ार डालर कहाँ ग़ायब हुए हैं? इस राज़ को एक ही आदमी जानता है और वह हो तुम। अगर आज तीन बजे तक पूरे पच्चीस हज़ार डालर मुझे नहीं मिले तो मैं तुम्हारी गिरफ्तारी के वारंट ज़ारी करवा दूँगा। तुम्हारी ख़ैर इसी बात में है कि दो घण्टे में सब ठीक-ठाक कर लो।"

निस्सहाय जिम प्रेसकोट को सेफास मक्फी के चेहरे की कठोर रेखाओं में जेल का बंद दरवाज़ा दिखाई दे रहा था।

"मेरी बात को सच मनाना, समझे।" मक्फी ने धमकी दी।

एक हाथ से दीवार का सहारा लेकर जिम सीढ़ियाँ उतरने लगा।

बात हाथ से निकल चुकी थी। डूबते हुए जिम को कहीं कोई भी

क़िनारा दिखाई नहीं दे रहा था। सारी गलती उसकी अपनी थी। सब कहेंगे कि उसने दफ़्तर और बैंक के बीच 9,000 डालर चुरा लिए और उसके बाद चोरी पर पर्दा डालने के लिए झूठे और बेकार बहाने बनाता रहा। कितना बेकार बहाना था कि किसी को भी विश्वास नहीं दिलाया जा सकता था।

यदि वह दफ़्तर जाएगा तो वेस्टबरी आड़े हाथों लेगा, डाँटेगा और बेइज़्ज़ती करेगा। वहाँ जाते ही उसे 'टूम्ज़' जेल में भिजवा दिया जाएगा। दफ्तर जाने के बजाए अगर वह सीधा घर चला जाए, तो कम-से-कम एक घण्टा तो मोली और जेनी के साथ रह सकेगा। घर पहुँच जाने की सूचना वह टेलीफोन से दफ़्तर भेज देगा। वह बिलकुल भूल गया था कि दफ़्तर के 16,000 डालर उसकी जेब में थे। क्लब से बाहर निकलते ही वह घर की ओर दौड़ने लगा।

o o o

मि० टट ने अपने सहयोगी से कहा, "टट, उस भिखारी के मुकदमे में जो कुछ हुआ, उसके बाद से मैं बेन जोनसन के इस कथन कि 'शैतान एक गधा है' की व्याख्या इस तरह करना चाहता हूँ कि दरअसल 'क़ानून एक गधा है'।"

"यदि आपके इस कथन को मान लिया जाए, तो हम वकीलों का हाल क्या होगा?" टट ने सन्देह प्रकट करते हुए कहा, "फिर भी अक्सर मुख़्तार लोग ऐसे ही होते हैं।"

"मैं तो यूँ ही मज़ाक कर रहा था।" बड़े सहयोगी ने, प्रतिदिन ग्यारह बजे पिए जाने वाले जौ के अर्क के गिलास से एक घूँट लेते हुए, आगे कहा, "फिर भी यह तो मानना ही होगा कि क़ानून का वर्तमान ढाँचा पुराना और लचर हो चुका है और इसकी वजह है कि कानून का मूलाधार ही गलत है।"

"आप मूल आधार किसे मानते हैं?" छोटे सहयोगी ने प्रश्न किया।

"मेरी राय में यह आधारभूत विचार ही गलत है कि तथाकथित समष्टिगत सिद्धांतों के आधार पर 'एक' व्यक्ति के मुकदमे को जाँचा जा सकता है और निर्णय दिया जा सकता है।" मि० टट ने उत्तर देते हुए

कहा, "आप तो जानते ही हैं कि आज तक इन सामान्य सिद्धांतों के आधार पर क्या किसी भी एक व्यक्ति के बारे में न्यायसंगत निर्णय प्राप्त किया जा सका है। आखिर सोचिए, एक ग्रुप-फोटो को एक व्यक्ति का फोटो कैसे समझा जा सकता है !"

"आप ठीक कहते हैं", टट ने बात मानते हुए कहा, "क़ानून तो ऐसी सीधी लकीर खींचना चाहता है जिससे लकीर के एक ओर होने पर सब कुछ ठीक मान लिया जाए और दूसरी ओर सब कुछ ग़लत। लेकिन मेरी राय में होना कुछ ऐसा चाहिए कि वह लकीर इधर-उधर हिल सके, कुछ मुड़ सके, कुछ छूट दे सके।"

मि० टट ने व्यग्रता से तुरंत उत्तर दिया, "आप क्या यह कहना चाहते हैं कि कोई लकीर ही नहीं होनी चाहिए, अर्थात् कोई मामला न एकदम ठीक माना जाए, न ग़लत, न अनुचित और न उचित, न अवैध और न वैध ! और यह सब उसी तरह स्वीकार कर लिया जाए जिस तरह हम मान लेते हैं कि मनुष्य न तो पूर्ण रूप से अच्छा हो सकता है, न बुरा। लेकिन हमारे देश में तो दण्ड मिलने से पहले अपराधी को कोई छूट नहीं मिलती है। यहाँ तो फ्रांस के क़ानून की तरह अपराध को परिस्थितियों की 'सापेक्षता' में कम मान लेने की प्रथा भी तो प्रचलित नहीं है।"

"बेशक आप बजा फरमाते हैं," टट ने लम्बा और सस्ता सिगार सुलगाते हुए आगे कहा, "मेरी राय में तो हर्जाना दिलवाने का विचार ही बेहूदा है। ज़रा सोचिए—जूरी फैसला देती है कि मूर्ख मोटर वाले को पाँच-छः सौ डालर जुर्माना देना होगा, लेकिन क्या इस तरह उस माँ की क्षति-पूर्ति हो जाएगी, जिसका बेटा मोटर के नीचे कुचला जा चुका है ?"

"सोचने की बात है कि जब एक व्यक्ति कुछ क़ानूनी परिभाषाओं के चंगुल में फँस जाता है, तो उसे अपराधी मान लिया जाता है और दूसरी ओर एक ऐसा व्यक्ति, जो उससे दस-गुना बुरा होने के बावजूद भी क़ानून की पकड़ में आने से साफ बचा रहता है—" मि० टट ने दीवानी क़ानून के हर्जानों के सिद्धांत की अवहेलना करते हुए, अपने प्रिय विषय—दण्ड-विधान—की ओर बातचीत का रुख मोड़ देने के लिए आगे कहा, "यह पहले नम्बर की बेहूदगी है जैसा कि एक प्राचीन विचारक ने भी कहा था कि वे

क़ायदे-क़ानून जो एक व्यक्ति को चीथड़े और दूसरे को बग्गी देते हैं, साफ़ तौर से बनावटी हैं और इनके आधार पर रत्ती भर भी यह साबित नहीं किया जा सकता कि कौन अच्छा इन्सान है ?"

आपकी बात बिलकुल ठीक है," छोटे सहयोगी ने सहमति प्रकट की, "जब-जब इन क़ानून-क़ायदों के बारे में सोचा जाता है, तो इनमें पहले दरज़े की बेवकूफी भरी हुई नज़र आती है। ज़रा विचार कीजिए, एक अन्धे व्यक्ति को पहाड़ की चोटी से धक्का देना अपराध है, लेकिन उसे चोटी की ओर बढ़ते हुए देखकर भी न रोकना कोई अपराध नहीं है। जबकि आप अच्छी तरह जानते हैं कि ज़रा हाथ बढ़ाकर उसे रोक देंगे, तो उसकी जान बच जाएगी।"

"सदाचार की अवहेलना करना प्रायः अपराध नहीं माना जाता।" बड़े सहयोगी ने अपना मत प्रकट किया, "आप बेशक अपने पड़ोसी के बच्चे को गाड़ी के नीचे कुचल जाने दीजिए, जबकि आप उसे बड़ी आसानी से बचा भी सकते थे, तो भी आपको दुनिया का कोई क़ानून हत्यारा नहीं कह सकेगा।"

"अगर आप चाहें, तो बशौक़ अपनी सास को, डॉक्टर दर्शन कराए बिना ही, घुट-घुटकर मर जाने दीजिए और आपको कोई अपराधी नहीं कह सकेगा।" टट ने ठहाका लगाया।

"आपने ठीक फरमाया है," मि० टट ने गर्दन हिलाते हुए कहा, "आप किसी स्त्री के विरुद्ध, उसे बदनाम करने के लिए, यदि दोषारोपण एक कागज पर लिखकर करते हैं और वह कागज़ किसी अन्य व्यक्ति को दे देते हैं, तो अपराधी हैं। लेकिन अगर भरी सभा में, ज़ुबानी उसकी सारी इज़्ज़त मिट्टी में मिला देते हैं, तो भी आपका कुछ नहीं बिगड़ेगा। कम से कम न्यूयार्क राज्य में तो ऐसा करना अपराध नहीं है।"

टट ने बात आगे बढ़ाते हुए कहा, "एक दुकान से एक केला चुरा लेना जुर्म है, लेकिन अगर आप एक व्यक्ति से दस हज़ार डालर इस नीयत से उधार लेते हैं कि वह रकम कभी वापस नहीं करेंगे, फिर भी आप अपराधी नहीं कहलाएँगे।"

"यह सम्भव है कि आप दुनियाभर के धोखेबाज़ होने पर भी, कभी जेल के दर्शन न कर पाएँ," मि० टट ने बात मानते हुए कहा, "यूं साफ

झूठ बोलना कोई ग्रपराध नहीं है, लेकिन किसी कानूनी कार्रवाई या किसी 'भौतिक' मामले के सम्बन्ध में, कसम उठाकर मामूली झूठ बोलना ग्रपराध माना जाता है। लेकिन सबसे मुश्किल बात तो यह है कि सारी दुनिया में निश्चित रूप से कोई भी यह नहीं जानता है कि क्या भौतिक है ग्रौर क्या नहीं ?"

"हाँ," टट ने ग्रधीरतापूर्वक ग्रागे कहा, "ग्रगर ग्राप दिन के वक्त किसी ग्रादमी की सेफ से चार-सौ निन्नानवें डालर चुरा लेते हैं तो यह दूसरी डिग्री की बड़ी चोरी गिनी जाएगी ग्रौर ग्रापको सिर्फ पाँच साल की क़ैद होगी, लेकिन ग्रगर उसी ग्रादमी की जेब से एक मामूली-सा रूमाल, दिन डूब ग्राने के बाद छीन लेते हैं तो यह पहली डिग्री की चोरी होगी ग्रौर ग्रापको ग्राराम से दस साल जेल की हवा खानी होगी।"

"ग्रौर ग्रगर," बड़े सहयोगी ने ग्रपनी राय देते हुए कहा, "ग्राप एक ग्रादमी की मेज़ के दराज़ से पच्चीस डालर निकालते हैं तो यह छोटी चोरी मानी जाएगी ग्रौर ग्राप को सिर्फ एक साल की क़ैद होगी।"

"यदि कोई ग्रादमी ग्राप से राह चलते टकरा जाता है ग्रौर ग्रापकी छड़ी पकड़ लेता है ग्रौर उसके साथ उसका एक साथी भी है तो वह व्यक्ति दिन-दहाड़े लूट मचाने—डकैती—का ग्रपराध करता है ग्रौर उसे पूरे बीस साल की क़ैद कराई जा सकती है।" टट ने बड़बड़ाते हुए कहा।

"लेकिन वही व्यक्ति ग्रापको बदनाम करने के लिए, ग्रापके खिलाफ बदचलनी के गंदे से गंदे दोष लगाता है, उन्हें छपवाता है, प्रचार करता है ग्रौर नतीजा यह होता है कि ग्रापकी सारी इज्ज़त खाक में मिल जाती है। इतना सब हो जाने पर भी, उसका ग्रपराध, क़ानूनी तौर पर, एक मामूली-सा ग्रपराध माना जाएगा।"

"मिस्टर टट, इस तरह तो हम दिन-भर ही क़ानून का कचूमर निकालते रहेंगे," टट ने कहा, "लेकिन ज़रा सोचिए तो सही, यही क़ानून ही तो हमारी रोज़ी है, इसलिए ग्रच्छा तो यही होगा कि फिल्हाल हम क़ानून को मुग्राफ कर दें···"

मिस्टर टट ज़रा मायूसी से मुस्करा दिए।

"मैं तो कई बार महसूस करता हूँ कि क़ानून जैसे भद्दे ग्रौर कुंद

औज़ार को हमेशा के लिए फेंक देना ही अच्छा रहेगा। क़ायदे-क़ानून की बारीकियाँ असंगत और बेतुकी तो हैं ही, इसके अतिरिक्त यह सवाल भी उठता है कि क़ानून कैसे मनुष्य की बुद्धि की सूक्ष्म और जटिल प्रक्रियाओं की व्याख्या करने का दावा करता है अथवा कैसे निर्दोषता और नैतिक अपराध के बीच के बारीक और सूक्ष्मतम भेद-विभेद का निरीक्षण कर सकता है? 'जूरी' के लिए यह निर्णय करना क्या सम्भव है कि एक स्त्री और एक पुरुष अथवा दो पुरुषों और दो स्त्रियों के बीच कौन दोषी है? फिर भी मुकदमे का फैसला हो जाने पर एक पक्ष को तो जेल जाना होता है अथवा हर्ज़ाना भरना होता है और इस पर भी क़ानूनदाँ यह समझकर खुश हो लेते हैं कि इस तरह किसी एक का दिल खुश हो जाएगा अथवा दूसरे को तमाचा लगेगा और आगे के लिए आँखें खुल जाएँगी।"

अब ज़रा जूरी के सदस्यों की ओर भी ध्यान दीजिए। आपको विश्वास ही नहीं हो पाएगा कि ऐसे भी इन्सान होते हैं—अज्ञानी! मूर्ख!! पक्षपाती!!! लेकिन मान लीजिए, यदि वे बुद्धिमान भी होते, तो क्या तब भी, केवल गवाहों की झूठी-सच्ची बातें सुन लेने मात्र से उन्हें 'सत्य' का ज्ञान हो जाता!"

"ऐसा होना असम्भव है।" बड़े सहयोगी ने सहसा कहा।

"यही बात है," टट ने बात मानते हुए कहा, "जूरी यूँ कैसे फैसला कर सकती है। मुझे इस समस्या को सुलझाना ही सबसे मुश्किल नजर आता है, क्योंकि संसार के गवाहों की 'सत्यता' को परखने का कोई भी अचूक तरीका उपलब्ध नहीं है।"

"अक्सर तो गवाह सच ही नहीं बोलते!" मिस्टर टट ने शिकायत की।

"मुझे तो मुकदमों के बारे में बहुत सारी सच्ची बातें, फैसला हो जाने पर ही मालूम हो पाती हैं। यह भी तरीका है क़ानून का! मिस्टर टट, यह तो देखे ही बनता है। मुकदमों के फैसले सच्चाई जाने बिना ही होते रहते हैं और गवाह झूठे बयान देते रहते हैं।" टट ने दुःखी स्वर में कहा।

"या अपने आप को धोखा देते हैं।"

"या दोनों ही बातें होती हैं। आपने शायद इस बात पर ज़रूर ग़ौर

किया होगा कि औरतें गवाही देते वक्त वही बातें कहती हैं जो असल में उनके विचारानुसार इस दुनिया में होनी चाहिएँ।" टट ने आगे कहा।

"जबकि ऐसा होना असम्भव है," मिस्टर टट ने बात को आगे बढ़ाते हुए कहा, "पहली बात तो यह है कि इन्सान जो कुछ सोचता है और जो वह देखता है। दोनों बातों का रूप अलग-अलग होता है। दूसरी बात यह है कि पहले देखी हुई किसी घटना को ठीक तरह याद भी कर लिया जाए, तो भी उस घटना को पूर्ण रूप में दूसरों के सामने बता सकना तो एकदम नामुमकिन है।"

"आप ठीक फरमा रहे हैं, मिस्टर टट।" टट ने जोश के साथ कहा, "इसीलिए तो सब यह बात मानते हैं कि एक पक्का धूर्त अथवा महामूर्ख गवाह उतना खतरनाक सिद्ध नहीं हो पाता है जितना कि एक अच्छी धारणा वाला ऐसा गवाह जो पूरी ईमानदारी से अपनी गलत बात की रट लगाए रहता है।"

"ऐसे ही ईमानदार लोगों की करामात से कई बार सर्वथा निर्दोष व्यक्तियों को जेल की हवा खानी पड़ती है।" मिस्टर टट ने राय देते हुए कहा।

"मिस्टर टट, आप ईमानदारी से एक बात बताएँगे! क्या आज तक अदालतों में कभी कोई बिल्कुल सच्ची गवाही दी गई है?" टट ने प्रश्न किया।

"एक भी नहीं।" मि० टट ने विश्वासपूर्वक कहा।

o o o

"मिस्टर टट! क्या आप एक फौज़दारी मामले में न्याय की रक्षा करेंगे? लेकिन वहाँ धन-लाभ होने की कोई आशा नहीं है।" मिस विगिन ने लंच के बाद अपने मालिक से पूछा, जबकि वे कमरे के सामने से गुज़र रहे थे। मि० टट दरवाज़े के दस्ते पर हाथ रखकर रुक गए।

"क्यों नहीं? न्याय की रक्षा करना ही 'टट एण्ड टट' कम्पनी का उद्देश्य है," मि० टट ने प्रसन्नतापूर्वक कहा, "लेकिन आप किस आधार पर कहती हैं कि वहाँ अन्याय हो रहा है?"

"मैं उस आदमी को, उसके परिवार को जानती हूँ और इसी वजह से

में इतनी चिंतित हूँ। मि० टट, वह परिवार वहीं रहता है, जहाँ मैं रहती हूँ।"

"क्या जुर्म लगाया गया है उस पर ?"

"उसने अमरीकी सरकार के $4\frac{1}{2}$ प्रतिशत वाले नौ हज़ार डालर के नोट चुराए हैं।"

"इतना धन होते हुए भी वह मेरी फीस नहीं दे सकता ! इसका तो यह साफ मतलब है कि उसने वह धन चुराया ही नहीं है", मि० टट ने कहा, "अब वह व्यक्ति कहाँ है ?"

"'ट्रम्ज़' जेल में", मिस विगिन ने उत्तर दिया, "उसे कल शाम को 4 बजे पकड़ा गया। वह बेचारा अपनी बीमार बच्ची को देखने के लिए घर आया था, क्योंकि उस नन्ही-मुन्नी प्यारी बच्ची को न्युमोनिया हो जाने का डर था, मि० टट, सच मानिए, वह बहुत ही प्यारी बच्ची है।"

बृद्ध वकील के मुख पर तत्काल सौम्यता खिल उठी।

"उसकी एक छोटी लड़की भी है ? कितनी बड़ी है वह लड़की ?"

"सिर्फ़ तीन साल की—सुन्दर सुनहले घुँघराले बालों वाली गुड़िया-सी ! मि० टट, क्या आप उस व्यक्ति को नहीं बचाएँगे ?"

"बचाना ! अरे, आप चिन्ता क्यों करती हैं ? मैं उसे ज़रूर बचाऊँगा," मि० टट ने कहा, "अब कैसी है वह बच्ची ?"

"सचमुच बहुत बीमार है," मिस विगिन ने उत्तर दिया, "जब उसे पकड़कर ले जा रहे थे तो वह पागलों की तरह चीख़ रहा था। सबसे बड़ी मुसीबत तो यह है, मि० टट, कि उसकी पत्नी बिलकुल अकेली है बेचारी। वह अपने पति की कोई भी सहायता करने में बिलकुल असमर्थ है।"

"उसका मुकदमा अदालत में कब पेश होगा ?"

"कल सुबह दस बजे।"

इतना सुनकर मि० टट सहसा उछल पड़े।

"आप अपना हैट लीजिए और जल्दी से मेरे साथ चलिए।" मि०टट ने सादगी से कहा।

"क्या आप मुझे 'ट्रम्ज़' जेल तक ले जाना चाहते हैं ? मुझे अभी यहाँ बहुत काम करना है, मि० टट !" मिस विगिन ने कहा।

"मैं जेल तो ठीक वक्त पर पहुँच ही जाऊँगा, लेकिन मैं चाहता था कि ग्राप उस प्यारी बच्ची से मेरा परिचय करा देतीं, तो···"

o o o

मि० टट पाँच बजे के बाद ग्रकेले ही ग्रपने दफ़्तर पहुँचे। उनकी इच्छा-नुसार ही मिस विगिन उस परिवार में रुक गई थीं, ताकि मिसेज प्रेसकोट को दिलासा देने के लिए कोई वहाँ मौजूद रहे। उनके वहाँ से ग्रा जाने के कुछ देर बाद ही, एक प्रशिक्षित नर्स वहाँ पहुँच गई थी ग्रौर फिर मि० टट का ग्रपना डॉक्टर भी वहाँ जा पहुँचा था ग्रौर बीमार बच्ची की सेवा-सुश्रूषा ग्रारम्भ हो गई थी।

यदि एक ग्रोर 'टट एंड टट' कम्पनी का महिला-वर्ग ग्रभावग्रस्त ग्रौर दुःखी परिवार की सहायता ग्रौर बीमार बच्ची की देख-भाल करने में लगा हुग्रा था, तो दूसरी ग्रोर वयोवृद्ध वकील, मि० टट, 'सफाई की कार्यवाही' में व्यस्त थे। प्रेसकोट से दस मिनट की बात-चीत में ही उन्हें विश्वास हो गया था कि वह व्यक्ति निर्दोष था। लेकिन साथ ही ग्रभियोग की सुदृढ़ता का भी पूरा ग्रन्दाज़ा हो गया था। उन्हें साफ नज़र ग्रा रहा था कि ग्रपराधी बच नहीं पाएगा, क्योंकि उसके विरुद्ध ग्रपराध-सिद्धि की जंजीर की प्रत्येक कड़ी मौजूद थी।

ग्रपराधी के विरुद्ध एक मशहूर व्यापारी ने 9,000 डालर के नोट चुराने का ग्रभियोग लगाया था ग्रौर वारंट जारी करवाया था। यदि सेफास मक्फी की बात सही न होती तो उसे क्या ज़रूरत पड़ी थी कि वह एक ग्रनजान व्यक्ति के ख़िलाफ कार्रवाई करता। सेफास मक्फी ने नोट गिने थे, वेस्टवरी ने नोट गिने थे, ग्रौर फिर प्रेसकोट ने भी नोट गिनकर ही रसीद बनाई थी। इतना ही नहीं, उसने ग्रपने मालिक से भी झूठी बात कही थी कि वह नोट बैंक में जमा करा ग्राया था। फिर बिना कोई बात बताए ही, वह दफ़्तर छोड़कर ग्रपने घर ग्रा गया था, जहाँ कुछ देर बाद पकड़े जाने पर उसकी जेब से 16,000 डालर के नोट निकले थे ग्रौर बाकी 9000 हज़ार डालर गायब थे। सारे हालात प्रेसकोट के ख़िलाफ़ थे ग्रौर इस मामले के सम्बन्ध में वृद्ध 'कैप' फेलन द्वारा ग्रपना मत इस प्रकार प्रकट किया जाता—"खुलते ही, बन्द हो जाने वाला, बेजान मुकदमा!"

ऐसी परिस्थितियों में भी मि० टट का पूर्ण विश्वास था कि प्रेसकोट एक निर्दोष व्यक्ति था और इस विश्वास का एकमात्र कारण था कि वे व्यक्ति की ईमानदारी में पूरा यकीन रखते थे। उनके इस विश्वास को छिन्न-भिन्न करने के लिए चाहे कितने ही तर्क-वितर्क, गवाहियाँ वगैरह क्यों न आ जाएँ, उनका सुदृढ़ विश्वास टूट नहीं पाएगा और वे विजयी होकर ही मानेंगे, बिलकुल एक ऐसे सेनापति की तरह जो अच्छी तरह जानता है कि दुश्मन की ताकत बहुत ज़्यादा होते हुए भी आखिर जीत उसकी ही होगी। ऐसे सेनापति के समान ही मि० टट इस बारे में भी पूर्णरूप से सचेत थे कि दुश्मन का आक्रमण होने से पहले उन्हें 'प्रतिरक्षा' की पूरी तैयारी करनी होगी। अतः वे उस तैयारी में जुट गए थे। उन्होंने अपने दफ़्तर के स्टाफ को झटपट आगामी युद्ध के लिए तैयार रहने का आदेश दे दिया था। वे जानते थे कि प्रेसकोट के एक नवजात शिशु के समान निर्दोष होने के बावजूद उन्हें उसकी निर्दोषता प्रमाणित करनी होगी।

ऐसा कैसे किया जाए? यही मि० टट की समस्या थी और उस अनुभवी वकील ने तत्काल प्राथमिक कार्यवाही आरम्भ कर दी थी और उन्होंने जेल के सामने, 'लेफायट' गली में स्थित एक पब्लिक टेलीफोन से अपने सहयोगी टट को सूचित किया था कि वह तुरत किसी वित्तीय एजेंसी के माध्यम से सेफास मक्फी की आर्थिक स्थिति के सम्बन्ध में विवरण प्राप्त करे। बोनी डून को आज्ञा दी थी कि वह मक्फी का रात तक पीछा करे और फिर मि० टट को उनकी '23 वीं' गली में स्थित लाइब्रेरी में आकर, चाहे रात के कितने ही क्यों न बजे हों, सारी सूचना पहुँचाए। स्क्रैग्स को आदेश दिया गया था कि वह दफ़्तर से दस डालर ले लेवे और 'वेस्टबरी एंड व्हीटलैंड' नामक एक फर्म के किसी ऐसे क्लर्क, जो सामाजिक संबंध बढ़ाने के चक्कर में रहता हो, से सम्पर्क स्थापित करने का प्रयत्न करे।

अपनी तैयारी के बारे में स्पष्ट होते हुए भी, मि० टट यह नहीं जानते थे कि उनकी अगली कार्रवाई क्या होगी और न ही उन्होंने यह निर्णय किया था कि प्रतिवाद की क्या रूप-रेखा होगी। उस मुकदमे की सुनवाई अगले दिन सुबह दस बजे पुलिस कोर्ट में होने वाली थी और तब मुकदमे से पहले दिन वाली शाम के पाँच बजे थे। मि० टट ने सस्ता और लम्बा सिगार

सुलगाया और वे गली पारकर फौजदारी अदालत भवन में पहुँच गए।

"क्या जज ओ' हेअर घर चले गए ?" उन्होंने बरामदे में खड़े हुए सिपाही से पूछा।

"अभी यहीं हैं, वकील साहब !" सिपाही ने उत्तर दिया, "आजकल जज साहब बहुत काम करते हैं। सारे नए अपराधियों के मामले वे स्वयं ही देखते हैं।" दरवाज़ा खोलकर, उसने आगे कहा, "आप अन्दर चलिए। वे आपसे मिलकर खुश होंगे।"

"हेलो, बन्धु ! मैं आपसे एक मुकदमे के बारे में कुछ बातें करना चाहता हूँ।" मि० टट ने एक लम्हे बाद, एक सफेद बालों वाले व्यक्ति से कहा, जो गैस की रोशनी के नीचे बैठा हुआ, कुछ लिखने में व्यस्त था।

जज ओ' हेअर ने कुछ सेकेण्ड तक लिखते रहने के बाद सिर उठाया और उदासीन भाव से कहा, "धत्—धत् ! और एक बार फिर आए हैं—टट !"

"वह मामला आपके सामने कल सुबह पेश होगा", मि० टट ने कहा, "वह एक अजीब तरह का मुकदमा है।"

"ऐसी क्या ख़ास बात है उसमें।" और कागज़ पर चलती हुई कलम की नोक की चिरचिराहट फिर सुनाई देने लगी।

"एक दलाल के क्लर्क पर यह अभियोग लगाया गया है कि उसने एक ग्राहक के नोटों को चुरा लिया है। यद्यपि कानूनी दृष्टि से उसके विरुद्ध सारे प्रमाण मौजूद हैं, फिर भी, बन्धु, मेरा यकीन है कि वह व्यक्ति निर्दोष है।"

"आख़िर आप मुझसे क्या चाहते हैं ?"

"यदि वह अदालत में दोषी सिद्ध हो जाए तो आप उसे कठोर दण्ड देना, मुझे कोई एतराज़ न होगा, लेकिन मैं चाहता हूँ कि जिरह के वक्त उसे बचाने का पूरा मौक़ा मुझे मिलना चाहिए।"

जज ओ'हेअर अपने लिखने में पूर्णरूप से व्यस्त हो गए।

"जो आप चाहते हैं, करिए", उन्होंने शीघ्रता से उत्तर दिया, "मैं आपको यह प्रमाणित करने का हरचन्द मौका दूँगा कि वह व्यक्ति निर्दोष है।"

मि० टट के नथने फूल उठे और उन्होंने बड़बड़ाते हुए कहा, "हे

भगवान ! हमारे क़ानून की भी लीला अपरम्पार है ! कितनी अजीब बात है कि जज जिसे यह मानकर चलना चाहिए कि प्रतिवादी निर्दोष है और उसने कोई अपराध नहीं किया है, वही जज अपराधी की निर्दोषता प्रमाणित करने के लिए मुझसे कह रहा है।"

o o o

यह एक मानी हुई बात है कि जैसे-जैसे हमारी आयु बढ़ती जाती है वैसे-वैसे हमारा दृष्टिकोण विशाल होता जाता है क्योंकि हम यह जानने लगते हैं कि मनुष्य की कार्य-प्रणाली इतनी उलझी हुई नहीं होती है, जितना कि हम पहले सोचते रहे हैं। यूँ हमें यह विश्वास बनाए रखना रुचता है कि मानव स्वभाव की गुत्थियाँ अत्यधिक जटिल हैं और मनुष्य की कार्य-प्रणाली के पीछे अनगिनत मिले-जुले परोक्ष उद्देश्य निहित रहते हैं। लेकिन यदि हम इस बात का गम्भीरतापूर्वक विश्लेषण करें तो हमें अपने बहुत सारे कामों के पीछे कोई एक साधारण-सी मूल-इच्छा या स्वभाव की विशिष्टता या कोई महत्त्वाकांक्षा ही साफ तौर से नज़र आएगी।

पुरानी चाल के मेलों-नाटकों की निंदा करते रहने में हमारी विशेष रुचि बनी रहती है। ऐसे नाटकों में विभिन्न पात्रों के माध्यम से नेकी और बदी का सजीव चित्रण प्रस्तुत किया जाता है क्योंकि कुछ पात्र वासना, ईर्ष्या अथवा लोभ के प्रतीक होते हैं तो कुछ पात्र ईमानदारी, निष्ठा और आत्म-त्याग को ही जीवन का उद्देश्य मानते हैं। इन पात्रों में मानसिक जटिलताएँ न होते हुए भी, ऐसे नाटक काफी हद तक सच्चाई के समीप आ जाते हैं और यह सामीप्य कई बार तो इतना स्पष्ट होता है जिसकी प्रायः हम कल्पना तक भी नहीं कर पाते हैं। नाटक के पात्र के लिए 'चरित्र' शब्द के प्रयोग का अपना एक विशिष्ट महत्त्व है। अक्सर व्यक्ति ऐसे होते हैं जो अपनी जीवन-नौका के लिए दिशा-निर्देश की व्यवस्था, अपने 'चरित्र' के किसी प्रमुख गुणरूपी ध्रुव-तारे के माध्यम से करते हैं और उसके प्रभाव में अर्थात् अपनी नैतिक दुर्बलता या किसी सद्भावना की बदौलत चट्टानों का सहारा ले लेते हैं या उनसे टकराकर चूर-चूर हो जाते हैं। जब किसी 'जोन्स' नामक व्यक्ति पर यह इल्ज़ाम लगाया जाता है कि वह एक शराबी है अथवा एक चोर है, अथवा एक दीवाना है या कभी उसकी तारीफ की

जाती है कि वह एक ज़िंदा दिल या ईमानदार आदमी है तो इस तरह हम मि० हेनरी जेम्स के ढंग से पात्रों के चरित्र का सूक्ष्म-निरीक्षण करने की अपेक्षा सत्यता के अधिक समीप होते हैं।

अब सेफास मक्फी की ही बात ले लीजिए। उसे दूसरों से लाभ उठाने, नई-नई चीज़ों को पाने और उन पर अपना अधिकार बनाए रखने में विशेष आनन्द मिलता था और वही उसकी मूल-प्रवृत्ति थी, उसका जीवन-स्रोत थी। ऐसा भी बहुत बार होता है कि द्वेष और क्रोध के कारण किए गए कामों पर जब शान्तिपूर्वक विचार किया जाता है तो प्रायः व्यक्तियों को बाद में पश्चाताप होता है और वे अन्ततः अपने उन कामों के कारण आत्म-विनाश होता देखकर बाद में अफ़सोस करने लगते हैं। इसी तरह कई बार मक्फी की स्वार्थपरता उसे इतना अन्धा बना देती थी कि उसकी हरकतें बाद में उसके लिए घातक सिद्ध होती थीं। इस बार भी, प्रेसकोट की गिरफ्तारी उसे फायदा नहीं पहुँचा सकेगी, यह उसने कभी नहीं सोचा था! बल्कि उसकी तो यह दृढ़ धारणा थी कि एक अच्छा नागरिक होने के कारण, उसका यह कर्त्तव्य था कि वह चोर को तत्काल पकड़वा दे। चोरों के लिए उसका एक ही फतवा था कि उन्हें जेल से बाहर रहने का कोई अधिकार नहीं है। वह तो अपने मित्रों से भी वही आशा करता था कि वे भी चोरों के साथ वही सुलूक करें जो वह स्वयं करता था। वह प्रेसकोट को पकड़वाता नहीं तो क्या करता? उसे गिरफ्तार कराने के पीछे उसका मक़सद ही यही था कि जेल के डर से प्रेसकोट झट से चोरी का माल उगल देगा।

वह प्रेसकोट की बजाय 'वेस्टबरी एंड ह्वीटलैंड' फर्म के विरुद्ध कार्रवाई कर सकता था लेकिन ऐसा करने में एक दिक्कत थी कि उसे यह मालूम नहीं था कि फर्म पर मुकदमा चला देने पर, बचाव-पक्ष का वकील क्या रुख अपनाएगा और फिर एक अच्छी फर्म से टक्कर लेने में काफी खतरा भी था। वह जल्दी से धन वापस पाना चाहता था और रकम को बैंक में जमा करा देना चाहता था। स्टॉक दलाल चाहे वे अपने को साहूकार ही क्यों न कहते हों, उनके विरुद्ध किया गया दावा चाहे कितना ही पक्का क्यों न हो, कम से कम एक धोखेबाज़ को पकड़वाने के ढंग के सामने कम लाभदायक सिद्ध होगा, क्योंकि अगर चोर के पास धन होगा तो पुलिस की कार्रवाई झट से

चोरी का माल उगलवा देगी। उसने सोचा था कि अगर इस कार्रवाई से कुछ फायदा नहीं हुआ तो फर्म के विरुद्ध तो कार्रवाई उसके बाद भी की जा सकेगी। उसे तत्काल एक रास्ता दिखाई दिया था और वह बिना सोचे-समझे उस पर चल पड़ा था। उसकी सद्बुद्धि स्वार्थपरता के तेज़ बहाव में तिनके की तरह बह गई थी। उसने एक बार भी यह नहीं सोचा था कि उसका वह क़दम गलत था, अन्यायपूर्ण था। बल्कि वह अपने पक्ष में दस बातें कह सकता था कि इसलिए उसने प्रेसकोट को गिरफ्तार करवाया था···वह उस क्लर्क से अपना धन वापस ले सकेगा और अपने उद्देश्य में सफलता मिल जाने पर उसका प्रतिकार भी पूरा हो जाएगा।

सेफास मक्फी का ख्याल था कि जेल के डर से, प्रेसकोट सारे नोट वापस कर देगा। लेकिन जैसे-जैसे वक्त बीतता गया और धन वापस नहीं मिला तो इसकी प्रतिक्रिया यह हुई कि वह निराश हो गया और परेशानी बढ़ने लगी। फिर एक नई चिन्ता जाग उठी। फौजदारी मामला खड़ा कर देने पर उसे भी कुछ न कुछ तो साबित करना ही होगा। इसी चक्कर में वह क्लब पहुँचा और चौपड़ के खेल में 'कैसीबीर एंड फेकटल' कम्पनी के वकील फ्रेंक कैसीबीर से एक डालर भी हार गया क्योंकि वह शंका-समाधान करना चाहता था···उसकी शंका यह थी कि किसी व्यक्ति को गिरफ्तार करवा देने पर, क्या कुछ दीवानी जिम्मेदारियाँ भी आयद हो जाती हैं ? वकील कैसीबीर के सामने उसने बड़ी चतुरता से अपनी शंका प्रकट की थी और कैसीबीर को ज़रा भी शक नहीं हो पाया था कि मक्फी स्वयं ही किसी ऐसे मामले में फंसा हुआ था। बात-बात में ही यह जानकर कि किसी के विरुद्ध कानूनी कार्रवाई करने से पहले 'उचित' कारणों के बारे में निश्चित होना ही चाहिए अथवा कार्रवाई नहीं करनी चाहिए—वह बेहद परेशान हो उठा था। वह वकील से 'उचित' कारण की व्याख्या कराना चाहता था, लेकिन भेद खुल जाने के डर से वह साफ बात नहीं कर सका था।

उसने अपनी शंका दूर करने के लिए अपने-आपको समझाने का काफी प्रयत्न किया—उसके पास उचित कारण मौजूद थे, तब ही तो उसने वह क़दम उठाया था। उसके अतिरिक्त, वेस्टबरी और प्रेसकोट ने भी नोट गिने थे। ऐसी परिस्थितियों में, यदि उसके पास ही 'उचित' कारण नहीं थे

तो किसके पास होंगे ? आखिर यह भी कोई मजाक था ? मालिक ने नोटों को गिना और फिर प्रेसकोट का स्वयं नोटों को गिनकर पच्चीस हज़ार की रसीद देना और बाद में कहना कि शायद गिनने में ग़लती हो गई थी। यह भी खूब रही ! यद्यपि उसकी भयातुरता दूर हो गई थी, लेकिन चिन्ता की छाया दूर नहीं हो रही थी। उसे अपने-आप पर विश्वास था कि वह किसी को भी अनुचित तरीकों से नाजायज़ तकलीफ पहुँचाना नहीं चाहता था।

लेकिन एक विचार बार-बार मन में आ जाता था—काश उसने प्रेम-कोट को पकड़वाने में इतनी जल्दी नहीं की होती ! लेकिन वह तो निश्चित रूप से जानता था कि उसके पास 25,000 डालर के नोट थे और फिर वह ग़लती कैसे कर सकता था जबकि उसने स्वयं वे नोट तहखाने में गिने थे। लेकिन एक प्रश्न कौंद उठा—क्या सचमुच उसने वे नोट गिने थे ? हाँ—वह क़सम उठा लेगा और फिर उसने वेस्टबरी को भी तो वे नोट गिनते देखा था। फिर भी न जाने क्यों, एक बिल्कुल बेतुकी बेचैनी उसे कचोट रही थी। यदि उसने कोई ग़लती नहीं की थी, फिर क्यों वह रात का भोजन करने से पहले, हौलदिली में वेस्टबरी को टेलीफोन किए बगैर नहीं रह सका ?

दलाल बेहद कुढ़ा हुआ था। मक्फी ने उनके खजांची को क्यों पकड़वाया था ? उनकी बदनामी होगी और व्यापार-क्षेत्र में फर्म की साख को धक्का लगना ज़रूरी था। यदि प्रेमकोट के खिलाफ कोई कार्रवाई करनी भी थी, और उसे पकड़वाना ज़रूरी था तो वह काम था 'वेस्टबरी एण्ड व्हीटलैंड' फर्म का, क्योंकि उसके धन के लिए वे ही जिम्मेदार थे। उसने बगैर बात अपनी टाँग क्यों फँसाई थी ?

"लेकिन मैंने तो सोचा था कि इस तरह मेरी रक़म मिल जाएगी और सारा मामला ठीक हो जाएगा।" मक्फी ने सफाई देते हुए कहा, क्योंकि उसे स्वयं यह एहसास हो गया था कि उसने फर्म की राय लिए बिना ही जो कार्रवाई शुरू कर दी थी, उससे फर्म के प्रति वह अन्याय कर बैठा था।

"तो मिल गया धन ?" वेस्टबरी ने व्यंग्य कहते हुए कहा, "अगर उसने नोट लिए भी हैं, तो उन्हें आसानी से कैसे छोड़ देगा ?"

"अगर उसने नोट लिए भी हैं—इस बात से आपका क्या मतलब है ?" मक्फी ने टेलीफोन पर चिल्लाते हुए कहा। उसे पहले ही दलाल और क्लर्क में कुछ साँठ-साँठ का शक हुआ था—मानो वे उसका धन ठग लेना चाहते थे। उसने सख़्ती से आगे कहा "क्या आपने नोट नहीं गिने थे ?"

"गिने थे मिस्टर मक्फी—ज़रूर गिने थे," वेस्टबरी ने नर्म पड़ते हुए उत्तर दिया, जिससे मक्फी को अत्यधिक सन्तोष मिला, "लेकिन आपने हमें क्यों भुला दिया ? हम अभी मर तो नहीं गए थे। आपके 9000 डालर के लिए हमारी पूरी जिम्मेदारी थी। लेकिन आपकी बेसब्री ने हमें बहुत नुक्सान पहुँचाया है। हमारी फर्म का एक आदमी जेल में है···आप ही सोचिए कल सुबह हमारी ख़ैर नहीं है। 'वाल स्ट्रीट' के लोग हमारा हुलिया बिगाड़ देंगे।"

परन्तु उसकी बेचैनी कम नहीं हो रही थी। उसकी नीच और स्वार्थ-पूर्ण प्रकृति के कारण उत्पन्न उत्कट शंका छिपकली के समान उसके मन में चिपक गई थी और हटने का नाम न लेती थी···यह भी तो सम्भव था कि कहीं सबने ही नोट गिनने में गलती न कर दी हो। नहीं, नहीं, ऐसा कैसे हो सकता था ! उसे क्या चिन्ता—उसके पास तो वह रसीद मौजूद थी जिस पर प्रेसकोट के दस्तखत थे। और वही रसीद प्रेसकोट के अपराध का पक्का सबूत थी। लेकिन मान लो, कहीं कुछ जादू-सा हो जाए और प्रेसकोट का अपराध सिद्ध नहीं किया जा सके, तब तो निश्चित रूप से मक्फी को हर्जाना देना होगा। उसने पहले ही सुन रखा था कि कई बार 'जूरियाँ' ऐसे मामलों में सख़्त फैसले सुना देती हैं और वह घबरा उठा—ओह ! आखिर ऐसी बेवकूफी करने से पहले ज़रा सोच लिया होता तो कितना अच्छा होता। एक घटिया किस्म के क्लर्क ने कितना परेशान कर दिया है। उसने पुनः अपने-आपको समझाने का प्रयत्न किया—इतनी चिन्ता करना निरर्थक है। जब वेस्टबरी 9,000 डालर के लिए अपनी जिम्मेदारी मानता है, तो इतना घबरा जाने का सवाल ही कहाँ पैदा होता है ?

केवल आधी रात ही बीती होगी, सर्दी अधिक होने के कारण उसे झुरझुरी-सी आई और उसकी आँखें खुल गईं। आँखें खुलते ही उसे पहले वाला प्रश्न फिर बेचैन करने लगा था—क्या दरअसल उसके पास पच्चीस

हज़ार डालर थे ? क्या तिजोरी में रखे हुए उन नोटों को, उसने रबड़ के फीते के नीचे से निकालते वक्त गिना था ? क्या उसने नोटों पर सिर्फ़ एक नज़र डालने से अधिक कुछ किया था ? अपने सोने के कमरे के उस एकांत में जहाँ केवल वही था, वह यह स्वीकार किए बिना नहीं रह सका कि सच-मुच उसने वे नोट नहीं गिने थे। शायद उसने वे नोट वहाँ रखते समय गिने हों। उसने उस दिन की कल्पना करने का प्रयत्न किया जब वह उन नोटों को उस तहखाने में रखने गया था, लेकिन वह भलीभाँति कुछ भी याद नहीं कर पा रहा था। उसे विश्वास था कि उस मौक़े पर उसने वे नोट ज़रूर गिने थे। लेकिन उसने स्वतः प्रश्न किया कि क्या उसने तब भी वे नोट गिने थे ? और यह भयानक विचार बारम्बार उसके अन्तस्तल पर प्रहार कर रहा था कि उसने वे नोट दोनों मौक़ों पर ही नहीं गिने थे और वह बिना बात ही यह बात मान बैठा था कि वे पच्चीस हज़ार डालर थे।

विक्षुब्ध मक्फी बिस्तरे से उठा और रात में पहनी हुई अकेली कमीज़ में ही ठिठरता हुआ, जब-तब नाखून कुतरता हुआ कमरे में चक्कर काटता रहा। उसे एक तरकीब सुझाई दी—अभी भी क्या बिगड़ा था ? वह अदा-लत में कसम उठा लेगा कि उसने वे नोट गिने थे और फिर किसकी हिम्मत थी कि उसकी बात को काट सकेगा ? तहखाने से नोट निकालते वक्त वह अकेला ही तो था। उसके बाद वेस्टबरी ने नोट गिने थे और वह इस सच्ची बात से कभी इन्कार नहीं करेगा। लेकिन मान लीजिए, मेरी ही तरह वेस्टबरी ने भी वे नोट नहीं गिने थे, या गिनने में गलती की थी—नहीं—इस तरह सोच-विचार करने का सारा ढंग ही मूर्खतापूर्ण था। उसे अपने ऊपर आश्चर्य हो रहा था कि कैसे उसने इतनी बड़ी बेवक़ूफी की थी कि बिना गिने ही यह मान बैठा था कि वे पच्चीस हज़ार डालर के नोट थे। उसने बिजली जलाई और वह साढ़े चार प्रतिशत वाले नोटों में अब तक किए गए लेन-देन का हिसाब लगाने लगा ताकि मालूम हो सके कि दरअसल उसके पास कितने नोट बचे थे। वह बौखलाया हुआ, इस हिसाब-किताब के चक्कर में तब तक फँसा रहा जब तक कि सुबह का नाश्ता पहुँ-चाने के लिए नौकरानी ने दरवाज़े पर दस्तक दी। लेकिन वह नाश्ता छू तक नहीं सका—केवल आधा प्याला चाय जैसे-तैसे जल्दी पीकर वह तेज़ी से

अपने दफ़्तर की ओर चल पड़ा ताकि अच्छी तरह अपने बहीखातों की जाँच-पड़ताल कर सके, क्योंकि वह यह जानने के लिए बेहद बेचैन था कि दरअसल वे नोट कितने थे।

जब पौने-दस बजे वह लिफ्ट से उतर रहा था तो उदास था और उसके चेहरे पर मुर्दनी-सी छाई हुई थी। जैसे ही वह निचली मंज़िल के बरामदे की ओर चला कि उतने में ही एक दुबले-पतले युवक ने उसके हाथ में एक सम्मन थमा दिया जिस पर मजिस्ट्रेट ओ' हेअर के हस्ताक्षर थे और यह आदेश लिखा था कि उसे ऐसी सामग्री जिसमें वे सब बहीखाते, दस्तावेज़, अभिलेख आदि शामिल थे, जिनका पिछले वर्ष में, बाँड, स्टॉक अथवा अन्य प्रकार के ऋण-पत्रों के क्रय-विक्रय से सम्बन्ध रहा हो, को तत्काल अदालत में पेश करने की आज्ञा दी गई थी।

वह घबराया और डरा हुआ तेज़ी से वापस लिफ्ट में घुस गया। सारे बहीखाते दिखलाने होंगे। सारी दुनिया के सामने निजी मामलों की कलई खोल देनी होगी। व्यापार-सम्बन्धी तमाम लेन-देन को प्रतिरोधी वकील के सामने रखना होगा। पिछले पाँच वर्ष के संघीय आयकर के गोलमाल के पकड़े जाने का ख़तरा सामने था। उसे अपनी सारी पोल खुल जाने का पूरा डर था कि उसने अपनी असली आर्थिक स्थिति को छिपाया था और सबसे बुरी बात यह थी कि उसके पास वस्तुतः कितने नोट बचे थे, इस बात पर भी पूरा-पूरा शक किया जा सकता था। सबसे अच्छा तो यह रहता कि इस मामले को उठाया ही नहीं जाता। अब तो यही उचित होगा कि प्रेसकोट के विरुद्ध शुरू किये गए मामले को वापस ले लिया जाए और उसे छुड़वा दिया जाए। लेकिन आहिस्ता-आहिस्ता उसने शंका और चिन्ता को दूर कर दिया। अपने कार्य के प्रति विश्वास एकत्र कर लिया और वह एक बार फिर गली में आ गया।

o o o

मनुष्य के क्रिया-कलाप और प्रेरणा-स्रोतों को प्रायः बहुत पेचीदा मान लिया जाता है जबकि वस्तुतः उनकी पेचीदगी आधी भी नहीं होती है। 'मनुष्य रहस्यपूर्ण है' कहकर, मनुष्य की प्रत्येक बात की अनेक बौद्धिक व्याख्याएँ प्रस्तुत की जाती रही हैं, लेकिन ऐसे प्रयत्न प्रायः असफल ही सिद्ध होते रहे हैं। इसके विपरीत कोई एक साधारण-सी बात, किसी मनुष्य की

सारी रहस्यपूर्णता को सुलझा देती है, बिलकुल उसी तरह जैसे एक टैस्ट-ट्यूब में पड़े हुए रासायनिक मिश्रण को एक प्रतिक्रियाशील द्रव्य तत्काल स्पष्ट कर देता है। उपन्यास, नाटक और कहानियों के लेखक पाठकों के मनोरंजन के लिए, अपनी कल्पना-शक्ति द्वारा हज़ारों छोटी-छोटी नई बातों की रचना इस प्रकार करते हैं कि उनकी कृतियाँ पाप अथवा पुण्य का सुन्दर चित्रण करने में सफल सिद्ध होती हैं।

मगर यथार्थ जीवन में एक मामूली-सी बात जिसे हम शुरू में प्रायः महत्त्वहीन और छोटा समझकर अनदेखा कर जाते हैं, लेकिन बाद में सामने आने वाले किसी मामले में वही मामूली-सी बात, सारा दृष्टिकोण ही बदल देती है। जैसे—क्या तहखाने के दरवाज़े पर ताला लगा हुआ था या नहीं? क्या मॉड अपना सिगारदान टैक्सी में छोड़ गई थी या नहीं? क्या वर्षा हो रही थी या नहीं? हैरी ने कितने केले खाए थे? ये सब बातें ऐसी हैं जिन्हें प्रायः मामूली और छोटी बातें माना जाता है, लेकिन बहुत बार इन पर ही मनुष्य का जीवन अथवा एक सौ या हज़ार डालर का फैसला निर्भर कर सकता है। वैसे ये बातें स्वयं-सिद्ध होती हैं, फिर भी इनके बारे में तब तक नहीं सोचा जाता है जब तक कि गवाह कठघरे से उतर कर नहीं चला जाता है। फैसला हो जाने के बाद भी मामले की कार्रवाई को फिर से शुरू किया जाता है और इन भूली-बिसरी बातों को फैसला बदलवाने के लिए प्रस्तुत किया जाता है। बहुत सारे मुकदमे तो ऐसे भी हो चुके हैं जिनमें फैसला हो जाने के बाद यह सिद्ध किया गया है कि प्रमुख गवाह जिसकी गवाही पर ही फैसला निर्भर करता था, दरअसल बहरा था या अंधा। सबसे मुश्किल बात अगर इस संसार में कोई है तो वह है कि गवाह को ग़लत कैसे साबित किया जाय!

लेकिन मि० टट ठहरे एक महान् वकील! उन्हें तो कैसे न कैसे गवाहों को ग़लत साबित करना ही था, लेकिन ऐसा करने के लिए उन्हें न केवल सेफास मक्फी को बल्कि मि० वेस्टबरी और प्रेसकोट को भी ग़लत सिद्ध करना था। मुकदमे से पहली रात, वे अपनी लाइब्रेरी में, कोयलों की आग के सामने बैठे रहे थे। एक के बाद एक सिगार पीते हुए ठोड़ी हथेली पर रख कर, मुकदमे की ऊँच-नीच पर विचार करते रहे थे। अपने सहयोगियों और

गुप्तचरों से उन्हें कोई विशेष प्रोत्साहन नहीं मिला था—मक्फी की आर्थिक स्थिति के सम्बन्ध में उन्हें जो रिपोर्ट मिली थी वह किसी काम की नहीं थी और स्क्रैंग्स बुरी तरह से मदिरापान करने के अतिरिक्त कुछ नहीं कर सका था और बोनी ड्रन टेलीफोन पर केवल इतना ही बता सका था कि मक्फी रात्रि में जल्दी घर चला गया था और उसके बाद बाहर नहीं निकला था। लेकिन कई घंटे तक धुएँ में घिरे हुए निश्चल बैठे रहने और एकाग्र चिंतन के बाद मि० टट खुशी से उछल पड़े थे और उनके मुख से मुर्गे के समान 'कुट-कुट-कुट' जैसी ध्वनि निकली और उन्होंने दाएँ हाथ से अपने घुटने को थपकी दी थी।

"मैं भी अजीब बेवकूफ हूँ जो पहले यह बात नहीं सोच पाया।" उन्होंने बड़बड़ाते हुए कहा। फिर मदिरा की बोतलों वाली अलमारी से एक घूँट ब्राण्डी ली और उसके बाद आग को उलट-पलटकर गैसलाइट बुझा दी और सीढ़ियाँ चढ़कर सोने चले गए।

O O O

मुकदमे वाले दिन जब से फास मक्फी पुलिस कोर्ट पहुँचा तो उसे देखते ही वेस्टबरी भड़क उठा।

"तुम्हें कुछ मालूम भी है, उन्होंने क्या किया है?" दलाल ने गुस्से से पूछा, "हमारे सारे बहीखातों के लिए सम्मन निकल चुके हैं। तुमने बहुत गड़बड़ कर दी है। तुम्हें क्या मालूम! मुझे सारा सामान लादकर लाने के लिए पूरा एक ट्रक चाहिएगा और इस बीच हमारे बिजनेस का कबाड़ा हो जाएगा।"

"इसमें मेरी क्या ग़लती है? मैंने तो सम्मन निकाले नहीं हैं—मैं ही कौन-सा बचा हूँ? मेरे साथ भी वही सब हो रहा है।"

"तुम्हारे साथ क्या होगा—इससे हमें कोई सरोकार नहीं है।" वेस्ट-बरी ने बात काटते हुए कहा।

मक्फी काँप उठा।

"आपका क्या मतलब है?" उसने धीमे से पूछा।

"क्या तुमने कभी 'टट एंड टट' कम्पनी का नाम सुना है?" दलाल ने सवाल किया।

"हाँ, सुना तो है।" मक्फी ने दुःखी होते हुए स्वीकार किया।

"बूढ़ा वकील तुम्हारे छक्के छुड़ा देगा," वेस्टबरी ने चेतावनी दी, "कहीं तुम ज़रा भी चूक गए तो तुम्हारी खैर नहीं—शायद तुम्हें जेल के भी दर्शन करने पड़ें। अब समझे! उसके सामने ठहरना बहुत मुश्किल है।"

उदास मक्फी विवश-सा उसकी ओर देखता रहा।

वह घबराकर सहसा बोल उठा, "नहीं, मैंने अपने बहीखाते उसके सामने रख दिए तो मेरा तो सत्यानाश हो जाएगा।"

वेस्टबरी निर्दयतापूर्वक हँसा।

"अभी से ही बहकने लगे।" वेस्टबरी ने सख़्ती से कहा, "तुम्हें सब कुछ दिखलाने के लिए बाध्य होना पड़ेगा। नहीं तो वे तुम्हें हवालात में बन्द कर देंगे।"

अदालत का कमरा चारों तरफ से बन्द था और उसमें एक अजीब तरह की गंध भरी हुई थी और मक्फी उस जगह को पशुशाला समझने के लिए विवश हो रहा था। पशुशाला के चौकीदारों की तरह ही तो सिपाही व्यवहार कर रहे थे—वे आदमियों को कठघरे तक घसीटकर ले जाएँगे और जज एक बूढ़े लंगूर की तरह उनपर चीखेगा, चिल्लाएगा और फिर दूसरा छोटा लंगूर भी करीब-करीब उसी तरह चीखेगा, चिल्लाएगा और तब मुसीबत के मारे अपराधियों को घसीट-घसीटकर पिंजरे में बन्द कर दिया जाएगा—यह सब देख-सोचकर, मक्फी बौखला गया। और उसके लिए सारा वातावरण भयानक और क्रूर हो उठा।

"तुम—वहाँ बैठो!" अदालत अधिकारी ने चिल्लाकर, धमकाते हुए कहा और वे दोनों, कोड़ों से पिटे हुए भयभीत शिकारी कुत्तों की तरह बैंच पर दुबक गए।

मक्फी को बड़ा सदमा पहुँचा था और वह डराने-धमकाने के तरीके को देखकर सहम गया था। वह यह तो सुन चुका था कि क़ानून किसी के साथ पक्षपात नहीं करता, लेकिन यह उसने कभी नहीं सोचा था कि क़ानून का मतलब लोगों की बेइज़्ज़ती करना भी होता है। प्रतिवादियों का बड़ा जुलूस ज़रा हिला-डुला तो उसे जिम प्रेसकोट लंगूर के सामने खड़ा हुआ नज़र आया और उसके साथ ही एक लम्बा, दुबला-पतला झुर्रीदार चेहरे

वाला एक बूढ़ा व्यक्ति भी दिखाई दिया।

एक अधिकारी ने कागज़ों का एक बंडल उठाया और कर्कश स्वर में पुकारा, "मक्फी ! सेफास मक्फी—कठघरे में आ जाए।"

मक्की उठा और कठघरे के दरवाज़े से, जिसे दूसरा अधिकारी पकड़े हुए था, अन्दर चला गया।

"कसम खाओ" जज ने आज्ञा दी, "दायाँ हाथ ऊपर उठाओ···नहीं, नहीं···दायाँ हाथ···तुम सच्चे दिल से यह कसम उठाते हो कि जिम प्रेसकोट के विरुद्ध न्यूयार्क राज्य द्वारा चलाए जा रहे इस मुकदमे में सत्य बोलोगे, पूर्ण सत्य, अन्य कुछ नहीं—केवल पूर्ण सत्य बोलोगे और इस बात में भगवान तुम्हारी सहायता करे ! अब बोलो। तुम्हें क्या कहना है ?"

इतनी ही देर में सेफास मक्फी का गला बुरी तरह सूख गया था और उसका चेहरा तमतमा उठा था। हवा में हाथ उठाकर कठघरे में खड़े हुए मक्फी को ऐसा अनुभव हो रहा था जैसे स्वतन्त्रता-मूर्ति सारे संसार को आलोकित कर रही थी।

"यह क्या तुम्हारे हस्ताक्षर हैं ?" जज ने प्रश्न किया जोकि नज़दीक से देखने पर पर किसी हद तक दयालु नज़र आता था।

मक्फी ने 'हाँ' कहने के लिए सिर हिलाया।

"सिर मत हिलाओ। जो कहना है, ज़बान से बोलो। अदालत की सारी कार्रवाई स्टेनोग्राफर को भी नोट करनी होती है।"

"अच्छा।" मक्फी ने उत्तर दिया।

जज ने मुकदमे के कागज़ों पर एक नजर डाली।

"तुम्हारे पास साढ़े-चार प्रतिशत ब्याज वाले पच्चीस हज़ार अमरीकी नोट थे। तुमने वे नोट प्रतिवादी को दिए थे, जिसने बदले में तुम्हें रसीद दी थी। क्या यह सब सच है ?"

"हाँ।"

"क्या तुम्हारे पास रसीद है ?"

"जी, हाँ···"

"उसने वह धन बैंक में जमा नहीं कराया, इसीलिए तुमने उसपर चोरी का दोष लगाया है, क्या यह सच है ?"

मक्फी पुनः सिर हिलाने ही जा रहा था कि उसने जल्दी से हकलाते हुए कहा, "हाँ, बिलकुल सच है।"

"सारा मामला बिलकुल साफ है," जज ने राय दी, "फिर भी—क्या आप जिरह करना पसन्द करेंगे, मिस्टर टट ?"

लम्बे आदमी ने अपने हाथ फैला दिए।

"बेशक ! मैं चाहता हूँ।" उन्होंने अर्थपूर्ण उत्तर दिया और मक्फी काँप उठा।

"तुम्हें कैसे मालूम है कि तुम्हारे पास पच्चीस हज़ार डालर के नोट थे ?" मि० टट ने मक्फी से प्रश्न किया।

"मैंने नोट गिने थे।" मक्फी ने साहसपूर्वक उत्तर दिया।

"कहाँ गिने थे ?"

"एकबार जब तिजोरी में रखे थे और दूसरी बार जब 'मैसर्ज वेस्टबरी एंड ह्वीटलैंड' का देने के लिए वहाँ से निकाले थे।"

"क्या तुम्हें बिलकुल ठीक तरह याद है कि तुमने दोनों बार वे नोट गिने थे ?"

"हाँ।" मक्फी ने ढिठाई से उत्तर दिया।

"क्या तुम पूर्ण और अभिन्न रूप से यह प्रमाणित करते हो कि तुमने प्रत्येक नोट हाथ में अलग-अलग लेकर गिना था ?"

एक लम्हे के लिए तो सारा कमरा अन्धकारपूर्ण हो उठा, लेकिन मक्फी ने हिम्मत नहीं हारी और अन्धकार दूर होने लगा।

"हाँ।" मक्फी ने उत्तर दिया।

सहसा जज ने बीच में टोक दिया और ज़रा आगे झुकते हुए, मक्फी की ओर घूरकर देखते हुए कहा, "तुम्हें अच्छी तरह याद है न, कि तुमने सारे नाट एक-एक करके गिने थे ?"

मक्फी ने तत्काल उत्तर दिया।

"जी हाँ, हाँ, मुझे अच्छी तरह याद है।"

मि० टट के मुख पर एक लम्हे के लिए कुटिल मुस्कान खिल उठी।

"तुम्हें अच्छी तरह मालूम है न, कि किसी भी कानूनी मामले में झूठी गवाही देना अपराध माना जाता है।"

"हाँ।" मक्फी ने स्वीकार किया और उसके सामने सारा कमरा फिर धुँधला पड़ने लगा।

मि० टट ने अपने पतले होंठ सिकोड़े।

"अभी इतना ही काफी है," उन्होंने कहा, "अगर श्रीमान् गवाह को यहाँ रुके रहने की आज्ञा दें तो मैं बाद में और भी कुछ पूछना चाहूँगा।"

"क्या मैं अपने दफ़्तर नहीं जा सकता ?" मक्फी ने मायूसी से कहा, "मैं सारे दिन क्या अदालत में ही फँसा रहूँगा। आखिर मुझे भी···"

"जितनी देर तुम्हारी यहाँ ज़रूरत है, उतनी देर तुम्हें यहीं रुके रहना होगा।" जज बड़बड़ाया और मक्फी को ऐसा लगा जैसे जज की सारी दयालुता काफ़ूर हो गई थी।

"अभियोक्ता की ओर से कोई और भी गवाह है ?" जज ने इधर-उधर दृष्टि घुमाते हुए कहा।

"हाँ, मिस्टर वेस्टबरी हैं।" मक्फी ने जल्दी से कहा। वह निराश हो चुका था, लेकिन फिर भी चाहता था कि वहाँ से कैसे न कैसे जल्दी से जान छूटे, "उन्होंने भी नोट गिने थे।"

बड़ी अनिच्छापूर्वक वेस्टबरी आगे बढ़ा और मक्फी उसकी खाली जगह जा बैठा।

"क्या तुमने नोट गिने थे ?" श्रीमान् न्यायाधीश ने प्रश्न किया।

"हाँ गिने थे।" वेस्टबरी ने दृढ़तापूर्वक उत्तर दिया।

"कितने डालर थे ?"

"पच्चीस हजार।"

जज ने अर्थपूर्ण दृष्टि से मि० टट की ओर देखा।

"क्या यह सच है कि तुम इस आदमी के मालिक हो ?" जज ने आगे कहा।

"जी, श्रीमान्।"

"क्या पहले कभी तुम्हें इसके बारे में कोई शिकायत रही है।"

"नहीं, श्रीमान्।"

"तुम्हारे पास यह कितने दिनों से नौकरी करता है ?"

"इस मार्च तक बारह साल होते हैं।"

"क्या यह पहले भी काफी धन संभालता रहा है ?"

"हर रोज़।"

"क्या पहले भी कोई कमी पाई गई है?"

"नहीं, श्रीमान्!"

श्रीमान् जज कुर्सी की पीठ का सहारा लेकर बैठ गए।

"अब आप जिरह कर सकते हैं, मिस्टर टट!"

वृद्ध वकील ने मित्रतापूर्ण हँसी के साथ वेस्टबरी की ओर देखा।

"आपकी सीधी और साफ बातों से मुझे यह विश्वास हो गया है कि आपके मन में मेरे मुवक्किल के लिए बुरी भावना नहीं है," उन्होंने नर्मी से आगे कहा, "मुझे आपकी ईमानदारी पर कोई शक नहीं है। मैं तो आपसे सिर्फ़ दो सवाल करना चाहता हूँ और मुझे पूरी उम्मीद है कि आपका जवाब सुनकर इस मुकदमे के बारे में बहुत-सी बातें स्पष्ट हो जाएँगी। मेरा पहला सवाल है—क्या आपकी फर्म साढ़े-चार प्रतिशत वाले नोटों का काफी लेन-देन करती है?"

वेस्टबरी को यह देखकर बहुत प्रसन्नता हो रही थी कि मक्फी की तुलना में उसके साथ अच्छा व्यवहार किया जा रहा था।

"क्यों?—नहीं, मिस्टर टट" वेस्टबरी ने प्रायः असंयत स्वर में उत्तर दिया, "हमने इन नोटों के अब तक सिर्फ़ दो-तीन सौदे ही किए हैं और दरअसल पिछले कई सप्ताहों में केवल यही एक सौदा किया गया है।"

"क्या आप ऐसे नोट अपने दफ्तर में भी रखते हैं?" वकील ने पूछा।

"नहीं।" गवाह ने घोषणा की, "हमारे लिए उनका कोई उपयोग नहीं है। हाँ, अगर कोई ग्राहक चाहे तो—"

"मैं केवल इतना ही जानना चाहता था कि अब आप के दफ्तर में ऐसा एक भी नोट नहीं मिल सकेगा क्या?"

"जहाँ तक मैं जानता हूँ—कोई नहीं मिलेगा।"

वकील ने गर्दन हिलाई और ऐसा लगा जैसे वह इन उत्तरों से काफी संतुष्ट था।

"अच्छा, तो आपको पूरा यकीन है कि वे पच्चीस हज़ार डालर के नोट थे?" मि० टट ने आगे कहा।

"हाँ, यह बिलकुल ठीक है।"

"क्या आपको याद है कि वे कितने नोट थे ?" मि० टट ने इस बात पर बहुत ज़ोर देते हुए पूछा।

"मुझे अच्छी तरह याद है," वेस्टबरी ने उत्तर दिया, "तीन नोट थे—दो दस हज़ार वाले और एक पाँच हज़ार का।"

"क्या आपका यह निश्चित मत है कि वे केवल तीन नोट थे और उनका कुल पच्चीस हज़ार बनता था ?"

"हाँ, बिलकुल ठीक है।"

मि० टट ने यह सुनकर चैन की साँस ली।

"तब, श्रीमान्, मैं प्रतिवादी को रिहा करने की प्रार्थना करता हूँ।"

यह सुनकर मक्फी बौखला उठा और बेंच-से उठ खड़ा हुआ। उसे महसूस हुआ जैसे सब मिलकर उसे फंसाने की साज़िश कर रहे थे।

"वह कैसे ?" जज ने प्रश्न किया।

"कृपया मुझे वे नोट देखने का अवसर दें—जो प्रतिवादी के पास मिले थे।" मि० टट ने कहा।

वकील ने पिन लगे हुए नोट लिए और आहिस्ता से प्रत्येक नोट को इस तरह उठाया जिससे वे जज को भी नज़र आ सकें। वे तीन नोट थे—दस हज़ार, पाँच हज़ार और एक हज़ार के कुल तीन नोट। प्रत्येक की दो तहें थी और उन सबको बड़ी सफाई से एक-साथ मोड़ा गया था।

"यही नोट प्रतिवादी के पास पाए गए और इन सब नोटों का जोड़ सिर्फ सोलह हज़ार होता है। दोष-आरोपक मक्फी का दावा है कि ये नोट वे हैं जो कि मूल धन-राशि में से बचे हैं। इसका मतलब हुआ कि पच्चीस हज़ार में से नौ हज़ार डालर के नोट मेरे मुवक्किल ने चुराए हैं। लेकिन अभी-अभी मिस्टर वेस्टबरी ने कहा है कि कुल नोट तीन थे यानी दो दस हज़ार के और एक पाँच हज़ार का। अगर हम मिस्टर वेस्टबरी के बयान को सच मान लेते हैं तो एक ही सूरत में नौ हज़ार डालर की चोरी की जा सकती थी कि अपराधी ने दस हज़ार वाले नोट को बदलने के लिए एक हज़ार वाला एक नोट पहले ही तैयार रखा हुआ था और मौक़ा पाते ही दोनों नोट आपस में बदल दिए थे—इसके अलावा कोई दूसरा तरीका हो ही नहीं सकता था। अब सवाल पैदा होता है—उसके पास एक हज़ार डालर का नोट कहाँ से आया ?

जब फर्म के पास एक भी उस तरह का नोट मौजूद नहीं था, तो उसने कहाँ से एक हज़ार का नोट प्राप्त किया ? लेकिन अभी आपने देखा है कि एक हज़ार डालर वाले नोट की तहें भी बिलकुल दूसरे नोटों से मिलती-जुलती हैं। मेरा दृढ़ विश्वास है कि यही तीन नोट मक्फी के पास थे और वह मान बैठा था कि वे पच्चीस हज़ार डालर के नोट थे। उसने जब वे नोट गिने थे तो यह ग़लती कैसे हुई ? उसने दस हज़ार वाले नोट के नीचे लगे हुए एक हज़ार वाले नोट को भी दस हज़ार का नोट समझ लिया। वैसे ऊपर वाले दस हज़ार के नोट के किनारों के उठाने पर दोनों नोट एक जैसे ही दिखाई देते हैं और कोई भी यही ग़लती कर सकता है। फिर मक्फी ने मिस्टर वेस्टबरी के पास पहुँचकर, पूरे विश्वास के साथ कहा कि वे पच्चीस हज़ार डालर के नोट थे। मिस्टर वेस्टबरी ने अविश्वास नहीं किया और नोटों को गिनने में वही ग़लती दोहराई—

"मक्फी और मिस्टर वेस्टबरी द्वारा विश्वास दिलाए जाने पर कि वे पच्चीस हज़ार डालर के नोट थे तो प्रेसकोट ने उन दोनों की बात सच मानकर, नोटों को गिनने में ग़लती की और जल्दी से रसीद बनाकर दे दी।"

"आत्म-प्रवंचना की यह अनोखी मिसाल है" जज ने अपना मत प्रकट किया, "इस बात में अब कोई सन्देह नहीं रहा कि वे सिर्फ तीन नोट थे, लेकिन मिस्टर टट, यह कैसे मान लिया जाय कि प्रेसकोट ने दस हज़ार के नोट को बदलने के लिए एक हज़ार के नोट का इन्तज़ाम नहीं किया हुआ था ?"

"यह भी अभी आपके सामने साफ हुआ जाता है। इसीलिए तो मैंने जिरह का कुछ हिस्सा बचा रखा है," मि० टट ने स्पष्टीकरण किया, "मैंने मक्फी साहब के नाम सारे बहीखाते अदालत में पेश करने के लिए पहले ही सम्मन जारी करा दिया है, क्योंकि इस मुकदमे का फैसला तब ही हो सकता है जब हमें यह मालूम हो जाए कि दरअसल मक्फी साहब के पास वे नोट कितने थे ? पच्चीस हज़ार या सोलह हजार ! अगर हम इन साहब से यह आशा करें कि मेरे मुवक्किल को गिरफ्तार कराने से पहले इन्होंने ज़रूर सब कुछ सोच-समझ लिया होगा तो ग़लत न होगा ! अब मक्फी साहब, आप कठघरे में तशरीफ ले आइए।"

एक पल के लिए सेफास मक्फी ने बहुत ही गम्भीरता से सोचा कि वह वहाँ से भाग क्यों नहीं जाता ! लेकिन भागना सम्भव नहीं था क्योंकि पशु-शाला के द्वार पर एक चौकीदार मौजूद था ग्रौर चारों ग्रोर से सारी नज़रें उसे ही घूर रही थीं। उसकी थकी-थकी टाँगों ने जवाब दे दिया, लेकिन वह जानता था कि उसे दोबारा कठघरे में जाना ही होगा। वह उठा ग्रौर कठ-घरे की कुर्सी पर जा बैठा।

"जनाब मक्फी साहब ! ग्राप मेहरबानी करके वे बहीखाते दिखाने का कष्ट कीजिए जिनमें इन नोटों की वह रसीद इन्दराज की गई थी जब ये नोट बैंक के तहखाने में रखे गए थे ?"

"यहाँ मौजूद नहीं हैं।" मक्फी का दम घुटने लगा था।

"क्यों नहीं हैं ?" मि० टट ने गरजते हुए कहा।

"मैं नहीं चाहता कि कोई मेरे निजी मामलों में हस्तक्षेप करे।" मक्फी ने ग्रावेश में उत्तर दिया।

"वाह, यह भी खूब रही ! एक निर्दोष व्यक्ति के जेल में जाने का प्रश्न है ग्रौर ग्रापको रत्तीभर चिन्ता नहीं है। श्रीमान्, मैं ग्रदालत से प्रार्थना करूँगा, इस गवाह को ग्रदालत की मानहानि करने के ग्रपराध में क़ैद कर लिया जाए।"

मक्फी के पास ही बैठे हुए मूँछों वाले लंगूर ने एकाएकी भयानक रूप धारण कर लिया था। पशुशाला के सारे पशुग्रों ने बहरा कर देने वाले स्वरों में चिल्लाना शुरू कर दिया था।

उसे मालूम हो चुका था कि वह हार गया था। इन कम्बख़्त वकीलों से भगवान बचाए ! लेकिन प्रश्न बार-बार उसे कचोट रहा था—क्यों उसने प्रेसकोट को पकड़वा देने की बेवकूफी की थी ?

"श्रीमान्—" उसने बड़बड़ाते हुए कहा, "मैं इस मुकदमे को वापस लेता हूँ। ग्राप तो जानते ही हैं—गलती करने की सम्भावना मनुष्य के साथ हमेशा ही बनी रहती है।"

"तुमने पहले यह बात क्यों नहीं सोची ?" लंगूर चिलाया, "तुमने ग्रपने बहीख़ातों की जाँच-पड़ताल क्यों नहीं की थी ?"

"मैंने सोचा था…"

"क्या सोचा था ?"

"तुमने अपने बहीखातों में क्या देखा था ?" मि० टट ने धूर्त मक्फी को दोषी ठहराने के लिए उँगली से उसकी ओर इशारा करते हुए कहा, "आज सुबह—तुमने कब अपने बहीखाते देखे थे ? सच बोलो।"

मक्फी काँप उठा और इधर-उधर बेचैनी से दृष्टि घुमाने लगा।

"जवाब दो !" लंगूर ने चिल्लाते हुए, निर्दयता से वार किया और उसे पछाड़ दिया, "अदालत का अपमान करने के अपराध में जेल नहीं जाना चाहते हो तो जवाब दो।"

सेफास मक्फी के पाँव लड़खड़ाए और वह गिरने ही वाला था कि एक अधिकारी ने उसका कंधा पकड़कर सहारा दिया।

"मुझे मालूम हो गया था कि मेरे पास सिर्फ सोलह हज़ार डालर थे।" वह धीरे से फुसफुसाया।

इतना सुनते ही सारे पशु अपनी पिछली टाँगों पर खड़े हो गए थे। उनके हाथ हिल रहे थे और उनकी चीख़-पुकार के कारण उसके होश-हवास फाख्ता हो रहे थे। उस कोलाहल के बीच, उसने जज को एक सिपाही से कहते हुए सुना, "जब तक मैं इस मामले पर पूरी तरह विचार नहीं कर लूँ, इसे पकड़ लिया जाए।" और फिर उपस्थित जन-समुदाय को सम्बोधित कर, जज ने आगे कहा, "अपराधी को बरी किया जाता है।"

भीड़ में से एक युवती बेंच से उठकर अपराधी की ओर लपकी और प्रेसकोट को बाहुपाश में बाँध लिया।

"ओह, जिम !" वह उन्मत्त स्वर में कह रही थी, "ओह, जिम !"

"इसे क्षमा करें, श्रीमान्।" प्रेसकोट ने जज से प्रार्थना की, "यह खुशी से पागल हो गई है।" और वह अपनी पत्नी की ओर झुका।

"अब जेनी कैसी है ?" उसने प्रश्न किया।

"जेनी ठीक है", वह उत्तेजित स्वर में बोली, "अच्छा हुआ उसे न्युमोनिया नहीं हुआ।"

मि० टट ने ज़रा आगे झुककर, जज के उच्च आसन पर बेतकल्लुफी से

हाथ फैला दिए और उनके ढिल-मिल बूढ़े चेहरे पर पिता-तुल्य स्नेह-सिक्त मुस्कान खिल उठी और उनका मुख मण्डल प्रज्वलित हो उठा।

"जेनी—बहुत ही प्यारी गुड़िया-सी सुन्दर बच्ची है", उन्होंने आगे कहा, "और बन्धु ! उसे देखने पर आपको मालूम हो जाएगा कि उस जैसी प्यारी बच्ची आपने पहले कभी नहीं देखी होगी।"

शिकारी कुत्ता

1

"आगे" एक आवाज़ सुनाई दी। उसके बाद क़ैदियों की एक थकी-थकी, उदास क़तार, चमकीले रोशनदानों के नीचे से, कठिनतापूर्वक रुक-रुककर आगे बढ़ती हुई दिखाई दी। उस क़तार में बारह क़ैदी थे—उनकी यह संख्या, छोटे पैगम्बरों, देवदूतों, यहूदियों के कबीलों और राजा सोलोमन के राज्याधिकारियों की संख्या के समान ही थी और जिन्हें एक गोल सिर वाला नीग्रो, जो लाल स्वीटर पहने हुए था, हाँकता हुआ पीछे-पीछे चल रहा था और ऐसा लगता था मानो उसी पर जीवित शिकार की चीर-फाड़ करने की जिम्मेदारी थी। लोहे के जंगलों के पास से उन बारह कैदियों की क़तार सिर झुकाए एक ऐसे कीड़े के समान रेंग रही थी जिसे झिनगा कहते हैं और जिसका शरीर बहुत सारी गाँठों में बँटा हुआ होता है, और चलते समय, उसकी प्रत्येक गाँठ, अपने से अगली गाँठ को आगे बढ़ने के लिए बाध्य करती हुई प्रतीत होती है—उसी प्रकार जो क़ैदी पीछे थे, वे आगे वालों को धक्के दे-देकर आगे बढ़ने के लिए मजबूर कर रहे थे। वह क़तार कठघरे में दो क़ैदियों को छोड़कर, जूरी-कक्ष के पास से निकलकर, अगले कोने के पीछे चली गई। वह अदालती बहस का दिन था, और वह दिन जनवरी के महीने का पहला सोमवार था।

"आगे !" फेलन ने फिर पुकारा। वह अदालत का कप्तान था। उसने कठघरे में खड़े-खड़े ही हाँकने वाले से कहा, "मेक्नमारा, जरा जोश में आओ।"

मेक्नमारा कतार के अगले सिरे की ओर मुड़ा।

"ऐ, तुम दोनों, इधर आओ !"

मि० डफर्टी, जो एक गंजे सिर और ठिगने शरीर वाले एक क्लर्क महाशय थे और जिनकी लम्बी-लम्बी मूँछों ने उन्हें सजीव कुकुरमुत्ता के समरूप बना दिया था, ने अपने अपने सामने पड़े हुए नीले ढेर के ऊपर से अभियोग-पत्र उठा लिए।

"पैट्रिक मूनी और डेनियल मलीगन", उसने संगीतपूर्ण वाणी में कहा, मानो उसे किसी गिरजाघर की उच्च-वेदी पर बैठकर दैवी-अनुष्ठान करना पड़ रहा था—"तुम दोनों पर ये संयुक्त अभियोग लगाए गए हैं : तीसरी डिग्री की सेंध मारी, पहली डिग्री की बड़ी चोरी, हमला करने का जुर्म पहली डिग्री में, चोरी का माल रखना और गुप्त रूप से अपने पास हथियार रखना। तुम लोग क्या कहना चाहते हो ? तुम अपराध स्वीकार करते हो या अस्वीकार ?"

दोनों क़ैदियों में से किसी ने उत्तर नहीं दिया।

"तुम दोनों का कोई परामर्शदाता है ?" डफर्टी गुनगुनाया।

"क्या तुम दोनों का कोई वकील है ?" कप्तान फेलन ने समझाते हुए कहा।

तब ही नज़दीक वाले बैंचों पर ज़रा शोर हुआ और एक भारी-भरकम व्यक्ति जिसके चेहरे पर अनगिनत झाइयाँ थीं, आगे बढ़ा।

"मैं दोनों प्रतिवादियों के लिए हाज़िर हूँ, श्रीमान्", उसने कहा, "वे अभियोग अस्वीकार करते हैं। क्या श्रीमान्, इस मुकदमे की तारीख, इक्कीस जनवरी कर देंगे···"

जज ने गर्दन हिलाई और वह बात नोट कर ली। भारी-भरकम वकील अपनी सीट की ओर मुड़ा।

"आगे !" फेलन ने स्वतन्त्र जन-समुदाय की ओर देखते हुए, ज़ोर से चिल्लाकर कहा, "आगे।"

उन दोनों क़ैदियों में से लम्बा क़ैदी मुड़ा और उसने चलना शुरू कर दिया, लेकिन दूसरा क़ैदी हिला तक नहीं। दूसरे क़ैदी का क़द मुश्किल से पाँच फुट छः इंच होगा और उसका डील-डौल, रंग-रूप, हाव-भाव सब एक साधारण व्यक्ति के समान थे···वह आपके घर का नल ठीक करने वाला मामूली कारीगर, बिजली-मिस्त्री, किसी दुकान का कर्मचारी हो सकता था जिसे अपने घर के दरवाज़े पर देखकर आप कभी नहीं चौंक सकेंगे। उसके हाव-भाव में सब क़ैदियों से अधिक दैन्य भाव झलक रहा था, फिर भी निडरता अथवा दृढ़ संकल्प की ज्योति भी विद्यमान थी, जोकि 'सिंग-सिंग' नामक जेल में पूरा एक वर्ष काट लेने पर भी मिट नहीं पाई थी।

"जज—श्रीमान् !" उसने रूखे स्वर में कहा, साथ ही साथ वह अपनी टोपी को हाथों में दबाकर भींचता-मरोड़ता रहा, "यह व्यक्ति मेरा प्रतिनिधि नहीं है···मेरा कोई वकील नहीं है।"

उच्च आसन पर बैठे हुए, जज वार्ट्किंस ने अपने चश्मे के ऊपर से उस क़ैदी की ओर घूरा और फिर वापस जाते हुए वकील की ओर देखा।

"यह क्या बात है, मि० होगन ?" उन्होंने पूछा, "मैं समझा था कि आप दोनों प्रतिवादियों की ओर से उपस्थित हुए हैं।"

वह वकील रुक गया और उसके मुख पर अर्द्ध-मुस्कान झलक गई।

"बात तो यही है, जज साहब।"

"लेकिन क़ैदी मूनी कहता है कि आप उसका प्रतिनिधित्व नहीं कर रहे हैं।"

"दोनों पर समान अभियोग लगाए गए हैं, क्योंकि उन दोनों ने एक वक्त ही, साथ मिलकर, समान अपराध किए हैं। प्रतिवादी मलीगन की बहन कल मेरे दफ्तर में आई थी और उसने ही दोनों क़ैदियों के लिए मुझे रखा है।"

"श्रीमान्—जज साहब, ज़रा मेरी भी सुन लीजिए" कठघरे में खड़े हुए उस क़ैदी ने सख़्ती से कहा, "न मैं इस वकील को जानता हूँ और न इस व्यक्ति को जिसके साथ मुझे अपराधी ठहराया गया है। इसे मैंने अदालत से पहले कभी नहीं देखा। मैं बिलकुल निर्दोष हूँ और अपना अलग मुकदमा चाहता हूँ और अलग से ही वकील।"

कप्तान फेलन ने अपने कंधे उचकाकर मि० डफर्टी की ओर देखा और वह मुँह बनाते हुए हँस दिया। वही पुरानी चाल—महीने भर को क़ानून की सेवा करने के लिए एकत्रित जूरी के नये सदस्यों पर अपनी निर्दोषता की छाप डालने के हेतु अपराध को दृढ़तापूर्वक अस्वीकार करने की चाल जैसे कि इस चाल से दोबारा कठघरे में आने से बचा जा सकेगा ! इस तरह ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाकर अपनी बेगुनाही का ढिंढ़ोरा पीटने से क्या पहले किए दुष्कार्यों और सन्देहपूर्ण इतिहास पर पर्दा डाला जा सकेगा ! नहीं, कभी नहीं, क्योंकि विरोधी पक्ष के वकील की जिरह सारा भाँडा फोड़ देगी।

"रविवार की रात को, मैं अपने घर जा रहा था", मूनी ने आगे कहा, तब ही यह प्रतिवादी, मलीगन, एक थैला लेकर मेरे साथ-साथ चलते हुए मुझसे बातें करने लगा—ऐन उसी वक्त एक पुलिसमैन पिस्तौल लेकर हम पर झपट पड़ा, फिर उसने अपने दूसरे साथी की मदद से हमें पकड़ लिया और वे दोनों हमें थाने में घसीट लाए। ज़रा मेरे माथे पर लगी हुई चोट भी तो देखिए, जज साहब। थाने में उस पुलिसमैन ने रिपोर्ट लिखवाई कि उसे मेरे पास से एक पिस्तौल मिला। जज साहब, यह सब एक धोखा है, साजिश है। मेरे पास कुछ नहीं था, फिर मैं पिस्तौल का क्या करता ? मैं तो ईमानदारी से सिर्फ दो वक्त पेट भरना चाहता हूँ, जज साहब !"

उसने अपनी बात बहुत दृढ़तापूर्वक कही, लेकिन उसके हाव-भाव से निराशा भी लक्षित हो रही थी, क्योंकि जो कुछ उसके साथ तब तक बीत चुका था, उन परिस्थितियों में 'न्याय' के प्रति अनास्था का प्रकट होना, कोई आश्चर्यजनक बात न थी !

जज वाट्किंस, जिन्हें उनके गवर्नर मित्र ने 'यूटिका'[1] से इसलिए भेजा था कि वे विशेष फौजदारी अदालतें बैठाएँ और 'टूम्ज़' जेल में जमा हो गई भीड़-भाड़ को किसी तरह कम करें, ने इशारे से डफर्टी को अपने पास बुलाया। डफर्टी ने अपने चमकदार जूतों पर थोड़ा उचककर, उच्च आसन के किनारे का सहारा लेकर, श्रीमान् जज से गुपचुप कुछ बातें कीं। बैंचों की पहली क़तार में क़ैदी बैठे थे और उनके पीछे एक सीधी-सादी लड़की का सरल-सा चेहरा, जिस पर चित्तीदार जाली लिपटी हुई थी, आतुरता से आगे की ओर झुका हुआ था। उस लड़की ने पूरे एक वर्ष मूनी की प्रतीक्षा की थी और उसकी प्रतीक्षा करेगी, चाहे ऐसा करने में दस साल लगें या कब्रिस्तान ले जाए जाने का अन्तिम दिन ही क्यों न आ जाए ! 'क़ानून की दृष्टि में सब बराबर हैं'—इस कल्पित धारणा पर से उसका भी विश्वास उठ चुका था। इस अविश्वास का एक ही कारण था कि वह अच्छी तरह जानती थी कि पैडी मूनी को दोबारा इसलिए चक्कर में फँसाया जा रहा था क्योंकि उसने एक दिन 'फैगन' के सैलून में मिकी मोरीसन को अच्छा मज़ा चखाया था। लेकिन

1. यूटिका—न्यूयार्क राज्य के केन्द्रीय क्षेत्र में स्थित एक नगर जो उत्पादन और उद्योगों का केन्द्र है।

मिकी मोरीसन कोई मामूली हस्ती नहीं था—वह ओ'ब्रियन नामक 'शिकारी कुत्ते', जो सहायक ज़िला अटार्नी और 'पर्ल बट्टन किड्स' नामक एक संस्था का ऑनरेरी कर्नल भी था, का मित्र था और स्वयं भी 'लोवर ईस्ट साइड' नामक जायदाद का प्रत्यक्ष उत्तराधिकारी था। इसके विपरीत पैडी मूनी एक दफ्तर की बिल्डिंग में एक मामूली-सा फायरमैन था जिसका न कोई राजनीतिक रसूख था और न वह किसी यूनियन का ही सदस्य था। यही बातें उसके लिए घातक सिद्ध हुई थीं और उसकी इन्हीं कमियों के कारण उसे इतना तंग किया जा रहा था। यह बात और थी कि मूनी इतनी आसानी से हार जाने वाला व्यक्ति नहीं था।

जज वाट्किंस ने कमरे में इधर-उधर कुछ तलाश करना शुरू कर दिया था और फिर उनकी दृष्टि एक कोने में जाकर रुक गई।

"मैं मिस्टर एफ्रेम टट को यह मुकदमा सौंपता हूँ।" जज ने कहा। यह सुनकर वयोवृद्ध वकील अपनी जगह से उठे और अपने एक हाथ में अपना लम्बा रेशमी हैट सँभालते हुए, कठघरे के पास आ गए।

तब ही कमरे का दरवाजा धमाके के साथ खुला और 'बिली नामक शिकारी कुत्ता' अपने पिठ्ठुओं के बीच घिरा हुआ तेजी से अंदर घुसा। तत्काल पुराने शत्रु ने पुराने शत्रु को ललकारा।

2

विलियम फ्रांसिस ओ'ब्रियन जिसे 'ज़िला अटार्नी के दफ़्तर का पीला कुत्ता' कहा जाता था, एक ऐसा व्यक्ति था जो कठघरे में आकर खड़े हो जाने वाले अभागे अपराधी को किसी न किसी सूरत में अपराधी सिद्ध करना अपना परम कर्त्तव्य समझता था और यदि वह इस कर्त्तव्य में किसी तरह से कोताही करता तो उसका दृढ़ विश्वास था कि इस प्रकार वह भगवान, देश और स्वयं के प्रति अन्याय करता। अपने ज़िद्दी स्वभाव, रसूख और दृढ़ विश्वास के कारण उसने अभियोजक के रूप में काफी नाम कमा लिया था। वकील उससे डरते थे और प्रतिवादी उसका नाम सुनते ही काँप उठते थे क्योंकि उसका जिरह करने का अन्दाज़ ही निराला था—जिरह करते वक्त वह विरोधी पक्ष के वकील की बिल्कुल परवाह नहीं करता था और

उसके मन में प्रतिवादी के लिए लेश-मात्र भी सहानुभूति नहीं होती थी। उसके मन में किसी के प्रति दया अथवा तरस दिखलाने की इच्छा कभी नहीं जागी थी। वह अपना मतलब निकालने में एकदम सिद्धहस्त था। वह वह ईमानदारी और सरलता का दिखावा कुछ इस ढंग से किया करता था कि जूरियाँ उसे अच्छी धारणा वाला एक सीधा-सादा व्यक्ति समझने लगती थीं। यूँ उसके पास साँप जैसी फुर्ती और चालाकी की भी कोई कमी नहीं थी। उसकी वाणी में तो विष का खज़ाना भरा हुआ था।

ज़िला अटार्नी, जॉन हेनरी पेखम की निस्बत ओ' ब्रियन जिसे 'बिली नामक शिकारी कुत्ता' नाम से भी लोग याद किया करते थे, फौजदारी अदालत भवन में अधिक महत्त्वपूर्ण व्यक्ति था। ज़िला अटार्नी अपने इस सहायक की कारगुज़ारियों का बुरा इसलिए भी नहीं मानता था क्योंकि वह भी इस बहु-प्रचलित विचार में विश्वास करता था कि क़ानून से सम्बन्धित सरकारी अथवा ग़ैर-सरकार दफ़्तरों में धूर्त व्यक्तियों का मौजूद रहना कोई आश्चर्यजनक बात न थी। बल्कि बात इतनी ही नहीं थी, क्योंकि जब भी कोई मुश्किल मामला फँस जाता था और अपराधी को सजा दिलवाना ज़रूरी होता था, तो ऐसे मौक़ों पर ओ' ब्रियन उस काम को चुटकियों में कर देता था। इसीलिए पेखम अपने विश्वस्त मित्रों में कहा करता था—"ओ' ब्रियन ऐसा शिकारी कुत्ता है—अगर उसके पास ज़रूरी गवाह नहीं हैं तो वह झट से पकड़ लाता है।"

ओ' ब्रियन की केवल यही विशेषताएँ नहीं थीं बल्कि राजनीतिक सम्पर्क स्थापित करने की दृष्टि से भी उसका काफी महत्त्व था, इसीलिए श्रीमान् जॉन हेनरी पेखम व्यक्तिगत रूप से उससे नफ़रत करते हुए भी, उसे अपने साथ चिपके रहने के लिए प्रोत्साहित करते रहते थे। इसी वजह से उन्हें उसके शोर-शराबों उद्दण्ड-स्वभाव और अत्याचारी क्रियाकलापों के साथ समझौता करना पड़ता था और उनकी मंज़ूरी मिल जाने पर वह अपने सामने आदमी को आदमी नहीं समझता था। यही कारण था कि उस दम्भी और अक्खड़ किस्म के व्यक्ति के चारों ओर, अदालत के बाहर और कभी-कभी अदालत के कमरे में भी, वाहवाही कहने वाले व्यक्ति जमघट लगाए रहते थे—उनमें अक्सर मुफ्तखोरे, क्लर्क, अदालतों के छोटे-बड़े कर्म-

चारी और पुलिस अधिकारी होते थे जो उसके पीछे लगे रहते थे और जहाँ वह जाता था, वहीं दुम हिलाते हुए उसका पीछा करते थे। उस भीड़ में से प्रायः उसके कागज़-पत्र, किताबें और थैले उठाने वाले होते थे। कोई उसके लिए थियेटर देखने के लिए टिकट लाता था, कोई टेलीफोन करता था और कुछ सलाम बजाते थे, बिल्कुल उसी तरह यह सब होता था जैसे कि हम किसी रोमन सभासद की कल्पना करें, तो हमारे सामने चित्र उभर आएगा कि किस तरह उसके अंगरक्षक, उसके भीड़ में से रास्ता बनाते हुए चला करते थे। खुशामदियों और पिट्ठुओं के बीच घिरे रहना ही ओ' ब्रियन की सबसे बड़ी आवश्यकता थी। इसीलिए वह बड़े ठाठ-बाट से वैसा जीवन बीताता था। वह जहाँ भी जाता था, सबको मालूम हो जाता था कि 'बिली नामक शिकारी कुत्ता' आ रहा था। उसके मन में आता तो वह अपने गुलामों को ठोकरें मारता था और कभी उनमें सिगार बाँटने लगता था और जो उसका दिल चाहता वही सब बिना सोचे-समझे उन्हें बताता रहता और पिट्ठुओं की भीड़ तारीफ करती रहती क्योंकि उनकी दृष्टि में वह दुनिया का महान् व्यक्ति था।

वह एक नाटे क़द का गठीले और गोल सिर वाला व्यक्ति था। उसके छोटे-छोटे लाल बाल थे और चित्तीदार पीली-सी त्वचा थी। उसकी छोटी टेढ़ी नाक और दृढ़ ठोड़ी और उसका सारा चेहरा-मोहरा किसी भी सिगार-स्टोर के एक अमरीकी रेड इण्डियन के समान ही माना जा सकता था। लेकिन इस समानता की पुष्टि भी तो तब ही सम्भव थी जब कि उसके मन में मानव-सुलभ करुणा नाम-मात्र को भी विद्यमान होती!

हर कोई उससे डरता था और उसके सामने सब नतमस्तक हो जाते थे। सब लोगों का यही ख्याल था कि ज़िला अटार्नी पेखम उसकी उंगलियों पर नाचता था, इसलिए जब भी पेखम से किसी का कोई काम पड़ता था तो वह ओ 'ब्रियन को सलाम बजाने पहुँच जाता था। केस जीतना उसके बाएँ हाथ का खेल था, इसीलिए पुलिस कर्मचारी और गुप्तचर इसी कोशिश में लगे रहते थे कि किसी न किसी तरह वह उनके केस अपने हाथों में ले ले। राजनीतिक दृष्टि से भी उसका महत्त्व था और यह भी सम्भावना थी कि वह ही वर्तमान ज़िला अटार्नी के बाद उस पद को सम्भालेगा—इन सब

बातों को ध्यान में रखते हुए, जज भी उसके प्रति मैत्रीपूर्ण व्यवहार किया करते थे। जब कभी भी कोई अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अथवा सनसनीदार मुकदमा, या कोई ऐसा मामला जिसमें जनता को आकर्षित करने की सम्भावना बनी रहती थी, दफ्तर में आता था तो ओ'ब्रियन हेड क्लर्क से कहकर उस मुकदमे को पकड़ लेता था। और अगर ऐसा मुकदमा किसी अन्य व्यक्ति को पहले ही सौंपा जा चुका था, तब भी वह ऐसे मुकदमों को दूसरों के पास से छीन लिया करता था। जब कभी भी पेखम ग़ैर-हाज़िर होता था, तो वह अपने आप ही 'कार्यकारी ज़िला अटार्नी' बन बैठता था। वह समाचार-पत्रों में विशेष भेंट-समाचार छपवाता रहता था। ऐसा करने में वह पेखम की उपस्थिति में भी नहीं चूकता था। सदैव उसका यही प्रयत्न बना रहता था कि ज़िला अटार्नी के कार्यालय में सब उसे ही सर्वेसर्वा समझते रहें।

यदि कोई उसकी तरफदारी ही करना चाहे तो कहा जा सकता है कि वह इतना बुरा आदमी नहीं था। यह बात दूसरी थी कि यदि वह एक धूर्त व्यक्ति नहीं होता तो वह उतना ही भला कर सकता जितना कि वह बुरा करने में समर्थ था। अगर यह कहा जाए कि वह समाज में एक प्रभावशाली व्यक्ति था तो कोई अतिशयोक्ति नहीं हो होगी, क्योंकि वह संयुक्त राज्य का एक सत्ताधारी राज्याधिकारी था और उसके क्षेत्र में कोई भी अनावश्यक हस्तक्षेप नहीं कर सकता था, यहाँ तक कि राष्ट्रपति भी नहीं। वह किसी भी पुलिस कर्मचारी का भविष्य बना और बिगाड़ सकता था और समाज में किसी भी व्यक्ति की इज्ज़त खाक में मिला सकता था। ऐसे थे श्रीमान् विलियम फ्रांसिस ओ' ब्रियन !

खेदजनक बात तो यह थी कि 'क़ानून की सुस्त चाल, दफ्तर की बदतमीजियों और ऐरों-गैरों की झूठी शान' के बीच, उन श्रीमान् के सामने बेचारे बूढ़े एफ़्रेम टट की क्या औक़ात थी कि प्रतिवादी को बचा लेते !

लेकिन रुकिए ! बूढ़े कुत्ते, गुस्ताखी मुआफ़ हो—हमारा मतलब है, बूढ़े टट में अभी भी जान नज़र आती है ! अभी तक यह स्थिति है कि 'बिली नामक शिकारी कुत्ते' ने दरवाज़ा खोला है और वह अदालत के कमरे में दाखिल हुआ है और मि० टट ने ज़रा मुड़कर उसकी ओर देखा है। अभी हमें चिन्ता नहीं करनी चाहिए क्योंकि अभी तो यह देखना बाकी है कि उन

दोनों की इस मुठभेड़ का क्या परिणाम निकलता है ? क्या भगवान इस वृद्ध वकील, जिसने सदैव अच्छे काम किए हैं, चाहे उसका ढंग कितना ही अजीब क्यों नहीं रहा हो, को शक्ति और साहस प्रदान नहीं करेंगे ? और फिर कौन है जो न्याय की रक्षा करते हुए युद्ध-स्थल में कभी परास्त नहीं हुआ ?

घोषणा करने वालो, अपने बिगुल बजाओ ! मुनादी करके 'शिकारी कुत्ते' और 'लम्बे रेशमी हैट वाले सूरमा' के बीच होने वाले युद्ध को देखने के लिए सबको बुला लो। बजाओ, अपने बिगुल बजाओ ! अदालत में होने वाले इस महान् युद्ध की गूँज चारों ओर फैला दो ! अदालत के अधिकारियो, दोनों योद्धाओं को जोश दिलाने के लिए 'बहुत अच्छे ! बहुत अच्छे !' और 'शाबाश ! शाबाश' ज़रूर चिल्लाना ! नगरवासियो अब शान्तिपूर्वक अपने-अपने स्थान पर बैठ जाओ और दरवाज़े, खिड़की सब बन्द कर लो ताकि कोई बीच में उठकर नहीं जा सके। ध्यान देकर अदालत की कार्र-वाई देखो, क्योंकि अब आपको मि० टट का युद्ध-कौशल देखने का सुअवसर प्राप्त हुआ है।

3

'बिल नामक शिकारी कुत्ता' शान के साथ जज के उच्च आसन के सामने आया और श्रीमान् जज के सामने झुका और फिर न्यायालय के उद्दंड, शक्तिशाली और उपहास करने में समर्थ जनसमुदाय, जो चकित नेत्रों से सारे दृश्य को देख रहा था, के समक्ष युद्ध की तैयारी में व्यस्त हो गया। दूसरी ओर वृद्ध वकील अपने नए मुवक्किल से बात-चीत कर रहे थे। पैडी मूनी में कोई बात ऐसी अवश्य थी जिसके कारण मि० टट में अपने आप ही उसके प्रति विश्वास जाग उठा। अदालत प्रतीक्षा कर रही थी। इतनी ही देर में अपराधी ने अपने वकील को अपनी गिरफ्तारी के बारे में सारी बातें बतला दीं। उसका कोई गवाह नहीं था, उसने कहा, क्योंकि उसके विरुद्ध साज़िश की जा रही थी, इसलिए वह चाहता था कि तत्काल ही उसके मामले की सुनवाई की जाए। ओ'ब्रियन अकड़ते हुए कठघरे के पास आया।

"क्यों ?" उसने रूखे ढंग से पूछा, "क्या इरादा है ? जो करना है जल्दी

किया जाए। क्या सदा के लिए ही बातें करते रहने की इच्छा है ?"

मि० टट के चेहरे पर हँसी नाच उठी और यह तब ही होता था जब वे अपने बहुत ही ख़तरनाक रंग में होते थे।

"मुझे बहुत ज़्यादा अफसोस है, मिस्टर ओ' ब्रियन, जो मैंने अदालत का इतना वक्त बरबाद किया। हमें अपराध स्वीकार नहीं है। मैं तत्काल मुकदमा शुरू करने की माँग करता हूँ।"

उसी क्षण डेलानी, एक पुलिसमैन की शक्ल में 'शैतान' वहाँ आया और आगे झुककर 'शिकारी कुत्ते' की आस्तीन खींचते हुए बोला, "सुनिए, मि० ओ'ब्रियन ! ज़रा शिकंजा कसोगे तो अभी अपराध स्वीकार करने लगेगा। यह रहा भरा हुआ पिस्तौल जो अपराधी के पास मिला था। अब तो आप ज़रा-सी देर में मामला ठंडा कर सकते हैं।"

उसने पिस्तौल ओ' ब्रियन के हाथ की ओर बढ़ा दिया जिसने झट से वह पिस्तौल अपनी जेब में छिपा लिया।

"क्या इसका पहला भी कोई रिकार्ड है ?" ओ' ब्रियन ने इधर-उधर देखते हुए पूछा।

"ज़रूर है जनाब, अब की बार चोरी का माल चमड़े की पेटी में भर कर सिगार स्टोर से निकल रहा था कि पकड़ा गया। गैस हाउस गैंग से इसका पुराना सम्बन्ध है। मुकदमे की कार्रवाई जल्दी शुरू कराइए। इस पुराने चोर को कोई नहीं बचा सकेगा।"

ओ' ब्रियन ने गर्दन हिलाई।

"बाकी मुझ पर छोड़ दो ! तुम—" मि० टट और मूनी को एक साथ सम्बोधित करते हुए, उसने आगे कहा, "सीधी तरह अपराध मान लोगे तो सिर्फ दूसरी डिग्री की चोरी में ही तुम्हें दोषी ठहराया जाएगा, समझे !"

मि० टट ने संजीदगी से अपना सिर हिलाया।

"नहीं," उन्होंने उत्तर दिया, "मैं एक निर्दोष व्यक्ति को किसी भी सूरत में झूठा अपराध स्वीकार नहीं करने दूंगा।"

ओ' ब्रियन के मुख पर कठोरता उभर आई।

"जैसी आपकी इच्छा !" उसने झट से कहा, "अपराध नहीं मानेगा

तो इसे ही भुगतना पड़ेगा।"

"पहले अपराधी का अपराध सिद्ध तो कीजिए।" मि० टट ने बड़बड़ाते हुए कहा।

"वाह खूब रही!" प्रतिरोधी मज़ाक उड़ाते हुए बोला, "क्या आप समझते हैं—आप इसे बचा लेंगे? क्यों अपने-आपको धोखा देते हैं। वह तो बिलकुल बेजान, खुलते ही बन्द हो जाने वाला मुकदमा है। क्यों आप इस बेचारे को मुसीबत में डालना चाहते हैं?"

मि० टट का अंग-अंग क्रोध से फड़क उठा।

"मि० ज़िला अटार्नी," उन्होंने सख़्ती से कहा, "क्या आप इस केस की जाँच-पड़ताल करने के बाद ऐसा कह रहे हैं?"

"मेरे पास सारे प्रमाण हैं—आप चिन्ता न करें!" ओ'ब्रियन ने प्रत्युत्तर दिया, "यह अपराधी एक पुराना क़ैदी है, इसकी तसवीर और इसकी उँगलियों के निशान पुलिस के पास मौजूद हैं। ऐसा व्यक्ति अपराधी नहीं हो सकता तो क्या हो सकता है? इसके बचने की कोई संभावना नहीं है, मि० टट!"

"क्या आपने इससे बात की है? इसकी दुःखद कहानी सुनी है?" वृद्ध वकील ने पूछा।

"नहीं सुनी है, और न सुनना ही चाहता हूँ," ओ'ब्रियन ने उत्तर दिया, "वह जब कठघरे में आएगा, तब सब ही उसका किस्सा सुन लेंगे। उसमें कुछ सार नज़र आएगा तो जूरी उसे छोड़ ही देगी।"

"अगर आप जनाब पहले ही जूरी को बता देंगे कि यह आदमी क़ैद काट चुका है, तो आप ही बताइए, जूरी उसकी बातों पर विश्वास कैसे करेगी?" मि० टट ने पूछा, "इस तरह तो हर कोई उसके ख़िलाफ हो जाएगा।"

"इसीलिए तो मैं कह रहा था कि उसके लिए एक ही तरीका है—वह अपना अपराध स्वीकार कर ले।" शिकारी कुत्ते ने अशिष्टतापूर्वक ऊँचा ठहाका लगाया।

"आप इसे ही इन्साफ कहते हैं!" मि० टट ने ज़ोर से कहा और उनके होंठ फड़क उठे, "आप मुकदमा शुरू कराइए और बुरा करने में कोई कसर

मत छोड़ना।"

"कसर, वाह !" ओ' ब्रियन ने हँसते हुए कहा, "अभी दस मिनट में लीजिए और फिर देखिएगा—" मूनी के पास से आगे की ओर गर्दन झुका कर तिरछी नज़र से मि० टट की तरफ देखते हुए आगे कहा, "आपका और आपके मुवक्किल का क्या हाल होता है ?"

जैसे ही अदालत अधिकारी मूनी को कठघरे से निकालकर वापस ले चला तभी किसी ने मि० टट के कोट को पीछे से पकड़कर खींचा। पीछे मुड़ते ही, उन्हें जाली में से झाँकता हुआ एक लड़की का सरल-सा चेहरा दिखाई दिया।

"श्रीमान्, आप उसे उन लोगों के चंगुल से कैसे न कैसे निकालिए। भगवान के लिए आप उसकी मदद करें।" उसने विनती की, "वह ज़ालिम पिछली बार भी उसके ख़िलाफ गवाह था। वह मोरीसन का आदमी है। वे उसको मारकर ही छोड़ेंगे। मैं अच्छी तरह जानती हूँ, आप बहुत बड़े वकील हैं। आप ही उसे बचा सकते हैं। वह एक शरीफ आदमी है। उसने कभी किसी का बुरा नहीं किया। मैं दोनों हाथ जोड़कर आपसे विनती करती हूँ—आप उसे बचा लीजिए।" और फिर आवाज़ नीची कर, धीरे से कहा, "मैंने नब्बे डालर जोड़ रखे हैं। आप उसे बचा लें। मैं सारा धन आपको दे दूँगी।"

मि० टट ने स्नेहपूर्वक उसका हाथ थपथपाया।

"ठीक है, चिन्ता मत करो। मैं अपनी तरफ से पूरी कोशिश करूँगा, लेकिन तुम्हारे धन के लिए नहीं, समझीं। अच्छा यह तो बताओ, तुम्हारा नाम क्या है ?"

"एनी मर्फी।"

"क्या तुम उस आदमी के बारे में जानती हो, जिसके यहाँ मूनी नौकरी करता था ?"

"ज़रूर जानती हूँ।"

"क्या उसे यहाँ बुला सकती हो ?"

वह लड़की तत्काल वहाँ से चली गई और मि० टट अपनी सीट की ओर चले गए।

शान के साथ कठघरे के पास अकड़कर खड़े हुए ओ' ब्रियन को देखकर, मि० टट ने धीरे से कहा, "कब इसकी आँखें खुलेंगी ! हे भगवान, इस पर कुछ दया करो !"

4

मध्यकालीन दिनों में हमारे ट्यूटानी पुरखों के मनोरंजन करने के निराले ढंग थे—वे विद्रोही गुलामों को भड़कीले घोड़ों के पेट के नीचे बाँध देते थे और फिर उनपर शिकारी कुत्ते छोड़ दिया करते थे। ऐसे मज़ेदार तमाशों में किसी भी गुलाम के जीवित बच पाने की संभावना बहुत कम रहती थी और अगर कहीं घोड़े की टाँग के साथ लोहे की गेंद और ज़ंजीर भी बँधी होती, तो तत्काल ही गुलाम की मृत्यु हो जाया करती थी। पैडी मूनी के पीछे भी क़ानून के शिकारी कुत्ते लगे हुए थे लेकिन उनके अलावा, उसे तो और भी दो कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा था—एक तो उसका पिछला जेल-रिकार्ड उसकी टाँग के साथ लोहे की गेंद और ज़ंजीर की तरह बंधा हुआ था, दूसरे ओ'ब्रियन सब प्रतिवादियों को घृणा की दृष्टि से देखता था और फिर जो पहले क़ैद भी काट चुके हों, उन्हें तो वह देखना तक पसन्द नहीं करता था। पैडी मूनी के लिए तो अभियोजक के मन में घृणा और क्रोध दोनों ही विद्यमान थे क्योंकि उसके रक्षक मि० टट ने पहले भी कई मौक़ों पर ओ'ब्रियन का अभिमान चकनाचूर कर दिया था। आहिस्ता-आहिस्ता वृद्ध वकील और ओ'ब्रियन के बीच शत्रुता की जड़ें गहरी होती गई थीं और अब तो ओ'ब्रियन बूढ़े वकील को अपना जानी दुश्मन समझता था। पैडी मूनी ने अपराध स्वीकार नहीं किया था इस बात से ओ' ब्रियन का क्रोध भड़क उठा था और मि० टट के लिए सदैव बनी रहने वाली घृणा ने मूनी के प्रति उसके क्रोध को अत्यधिक विषैला बना दिया था और वह गुस्से में पागल हो उठा था।

"यहाँ आओ।" उसने गुर्राते हुए डेलानी से कहा और वह उसे खींचकर बरामदे में ले गया, "मुझे इस आदमी के बारे में सब कुछ बताओ। मैं उस बूढ़े पाखंडी को ऐसा मजा चखाऊँगा, जिसे वह कभी नहीं भूल सकेगा।"

डेलानी मचल उठा—उसे ऐसा महसूस हुआ जैसे उसकी सारी उम्मीदें

पूरी होने वाली थीं। अगर मूनी को कैसे ही दूसरी बार भी कैद करा दिया जाए तो कमिश्नर के सामने ज़िला अटार्नी उसकी ज़रूर प्रशंसा करेगा और मिकी मोरीसन भी इस एहसान को कभी नहीं भूल पाएगा। उसके सामने तरक्की चमकने लगी और जिसे पाने के लिए वह ओ'ब्रियन के तलवे तक चाट सकता था।

"सुनिए, यह तो जीता-जिताया मुकदमा है," उसने ओ'ब्रियन की खुशामद करते हुए कहा, "मैंने इस आदमी और मलीगन को रंगे हाथों पकड़ा था। इन दोनों के पास चोरी का माल बरामद हुआ था। इसके पास जो पिस्तौल मिला था वह मैं पहले ही आपको दे चुका हूँ। मलीगन सरकारी गवाह बन जाएगा। हर चीज़ तैयार है, आप चिन्ता न करें। सौ फी सदी जीत हमारी है।"

"ठीक है। तुम मलीगन को बुलाकर सारी बात पक्की कर लो। तुम तो जानते ही हो इस मामले को अपने हाथ में लेकर, मैं तुम पर एहसान कर रहा हूँ।"

"मैं जानता हूँ, मिस्टर ओ' ब्रियन। आप मुझ पर बहुत मेहरबान हैं।" और डेलानी ने चापलूसी करते हुए आगे कहा, "आप तो होने वाले ज़िला अटार्नी हैं।"

"तो जाओ, तैयारी करो।" ओ'ब्रियन ने आज्ञा दी और वह सीना तानकर, अदालत के कमरे की ओर चल पड़ा।

पाठकगण सभी सरकारी वकीलों को ओ'ब्रियन जैसा नहीं समझ बैठें, क्योंकि उस जैसे सरकारी वकील विरला ही होते हैं, लेकिन जब भी और जहाँ भी ऐसे सरकारी वकील सत्ताधारी बन जाते हैं तो उनकी धूर्त्तता के सामने जज और वकीलों को भी हार माननी पड़ती है क्योंकि प्रायः उनके दुष्कार्य क़ानून और सरकार की सेवा करने के आडम्बर के अन्तर्गत किए जाते हैं। बहुत सारे जजों को तो ओ' ब्रियन की करतूतें मालूम ही नहीं हो पाती थीं और जिनको पता भी लग जाता था, तो वे उसकी धूर्त्तता के सामने चुप रहना ही श्रेयस्कर समझते थे। लेकिन यह सब तमाशा देखकर मि० टट क्रोध से तिलमिलाते रहते थे और प्रायः वे दुःखी स्वर में अपने-आपसे कहा करते थे—हे न्याय, तुम्हारे नाम में कितने अन्याय किए जाते हैं!

5

तब मज़बूर क़ैदियों ने अपने-अपने ऊपर लगाये गए अभियोग अस्वीकार किए और फिर वे हिलते-डुलते भारी क़दमों से वापस क़ैदियों के लिए बने हुए बाड़े में चले गए। फिर जज ने जूरी को पूरा करने के लिए आमन्त्रित ऐसे नगरवासियों, जो अदालत के चक्कर में पड़ना नहीं चाहते थे, द्वारा प्रस्तुत किये गए नए-नए बहाने सुने। अदालत में जन-समुदाय कम हो गया था। बारह बज चुके थे और 'हत्याकाण्ड' आरम्भ होने का समय आ चुका था।

'शिकारी कुत्ता' उठा और इठलाता हुआ जूरी-कक्ष के सामने बिछे हुए मेज़ की ओर चला गया।

"क्या आपको कोई मामला रखना है, मि० ज़िला अटार्नी," श्रीमान् ने प्रश्न किया और ओ' ब्रियन द्वारा गर्दन हिलाकर 'हाँ' कह देने पर, क्लर्क से कहा, "जूरी के सदस्यों को जूरी-कक्ष में बुलाओ, मि० डफर्टी।"

"आप सब कृपा करके अपने-अपने स्थान पर आ जाएँ", डफर्टी ने जल्दी से बारह नाम पढ़कर सुनाए और आगे कहा, "सरकार बनाम मूनी! पैट्रिक मूनी, तुम पर ये अभियोग लगाए जाते हैं: तीसरी डिग्री की सेंध-मारी, पहली डिग्री की बड़ी चोरी, हमला करने का जुर्म पहली डिग्री में, चोरी का माल रखना और गुप्त रूप से अपने पास हथियार रखना। अगर तुम्हें जूरी के किसी सदस्य पर कोई आक्षेप है, तो अब बता दो?"

मि० टट किसी के बारे में कोई एतराज़ उठाना नहीं चाहते थे, इसीलिए उन्होंने नर्मी से, दो पंक्तियों में बैठे हुए विभिन्न नगरवासियों की ओर मुस्कराते हुए इस प्रकार की घोषणा की, "जूरी अत्यधिक संतोषजनक है!" और यह सुनकर जूरी का प्रत्येक सदस्य फूला नहीं समाया और उन सबको यह विश्वास हो गया कि मि० टट लाजवाब आदमी थे।

उसके बाद 'शिकारी कुत्ते' ने जूरी के सदस्यों को सम्बोधित करते हुए, प्रतिवादी के सम्बन्ध में सारी बातें बताईं कि किस तरह उसके पास चोरी का माल बरामद हुआ। उसके पास भरा हुआ पिस्तौल था जो उसने अपनी जेब में से पुलिस अधिकारी पर चलाने के लिए हाथ में लिया था और कैसे उस अधिकारी ने बड़ी अक़्लमन्दी से उस जैसे खतरनाक आदमी को

हिरासत में लिया था। उसका साथी उसके विरुद्ध साक्षी देने के लिए तैयार था और अभियोजक ने हर तरीके से इस बात की पुष्टि करने का प्रयत्न किया कि वह एक ऐसा सीधा-सादा मामला था जिसमें जूरी के सदस्यों के सामने एक ही रास्ता बचा था कि अपराधी को दोषी घोषित करें।

उसने डेलानी को गवाही देने के लिए बुलाया। गवाह की कुर्सी में उसका भारी-भरकम शरीर समा नहीं रहा था और उसने अभियोजक की बातों का रंग जमा दिया। उसने बढ़ा-चढ़ाकर मूनी का पिस्तौल निकाल लेना और फिर केवल डंडे से ही उसका मुकाबला किया जाना और फिर हिरासत में कर लेना आदि बातें सुनाईं। उसके बाद, ओ' ब्रियन द्वारा अपनी जेब से पिस्तौल निकालकर प्रदर्शित करने पर शिनाख्त भी कर दी।

फिर जिरह शुरू हुई।

मि० टट ने केवल दो प्रश्न पूछे।

"क्या तुम मिकी मोरीसन को जानते हो ?"

"हाँ, जानता हूँ।"

"क्या तुम दोनों का एक ही क्लब से कोई सम्बन्ध है ?"

"हाँ, है।" अवज्ञापूर्ण उत्तर मिला।

"केवल इतना ही।" और बूढ़े वकील ने उसे जाने के लिए कहा।

उसके बाद मलीगन को क़ैदियों के बाड़े से लाया गया। कुर्सी पर बैठकर उसने कसम उठाई कि वह सब कुछ 'सत्य' बोलेगा। उसने निस्संकोच यह मान लिया कि वह एक पेशेवर चोर था, लेकिन साथ ही साथ इस बात पर भी ज़ोर दिया कि कई मौक़ों पर पेशेवर चोर भी सच बोल सकता था और यह मौक़ा ऐसा ही था जब वह सच्चाई से काम ले रहा था। उसने पुलिस-मैन की बात की पुष्टि की और उसने तफसील के साथ बताया कि कैसे उसने और मूनी ने सिगार-स्टोर की चोरी की थी। लेकिन फिर मि० टट द्वारा जिरह करते वक्त उठाये गए नुक्तों का वह ठीक-ठीक जवाब नहीं दे सका था और उसकी हालत खराब हो गई थी। कुछ देर बाद ही, मूनी के सम्बन्ध में वह ऐसी बातें बताने लगा था कि उन बातोंको सुनकर कोई जरा-सा समझदार आदमी भी उस गवाह पर रत्ती भर विश्वास नहीं कर सकता था।

फिर भी मूनी के विरुद्ध दिये गए प्रमाणों में एक बात ऐसी बच गई थी जिसको अभी तक काटा नहीं जा सका था और वह प्रमाण था—डेलानी की गवाही का वह हिस्सा कि उसने मूनी के पास एक भरा हुआ पिस्तौल पाया था और जिसे वह पहचान भी चुका था। इस बात को लेकर मि० टट उस गवाह को किसी तरह भी अविश्वसनीय सिद्ध नहीं कर पाए थे। सारी बातें समझते हुए, ओ' ब्रियन ने शीघ्रतापूर्वक एक कूटनीतियुक्त चाल चली।

"श्रीमान्," उसने कहा, "इस मुकदमे की बातें सुनकर मैंने यह विचार किया है कि अब जूरी प्रतिवादी के विरुद्ध चोरी और सेंधमारी के अभियोगों को छोड़ दे, क्योंकि मलीगन जो मूनी का सह-प्रतिवादी है, और स्वयं एक पुराना क़ैदी भी है, ने अपने बयान में अपने आप ही सारे अपराधों को स्वीकार तो कर लिया है लेकिन वह मूनी के सम्बन्ध में कोई विश्वसनीय प्रमाण प्रस्तुत नहीं कर सका है। इसीलिए श्रीमान् से मेरी यह प्रार्थना है कि इस प्रतिवादी के विरुद्ध लगाये गए अभियोगों में से केवल गुप्त रूप से हथियार लेकर चलने वाले अभियोग को छोड़कर, बाकी सबको वापस ले लिया जाए।"

उसने अपनी बात कुछ इस ढंग से कही कि जैसे वह दरअसल अपराधी को जान-बूझकर नुकसान पहुँचना नहीं चाहता था और उसके इस अन्दाज़ को जूरी के सदस्यों ने प्रशंसात्मक दृष्टि से देखा। वह लोमड़ी की तरह चालाक था। वह अच्छी तरह जानता था कि मूनी को कठघरे में आकर, पहले भी जेल में रहने की बात को अस्वीकार करना ही पड़ेगा और इसी बात पर सारा मुकदमा निर्भर करता था, लेकिन अगर सारे अभियोग जूरी के सामने आते तो मलीगन की गवाही की अविश्वसनीयता के कारण जूरी के लिए अपराधी को छोड़ देना ज़रूरी हो जाता।

"सरकारी पक्ष की ओर से यहीं तक!" ओ' ब्रियन ने कहा।

जूरी ने प्रतिवाद-पक्ष की ओर ध्यान दिया।

"मि० मूनी, कठघरे में तशरीफ ले आइए।" मि० टट ने कहा। खून के प्यासे 'शिकारी कुत्ते' के मुँह में शिकार को सामने देखकर पानी भर आया था।

पैडी मूनी जूरी-कक्ष के पीछे से होकर गवाह की कुर्सी पर आकर बैठ

गया। वह अच्छी तरह जानता था कि वह बेगुनाह था, लेकिन सरकारी वकील उसका मज़ाक उड़ाएगा और सबके सामने झूठा साबित कर देगा। वह पहले भी जेल में रह चुका है, इसी एक बात पर ही उसे दूसरी बार भी जेल भेज दिया जाएगा। फिर उसने सोचा कि यूंही हार मानने से कुछ नहीं होगा! यह बात ठीक थी कि उसके बचने की कोई आशा नहीं थी, फिर भी सच्ची बात कहने में कैसा डर? वह ज़रूर कहेगा कि वह पिस्तौल उसका नहीं था। जब उस कठघरे में आना ही था और दण्डित होना ही था तो सच बोलने से भी क्यों पीछे हटा जाए?

उसने मि० टट के संरक्षण में अपने विरुद्ध लगाए गए सब अभियोगों, जिनमें पिस्तौल वाली बात भी शामिल थी, को झूठा बताया। उसने अपनी वाणी में दीनता का भाव नाम-मात्र को भी नहीं आने दिया। उसने दृढ़तापूर्वक आगे कहा कि मलीगन उसके साथ-साथ चलने लगा था और जब डेलानी वहाँ आया था तो उसने भागने की ज़रा भी कोशिश नहीं की थी। वह ऐसा क्यों करता? जब उसने कुछ बुरा नहीं किया था, तो वह किसी से क्यों डरता?

"सुना आप सबने।" मि० टट ने जूरी-कक्ष की ओर थोड़ा झुककर कहा और फिर वे अपनी जगह पर बैठ गए।

शिकार पर झपटने के लिए तैयार चीते के समान छिपकर, 'शिकारी कुत्ता' तीन फुट के करीब उछला और गवाह की कुर्सी के पास पहुँच गया।

"मि० मूनी, क्या आपको कोई अपराध करने के सिलसिले में पहले भी सज़ा मिल चुकी है।"

"हाँ।" प्रतिवादी ने रूखे ढंग से उत्तर दिया।

"क्या अपराध किया था, आपने?"

"मारपीट का अपराध लगाया गया था।"

"खूब! और आप कहते हैं कि आप शांतिप्रिय व्यक्ति हैं?"

"मैं ऐसा ही समझता हूँ।"

"आप जेल से कब छूटे हैं?"

"पिछले सप्ताह।"

जूरी के सदस्यों ने एक-दूसरे की ओर देखा। ओ' ब्रियन का जादू काम

कर रहा था। लेकिन वह इतने से ही संतुष्ट नहीं था, वह तो उसे चारों खाने चित्त गिराना चाहता था, इसलिए उसने इशारे से डेलानी को अपने पास बुलाया।

"जल्दी से इसके बारे में और कुछ बताओ।" उसने पूछा।

"यह पुराना घाघ है," पुलिसमैन ने हकलाते हुए कहा, "इसका 'गैम हाऊस गैंग' से सम्बन्ध रहा। इसने तिजोरियाँ तोड़ी हैं और भी न जाने क्या-क्या किया है।"

ओ' ब्रियन जानता था कि पुलिसमैन झूठ बोल रहा था, फिर भी उसे उन बातों पर विश्वास करने का अधिकार था।

"जल्दी से मेरे दफ़्तर जाओ और 'जोन्स' की पुस्तक 'अमेरीका के पेशेवर अपराधी' ले जाओ।" उसने डेलानी को आज्ञा दी।

पुलिसमैन जाने में झिझका।

"उसमें इसका नाम नहीं है।" उसने इतना कहने का साहस किया।

"तुमने सुना नहीं।" ओ'ब्रियन ने चीख़ते हुए कहा, "जो कहा है, वैसा करो।"

जितनी देर तक डेलानी अपने मालिक की आज्ञा पूरी करने के लिए लिफ्ट की प्रतीक्षा कर रहा है और वापिस लौटकर आता है, उतनी देर हम कुछ ज़रूरी बातों पर विचार कर लेते हैं। जब कभी भी अपराधी को गवाही देने के लिए बुलाया जाता है तो विरोधी वकील जिरह करते वक्त उसके पिछले जीवन से सम्बन्धित कोई भी ऐसा प्रश्न कर सकता है जिससे अपराधी की अविश्वसनीयता की पुष्टि हो जाए और जूरी वर्तमान मामले में भी उसको शक की निगाह से देखने लगे। इस तरह जिरह की दो सीमाएँ भी हैं—एक तो यह कि पीठासीन जज ऐसा करने की अनुमति प्रदान कर दे और दूसरी यह कि यदि किये गए प्रश्न का वर्तमान मामले से कोई सीधा सम्बन्ध नहीं है, तो प्रश्नकर्त्ता वकील गवाह के उत्तर को काटने का अधिकारी नहीं होगा।

यद्यपि ये दोनों सीमाएँ अभियोजक के लिए बाधाएँ नज़र आती हैं, लेकिन असल में ये उसके लिए लाभदायक सिद्ध होती हैं, विशेष रूप से दूसरी सीमा। क्योंकि प्रायः अभियोजक ऐसे प्रश्न उठाते हैं जिनके प्रभाव में

जूरी गवाहों के जवाब को सुनकर कुछ ऐसा ग़लत मतलब पकड़ लेती है कि प्रतिवाद-पक्ष के वकील के लिए उस प्रभाव को दूर करना असम्भव हो जाता है। उदाहरणार्थ, यदि एक प्रसिद्ध अभियोजक किसी नीग्रो प्रतिवादी, जिस पर यह अभियोग लगाया गया है कि उसने शुक्रवार को 'क' की मुर्गियाँ चुराई हैं, से यह प्रश्न करता है कि क्या उसने शनिवार को 'ख' की मुर्गियाँ चुराई थीं, तो इस प्रश्न के प्रत्युत्तर में नीग्रो यही कहेगा कि यह बात झूठी है। लेकिन इतने में ही प्रश्नकर्त्ता वकील का मतलब निकल आएगा, क्योंकि जूरी इस तरह की पूछ-ताछ से यही समझेगी कि उस अभागे नीग्रो ने निश्चित रूप से दोनों ही दिन 'क' और 'ख' की मुर्गियाँ चुराई होंगी। लेकिन अगर कहीं उस अभियोजक को यह अधिकार भी मिल गया होता कि वह नीग्रो के इस उत्तर कि उस पर 'ख' की मुर्गियाँ चुराने का दोष झूठा है, का खंडन कर सकेगा, तो अभियोजक के लिए ऐसा करना बहुत मुश्किल हो जाता। इस प्रकार कानून की जो पाबन्दियाँ प्रतिवादी के लिए लाभदायक दिखाई देती हैं, असल में वे उसका नुकसान ही करती हैं, बिलकुल उसी तरह जैसे अपराधी का कठघरे में लाया जाना और वहाँ आकर, उसके द्वारा अभियोग को झूठा बतलाने के 'अधिकार' का परिणाम यही निकलता है कि बावजूद इस बात के कि वह सारे अभियोगों को मानने से इन्कार कर देता है, फिर भी उसके बारे में जूरी के सदस्यों के मन में बनी हुई धारणा मिट नहीं पाती है और वे उसे अपराधी ही समझते हैं। 'शिकारी कुत्ते' ने यह निर्णय किया कि वह इस कारगर सिद्धांत द्वारा पैडी मूनी और मि० टट का सर्वनाश कर देगा और दोनों को बदनामी के अन्धे कुएँ में धक्का दे देगा।

वह यह भी जानता था कि उसके एक प्रतिष्ठित लोक अभियोजक होने के कारण, उस द्वारा मूनी के सामने रखा गया कोई भी सवाल, जूरी द्वारा अभियोग जैसा ही माना जाएगा। इस बात में इस वजह से भी कोई शक नज़र नहीं आता था कि उसने जज के सामने जो सुझाव रखा था कि प्रतिवादी पर लगाए गए अभियोग—सेंधमारी, चोरी और चोरी का माल रखना, वापस ले लिए जाएँ, के कारण, वह जूरी की आँखों में ऊँचा उठ गया था और सबको उसकी न्यायप्रियता के बारे में विश्वास हो गया था।

अब तक वाद और प्रतिवाद दोनों पक्षों की स्थिति बराबर थी।

एक ओर पुलिस अधिकारी ने हलफ़िया बयान दिया था कि उसने क़ैदी के पास से पिस्तौल बरामद किया था और धूर्त्त गवाह ने इस बात की पुष्टि की थी। दूसरी ओर प्रतिवादी ने अभियोग का खंडन किया था लेकिन मार-पीट के जुर्म में उसका पहले भी एक बार जेल काट चुकना उसके विरोधी-पक्ष को मज़बूत कर रहा था। लेकिन अभियोजक को जज द्वारा दी गई चेतावनी ने ओ' ब्रियन को मुश्किल में डाल दिया था क्योंकि अब उसी की यह जिम्मेदारी थी कि उसे ही अभियोग सप्रमाण सिद्ध करना होगा नहीं तो जूरी क़ैदी को रिहा कर देगी। इसलिए अब अभियोजक ओ'ब्रियन को ही कोई न कोई तरीका ढूँढ़ना पड़ेगा।

लेकिन ओ' ब्रियन किसी दुविधा में नहीं था। वह जानता था कि वह मूनी को ऐसा 'दाग़' लगाएगा कि कोई भी उसकी किसी बात को नहीं सुनेगा, चाहे फिर वह कितना ही शोर क्यों न मचाता रहे। और ओ' ब्रियन के लिए ऐसा करना कुछ मुश्किल नहीं था, क्योंकि उसे पूरा यक़ीन था कि मूनी के बारे में इशारे अथवा व्यंग्य द्वारा इतना ही सुझाना कि वह पेशेवर अपराधियों में से एक 'महत्त्वपूर्ण व्यक्ति' था, उसकी हालत बिगाड़ देगा। यद्यपि शक्ल-सूरत से वह ज़रा भी 'महत्त्वपूर्ण अपराधी' दिखाई नहीं दे रहा था। गवाह की कुर्सी में बैठा हुआ मूनी मिट्टी की मूर्ति जैसा नज़र आ रहा था—उसके झुके-झुके कंधों पर चिपका हुआ-सा सफेद चेहरा और उसके हाव-भाव यह अभिव्यक्त कर रहे थे कि वह एक विवश परन्तु निडर व्यक्ति था और जैसे वह एक ऐसे जंगली पशु के समान था जिसे मज़बूत ज़ंजीर के साथ खूँटे से बाँध दिया गया था या माँद में खदेड़ दिया गया था। जब-जब उसकी नज़र मि० टट के कंधों के ऊपर से होती हुई एनी मर्फी की आँखों से मिलती थी तो उसके कठोर मुख पर मृदुलता खिल उठती थी।

ओ' ब्रियन की आँखों ने मूनी की इस नज़र को पकड़ लिया और उसकी त्यौरियाँ चढ़ गईं क्योंकि इस तरह की भावुकतापूर्ण बातों का प्रभाव जूरी पर अच्छा नहीं होता था। इसीलिए उसे जो कुछ करना है, जल्दी करना चाहिए। तत्काल वह अपनी जगह पहुँचा और उसने मूनी की ओर देखा।

"तुम 'गैस हाउस' इलाके के रहने वाले हो न ?" उसने पूछा।

"नहीं।" मूनी ने उत्तर दिया।

"क्या तुमने 'गैस हाउस गैंग' के बारे में कभी कुछ सुना है ?"

"हाँ सुना है, लेकिन मेरा उनसे कोई ताल्लुक नहीं है।"

"अच्छा, ऐसा है ! लेकिन मैंने यह तो नहीं पूछा था तुमसे—इतनी जल्दी अपने बारे में बताने की क्या ज़रूरत पड़ गई है ?"

"मुझे एतराज़ है", बीच में मि० टट ने कहा, "इस तरह का संकेत प्रतिवादी के लिए हानिकारक है।"

जज वाट्किंस ने आक्षेप रद्द कर दिया क्योंकि वे इस तरह की बारीकियाँ नापसन्द करते थे।

"प्रश्न ठीक है। जो बयान गवाह ने अपनी इच्छा से दिया है, उस पर जिरह की जा सकती है।"

मि० टट चुप हो गए।

"क्यों न कहता ?" मूनी ने सख्ती से जवाब दिया, "आखिर तुम भी तो जूरी को यही बताना चाहते हो कि मेरा उस 'गैंग' से ताल्लुक है।"

"शायद तुम ठीक कह रहे हो", 'शिकारी कुत्ते' ने, जूरी की ओर मुँह बनाकर देखते हुए, प्रतिवादी पर वार किया, "अच्छा, अब यह बताओ, कितनी बार दूसरे राज्यों में जेल काट चुके हो ?"

"कभी नहीं।" मूनी चिल्लाया, "तुम यह कभी साबित नहीं कर सकोगे।"

"ठीक है, शायद मैं यह सब सिद्ध नहीं कर सकूंगा।" ओ'ब्रियन ने तत्काल इस बात को मान लिया। "लेकिन", उसने व्यंग्यपूर्वक आगे कहा, "मैं इतना तो पूछ ही सकता हूँ कि तुमने 'न्यू जर्सी' में कितनी बार सेंधमारी की है ?"

मूनी ने अपनी कुर्सी के हाथों को इतनी ज़ोर से पकड़ लिया कि उसके अपने हाथ सफेद हो गए। उसने गुस्से से जज की ओर देखा।

"श्रीमान्", उसने विरोध किया, "क्या इस आदमी को यह सब कहने का अधिकार है।"

"प्रश्न का उत्तर दो", जज ने झिड़कते हुए कहा, "जिरह में कोई गलती नहीं है।"

"अब बोलो।" ओ' ब्रियन ने मज़ाक किया।

"मैंने कभी कोई सेंधमारी नहीं की है।"

"सेंधमारी नहीं तो और कौन-सा अपराध तुम करते रहे हो ?"

"मैंने कभी कोई अपराध नहीं किया है।"

मूनी अपनी कुर्सी में आगे की ओर झुक गया, उसके जबड़े कस गए और वह क्रुद्ध दृष्टि से यन्त्रणा पहुँचाने वाले की ओर देखने लगा।

"अच्छा, तुमने कभी कोई अपराध नहीं किया है", ओ'ब्रियन ने हँसते हुए कहा, "मैं तो समझा था कि अभी-अभी तुम 'सिंग-सिंग' जेल से आए थे।"

"लेकिन मैंने कोई अपराध नहीं किया था।"

"शायद तब भी तुम उतने ही निर्दोष थे जितने कि अब हो !"

"डेलानी ने मिकी मोरीसन को खुश करने के लिए मुझे चक्कर में डाला था।"

'शिकारी कुत्ता' क्रोध में तमतमा उठा।

"इस उत्तर को काट दिया जाए", जज वाट्किंस ने आज्ञा दी, "जो प्रश्न किया जाए उसका उत्तर दो। अपने आप कुछ मत कहो। अच्छा बताओ ! क्या तब तुम बेगुनाह थे ?"

"हाँ, मैं बेगुनाह था।" मूनी ने इतनी स्पष्ट सरलता के साथ घोषणा की कि ओ' ब्रियन ने सोचा कि अगर उसने यह सवाल उठाया ही नहीं होता, तो अच्छा रहता। वह जानता था कि उसका पलड़ा अभी तक भारी नहीं हो पाया था, यद्यपि उसका शत्रु-पक्ष कुछ कमज़ोर पड़ने लगा था। तभी डेलानी कमरे में दाखिल हुआ और वह एक बड़ी-सी किताब लेकर उसके पास आया।

"सुनिए—" उसने किताब देते हुए, धीरे से ओ' ब्रियन को बताया, "इससे ज़रा पूछिए तो सही—क्या इसने पिछली दिसम्बर के महीने में डंडा मारकर, हडसन स्ट्रीट में 'शूगर- ग्रेडी की नाक नहीं तोड़ी थी। या कहिए कि क्या उस गिरोह में शामिल नहीं था जिसने इंजन हाउस के पीछे इन्स्पेक्टर बोयले के साथ मार-पीट की थी ?"

'शिकारी कुत्ते' की आँखें चमक उठीं। उसने अब से पहले भी कारगर सवाल किए थे लेकिन मूनी ने दृढ़तापूर्वक सब बातों को झूठा बताया था

किन्तु जब जूरी ने पुलिस अधिकारी और ओ' ब्रियन को बात-चीत करते देखा तो उन्हें ऐसा लगा जैसे कि उनके सामने एक भयंकर अपराधी बैठा था। मि० टट के म्लान होठों पर व्यंग्यपूर्ण मुस्कान नाच रही थी और तभी उन्होंने यह दृढ़ संकल्प किया था कि वे भी उस नासमझ ओ' ब्रियन से गिन-गिनकर बदला लेंगे।

लेकिन 'शिकारी कुत्ता' मनुष्य के रक्त की गन्ध सूँघते ही उन्मत्त हो हो उठा था और उसने यह ठान ली थी कि वह मूनी के अंग-अंग को चीर डालेगा। जैसे स्पेनिश अन्वेषक उल्लासपूर्ण विद्वेष के साथ तमतमाते हुए गर्म चिमटों से आहत व्यक्ति के धड़कते दिल को नोच लेने के लिए तैयार हो जाया करते थे, उसी तरह उस 'शैतान' ने भी बहुत ही निर्लिप्त भाव से, अपने हाथ में 'अमरीका के पेशेवर अपराधी' पुस्तक पकड़ ली और मस्ती से मूनी के आस-पास मँडराने लगा। पुस्तक उसके हाथों में कुछ इस तरह से थी कि जूरी आसानी से उसके शीर्षक को पढ़ सके और फिर वह उस पुस्तक के एक पृष्ठ पर इस तरह दृष्टिपात करने लगा जैसे कुछ ढूंढ़ रहा था। फिर उसने ऐसा दिखावा किया कि जो कुछ वह ढूँढ़ रहा था, वह उसे मिल गया था और तब उसने अत्यन्त विश्वासपूर्वक, अभागे क़ैदी के सामने नैतिक मृत्यु की कुर्सी बिछाते हुए, प्रश्न किया—

"क्या तुमने 6 सितम्बर, 1927 को 'रेड्' बर्क उर्फ 'रोच' और टोनी वली अर्थात् 'टोनी ग्रीज़र, और 'डायनेमाइट' टोम मीगन के साथ मिलकर, 'रावे', न्यू जर्सी में अमरीकन रेलवे एक्सप्रेस की तिजोरी तोड़कर छः हज़ार डालर नहीं चुराए थे?"

इस बात में अब कोई सन्देह नहीं बचा था कि ओ' ब्रियन ने जूरी को प्रभावित कर दिया था।

जैसे जॉन हैमकोप ने 'स्वतन्त्रता के घोषणा-पत्र' पर बहुत बड़े-बड़े अक्षरों में हस्ताक्षर किए थे ताकि बिना ऐनक लगाए ही उन अक्षरों को पढ़ा जा सके उसी तरह पैडी मूनी ने इतने जोर से चिल्लाकर इस बात का खंडन किया था कि मुर्दे भी उसकी चीख़-पुकार सुनकर जाग उठे होंगे।

"यह सरासर झूठ है।" वह उछला और उसने आक्रोशपूर्वक ओ' ब्रियन की ओर मुक्का तानकर, चिल्लाते हुए कहा, "मैं इन व्यक्तियों को

बिलकुल नहीं जानता—मैं 'रावे' में कभी नहीं रहा।"

"यह तो तुम कहते हो !" शिकारी कुत्ते ने ताना देते हुए कहा, "लेकिन शायद तुम्हें मालूम नहीं है—'रोच' और 'ग्रीजर' ने मुकदमे के दौरान यह गवाही दी थी कि तुम उनके साथ मौजूद थे।"

"ज़रा रुको", जज वाट्किंस ने बात काटते हुए कहा, "तुम तब तक कोई जवाब मत दो, जब तब तुम्हारा वकील कोई एतराज़ नहीं कर लेना है। मि० टट, क्या आप कोई प्रश्न करेंगे ?"

लेकिन मि० टट ने संजीदगी से गर्दन हिलाकर मना कर दिया और कहा, "मैं चाहता हूँ वही जवाब दे।"

"मैं यह सब बातें नहीं जानता।" मूनी ने विरोध किया। एक बार फिर उच्च आसन की ओर देखते हुए उसने ज़ोर से कहा, "श्रीमान् ! वह मुझे चक्कर में डालना चाहता है···मैं···"

जज वाट्किंस ने हथौड़ी बजाई।

"तुम्हें भी सफाई देने का मौक़ा मिलेगा।" जज ने रुखाई से कहा। ऐसा लगता था जैसे उन्हें भी यह विश्वास हो गया था कि वह एक भयंकर अपराधी था।

"सिर्फ इतना ही।" ओ' ब्रियन ने ऐलान किया और विजेता जैसी शान के साथ वह पुस्तक जूरी-कक्ष के सामने बड़े दिखावटी ढंग से रख दी। प्रतिवादी का सत्यानाश हो चुका था और जो कसर बाकी भी बची थी, वह 'रेड्' बर्क के बारे में उठाए गए प्रश्न ने पूरी कर दी थी। ओ' ब्रियन आराम से अपनी कुर्सी पर आ बैठा। अब बाकी ही क्या बचा था ? कक्ष में बैठे-बैठे ही जूरी दोष स्थिर कर सकती थी। वृद्ध टट अब क्या कर सकते थे ? सिवाय इस बात के कि अपने मुवक्किल, जिसे पहले ही झूठा सिद्ध किया जा चुका था, से कुछ और झूठ बुलवा लेते !

परन्तु वृद्ध वकील ने ऐसा कुछ नहीं किया, बल्कि वे बोले, "मि० मूनी, अभी आपसे यह प्रश्न किया गया था कि क्या आप पहले भी जेल काट चुके हैं तो आपने इस बात को मान लिया था। अब आप यह बतलाइए कि किस पर हमला करने के जुर्म में आपको सज़ा हुई थी ?"

"मिकी मोरीसन।"

"इस अपराध के लिए किसने आपको गिरफ्तार किया था ?"

"पुलिस अधिकारी डेलानी ने।"

"आपका मतलब उसी पुलिसमैन से है जिसने अभी हलफ़िया बयान दिया है कि उसे तुम्हारे पास से एक पिस्तौल मिला था ?"

"जी, श्रीमान्।"

मि० टट के होंठ कस गए।

"ठीक है।" उन्होंने कहा और उसकी बदनामी को दूर करने का कोई प्रयत्न नहीं किया। मूनी के कठघरे से नीचे उतर आने के बाद उन्होंने जज वाट्किंस को सम्बोधित करते हुए कहा—

"श्रीमान्, मेरी इच्छा थी कि मैं प्रतिवादी की ओर से उसके भूतपूर्व मालिक को बयान देने के लिए यहाँ बुलाता। लेकिन जो रुख मुकदमा पकड़ चुका है उसे देखते हुए, इस गवाह को पेश करने की अब कोई ज़रूरत नज़र नहीं आती।" और वे एक लम्हे के लिए रुके। ओ' ब्रियन को ऐसा लगा जैसे वृद्ध वकील अपने मुवक्किल के जुर्म को मानने ही वाले थे, लेकिन उसे बहुत आश्चर्य हुआ, जब उसने मि० टट को यह कहते हुए सुना : "लेकिन एक बात की ओर मैं अदालत का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ। अभियोजक ने एक भरा हुआ पिस्तौल अदालत को दिखाते हुए कहा है कि वह मेरे मुवक्किल के पास से मिला था और उस पर यही एक अभियोग लगाया गया है। फिर भी ज़िला अटार्नी ने, न जाने क्यों—वह पिस्तौल अभी तक प्रमाण के रूप में प्रस्तुत नहीं किया है। इस आधार पर कि वह पिस्तौल अभी तक केवल दिखाया गया है, मैं अपने मुवक्किल को छोड़ देने की माँग करता हूँ।"

ओ' ब्रियन ने सुस्ती से उठते हुए कहा।

"ज़रा भूल हो गई, श्रीमान्। मैं पिस्तौल को प्रमाण के रूप में अब पेश करता हूँ।"

"मुझे एतराज़ है।" मि० टट ने ज़ोर से कहा, "पहले यह रिकार्ड करना ज़रूरी होगा कि यह पिस्तौल किसके पास था, किसने अदालत में पेश किया और हू-बहू उसी हालत में है, जिस हालत में पाया गया था।"

"वैधानिक दृष्टि से मि० टट ठीक हैं।" श्रीमान् जज ने समर्थन किया।

'शिकारी कुत्ते' के होंठ काँप उठे।

"आज सुबह ही पुलिस अधिकारी डेलानी ने मुझे यह पिस्तौल दिया था और तब से यह मेरी जेब में है। यह उसी हालत में है जिस हालत में यह मुझे दिया गया था। अब खुश हैं आप ?"

"तब तक नहीं, जब तक आप कठघरे में आकर यह सब नहीं कहते।" वृद्ध वकील ने ओ' ब्रियन की ओर एकटक देखते हुए कहा। अभियोजक के शरीर में प्रचण्ड सनसनी की लहरें उमड़ने लगी थीं।

"यदि मि० टट आग्रह करते हैं तो आप को हलफ़ उठाना ही पड़ेगा," श्रीमान् जज ने निर्णय दिया, "लेकिन किसी वकील से ऐसी माँग करना कुछ अनोखी बात है।"

"यह मुकदमा भी कुछ अनोखा ही है, श्रीमान् !" मि० टट ने बिना किसी झिझक के तत्काल उत्तर दिया।

ओ' ब्रियन ने बेचैनी से पाँव हिलाए। उसे मि० टट के सामने गवाह के रूप में आना एकदम नापसन्द था, लेकिन अब किया भी क्या जा सकता था ?

पिस्तौल हाथ में लिए हुए वह कठघरे में पहुँचा। सौगन्ध उठा लेने के बाद, बगैर बैठे ही, काँपती हुई आवाज में उसने अपनी बात दोहराई।

"क्या आप जिरह करेंगे ?" जज वाट्किंस ने पूछा।

"जरूर, श्रीमान् !" मि० टट ने उत्तर दिया। अदालत में चारों ओर खामोशी छाई हुई थी और सब उस वृद्ध जादूगर का करतब देखने के लिए बेक़रार हो रहे थे।

"क्या आप इस काउंटी के एक लोक अभियोजक हैं ?"

"हाँ, ठीक है।" 'शिकारी कुत्ते' ने सख़्ती से कहा।

"और आपने यह सौगन्ध उठाई है कि आप क़ानून की मर्यादा की रक्षा करते रहेंगे ?"

"हाँ।"

"क्या आपका कर्त्तव्य यही है कि आप क़ानूनी ढंग से, क़ानूनी प्रमाण प्रस्तुत कर अपराधियों के विरुद्ध अभियोग सिद्ध करें ?"

"बेशक।" ओ' ब्रियन की बेचैनी बढ़ रही थी।

लेकिन मि० टट के अगले प्रश्न ने कुछ देर के लिए उसकी चिन्ता को शान्त कर दिया।

"आपका जन्म कहाँ हुआ था ?"

"न्यूयार्क शहर में।" ओ' ब्रियन ने तैश में आते हुए उत्तर दिया।

जज वाट्किंस को यह प्रश्न ठीक नहीं जँचा क्योंकि मि० टट की कार्यवाही 'हायले' के अनुसार नहीं थी।

"क्या गैस हाउस इलाक़े में ?"

जूरी के एक सदस्य की हँसी का अस्पष्ट-सा स्वर सुनाई दिया। श्रीमान् जज ने नर्मी से झिड़कने के लिए हाथ उठाया।।

"क्या यह प्रश्न प्रासंगिक है ? आप अगर बात को ग़लत न समझें, तो एक बात मैं ज़रूर कहूँगा कि आपका यह प्रश्न अनावश्यक मालूम देता है।"

मि० टट झुके।

"यह जिरह है, श्रीमान् !" उन्होंने उत्तर दिया, "फिर भी, मैं इस प्रश्न को वापस लेता हूँ। अच्छा तो मि० ओ' ब्रियन, क्या आप मिकी मोरीसन को जानते हैं ?"

"हाँ" 'शिकारी कुत्ता' गुर्राया।

"आपने अपने 'सहायक ज़िला अटार्नी' बनने के सिलसिले में कितना धन उसे दिया था ?"

ओ' ब्रियन के चेहरे का रंग पहले लाल हुआ और फिर सफेद पड़ गया। जज वाट्किंस ने हथौड़ी बजाई।

"इतना ही काफी है। जूरी इस प्रश्न की ओर ध्यान नही दे।" जज ने कहा।

"जैसी इच्छा श्रीमान् की !" मि० टट ने शान्तिपूर्वक कहा, "मुझे भी इस गवाह की विश्वसनीयता पर उसी तरह प्रहार करने का अधिकार है जिस तरह इन साहब को मेरे मुवक्किल पर प्रहार करने का अधिकार था। फिर भी मैं इस प्रश्न को दूसरी तरह करता हूँ।

"क्या आपने सहायक ज़िला अटार्नी बनने के सिलसिले में माइकल मकगुर्क की मार्फत मिकी मोरीसन को छः हज़ार डालर नहीं दिए थे ?"

"नहीं," ओ' ब्रियन चिल्लाया, "और आप कैसे इतना सब जानते हैं? श्रीमान्, आप कैसे इस प्रकार मेरा अपमान होने दे रहे हैं?"

विद्वान जज के हाव-भाव से ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे मि० टट के प्रश्नों से वे भी उलझन में पड़ गए थे।

"क्या आप 'रेड्' बर्क उर्फ 'रोच' और टोनी सेवली अर्थात् 'ग्रीज़र' और 'डायनेमाइट' टोम मीगन को जानते हैं?"

"मि० टट," जज वाट्‌किंस ने आपत्ति उठाते हुए कहा, "यह ठीक है कि आपको यह अधिकार प्राप्त है कि आप गवाह की विश्वसनीयता को परखें, लेकिन कुछ बातें मुझपर भी निर्भर करती हैं।"

"मैंने बिलकुल वही सवाल किया है श्रीमान्! जो मेरे मुवक्किल से किया गया था।" मि० टट ने शान्तिपूर्वक आगे कहा, "ऐसा सुनते हैं कि क़ानून की दृष्टि में तो सभी बराबर होते हैं।"

"अगर आप आग्रह करते हैं तो गवाह आपके प्रश्न का उत्तर दे सकता है," श्रीमान् जज ने बात मानते हुए कहा, "लेकिन ऐसी बातोंकी कुछ सीमा तो होनी ही चाहिए।"

"श्रीमान्, चन्द सवाल और हैं। मि० ओ' ब्रियन, क्या आप कभी किसी जुर्म के सिलसिले में कोई सज़ा भुगत चुके हैं?"

"नहीं।" अभियोजक ने हिम्मत के साथ जवाब दिया। वह मुर्दे के समान सफेद हो गया था और उसे अपना सर्वनाश साफतौर से दिखाई देने लगा था।

"क्या आपने कभी कोई अपराध किया है?"

ओ' ब्रियन का साँस रुकने लगा।

"मैं इस प्रश्न का उत्तर देने के लिए आग्रह नहीं करूँगा!" मि० टट ने उसे मुआफ करते हुए कहा।

"क्या आपके पास यह प्रश्न करने का कोई आधार है?" श्रीमान् जज ने तेज़ आवाज़ में पूछा।

मि० टट पहले जूरी और बाद में जज वाट्‌किंस की ओर देखकर मुस्क-राए।

"श्रीमान्," उन्होंने बड़े ही आकर्षक ढंग से उत्तर दिया, "मेरे विचार

में, मैं और आप शायद ऐसी पीढ़ी से सम्बन्ध रखते हैं जिसकी न्यायपरता पुराने ढंग की है। इसीलिए मैं यह स्वीकार करता हूँ कि अभी मैंने जितने भी प्रश्न गवाह के सामने रखे थे, उनका कोई आधार नहीं था। लेकिन क़ानून की यह माँग थी कि मैं वे प्रश्न ज़रूर करता, चाहे बाद में मुझे यह क्यों नहीं मानना पड़ता कि वे प्रश्न सच्चे नहीं थे! लेकिन, श्रीमान्", वृद्ध का स्वर ऊँचा उठता गया और गूँजने लगा, "मैं इस गवाह की विश्वसनीयता पर आक्रमण करना नहीं छोड़ूँगा। मैं अन्तिम प्रश्न और पूछूँगा और इसी प्रश्न पर मेरे मुवक्किल की रिहाई निर्भर करती है। इस प्रश्न का उत्तर गवाह अपनी इच्छानुसार दे—चाहे उत्तर में 'हाँ' कहे या 'नहीं' कहे, लेकिन जो कुछ वह कहे, उसे सरकारी तौर पर रिकार्ड कर लिया जाए। जिससे बाद में गवाह अपने उत्तर की सत्यता से इन्कार या उस पर सन्देह प्रकट नहीं कर सके। और उसके बाद मेरे मुवक्किल के बारे में जूरी अपना फैसला सुना दे।"

जज वाट्किंस बहुत ही ध्यानपूर्वक मि० टट की ओर देख रहे थे। ओ' ब्रियन की मायूस आँखों के सामने अदालत में उपस्थित व्यक्तियों के चेहरे, समुद्र की लहरों की तरह उमड़ने लगे थे। वह स्वयं ही जाल में फंस गया था।

'श्रीमान्!" मि० टट ने, कठघरे में दयनीय स्थिति में झुककर खड़े हुए व्यक्ति की ओर दोषारोपण करने के लिए उंगली उठाई और गरजते हुए कहा, "श्रीमान्, जब आपने यह पुस्तक अपने हाथ में पकड़ रखी थी", उन्होंने 'जोन्स' की पुस्तक 'अमरीका के पेशेवर अपराधी' उठाई, "और इस पुस्तक में से कुछ पढ़ने का दिखावा कर रहे थे—तब आप जो कुछ पढ़कर सुना रहे थे, वह इस पुस्तक में मौजूद है या नहीं? बोलिए, हाँ या नहीं?"

चारों तरफ खामोशी छा गई।

उस खामोशी में अदालत की दीवार-घड़ी की टिक-टिक साफ सुनाई दे रही थी।

"टिक-टक! टिक-टक! टिक-टक! हाँ—नहीं! हाँ— नहीं! हाँ—नहीं!" ये ध्वनियाँ सारे वातावरण में गूंज रही थीं।

ओ' ब्रियन काँप उठा और उसकी आँखों के सामने अन्धकार छा गया।

"टिक-टक ! टिक-टक !" दीवार-घड़ी की ध्वनि गूंज रही थी।

"हाँ—नहीं! हाँ नहीं !" ओ' ब्रियन की शिराओं में उमड़ती हुई सनसनी जैसे ये स्वर बार-बार प्रतिध्वनित हो रहे थे।

उसके सामने फैले हुए अन्धकार में से मोटी-मोटी मकड़ियाँ उस पर झपट रही थीं—कुछ उसे चिमटती जा रही थीं। यदि वह 'हाँ' कह देगा तो वह बूढ़ा भेड़िया उसे कच्चा चबा जाएगा। वह पुस्तक यह सिद्ध कर देगी कि उसने अदालत के सामने झूठ बोला था और उसे जेल भेज दिया जाएगा। उसका सिर पसीने से तरबतर हो गया। यदि वह 'नहीं' कहेगा, तो यह भी उतना ही बुरा होगा, क्योंकि इससे यह सिद्ध हो जाएगा कि मूनी को फँसाने के लिए वह झूठी बातें कह रहा था।

इस विपदा में डूबते हुए उसने एक तिनके का सहारा लेने की बात सोची कि वह इस प्रश्न का उत्तर ही नहीं दे और कहे कि इस प्रश्न के कारण उसकी मानहानि अथवा उस पर दोषारोपण होने की संभावना है, इसलिए वह उत्तर नहीं दे सकता ! लेकिन वह संभल गया, नहीं तो उसकी और भी हालत खराब होती। नहीं—उसे जवाब देना ही चाहिए।

'टिक-टक ! हाँ—नहीं ! टिक-टक ! क्या कहे—क्या नहीं !'

उसने जीभ फिराकर अपने होंठ गीले किये। उसे कई बार खाँसी आई और वह बेचैनी से अपना रूमाल टटोलता रहा। आखिर उसने ऐसी कौन-सी बात की थी जो न्यायसंगत नहीं थी ? उसने मूनी पर यह अभियोग तो लगाया नहीं था कि वह एक पेशेवर अपराधी था। उसने केवल कुछ प्रश्न उठाए थे और प्रश्न करना किसी भी क़ानून के अनुसार अपराध नहीं होता। आप जैसे प्रश्न करना चाहें, कर सकते हैं और वही उसने किया था—यह सोचते ही आशा की एक किरण उसके मस्तिष्क में छाए हुए विचार-शून्यता के अंधकार में जगमगा उठी। शायद अब वह बच जाएगा। लेकिन मि० टट का विचार आते ही, फिर चारों ओर अंधकार छा गया और वह पुनः विचार-शून्यता की दलदल में जा गिरा। जो कुछ वह कहेगा, वही तहरीर हो जाएगा और वह 'हाँ' और 'नहीं' के दो पाटों के बीच हमेशा पिसता रहेगा। समुद्र के बूढ़े व्यक्ति की तरह वृद्ध टट भी उसकी गर्दन पर चढ़ बैठा था और उसकी

गर्दन को जकड़ती हुई दो टाँगें उसका दम घोंट रही थीं।

"नहीं।" अंततः वह भर्राई हुई आवाज़ में बड़बड़ाया। उसकी आवाज़ इतनी धीमी और अस्पष्ट थी कि अदालत में बैठे हुए उत्सुक जनसमुदाय को मुश्किल से ही सुनाई दी होगी, "मैं पुस्तक में से नहीं पढ़ रहा था।"

उसने किसी प्रहार की आशंका में अपना सिर झुका दिया।

बैंचों पर बैठे हुए जन-समुदाय की धिक्कारती हुई सिसकारियाँ उस पर प्रहार करने लगीं। कप्तान फेलन ने भी इस शोर को बन्द करने का कोई प्रयास नहीं किया।

"तुम्हारा मतलब है—" जज वाट्किंस ने शंकाग्रस्त वाणी में कहना चाहा, लेकिन फिर घृणापूर्वक उसकी ओर से अपना मुँह मोड़ लिया।

मि० टट जूरी की ओर एकटक देख रहे थे। भगवान् की कृपा से उनका दुश्मन हार चुका था।

"श्रीमान्," उन्होंने तिरस्कारपूर्ण मुस्कराहट के साथ जूरी की ओर देखते हुए कहा, "अब आप चाहें तो मेरे मुवक्किल को सज़ा दे सकते हैं।"

सब हैरान थे। चारों ओर छाई हुई ख़ामोशी को आखिरकार जूरी-प्रमुख ने तोड़ा।

"ऐसा कैसे किया जा सकता है ?" उन्होंने विस्फोट करते हुए कहा, "हमें तो ओ' ब्रियन को दण्ड देना है।"

चारों ओर वाह-वाह होने लगी और उस शोरगुल में बूढ़े डफर्टी की मद्धिम-सी गुनगुनाहट सुनाई दी, "ध्यान से सुनिए—प्रतिवादी निर्दोष है और अदालत का यही फैसला है।"

वकील की गवाही

आफिस में अधिक काम होने के कारण, दिन भर के थके हुए मि० एफ्रेम टट, जब शहर के पश्चिमी भाग में स्थित 23 वीं गली के अपने पुराने ढंग के मकान में पहुँचकर अपनी लाइब्रेरी में अँगीठी के सामने, आरामदेह और नर्म झूले में बैठे ही थे कि उतने में ही उन्हें मकान के निचले भाग से आती हुई चीख़-पुकार सुनाई दी। उस चीख़-पुकार की गूँज सुनकर किसी का भी दम खुश्क हो सकता था।

"बचाओ ! बचाओ ! हे भगवान् ! हे ईसामसीह ! बचाओ ! खून··· बचाओ !" रुँधे हुए गले से निकला हुआ वह क्रंदन किचन की ओर से आ रहा था और निश्चित रूप से वह आवाज़ नीग्रो बावर्चिन, मैंडी, की थी।

किचन मकान के पिछले भाग में दो मंजिल नीचे था। नीचे दुर्घटना क्या हुई थी—चोरी हुई थी, आग लगी थी, हत्या हो गई थी या किसी के हाथ-पाँव काटे जा रहे थे—अंदाज़ा लगाना मुश्किल ही था। लेकिन फिर भी, मि० टट के लिए इतना ज़रूरी हो गया था कि वे शीघ्र ही कोई कार्यवाही करते। उन्होंने तुरन्त खिड़की खोली और ज़ोर-जोर से चिल्लाना शुरू कर दिया, "पुलिस···बचाओ ! बचाओ···पुलिस !"

उन्होंने आग कुरेदनेवाली लोहे की छड़ी उठा ली और जैसे ही वे पहली मंजिल पर बने हुए हॉल में पहुँचे थे कि दो पुलसमैन उस शोर-गुल को सुनकर, तेज़ी से उनसे पहले ही, कुछ पूछ-ताछ किए बग़ैर, किचन की ओर जाने वाली सीढ़ियाँ उतरने लगे। गली की ओर वाले दरवाज़े को खुला हुआ देखकर उन्हें पूरा विश्वास हो गया कि ज़रूर उनके मकान में चोरी हो गई थी और वे भी जल्दी से किचन की ओर बढ़ चले।

"बचाओ। बचाओ ! हे भगवान ! हे ईसामसीह ! तुम्हारी बड़ी मेहरबानी है।" हाँफती हुई मैंडी की विलाप करती हुई कर्कश वाणी ऐसी लग रही थी जैसे किसी इंजन के भोंपू का दम घोंटा जा रहा था और विवश भोंपू गम्भीर चीत्कार कर रहा था।

दोनों पुलिस अधिकारियों ने अपने-अपने पिस्तौल वापस पेटियों में रख लिए थे। तब तक मि० टट भी वहाँ पहुँच चुके थे।

मैंडी, जिसका वज़न 250 पौण्ड था, ने अपने मोटे और भारी-भरकम शरीर पर सफेद रंग वाला रात्रि-गाउन लपेटा हुआ था और उसकी रात्रि-टोपी में सिलवटें पड़ी हुई थीं, और वह फटी-फटी आँखों से किधर भी नहीं देखती हुई, दोनों हाथ ऊपर की ओर उठाए खड़ी थी। किचन की मेज़ पर एक थैला पड़ा था, जिसमें से मेमने की टाँग का एक कुछ खाया हुआ टुकड़ा लटक रहा था और समीप ही दूध की एक बोतल, टमाटर-सूप का डिब्बा, कुछ डबल रोटी, एक नारंगी और कुछ केले बिखरे पड़े थे। नीचे फर्श पर एक मरियल-सा, धँसे हुए गालों और आँखों वाला एक नवयुवक पड़ा था जिसका साँस नहीं चल रहा था। उसके दोनों हाथ फैले हुए थे और वह बेजान-सा, मुर्दे की तरह चारों खाने चित्त पड़ा हुआ था।

"अब डरने की कोई बात नहीं है। हाथ नीचे कर लो।" पहले पुलिस-मैन ने उस औरत से सवाल किया, "शोरगुल किस लिए मचा रही हो ?"

मैंडी का दिल बेतहाशा धड़क रहा था। वह बड़ी मुश्किल से संभल-संभलकर एक कुर्सी पर बैठ गई।

"क्या हुआ है, मैंडी ?" मि० टट ने हाँफते हुए पूछा।

"हे भगवान ! मेरे साथ कभी पहले ऐसा नहीं हुआ। जैसे ही मैं 'सपनों की किताब' लेने नीचे आई···तो रोशनी देखकर मैं डर गई। यह आदमी पिस्तौल लेकर मुझ पर झपट पड़ा और कहने लगा, 'चुप रहो। शोर मचाया तो···देख लो···' पर मैं क्या करती, मेरी चीख़ निकल गई। ईसामसीह ने मेरी सुन ली और मुझे बचा लिया। उसने कुछ ऐसा जादू किया···यह आदमी जहाँ था, वहीं ढेर हो गया।"

पहले पुलिसमैन ने उस आदमी के शरीर को टटोला और फर्श पर इधर-उधर देखा।

"इसके पास पिस्तौल नहीं है," उसने ऐलान किया, "शायद इसने डराने के लिए इसे इस्तेमाल किया हो,"—फर्श पर पड़ी हुई भोजन-मेज़ की कलईदार छुरी उठाकर सबको दिखाते हुए, उस आदमी के दिल की धड़कन सुनने के लिए उसके सीने के पास कान लगाकर, उस पुलिसमैन ने आगे

कहा, "यह मरा भी तो नहीं है···अजीब बात है ! ज़रूर इसे चक्कर-वक्कर आ गया है।" और उसने अपनी जेब से नोट-बुक और पेंसिल निकाली।

"तुम्हारा नाम क्या है ?"

"मिरांडा वाशिंगटन।"

"यहाँ बावर्ची का काम करती हो ?"

"हाँ, मैं बावर्चिन हूँ।"

"जब यह आदमी तुम्हारी ओर बढ़ा तब तुम क्या कर रही थीं ?"

" 'सपनों की किताब' ढूँढ़ रही थी।"

" 'सपनों की किताब' !"

"मुआफ कीजिए।" मि० टट, जो तब तक संभल चुके थे, ने बीच में बोलते हुए कहा, "देखिए, यह मेरा घर है। मैंडी मेरे यहाँ भोजन बनाती है। आज रात का भोजन मुझे घर पर नहीं करना था, इसीलिए मेरे लिए दरवाज़ा खुला छोड़कर वह सोने चली गई। लेकिन सोने की तैयारी कर लेने के बाद उसे यह खयाल आया कि वह अपनी 'सपनों की किताब' नीचे ही छोड़ आई थी, तो उसे लेने के लिए यहाँ नीचे किचन में आना ज़रूरी था। मैंडी का सपनों में बहुत ज़्यादा विश्वास है यूँ 'फारो' (मिस्र देश के प्राचीन राजाओं) के बारे में वह अधिक जानती है और उसने स्वप्नों की मीमाँसा करने वाले 'फ्रायड' का नाम तक नहीं सुना है, लेकिन सपनों की पूजा करती है। हाँ, तो इसी बीच इस आदमी ने देखा कि मकान के निचले भाग में रोशनी नहीं है, तो यह झट से अंदर घुस आया। जब अचानक मैंडी किचन में आई तो इसने घबराकर, इस कलईदार छुरी से उसे डराना चाहा और भयभीत मैंडी समझ बैठी कि उसके हाथ में पिस्तौल था। क्यों मैंडी, क्या यही बात थी ?"

"हाँ, यही बात थी।" मैंडी ने स्वीकार किया, "और भगवान् ने इसे वहीं ढेर कर दिया !"

अभी तक फर्श पर पड़ा हुआ वह व्यक्ति ज़रा-भी नहीं हिला-डुला था। दूसरे पुलिसमैन ने, जो पहले वाले से कुछ लम्बा था, मैंडी से कहा, "हाँ, तो अब तुम आराम से सपनों की दुनिया में वापस चली जाओ।"

श्रौर श्रपने साथी से बोला, "पैट ! तुम ज़रा क़ैदी को सँभालो, इतनी देर में मैं पुलिस स्टेशन इत्तला करता हूँ श्रौर जल्दी से वैगन भेजने लिए कहता हूँ," श्रौर फिर मि० टट की श्रोर देखते हुए कहा, "क्या श्रापके यहाँ टेलीफोन है ?"

"हाँ, ऊपर है।" मि० टट ने उत्तर दिया।

पहले पुलिसमैन ने फर्श पर पड़े हुए श्रादमी की कमीज़ के बटन खोले। उसकी कमीज़ में कालर नहीं था श्रौर कई दिनों की बढ़ी हुई दाढ़ी के नीचे उसकी गर्दन की नसें, बादबान के कपड़े पर उभरी हुई डोरियों की तरह दिखाई दे रही थीं। वह पुरानी घिसी-घिसाई पतलून श्रौर काला-फटा हुश्रा स्वीटर पहने हुए था। उसके दोनों पाँवों में जुराबें नहीं थीं श्रौर फटे हुए जूतों में से जहाँ-तहाँ उसके नंगे पाँव दिखाई दे रहे थे। उसकी जेबों की तलाशी लेने पर सिर्फ स्प्रिंग का एक टुकड़ा, श्रध-जली सिग्रेट श्रौर दो सल्फर-माचिसें निकलीं।

"इसे होश में लाने के लिए हमें कुछ करना चाहिए। मेरा ख्याल है, इसे थोड़ी ब्राण्डी पिलाना श्रच्छा रहेगा।" मि० टट ने कहा।

"डॉक्टर लेविन खुद सँभाल लेगा, ज़रा वैगन श्रा जाने दीजिए।" पुलिसमैन ने वहाँ पड़े एक केले को छीला श्रौर दो कौर में ही उसे खाते हुए उत्तर दिया, "यह तो इसके लिए श्रच्छा ही हुश्रा, जो इसके पास पिस्तौल नहीं था। नहीं तो रात के वक्त घर में घुस श्राने श्रौर ख़तरनाक हथियार रखने के जुर्म में इसे पहली डिग्री की सेंधमारी करने की सज़ा मिलती। श्रौर जज इसे उम्र-भर के लिए जेल भेज देता। लेकिन श्रब तो यह सिर्फ दूसरी डिग्री की सेंधमारी बनकर रह गई है श्रौर इसके लिए इसे सिर्फ दस साल जेल की हवा खानी पड़ेगी। नहीं, ऐसा नहीं है ! यह तो सचमुच पहली डिग्री का श्रपराध है—इस श्रादमी के पास भी तो ख़तरनाक हथियार था। छुरी भी तो ख़तरनाक हथियार मानी जाती है श्रौर बार्वाचन के बयान के मुताबिक इस श्रादमी ने उसे डराया भी तो था।" उसने चुटकी बजाते हुए श्रागे कहा, "ठीक है, इसे श्रब सारी जिन्दगी जेल की हवा खानी पड़ेगी।" श्रौर उसके मुख पर सन्तोष की छटा झलक श्राई।

मि० टट ने बेहोश श्रादमी के पीले, सूखे होंठों में ब्राण्डी के क़तरे डालते

हुए सोचा—सारी उम्र जेल में सड़ते रहने की अपेक्षा क्या इसके लिए मर जाना ही बेहतर नहीं होगा !

○ ○ ○

"तो क्या आप यह मुकदमा वापस लेना चाहते हैं ?" हाइरम टी० बाकस, जो न्यूयार्क काउन्टी के कार्यकारी जिला अटार्नी थे, ने महोगनी की मेज के किनारे पर सँभालकर सिगार रखते हुए, एक अभियोग-पत्र उठा लिया जिस पर 'न्यूयार्क राज्य बनाम कप्लान' लिखा हुआ था।

वह रूखे बालों वाला लम्बा व्यक्ति था जिसे अपनी शक्ल-सूरत अब्राहम लिंकन के समान होने का गुमान था।

"आपकी बात ठीक नहीं है," मि० टट ने उत्तर दिया, "क्योंकि इस प्रतिवादी की पुलिस कोर्ट में पेशी हुए बिना ही महा न्यायसभा ने उसे दोषी ठहराया है जबकि सच्ची बात तो यह है कि इस मामले में अपराधी के विरुद्ध कोई भी शिकायत करने वाला नहीं है—कम-से-कम मैंने शिकायत नहीं की है।"

"इस मुकदमे में न्यूयार्क राज्य वादी है," मि० बाकस ने प्रभावशाली ढंग से उत्तर दिया, "हाँ, आपका नाम इस मुकदमे में मुख्य-गवाह के रूप में ज़रूर शामिल है और आपकी ज़िम्मेदारी भी उतनी ही है जितनी कि सरकार की।"

"इस बारे में मैं आपसे सहमत नहीं हूँ। अगर मेरी राय ली जाती तो इस प्रतिवादी के विरुद्ध मैं कभी भी कोई शिकायत नहीं करता।"

कार्यकारी ज़िला अटार्नी ने सिगार उठा लिया और वह घूमने वाली कुर्सी में पीछे की ओर झुक गया।

"नागरिक के नाते भी तो आपका कुछ फर्ज़ है ? महा न्यायसभा ने सारी गवाहियाँ जिनमें आपकी गवाही भी शामिल थी, सुनकर और सोच-विचारकर ही, इस व्यक्ति को दोषी ठहराया है। इसका सीधा और साफ मतलब है कि यह एक ख़तरनाक व्यक्ति है और इसे सज़ा मिलनी ही चाहिए। आप ही सोचिए, अगर मैं इस मुकदमे को जान-बूझकर खारिज़ करवाता हूँ या इसकी पैरवी नहीं करता, तो लोग क्या कहेंगे ?"

मि० टट बहुत ही ज्यादा नर्मी से मुस्करा दिए।

"लोग कहेंगे—आप एक बुद्धिमान और ईमानदार राज्याधिकारी हैं और आपको इंसाफ और इंसानियत दोनों की इज़्ज़त करना आता है।"

"मेरा कर्त्तव्य है कि मैं क़ानून की मर्यादा की रक्षा करूँ। जब एक न्यायसभा एक आदमी को अपराधी घोषित कर चुकी है, तो मैं कुछ नहीं कर सकता। अगर कोई कुछ दया कर सकता है तो वह पीठासीन जज ही करेगा।"

मि० टट ने अपने कंधे उचकाते हुए कहा, "आप अच्छी तरह जानते हैं कि इस बात का मतलब क्या है?"

"हाँ, मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि फौजदारी अदालतों के जज हमसे अधिक दयालु नहीं होते!" मि० बाकस ने अहंकार के साथ उत्तर दिया।

"बेशक आप ठीक कहते हैं", मि० टट ने जल्दी से कहा, "लेकिन आपको क्या यह मालूम है कि इस आदमी को किस आधार पर पहली डिग्री की सेंधमारी के लिए पकड़ा गया है? इस अपराध के क्या प्रमाण हैं? इस आदमी ने एक मामूली-सी, भोजन करते वक्त काम में आने वाली छुरी उठाकर, मेरी बावर्चिन को डराते हुए कह दिया कि वह अपने हाथ उठा ले, तो आप ही फैसला कीजिए—क्या सिर्फ इतनी-सी बात के लिए इस आदमी को सारी उम्र जेल में सड़ते रहने के लिए भेज देना चाहिए?"

" 'डिलिंगर' ने भी तो ऐसा ही किया था!"

मि० टट के मन में कठोर उत्तर देने की बात उठी, लेकिन फिर उन्होंने सोचा कि बात-बात में ही झगड़ा करने से तो कोई मतलब निकलेगा नहीं, इसीलिए उन्होंने संयमित स्वर में आगे कहा:

"आप ही बताइए, अगर इस प्रतिवादी का केस अदालत में इस ढंग से पेश किया जाता है कि उस पर लगाये गए पहली डिग्री की सेंधमारी के दोष को ज़िला अटार्नी के दफ्तर का पूरा समर्थन प्राप्त हो, तो तब उस अभागे अपराधी की विनती कौन सुनेगा? जूरी के लिए यह सोचना स्वाभाविक ही होगा—'अगर हाइरम टी० बाकस ऐसा कहते हैं कि इस प्रतिवादी ने पहली डिग्री की सेंधमारी का अपराध किया है, तो हमें क्या पड़ी है कि उनकी बात पर संदेह करें। प्रतिवादी निश्चित रूप से अपराधी है।' "

"यदि ऐसा हो जाए तो क्या बुरा होगा?" मि० बाकस ने मन में खुश होते हुए भी, नम्रतापूर्वक विरोध प्रकट किया।

"आपको अपने ज़बरदस्त असर के बारे में मालूम नहीं है, मि० बाकस।" मि० टट ने आगे कहा, "आपके इसी असर की वजह से, जूरी दूसरे गवाहों पर कम विश्वास करते हुए, आप पर बगैर किसी झिझक के विश्वास कर लेगी, क्योंकि आप इस काउण्टी के कार्यकारी ज़िला अटार्नी हैं।"

"लेकिन जज इस तरह का अन्याय नहीं होने देगा।" बाकस ने दलील दी।

"ठीक है, जज ऐसा कर सकता है, लेकिन उसे भी तो जूरी की तरह आपकी अक्लमन्दी और ईमानदारी पर यक़ीन होगा। इस सीधी और सच्ची बात को आप क्यों नहीं मान लेते? तब वह भी आपकी तरह ही कहेगा— 'डिलिंगर' ने भी तो ऐसा ही किया था। लेकिन ऐसा कहने में उसका गूढ़ और गम्भीर अर्थ होगा। आपकी तरह से नहीं।"

"क्या मतलब है आपका? जज मेरी तरह से किस लिए नहीं कहेगा?"

"क्योंकि आप तो अच्छी तरह जानते हैं कि इस आदमी ने सेंधमारी नहीं की है।"

"मैं ऐसा कुछ नहीं जानता! इस केस के बारे में मैंने अभी तक नहीं सुना है।"

"इसीलिए तो मैं आपकी सेवा में उपस्थित हुआ हूँ," मि० टट ने अपनी बात पर ज़ोर देते हुए कहा, "जब आपको सब बातें मालूम हो जाएँगी तो मेरा पूर्ण विश्वास है कि आप भी इस मुकदमे को आगे बढ़ाने के हक़ में नहीं रहेंगे!"

"आखिर किस्सा क्या है?" मि० बाकस ने कुछ सन्देह के साथ प्रश्न किया।

मि० टट ने सस्ते और लम्बे-पतले सिगार का किनारा छीला और उसे सुलगाकर आगे कहा, "यह एक अत्यधिक करुणाजनक और असाधारण मामला है। लुड्विग कप्लान नामक यह क़ैदी एक बढ़ई है, लेकिन बेचारा करीब तीन साल से बेकार है। उसकी पत्नी और चार बच्चे हैं—एक बच्चा तो सिर्फ पाँच महीने का ही है और उस परिवार की गिनती में कुछ महीनों में ही एक प्राणी और बढ़ जाएगा। उसकी पत्नी बीमार रहती है और उसके

दो बच्चे तपेदिक़ के मरीज़ हैं। जब उसकी पूँजी खत्म हो गई तो उसने बेकारों को मिलने वाली आर्थिक सहायता लेने के लिए दरख्वास्त दी, लेकिन वह इस-लिए नामंजूर कर दी गई कि उसके ससुर, जो खुद भी बेकार थे, को स्पेनिश लड़ाई का अनुभव होने के कारण, कुछ पेंशन मिला करती थी और जैसे-तैसे उस परिवार ने रूखी-सूखी खाकर पूरे दो साल उसी पेंशन पर गुजारा करते हुए काट दिए थे। लेकिन पाँच सप्ताह पहले ससुर साहब की किसी ट्रक के नीचे आकर मौत हो गई और पेंशन मिलनी भी बन्द हो गई और इस परिवार का कोई सहारा नहीं रहा। भूख और गरीबी से तंग आकर कप्लान ने फिर आर्थिक सहायता के लिए प्रार्थना की। जाँच-पड़ताल होने के बाद मालूम हुआ कि आर्थिक सहायता मिल जाएगी, लेकिन आज तक नहीं मिली है और वह परिवार उस आर्थिक सहायता की प्रतीक्षा कर रहा है और न जाने कब तक करता रहेगा—

"उस बदनसीब रात में जिसके लिए उसके ऊपर सेंधमारी का अपराध लगाया गया है, वह सारे दिन का भूखा था। उसकी पत्नी को दौरा आया हुआ था। बच्चे भूख से तड़प-तड़पकर रोटी के लिए हाय-तोबा मचा रहे थे। छोटे बच्चे को दूध चाहिए था। लेकिन वह व्यक्ति जो खुद भूखा-प्यासा, घर से निकलकर 'ब्रोंक्स' तक नौकरी की तलाश में गया था और जो उसे नहीं मिली थी—वह भूख-प्यास, निराशा और सारे घर की बदहाली के कारण पागल हो उठा। 23वीं गली के उन ऊँचे-ऊँचे मकानों में खाने-पीने की सब चीज़ें भरी हुई थीं। तब ही उसकी निगाह मेरे मकान पर गई, जहाँ मकान के निचले भाग में रोशनी नहीं थी। वह चुपके से किचन में घुस गया और बग़ैर अपनी भूख की चिन्ता किये, उसने अपने बाल-बच्चों के लिए कुछ खाने-पीने का सामान जिसमें माँस का टुकड़ा, रोटी, फल और दूध आदि शामिल थे, इकट्ठा किया और जब उस सामान को वह थैले में डालने ही वाला था कि मेरी नीग्रो बावर्चिन अचानक वहाँ पहुँच गई और वह अनाड़ी चोर इतना डर गया था कि उसे एकाकी कुछ सुझाई नहीं दिया। उसने हौल-दिली में मेज़ पर पड़ी हुई एक मामूली-सी छुरी उठा ली और समाचार-पत्रों में पढ़े हुए या फिल्मों में देखे हुए ढंग की नकल करते हुए बावर्चिन को डाँटने लगा, 'चुप रहो—' लेकिन वह मुश्किल से इतना ही

कह पाया था कि दिन-भर की भूख-प्यास और अचानक डर जाने के कारण वह बेहोश होकर गिर पड़ा। उसके बाद जेल के हस्पताल में पहुँचकर ही वह होश में आया था।

"अब आपसे मेरा अनुरोध है कि आप उस अभागे मनुष्य पर दया करें और उस पर पहली डिग्री की सेंधमारी का अभियोग नहीं लगाएँ क्योंकि उसने वह अपराध नहीं किया है। आप ही सोचिए, जब एक आदमी ने कोई अपराध ही नहीं किया है, तब उस अपराध के लिए उसे उम्र भर के लिए जेल में क्यों सड़ने दिया जाए ? क्या आपका यह इन्सानी फर्ज़ नहीं है ? मैं आपको पूरा विश्वास दिलाता हूँ कि जब तक उसे कोई काम नहीं मिल जाएगा, तब तक उसका और उसके परिवार का ठीक तरह से ख्याल रखा जाएगा। अगर अब्राहम लिंकन के सामने इस आदमी का मामला आता तो वे ज़रूर इसे मुआफ कर देते। मेहरबानी करके आप भी वैसा ही कीजिए।"

मि० बाकस ने ठोड़ी सहलाते हुए सोचा। मि० टट ने जो कुछ कहा था और जो इस बात पर ज़ोर दिया था कि लोगों की दृष्टि में मि० बाकस को काफी सम्मान प्राप्त था—इस बात से उनके मन में भी मि० टट के लिए अच्छी भावनाएँ जाग उठीं। हाँ, निसन्देह यह बात ठीक थी, जैसा कि अभी-अभी मि० टट ने कहा भी था, कि अगर अब्राहम लिंकन के सामने यह मुकदमा पेश होता तो वे इस क़ैदी को रिहा कर देते !

"यह दरअसल एक टेढ़ा मामला है," मि० बाकस ने स्वीकार किया, "फिर भी यह तो मानना ही होगा कि क़ानूनी दृष्टि से यह क़ैदी पहली डिग्री की सेंधमारी का अपराधी है, क्योंकि एक मामूली कलईदार छुरी को भी ख़तरनाक हथियार माना जाता है। फिर भी—"

मि० बाकस ने एक बटन दबाया और एक अधिकारी को आदेश दिया, "मि० गोगार्टी को यहाँ आने के लिए कहिए।"

तत्काल मि० टट का दिल बैठ गया। गोगार्टी ज़िला अर्टानी के दफ़्तर का सबसे ज़्यादा पत्थर-दिल व्यक्ति था। उससे दया की क्या आशा की जा सकती थी !

"क्या मैं यह जान सकता हूँ कि मि० गोगार्टी को यहाँ किस लिए बुलाया जा रहा है ?"

"यह मि० गोगार्टी का मुकदमा है। उनकी राय लेना भी तो ज़रूरी है।" मि० बाकस ने बेचैनी के साथ उत्तर दिया।

उग्र-स्वभाव वाले मि० गोगार्टी तशरीफ लाए।

"क्या है, बाकस ?" मि० टट की ओर ध्यान दिए बगैर ही, मि० गोगार्टी ने आगे कहा, "कौन-सा मामला है ?"

" 'सरकार बनाम कप्लान'। वादी इस मामले को वापस लेना चाहता है—अब आप ही बताइए ?"

"सेंधमारी का मामला है न ? नहीं, इसमें वादी अब कैसे मुँह मोड़ सकता है ? सारा मामला पका-पकाया है।"

"यह एक टेढ़ा मामला है, मि० गोगार्टी !" मि० टट ने बीच में बोलते हुए कहा, क्योंकि वे चाहते थे कि बात-चीत का रुख कुछ बदले।

"हर मुकदमा किसी न किसी के लिए तो टेढ़ा होता ही है," गोगार्टी ने तत्काल उत्तर दिया, "ये वादी—शुरू में तो आदमी को गिरफ़्तार करा देते हैं और अपराधी के जेल में पहुँचते ही दयावान् बन जाने का ढोंग रचने लगते हैं।"

"जब उस क़ैदी ने वह अपराध किया था, तो उसने पिछले बारह घंटों से कुछ खाया नहीं था। इसीलिए तो थकान और भूख के मारे वह बेहोश हो गया था।"

"अच्छा तो यह, 'भूखे मरते हुए बच्चों के लिए चोरी करने' का मामला है।" गोगार्टी ने मज़ाक उड़ाया।

"दरअसल यही बात है और इस बात में शक की कोई गुंजाइश बाकी नहीं है क्योंकि मैंने खुद सब बातों की जाँच-पड़ताल की है और मेरा यह अनुरोध है कि आप भी इस बारे में पता लगाएँ।" मि० टट ने नर्मी से कहा।

"मि० टट का यह सुझाव है कि प्रतिवादी और उसके परिवार की तब तक देख-भाल करेंगे जब तक कि उसे काम नहीं मिल जाएगा। लेकिन यह उसी सूरत में किया जा सकता है जबकि हम अभियोग को वापस ले लें या गैरक़ानूनी प्रवेश के आधार पर फैसला स्थगित करा दें।" बाकस ने स्पष्टीकरण किया।

"फैसला स्थगित करा दें, वाह खूब ! एक पहली डिग्री की सेंधमारी के मुकदमे का यह परिणाम ! ऐसा नासमझ वादी कौन है ?"

गोगार्टी ने अभियोग-पत्र उठाया और उसके पिछली ओर गवाहों की सूची देखी।

फिर उसने मि० टट की ओर झेंपते हुए देखा।

"तो आप प्रतिवादी के वकील न होकर वादी हैं।"

"न तो मैं वादी हूँ और न प्रतिवादी का वकील। अपराधी पर जो दोषारोपण किया गया है, वह घटना मेरे घर में हुई थी, लेकिन मैं चाहता हूँ कि यह दावा वापस ले लिया जाय। मैं इस मुकदमे में वादी नहीं हूँ।"

"आप सचमुच धार्मिक स्वभाव के व्यक्ति हैं—वाह ! आप सरकार के मुख्य गवाह हैं। आपके अतिरिक्त दो पुलिसमैन और वह नीग्रो औरत मिरांडा वाशिंगटन भी गवाह हैं। प्रतिवादी का वकील कौन है ?" उसने अभियोग-पत्र को देखते हुए आगे कहा, "यह क्या ? प्रतिवादी का कोई वकील ही नहीं है। तब तो अदालत को ही यह मुकदमा किसी वकील को सौंपना पड़ेगा।"

मि० टट ने अभियोजकों की ओर ग़ौर से देखा।

"आखिर आप लोग क्या करना चाहते हैं ?"

"मैं मि० गोगार्टी की बात को कैसे काट सकता हूँ—आप ही सोचिए।" ब्राक्स ने कमज़ोर पड़ते हुए उत्तर दिया।

मि० टट उठे।

"मि० गोगार्टी" उन्होंने गम्भीरतापूर्वक कहा, "मैं आपको साफ़-साफ़ बता देना चाहता हूँ कि मैं इस आदमी के खिलाफ गवाही नहीं दूँगा।"

"नहीं देंगे, तो क्या हो जाएगा ! लेकिन, क्यों ? आपको गवाही तो देनी ही पड़ेगी, चाहे आप पसन्द करें या नहीं।"

मि० टट के होंठ फड़क उठे।

"मैं तब तक गवाही नहीं दूँगा जब तक आप इस मुकदमे को सिर्फ ग़ैर-क़ानूनी प्रवेश के अभियोग के साथ अदालत में पेश करने का यकीन नहीं दिलाएँगे और मेरे बगैर आप इसे सज़ा नहीं दिलवा पाएँगे—यह भी आप अच्छी तरह जानते हैं।"

गोगार्टी ने दाँत पीसते हुए, मेज़ पर से एक पीला कागज़ उठाकर जल्दी से, अपनी कलम से उस पर कुछ लिखा और वृद्ध व्यक्ति की ओर बढ़ा दिया और कहा, "लीजिए।" वह एफ्रेम टट के नाम सम्मन था कि एक दिन छोड़कर, लुड्विग कप्लान पर चल रहे सेंधमारी के मुकदमे में, गवाही देने के लिए हाज़िर हो जाएँ।

"मेरा ख्याल है, अब ठीक है न ? अगर आप अपने आप ही अदालत में नहीं आए तो हमें मजबूर होकर आपको लाने के लिए अदालत की वैगन भेजनी पड़ेगी।"

मि० टट ने उस कागज़ के आहिस्ता-आहिस्ता बहुत सारे टुकड़े किये और फिर फर्श पर बिखेर दिए।

उनके मुख पर कठोरता उभर आई थी।

"मैं आखिरी बार आपसे पूछ रहा हूँ—क्या आप 'सरकार बनाम कप्लान' मुकदमे में ग़ैर-क़ानूनी प्रवेश का अभियोग लगाएँगे और अपराधी के प्रति दया की सिफारिश करेंगे ?"

गोगार्टी ने तिरछी नज़र से मि० टट की ओर घूरते हुए कहा, "नहीं, वृद्ध महाशय ! हम ऐसा कभी नहीं करेंगे। आपके जो जी में आए, कीजिए।"

मि० टट ने अपना लम्बा रेशमी हैट उठाया और कहा, "मैं भी देख लूंगा—आप उसे कैसे सज़ा दिलवाते हैं ?"

○ ○ ○

ज़िला अर्टानी के आफिस में दो तरह के मुकदते आते हैं। पहली किस्म के मामले को 'बड़ा मुकदमा' कहा जाता है और प्रायः ये मुकदमे खून के होते हैं। इन मुकदमों की तैयारी में, गुप्तचर, पुलिस अधिकारी, अन्य अधिकारी और सहायक आदि जुट जाते हैं और सबका यही प्रयत्न रहता है कि अदालत में मुकदमा पूरी तैयारी के साथ जाए। लेकिन दूसरी तरह के साधारण मुकदमों में जो अक्सर मामूली मार-पीट, झगड़े, चोरी आदि के अपराधों से सम्बन्धित होते हैं, उनकी पैरवी अभियोजक बगैर किसी विशेष तैयारी के ही करता है। वह अभियोग-पत्र के पीछे दी गई गवाहों की सूची के अनुसार उन गवाहों, जो पहले भी एक बार बयान दे चुके होते हैं, को

बारी-बारी से बुलाता है और अपना मुकदमा प्रस्तुत कर देता है। 'सरकार बनाम कप्लान' मुकदमा दूसरी किस्म का मुकदमा था।

दोनों पुलिसमैन पहले ही गोगार्टी को सब कुछ बता चुके थे कि किस तरह उन्होंने प्रतिवादी को रंगे-हाथों पकड़ा था और किस तरह मि० टट और नीग्रो बार्वचिन मौक़े पर मौजूद थे और उन्होंने भी सब कुछ सुना और देखा था। पुलिस शब्दावली में वह मुकदमा 'फूंक मारने के बराबर' था। लेकिन गोगार्टी, जिसकी काम को तब तक टालते रहने की आदत थी जब तक कि काम करना बहुत ही ज़्यादा ज़रूरी नहीं हो जाता था, के लिए वह मुकदमा ज़रा मुश्किल ही हो गया था, क्योंकि तैयारी उसने कोई विशेष की नहीं थी, इसके विपरीत फैसला यह किया था के वह प्रतिवादी को ज़्यादा से ज़्यादा सज़ा दिलवाएगा। उसके मन में मि० टट के लिए सदैव घृणा बनी रहती थी और अबकी बार तो वृद्ध को इसलिए भी मज़ा चखाना ज़रूरी हो गया था क्योंकि उन्होंने अनावश्यक रूप से इस मुकदमे में टाँग फँसाने की कोशिश की थी। मि० टट से प्रीति कर लेने का एक ही तरीका था कि उस अपराधी, जिसे वे बचाना चाहते थे, को कठोर दण्ड दिलवाया जाय।

इस बीच में गोगार्टी ने अपने भयंकर उद्देश्य की पूर्ति के लिए, एक क़दम ज़रूर उठाया था कि उसने अपने मित्र, श्रीमान् अलॉय्सियस मक्कन, जज, को इस बात के लिए राज़ी कर लिया था कि वे अपराधी के लिए एक वकील, सेमी ग्रासबोम, जो अदालत में यूँही भटकता रहता था और ठग-प्रकृति का व्यक्ति था, को नियुक्त करेंगे और इस बात का परिणाम यह होना ज़रूरी था कि सारा मुकदमा एक तमाशा बनकर रह जायगा। दरअसल उसने सेमी को पहले ही कुछ सिगार देकर, सारी बात से आगाह कर दिया था और कहा था कि वह उसके एहसान को कभी नहीं भूलेगा। इसीलिए तैयारी के नाम पर उसने इतना ही ज़रूरी समझा कि सब गवाहों को ठीक तरह सम्मन भेज दिए जाएँ और वे सब अदालत में मौजूद रहें। उसने मि० टट को स्वयं सम्मन भिजवाया था। पुलिसमैन पैट्रिक ओ' ग्रेडी और पुलिसमैन विलियम शीहन के नाम डायरी में नोट कर लिये थे ताकि उन्हें ठीक वक्त पर बुलाया जा सके। लेकिन मिरांडा वाशिंगटन का अभी तक

कुछ पता नहीं चल रहा था। सम्मन भेजने वाले ने बताया था कि उसे भी सम्मन भेजा जा चुका था। वह अभी रास्ते में ही होगी और यहाँ ठीक वक्त तक पहुँच ही जाएगी और यदि वह ठीक वक्त तक नहीं भी आई, तो भी कुछ नहीं बिगड़ेगा क्योंकि मि० टट और दोनों पुलिसमैनों के बयान ही, अपराधी को दोषी ठहराने के लिए काफी रहेंगे। उसके ख्याल से पूरी तैयारी हो चुकी थी और उसे ऐसा महसूस हो रहा था जैसे मौक़ा आते ही वह प्रतिवादी को धूल में मिला देगा। उसका पुराना शत्रु, वृद्ध वकील, विवश-सा गवाह की कुर्सी पर बैठा हुआ, उस प्रतिवादी के विरुद्ध गवाही दे रहा होगा, जिसे बचाने की वह पहले घोषणा कर चुका था। प्रतिवादी का रक्षक होगा—एक तर्कशून्य वकील।

लेकिन जब वह मुकदमा अदालत के सामने पेश हुआ और लुड्विग कप्लान को कैदियों के बाड़े से अदालत में लाया गया तो मि० टट अपनी जगह से उठे और प्रतिवादी-पक्ष की ओर जाकर बैठ गए। यह देख गोगार्टी के मन में मि० टट के लिए बेहद नफ़रत भड़क उठी।

मि० टट ने अदालत से प्रार्थना की, "कृपया मेरा नाम क़ैदी के वकील के रूप में लिख दिया जाए" और उसके बाद अपने मुवक्किल की ओर देखते हुए बोले, "लुडविग बैठ जाओ, डरने की कोई बात नहीं है। सब कुछ ठीक हो जाएगा।"

यह सब देखकर, गोगार्टी हक्का-बक्का रह गया। वृद्ध टट कैसे प्रतिवाद-पक्ष के वकील बन सकते थे? कोई भी अभियोजक कैसे एक ऐसे अपराधी के विरुद्ध पैरवी कर सकेगा जबकि सरकार का मुख्य गवाह ही प्रतिवादी का वकील हो? कभी ऐसा नहीं हुआ था और ऐसा किसी ने कभी सोचा भी नहीं होगा। फिर भी इस बात पर आक्षेप उठाने के लिए वह कोई क़ानूनी नुक्ता सोच ही नहीं पा रहा था। जब गवाह को सौगंध उठाकर अपना बयान देना था, तब इस बात पर किसी को क्या आक्षेप हो सकता था? प्रतिवादी का वकील होने के नाते मि० टट को ही मुसीबत में फँसना पड़ेगा, क्योंकि उन पर यह संदेह उठाया जा सकेगा कि वे अपने मुवक्किल को बचाने के लिए पक्षपात से काम ले रहे थे। इतना सब सोच लेने पर भी उसे मि० टट का वकील के रूप में पेश होना पसन्द नहीं था। उसे डर था कि वह वृद्ध

वकील कहीं कुछ जादू न कर दिखाए और प्रतिवादी—उसका तो वृद्ध टट ने रूप ही बदल दिया था—वह सर्ज का सुन्दर सूट पहने हुए था और हाव-भाव से बिलकुल भी अपराधी नज़र नहीं आता था। गोगार्टी क्रोध से तिल-मिलाता रहा और वह इतना बेचैन था कि उसे मालूम ही नहीं पड़ा कि कब जूरी के सदस्य जूरी-कक्ष में आ बैठे और कब अदालत की कार्रवाई शुरू हुई।

"आप मुकदमा शुरू करें, मि० गोगार्टी!" अदालत का आदेश मिला और अभियोजक ने व्यावसायिक ढंग की कृतज्ञतापूर्ण मुस्कराहट के साथ, जूरी-कक्ष के पास पहुँचकर, बारह सदस्यों को पहचानते हुए कहा :

"सम्मानित जूरी के सदस्यगण! मैं निवेदन करता हूँ कि मैं इस मुकदमे के प्रमाण-पक्ष के पूर्वदर्शन कराने में अधिक समय नहीं लूँगा। आपके सामने गवाह पेश होंगे और अपने-अपने बयान देंगे कि किस तरह प्रतिवादी शहर के पश्चिमी भाग में स्थित 23वीं गली के एक मकान में, रात के नौ बजे सेंध-मारी करते हुए रंगे हाथों पकड़ा गया और जब यह चोरी का माल लेकर चलने ही वाला था कि मकान के एक नौकर के अचानक वहाँ आ जाने पर, इसने छुरी दिखलाकर उस नौकर को डराने-धमकाने की कोशिश की थी। तब ही किसी दैविक शक्ति या प्रकृति के दुर्बाध प्रभाव के कारण, यह बेहोश हो गया और उस नौकर पर हमला किये बगैर ही फर्श पर गिर पड़ा—शायद यह इसका दुर्भाग्य था! इस मुकदमे में इससे अधिक कुछ नहीं है।" और फिर कुछ झिझकते हुए आगे कहा, "लेकिन इस मुकदमे में एक अजीब बात ज़रूर है और वह है कि प्रतिवादी ने सरकार के मुख्य गवाह को अपना वकील बनाया है। ऐसा इसने क्यों किया है मैं नहीं जानता, लेकिन मैं आशा करता हूँ कि इस बात का आप ज़रूर ध्यान रखेंगे।"

वह पुलिसमैन-गवाहों में से एक को बुलाने ही वाला था कि जज मक्कन ने इशारे से उसे अपने पास बुलाया।

"बिल, यह सब क्या है? टट एकसाथ ही प्रतिवाद और वाद पक्षों में कैसे सम्मिलित हो सकता है?"

"मैं भी तो नहीं जानता," गोगार्टी ने उत्तर दिया, "लेकिन इतना मैं ज़रूर जानता हूँ कि वह इस अपराधी के विरुद्ध अभियोग लगाए जाने के

बाद से ही इसे बचाने पर तुला हुआ है। इसका मतलब यह है कि वह कुछ न कुछ छिपाने की कोशिश ज़रूर करेगा।"

"तुम्हारी तैयारी कैसी है ?"

"एकदम पक्की, अभी मेरा वक्तव्य तो सुनकर ही चुके हो न ?"

"ठीक है, इसे मौक़ा मत देना," मक्कन ने चेतावनी दी, "इसे ज़रा तरीके से सँभालना, नहीं तो बूढ़ा बड़ा ही खतरनाक आदमी है।"

गोगार्टी ने अदालत की ओर देखते हुए कहा, "पुलिस अधिकारा पैट्रिक ओ' ग्रेडी गवाही देने के लिए तशरीफ ले आए।"

"आप न्यूयार्क शहर की पुलिस के सदस्य हैं," गोगार्टी ने जल्दी-जल्दी कहा, "क्या आप 17 अप्रैल की रात को, करीब नौ बजे, शहर के पश्चिमी भाग की 23वीं गली में ड्यूटी पर थे ?"

पुलिस अधिकारी ने 'गम' (चूसने की एक विशेष प्रकार की मिठाई) को मुँह में एक किनारे सरकाते हुए, झेंपकर कहा कि वह वहाँ था। वह एक लम्बा-चौड़ा आदमी था और कुर्सी में बुरी तरह से भिचा हुआ बैठा था।

"हमें वह घटना बताइए।"

"सत्रह अप्रैल की रात में," उसने स्वचालित मशीन की तरह दोहराया, "जब मैं 23वीं गली में ड्यूटी दे रहा था और तब पुलिस अधिकारी शीहन भी मेरी जगह लेने के लिए वहाँ मौजूद था। उसी वक्त हमें 'पुलिस' की पुकार सुनाई दी और सुनते ही हम दोनों उधर ही भाग पड़े और जैसे ही हम उस घर में पहुँचे जहाँ से चीख़-पुकार आ रही थी, तो इन साहब के," मि० टट की ओर इशारा करते हुए उसने आगे कहा, "हाथ में लोहे की छड़ी थी और ये जीने से नीचे की ओर आ रहे थे। मकान के निचले हिस्से से 'खून-खून' की आवाज़ सुनाई दे रही थी—हम दोनों बहुत ही तेज़ी से किचन की ओर दौड़े। वहाँ हमने देखा कि एक निग्रो औरत 'स्टोव' के पास खड़ी थी। उसके हाथ ऊपर की ओर उठे हुए थे और ऊँची आवाज़ में वह चीख रही थी और फर्श पर यह प्रतिवादी पड़ा हुआ था। मैंने इसकी तलाशी ली थी। लेकिन इसके पास पिस्तौल-विस्तौल कुछ नहीं था। फिर ये साहब" पुनः मि० टट की ओर संकेत करते हुए, वह आगे बोला, "आ गए और

इन्होंने नीग्रो औरत से पूछा—"

"मुझे एतराज है," मि० टट ने कहा, "मैंने क्या पूछा और मेरे प्रश्न का क्या उत्तर मिला, इस सम्बन्ध में गवाह अपने बयान में कुछ नहीं कह सकेगा।"

"लेकिन वह भी तो प्रतिवादी की उपस्थिति में कहा गया था," जज ने पूछा, "मैं बयान देने की अनुमति देता हूँ।"

"जरा सुनिए, श्रीमान्" मि० टट ने खड़े होते हुए कहा, "प्रतिवादी की उपस्थिति में जो कुछ भी कहा गया, उसका ज़िक्र गवाह अपने बयान में तब ही कर सकता है, जबकि उस बयान के आधार पर प्रतिवादी से कुछ प्रश्न पूछे जाएँ और उन प्रश्नों के उत्तर को अथवा उत्तर नहीं देने को अपराधी की सहमति अथवा अभियोग की स्वीकृति के बराबर माना जाए, अन्यथा उन बातों का ज़िक्र करने से कोई लाभ नहीं होगा और उन्हें सिर्फ यूँही सुनी-सुनाई बातें समझा जाएगा। यदि कोई प्रतिवादी बेहोश है, जैसा कि अभी-अभी पुलिस अधिकारी ने इस मामले के बारे में भी अपने बयान में कहा है, तो ऐसी सूरत में प्रतिवादी, गवाह के बयान में उठाए जाने वाले प्रश्नों का उत्तर नहीं दे सकेगा, क्योंकि उसने अपने बेहोश हो जाने के बाद कुछ देखा-सुना नहीं—ऐसी स्थिति में उसके उत्तर नहीं देने का मतलब, अपराध की स्वीकृति के रूप में, कदापि नहीं लगाया जा सकता ! इसीलिए उसकी उपस्थिति में कही हुई बातें गवाह को अपने बयान में शामिल नहीं करनी चाहिए।"

"मैंने इस बारे में पहले नहीं सोचा था," मक्कन ने स्वीकार किया और जल्दी से गोगार्टी की ओर देखा, "यदि मि० गोगार्टी कोई उत्तर नहीं देते हैं तो मैं अपने निर्णय को रद्द करता हूँ और एतराज़ को ठीक मानता हूँ।"

गोगार्टी ने ढंग बदलकर, आगे प्रश्न किया, "क्या तब मि० टट ने कुछ कहा था ?"

"हाँ, कहा था।"

"और क्या बार्वचिन ने भी कुछ कहा था ?"

"हाँ, उसने भी कहा था।"

"और वह सब प्रतिवादी की उपस्थिति में कहा गया था ?"

"हाँ, वह वहाँ मौजूद था।"

"क्या कहा गया था ?"

"मुझे एतराज़ है।" मि० टट ने कहा।

"एतराज़ ठीक है।"

गोगार्टी ने विवशतापूर्वक मक्कन की ओर देखा। उसके लिए सारी स्थिति, निस्सन्देह संकटपूर्ण थी, क्योंकि वह जो भी आवश्यक प्रश्न करता था उसे अदालत काट देती थी। ऐसी शोचनीय स्थिति में वह क्या करता ? उसे कोई रास्ता ही नज़र नहीं आ रहा था। अन्ततः उसने पैंतरा बदलते हुए कहा, "क्या आपको फर्श पर कोई चीज़ मिली थी ?"

"मुझे एक कलईदार छुरी और एक आधा केला मिले थे।"

"क्या यह छुरी मिली थी ?"

"हाँ, यही थी।"

"मैं इसे प्रमाण के रूप में प्रस्तुत करता हूँ।" गोगार्टी ने कहा।

"ठीक है", मक्कन ने कहा, "इस पर सरकार की ओर से प्रस्तुत की गई प्रमाणार्थ वस्तु 'क' अंकित कर दिया जाए।"

"क्या आपके पास केला नहीं है ?" मि० टट ने सादगी से प्रश्न किया और जूरी के सदस्य हँस पड़े। गोगार्टी को बेहद गुस्सा आया और उसे कोई प्रश्न ही सुझाई नहीं दिया।

"अच्छा, उसके बाद क्या हुआ ?"

"पुलिस अधिकारी शीहन वैगन मँगाने के लिए टेलीफोन करने चला गया, इसी बीच इन साहब ने प्रतिवादी को कुछ ब्राण्डी पिलाने की कोशिश की, लेकिन वह पी नहीं सका। उसके बाद वैगन आ गई और हम क़ैदी को लेकर पुलिस स्टेशन आए और फिर अस्पताल गए।"

"क्या आपने अपराधी से इस बीच कोई बात की थी ?"

"नहीं, क्योंकि वह बेहोश था।"

"उस बार्वाचिन के साथ क्या हुआ था ?"

"मुझे मालूम नहीं है।"

"क्या आप इस मुकदमे के बारे में सिर्फ इतना ही जानते हैं ?"

"हाँ, सिर्फ इतना ही।"

"अब गवाह आपके सामने है।" गोगार्टी ने मुँह बनाते हुए मि० टट से कहा और वे उठे। जूरी के सदस्यों ने मि० टट की ओर विमुग्ध और आशा-पूर्ण दृष्टि से देखा—आखिर कोई न कोई तो ऐसा कारण अवश्य था जो मि० टट अपने ही घर में चोरी करने वाले नवयुवक को बचाने के लिए इतना प्रयत्न कर रहे थे।

"पुलिस अधिकारी ओ'ग्रेडी साहब," वृद्ध वकील ने नर्मी से कहना शुरू किया, "क्या आपको मेरे घर में दाखिल होने में किसी दिक्कत का सामना करना पड़ा था ?"

"नहीं, कोई दिक्कत नहीं हुई थी। दरवाज़ा खुला हुआ था।"

"मैंने तो आपके लिए दरवाजा नहीं खोला था न ?"

"नहीं, आप तो अभी नीचे ही आ रहे थे।"

"धन्यवाद, जनाब ! आपके अनुसार बार्वाचिन चीख़-पुकार मचा रही थी ?"

"ठीक है, वह बहुत ज़्यादा परेशान थी।"

"क्या उसके पास ही एक मरा हुआ या मरता हुआ या कम से कम बेहोश नवयुवक फर्श पर पड़ा हुआ था ?"

"हाँ, वह बिलकुल लाश की तरह पड़ा हुआ था ?"

"क्या वह बार्वाचिन आकाश की ओर हाथ उठाए हुए थी ?"

"उसके हाथ ऊपर की ओर हवा में थे।"

"क्या आपने कभी नीग्रो लोगों को प्रार्थना करते समय आकाश की ओर हाथ उठाए हुए देखा है ?"

"वह प्रार्थना नहीं कर रही थी। इस अपराधी ने उसे डराया-धमकाया था।"

"मेरा अनुरोध है कि इस अनावश्यक उत्तर को रद्द कर दिया जाए।" मि० टट ने कहा।

"काट दिया जाए।" जज ने आगे कहा, "प्रश्न का उत्तर दो, पुलिस अधिकारी !"

"मैं कैसे जान सकता हूँ कि नीग्रो किस तरह हाथ उठाते हैं ?"

"क्या उसके हाथ उठाने के ढंग में कोई खास बात थी, क्योंकि इस तरह स्पष्ट हो जाएगा कि वह प्रार्थना कर रही थी या डर गई थी ?"

"शायद वह दोनों बातें एक साथ कर रही थी।"

"शायद आप ठीक कह रहे हैं," मि० टट ने स्वीकार किया, "क्या आप तब किचन में थे, जब उसने अपने हाथ उठाए थे ?"

"नहीं, मैं वहाँ नहीं था।"

"तब आपको यह कैसे मालूम हो सकता है कि उसने अपने हाथ नवयुवक के फर्श पर बेहोश हो जाने से पहले या बाद में उठाए थे ?"

"नहीं, मैं नहीं जानता।"

"क्या आपने प्रतिवादी को मकान में दाखिल होते देखा था ?"

"नहीं।"

"और उसे वह भोजन जो मेज़ पर मौजूद था, देते हुए देखा था ?"

"नहीं, मैं वहाँ नहीं था।"

मि० टट बैठ गए और फिर उन्होंने सहज भाव से आगे कहा, "मैं प्रतिवादी को कोशिश करने के बावजूद ब्राण्डी नहीं पिला सका था, लेकिन आपके बारे में मुझे किसी मुश्किल का सामना नहीं करना पड़ा था—क्या यह बात ठीक है ?"

पुलिस अधिकारी ओ' ग्रेडी बुरी तरह झेंप गया और उसके मुख से कोई उत्तर नहीं निकल सका।

"क्या वह ब्राण्डी स्वादिष्ट नहीं थी ?"

"वैसी ब्राण्डी मैंने पहले कभी नहीं चखी थी।"

"इतना ही काफी है, जनाब ! शुक्रिया।"

जूरी-प्रमुख मि० टट की ओर देखकर मुस्करा दिया। "खूब डुबोया, बेचारे को।" उसने मुँह फेरकर धीरे से कहा।

"मुझे एतराज़ है कि वकील और जूरी के सदस्य आपस में बात-चीत कर रहे हैं।" गोगार्टी ने गुस्से से बौखलाते हुए कहा और इस प्रकार जूरी-प्रमुख को सदा के लिए अपना विरोधी बना लिया।

पुलिस अधिकारी शीहन भी अपने साथी, ओ' ग्रेडी की तरह ही अभियोजक की कोई विशेष मदद नहीं कर सका। जब भी उसने उस महत्त्वपूर्ण

रात में होने वाली घटना के सम्बन्ध में, मि० टट अथवा मिरांडा वाशिंगटन की बातों का हवाला देना चाहा, तब ही उसे रोक दिया गया। इस प्रकार वह भी प्रतिवादी की उस मकान में उपस्थिति का उद्देश्य क्या था और किस तरह वह उस मकान में दाखिल हुआ था—इन दोनों बातों पर कोई प्रकाश नहीं डाल सका।

मक्कन की बेचैनी बढ़ती जा रही थी। गोगार्टी और उसके बीच दर-असल व्यावसायिक मित्रता थी, इसीलिए वे दोनों एक-दूसरे को एक समान महत्त्व देते थे। साथ मिलकर ही दोनों शिकार मारते थे। दोनों अधिक से अधिक अपराध-निर्णय देकर प्रसिद्धि पाना चाहते थे। लेकिन मक्कन यह बिलकुल नहीं चाहता था कि उसकी अदालत किसी तरह भी चिड़ियाघर बनकर रह जाए, मगर मि० टट सफलतापूर्वक ऐसा कर रहे थे। उसने पुनः अभियोजक गोगार्टी को इशारे से अपने पास बुलाया।

"तुम्हारी गर्दन फंदे में फँस रही है," उसने चेतावनी दी, "अब भी वक्त है, मेरी बात मान लो कि तुमसे यह मुकदमा नहीं चलेगा।"

"क्यों ?" गोगार्टी ने क्रोधपूर्वक उत्तर दिया, "चिन्ता मत करो। मुक-दमा ठीक चलेगा। इन पुलिसमैनों की अक्ल पर पत्थर पड़ गए थे—अब मैं असली गवाह को बुला रहा हूँ। मिरांडा वाशिंगटन कठघरे में गवाही देने के लिए आ जाओ।"

कोई नहीं उठा। कहीं से कोई उत्तर नहीं मिला।

"शायद हॉल में होगी, वहाँ से बुलाकर लाओ," गोगार्टी ने आज्ञा दी, "उसे सम्मन भेजा गया था। वह यहाँ ज़रूर मौजूद होगी।"

"मिरांडा वाशिंगटन ! मिरांडा वाशिंगटन।" चारों तरफ यह आवाज़ गूंजती रही।

दरबान ने अन्दर झाँकते हुए कहा, "गवाह मौजूद नहीं है।"

गोगार्टी ने आगे बढ़कर, सम्मन ले जाने वाले को ज़रा धीरे से लेकिन क्रोधपूर्वक डाँटा।

"मैंने खुद जाकर सम्मन पहुँचाया था, जनाब !" उस आदमी ने जवाब दिया, "आप यक़ीन कीजिए !"

"ठीक है, लेकिन फौरन उसे बुलाने का इन्तज़ाम करो। किसी नज़दीक वाले पुलिस स्टेशन को इस बारे में जल्दी से सूचना दे दो।"

वह क्रोध में झल्लाया हुआ, वापस अपनी जगह, जो जूरी-कक्ष के सामने थी, पर आ गया। अभी तो वह मौक़ा आया था जब चालाक बूढ़े को कठघरे में गवाह के रूप में आना पड़ेगा और जो कुछ भी वह जानता था, वही सब कुछ बताना ही पड़ेगा।

"मि० टट, आप कठघरे में तशरीफ ले आइए।"

"जैसी आपकी इच्छा।" वृद्ध व्यक्ति ने मुस्कराते हुए कहा और वह अदालत के सामने थोड़ा झुककर, गवाह की कुर्सी पर आकर बैठ गया।

गोगार्टी ने यह बात महसूस की कि अदालत को प्रभावित करने के लिए यह ज़रूरी था कि वह गवाह के प्रति सद्भावनापूर्ण व्यवहार करे।

"मि० टट, क्या आप शहर के पश्चिमी भाग की 23वीं गली में रहते हैं ?"

"मैं वहाँ पिछले तीस साल से रह रहा हूँ।"

"सत्रह अप्रैल की रात में आप किस समय अपने घर पहुँचे थे ?"

"नौ बजे के करीब।"

"आप किस प्रकार मकान में दाखिल हुए थे ?"

"मेरे पास ताले की चाबी थी।"

"आपकी नीग्रो बावर्चिन, मिरांडा वाशिंगटन, उस समय कहाँ थी ?"

"मुझे मालूम नहीं है।"

"मकान के अन्दर पहुँच जाने के बाद आप कहाँ गए थे ?"

"मैं अपनी लाइब्रेरी में गया, वहाँ बैठकर मैंने बर्गंडी (एक तरह की मदिरा) की बोतल खोली और फिर पढ़ने बैठ गया।"

"उसके बाद किस बात ने आपका ध्यान आकर्षित किया ?"

"मैंने मिरांडा की चीख़-पुकार सुनी थी।"

"वह किस लिए चीख़ रही थी ?"

"वह भगवान् को सहायता करने के लिए पुकार रही थी।"

"आपने उस वक्त क्या किया ?

"मैंने खिड़की खोली, पुलिस को पुकारा और लोहे की छड़ी हाथ में

लेकर नीचे की ओर भाग चला।"

"तो उस घटना के बारे में आपने कुछ अन्दाज़ा लगाया था ?"

"नहीं, मैंने केवल इतना सोचा था कि मैंडी बहुत ज़्यादा डर गई थी।"

"क्या दोनों पुलिस अधिकारी आपसे पहले ही वहाँ पहुँच चुके थे।"

"मुझसे दो-चार क़दम ही आगे थे।"

"जब आप किचन में पहुँचे तो आपने क्या देखा था ?"

'बिल्कुल वही जोकि पहले भी बताया जा चुका है—मैंडी आकाश की ओर हाथ उठाए हुए थी और एक आदमी, जो मृत दिखाई देता था, फर्श पर पड़ा हुआ था।"

"क्या आपने बार्वाचिन से कोई बात-चीत की थी ?"

"हाँ, की थी।"

"आप दोनों के बीच क्या बात-चीत हुई थी ?"

"मुझे इस सवाल पर एतराज़ है, क्योंकि प्रतिवादी से मेरे इस उत्तर को लेकर पूछ-ताछ नहीं की जा सकेगी।" गवाह ने वकील का रूप धारण करते हुए कहा।

'एतराज़ ठीक है।" मक्कन ने क्रुद्ध दृष्टि से गोगार्टी की ओर देखा।

"क्या आपके घर से कोई चीज गुम हुई थी ?"

"नहीं, कोई भी चीज़ नहीं उठी थी ?"

"क्या आपने महा न्यायसभा के सामने यह बयान नहीं दिया था कि मैंडी···"

"धम् !" मक्कन की हथौड़ी बजी।

"इस गवाह ने कुछ भी महा न्यायसभा के सामने कहा, वह सब यहाँ प्रमाण के रूप में प्रस्तुत नहीं किया जा सकता है।" मक्कन ने सख़्ती से कहा।

गोगार्टी ने दाँत पीसते हुए एक पाँव से दूसरे पाँव पर शरीर का बोझ सँभाला।

"क्या आपने प्रतिवादी से उस रात की घटना के सम्बन्ध में कोई बात-चीत की है कि कैसे वह आपके घर में घुसा था और उसका क्या इरादा

था ?"

"जो भी बातें मेरे और प्रतिवादी के बीच हुई हैं वे वकील और मुवक्किल के बीच होने वाली विशेषाधिकृत बातें हैं।"

"मि० गोगार्टी, आपको यह पहले ही समझना चाहिए।" अदालत ने सूचित किया।

"मुझे क्या मालूम कि यह गवाह कब से प्रतिवादी का वकील बना है ?" गोगार्टी ने उत्तर दिया।

"मैं अभी आपको बताता हूँ," मि० टट ने कहा, "जब आपसे मुझे यह मालूम हुआ कि इस क़ैदी का कोई वकील नहीं है तो परसों से मैं इसका वकील बन गया हूँ।"

गोगार्टी ने क्रोधपूर्वक मि० टट की ओर देखा और कहा, "क्या आप जानते हैं कि आपकी वह मूल्यवान बावर्चिन अब कहाँ है ?"

मि० टट ने अपनी लम्बी उंगलियों को आपस में मिलाते हुए, मधुर हँसी के साथ गोगार्टी को ओर देखकर, उत्तर दिया, "मुझे कुछ भी तो मालूम नहीं है।"

"आपने उसे कब से नहीं देखा ?"

"परसों रात से। उसने मुझे बताया था कि वह शहर के दक्षिणी भाग में अपने सम्बन्धियों से मिलने जाना चाहती थी, क्योंकि मेरी भी भी एक-दो सप्ताह के लिए क्लब में ही ठहरने की इच्छा थी, इसीलिए मैंने उसे जाने की आज्ञा दे दी थी। अगर वह मेरे घर पर नहीं है, तो मैं नहीं जानता कि वह इस समय कहाँ होगी ?"

"क्या आपको यह मालूम नहीं था कि इस मुकदमे के सिलसिले में गवाही देने के लिए उसकी सख्त ज़रूरत पड़ेगी ?" गोगार्टी ने कड़कते हुए कहा।

"मुझे यह मालूम नहीं था कि आप जैसे अभियोजक, जो मुकदमे की पूरी तैयारी करने के लिए प्रसिद्ध हैं, की आवश्यकताओं के बारे में मुझे भी सोचने के लिए बाध्य होना पड़ेगा, मि० गोगार्टी !" मि० टट ने उत्तर दिया, "और मैंने तो अभी सुना था कि आपने उसके नाम में ज़रूरी सम्मन भी जारी किया है।"

गोगार्टी हार कर अपनी कुर्सी में धंस गया।

"बस इतना ही।" उसने एकाएकी कहा और हाथ हिलाकर मि० टट को संकेत किया कि मि० टट कठघरे से नीचे आ सकते थे। लेकिन वृद्ध व्यक्ति अपनी जगह से हिला तक नहीं।

"क्या आप पूछ-ताछ खत्म कर चुके हैं, जनाब?" उन्होंने अत्यधिक विनम्रतापूर्वक प्रश्न किया।

"बेशक! अब आप कठघरे से वापस आ सकते हैं।" गोगार्टी ने उत्तर दिया।

"नहीं, मैं यहाँ ही कुछ देर तक और रुके रहना चाहता हूँ," मि० टट ने कहा, "अब मेरी बारी है—और मैं वकील को प्राप्त विशेष अधिकार कि वह गवाह से जिरह कर सकता है, का प्रयोग करना चाहता हूँ।"

जूरी-कक्ष में बैठे, बारह सदस्यों ने इस बात को मि० टट का एक मज़ाक माना और सब हँस दिए। सदस्य सं० छः ने ठहाका लगाया, इतना सब हो जाने पर भी, मि० टट ने गला साफ करते हुए, अत्यधिक गम्भीरता के साथ अपने ही सामने एक प्रश्न प्रस्तुत किया :

"मि० टट," मि० टट ने पूछा, "क्या आपने सत्रह अप्रैल की शाम अपने घर लौट आने के बाद घर का दरवाज़ा बन्द किया था और उसमें ताला लगाया था?"

गोगार्टी ने उछलते हुए कहा, "यहीं रुक जाइए। आप ऐसा नहीं कर सकते!"

मि० टट ने विनीत स्वर में पूछा, "क्यों नहीं?"

"यह सब बेकार की बात है! कभी किसी ने गवाह को अपने-आप से जिरह करते सुना है?"

"मैंने तो कई बार ऐसा किया है," वृद्ध वकील ने उत्तर दिया, "यह बात कितनी ही असाधारण क्यों न लगती हो, लेकिन वर्तमान परिस्थितियों में वैधानिक रीति से यही उचित है।"

"इस मुकदमे में यही क्या, और भी कई बातें असाधारण हैं।" गोगार्टी ने गुर्राते हुए कहा। फिर उसने क्रोधपूर्वक जज की ओर देखते हुए आगे

कहा, "श्रीमान् ! मुझे प्रतिवादी के वकील के इस रवैये पर एतराज़ है कि यह जनाब अपने-आपसे सवाल करने का ढोंग रचकर, जूरी पर ग़लत असर डालने की कोशिश कर रहे हैं।"

यद्यपि मि० टट ने अपनी कार्यवाही के सम्बन्ध में जो दलील दी थी, वह पूर्ण रूप से युक्तिसंगत थी, लेकिन इस तरह की बात का मक्कन का पहला ही अनुभव था। इसके अतिरिक्त वह गोगार्टी से मुकदमे की बिलकुल तैयारी नहीं करने और पैरवी करने के ढंग की वजह से भी बहुत नाराज़ था। उसने बाधा डाली।

"क्या आपका यह तरीका अनोखा नहीं है मि० टट ?" उसने मत प्रकट किया, "ठीक तो है—कैसे एक गवाह अपने आपसे जिरह कर सकता है ? एक ही समय गवाह और वकील होना सम्भव नहीं है।"

"श्रीमान् जज के इस मत को पूर्ण रूप से आदरणीय मानते हुए भी, मैं इतना ज़रूर कहना चाहता हूँ कि ऐसा होना सम्भव ही नहीं बल्कि बहुत बार अत्यावश्यक भी हो जाता है," मि० टट ने उत्तर दिया, "ज़रा पुर्नविचार करने से ही श्रीमान् के सामने यह स्पष्ट हो जाएगा कि ऐसा होना ही चाहिए। क़ानून में कहीं ऐसा नहीं लिखा है कि एक प्रतिवादी के वकील को विरोधी पक्ष के गवाह से जिरह करने का अधिकार प्राप्त नहीं है। यदि मैं अभियोजक की ओर से प्रमुख गवाह होने की बजाय, प्रतिवाद-पक्ष का गवाह होता तो तब भी—"

"क्यों नहीं", गोगार्टी ने कर्कश-स्वर में कहा, "आप अभियोजक के बहुत अच्छे गवाह हैं !"

"मैं फिर अपनी बात शुरू करता हूँ कि अगर मैं प्रतिवाद-पक्ष का गवाह होता, तो तब भी क्या केवल इसी आधार पर कि मैं अपराधी का वकील भी हूँ, मुझे अपने मुवक्किल के पक्ष में गवाही देने से रोक देने की बात पर अभियोजक द्वारा इतना आग्रह किया जाता ?" मि० टट ने कहा, "यदि ऐसा होता तो वह क़ानून के प्रति अनर्थ माना जाता। यहाँ तो अभियोजक ने स्वयं मुझे गवाही देने के लिए बुलाया है। क़ानून की दृष्टि में तो सब बराबर हैं—क़ानून कभी भी राजा और रंक में पक्षपात नहीं करता।" मि० टट ने गोगार्टी की ओर एकटक ग़ौर से देखते हुए आगे कहा, "जब

अभियोजक अपने उद्देश्य को ही अधिक महत्त्व देना चाहता है, तब न्याय की आशा कैसे की जा सकती है? जब अपनी उद्देश्य-पूर्ति के लिए अभियोजक एक गवाह को अदालत के सामने प्रस्तुत करता है तो प्रतिवादी के वकील से उसी गवाह के साथ जिरह करने का प्रमुख अधिकार क्यों छीनना चाहता है ?"

"आपकी बात वैधानिक दृष्टि से उपयुक्त और तर्कसंगत मालूम देती है," मक्कन ने कहा, "मैं यह कबूल करता हूँ कि गवाह की अपने-आपसे जिरह करने की बात पहली निगाह में मुझे बहुत अजीब लगी थी और एक मुश्किल···"

"यह भी तो है श्रीमान् कि प्रतिवादी की ओर से मेरे साथ जिरह करने वाला, सिवाय मेरे कोई नहीं है। यह एक संयोग की बात है—नहीं तो, यदि मेरा कोई सहयोगी होता, वह मुझसे जिरह कर लेता और सबको इतनी उलझन का सामना नहीं करना पड़ता। इसके अलावा, कोई भी प्रतिवादी स्वयं अपनी वकालत कर सकता है और मेरा प्रतिवादी भी ऐसा कर सकता है, लेकिन जब मैं प्रतिवादी का वकील यहाँ मौजूद हूँ तो मुझे कोई वजह नज़र नहीं आती जो मेरी अपने-आपसे जिरह करने की बात को ग़लत साबित कर सके ?"

"मेरा भी ऐसा ही विचार है," मक्कन ने उत्तर दिया, "आप आगे चलिए।"

मि० टट ने ज़रा गर्दन झुकाई और कहा, "अच्छा मैं कहाँ था—हाँ, हाँ ! प्रश्न यह था कि क्या मैंने उस रात दरवाज़ा बन्द किया था और उसे ताला लगाया था ? मेरा उत्तर है—"

"मुझे ठीक तरह याद नहीं है कि मैंने ऐसा किया था या नहीं। क्योंकि मैं वूढ़ा हो चला हूँ, मेरी स्मरण-शक्ति भी क्षीण हो गई है—लेकिन जहाँ तक मेरा विचार है और जैसा कि मेरे साथ प्रायः होता रहता है—उस रात भी मैं दरवाज़ा बन्द करना भूल गया था। ऐसी स्थिति में," उन्होंने मक्कन की ओर देखते हुए कहा, "यदि मैं अब अपने पदानुसार अर्थात् प्रतिवादी का वकील होने के नाते यह कहूँ, तो ग़लत नहीं होगा, कि मेरे मुवक्किल ने सेंधमारी का अपराध नहीं किया और अगर कोई अपराध लगाना बहुत

ज़रूरी है तो उसे केवल ग़ैर-कानूनी प्रवेश के लिए दोषी माना जा सकता है।"

मक्कन ने गर्दन हिलाकर सहमति प्रकट की। गोगार्टी का मामला खत्म हो चुका था। मि० टट ने कार्यवाही को आगे बढ़ाया।

"मि० टट, क्या आप यह जानते हैं कि इस प्रतिवादी ने आपके घर किस तरह प्रवेश किया था ? क्या यह दरवाज़ा खुला देखकर या घंटी बजाकर या बार्वचिन के बुलाने पर अन्दर पहुँचा था ?"

"नहीं, मैं नहीं जानता।"

"क्या आप यह जानते हैं कि प्रतिवादी आपकी बार्वचिन का मित्र होने के नाते आपके मकान में मौजूद था या उसने बिना आज्ञा के वहाँ प्रवेश किया था ?"

"नहीं, मैं नहीं जानता।"

"क्या आप यह जानते हैं कि किचन की मेज़ पर उस रात जो भोजन-सामग्री रखी थी वह सब बार्वचिन ने प्रतिवादी को स्वेच्छा से देने के लिए वहाँ रखी थी या नहीं ?"

"मुझे मालूम नहीं है।"

"क्या आप यह बता सकते हैं कि प्रतिवादी कब बेहोश हुआ था—बार्वचिन के चीत्कार करने से पहले या बाद में ?"

"नहीं, मैं नहीं जानता।"

गोगार्टी अपनी कुर्सी में विवश-सा पड़ा था और मन ही मन कुढ़ रहा था।

"रुक क्यों गए ?" गोगार्टी ने फुफकारते हुए कहा, "कुछ बाकी बचा हो तो वह भी पूछ लो।"

"मेरी जिरह खतम हुई। क्या आपको फिर से कुछ पूछ-ताछ करनी है ?" मि० टट ने पूछा।

"नहीं।"

मि० टट गवाह के कठघरे से नीचे उतरे और वकील की कुर्सी पर जा बैठे और जूरी के सदस्य भ्रान्त-दृष्टि से उनकी ओर देखते रहे।

"प्रतिवाद-पक्ष की ओर से यहीं तक," उन्होंने कहा, "अब मैं अदालत

से प्रार्थना करता हूँ कि मेरे मुवक्किल को निर्दोष घोषित किया जाए।"

"क्या ग्राप ग्रनुपस्थित गवाह के कारण ग्रदालत की कार्यवाही स्थगित कराना चाहेंगे ?" मक्कन ने पूछा।

गोगार्टी पहले ही काफी तंग हो चुका था ग्रौर फिर न जाने वह ग्रौरत कहाँ मर गई थी। जितनी जल्दी यह झंझट खत्म हो, उतना ही ग्रच्छा रहेगा—उसने सोचा।

"मुझे कुछ नहीं कहना है," वह बड़बड़ाया, "जितनी जल्दी हो सके··· इस मुकदमे को खत्म कर दीजिए।"

मक्कन ने ग्रदालत में उपस्थित जन-समुदाय को सावधान करने के लिए हथौड़ी बजाई।

"जूरी के सदस्यगण," उसने कहा, "इस प्रतिवादी के विरुद्ध जो भी ग्रभियोग लगाए गए, उन्हें सिद्ध करने में ग्रभियोजक ग्रसफल रहा है। ग्रब हमारे पास कोई भी ऐसा प्रमाण नहीं है जिसके ग्राधार पर हम ग्रपराध सिद्ध कर सकें ग्रौर कह सकें कि प्रतिवादी को उस मकान में मित्र ग्रथवा भिखारी के रूप में नहीं ग्राने दिया गया था ग्रौर मिरांडा वाशिंगटन ने मेज़ पर रखी हुई भोजन-सामग्री, प्रतिवादी को स्वेच्छापूर्वक खाने के लिए या ग्रपने परिवार में ले जाने के लिए दान ग्रथवा भेंट के रूप में नहीं दी थी ग्रौर मिरांडा वाशिंगटन की चीख़-पुकार, प्रतिवादी के ग्रचानक बेहोश होकर गिर जाने के कारण नहीं थी। इसीलिए मैं प्रतिवादी को निर्दोष घोषित करने का ग्रादेश देता हूँ। यदि ग्रदालत को प्रमाण-सिद्धि के सिद्धान्त पर ही निर्भर नहीं करना पड़ता तो इस मुकदमे का रूप कुछ ग्रौर ही होता !"

जूरी के सदस्यों ने, यह जानने के लिए कि दरग्रसल मामला क्या था, मि० टट को चारों तरफ से घेर लिया। गोगार्टी दुबककर एक ग्रोर हट गया।

"मैं उसके बेहोश हो जाने की बात भूल गया था।" प्रसिद्ध ग्रभियोजक ने झूठी सफाई देने का प्रयत्न करते हुए कहा।

"मैं जानता हूँ कौन होश गँवा बैठा था !" मक्कन ने फब्ती कसी।

तब ही एक स्थूलकाय नीग्रो स्त्री जिसके भड़कीली छींट के वस्त्र थे ग्रौर जो नीले रंग का रूमाल कंधे पर बाँधे हुए थी, ग्रदालत में दाखिल हुई ग्रौर

उपस्थित जन-समुदाय में से रास्ता बनाती हुई, जज के उच्च ग्रासन के समीप ग्राई ग्रौर ग्रपने सफेद दाँत दिखाकर हँसते हुए कहा, "मुझे मुग्राफी मिले, मैं मैंडी वाशिंगटन हूँ, मैंने ग्रभी-ग्रभी सुना कि यहाँ कोई मुझे ढूँढ़ रहा था ?"

"ग्रोह, ग्रब ग्राई हो तुम !" गोगार्टी चिल्लाया, "ग्राखिर कहाँ थी तुम इतनी देर से ? तुम्हें मालूम नहीं है क्या—सम्मन मिल जाने के बाद ठीक वक्त पर ग्रदालत में नहीं पहुँचने से जज चाहे तो तुम्हें जेल भेज सकता है ?"

मिरांडा ने ग्रवज्ञापूर्ण दृष्टि से उसकी ग्रोर देखा ग्रौर ग्रपने दोनों हाथ बेफिक्री से ग्रपने भारी कूल्हों पर रख लिये। फिर मि० टट से ग्राँख मिलाते ही उसने ग्रपने-ग्राप ही ज़ोर से हँसते हुए उत्तर दिया, "कैसे ग्रादमी हो ! दिखाई नहीं देता कि मैं ग्रदालत में मौज़ूद हूँ। घर से चली, रास्ते-भर कहीं भी नहीं रुकी ग्रौर सीधी यहाँ ग्रा रही हूँ। मैं इन भबकियों से डरने वाली नहीं हूँ। मैं ग्रच्छी तरह जानती हूँ—जज मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकेगा !"

अपमान

श्रीमान् एमोस टी० विल्टबैंक एक 'हरफ़न मौला' व्यक्ति थे—नहीं तो अपने असली नाम ए० टोड्हंटर विल्टबैंक जिसके प्रयोग पर उनका पूरा क़ानूनी अधिकार था, के रूप को क्यों बदल देते ? और उन्होंने ऐसा क्यों किया था, इस बात का रहस्य उनके अतिरिक्त कोई नहीं जानता था। अमीर होने के बावजूद भी वे पुरानी रीति के धनाढ्यों की तरह न तो लम्बा रेशमी हैट पहनते थे और न उनकी दाढ़ी-मूँछें थीं और न उनके हाथ में कभी सोने की मूठ वाली छड़ी, उनके ठाठ-बाट का प्रदर्शन करती दिखाई देती थी। इसके विपरीत, वे अपने सिर के गंजे भाग को ढाँपने के लिए हरे फैल्ट हैट का प्रयोग किया करते थे। उनकी गर्दन की त्वचा, कमीज़ के मुड़े हुए कालर से दिखाई देती रहती थी और वे अपने कोट के लेपैल पर, हिरन के सींगों से बनी हुई आकर्षक पिनों की एक जोड़ी का प्रयोग करते थे। वे महानुभाव केवल धन और फैशन का ढोंग रचने वाले रईस अथवा पुरानी चाल के लखपती नहीं थे, बल्कि वे 'लेम्ब्स' क्लब और शेरिफ की जूरी के सम्मानित सदस्य थे और उनकी 'बेसबॉल' की प्रसिद्ध टीम 'जायंट्स' में गहरी दिलचस्पी थी और कई बार वे मैदान में, खेल का उद्घाटन करते हुए, बहुत तेज़ गेंद भी फेंका करते थे।

उन्हें व्यक्तिगत रूप से जानने वाले व्यक्ति भी उन्हें अच्छी तरह नहीं जान पाते थे। एक ओर तो उनमें ज़िन्दादिली की सारी खूबियाँ मौजूद थीं और उनका मिज़ाज 'कलीग्युला'[1] के समान माना जा सकता था। उनकी कहाँ पहुँच नहीं थी ? जहाँ भी वे जाते थे, लोग उनका स्वागत करने के लिए मौजूद रहते थे और सदा ही वे हर बात में सबसे आगे निकल जाते थे।

---

1. कलीग्युला—रोमन राजाधिराज (राज्य-काल 37-41 ईस्वी) जो अपनी क्रूरता और पाशविक प्रकृति के कारण अत्यधिक बदनाम था। उसके प्रकोप से चारों दिशाएँ आतंकित हो उठी थीं। इसीलिए 'कलीग्युला' शब्द क्रूरता की पराकाष्ठा को अभिव्यक्त करता है।

पोलो ग्राउंड में उनका अपना अलग एक कक्ष था और शनिवार की शामें वहाँ गुज़रती थीं···लेकिन वहाँ कुछ ऐसा अरुचिकर वातावरण छाया रहता था कि उस जगह उपस्थित, नगर प्रशासन के उच्च अधिकारी अक्सर यही सोचा करते थे कि काश वहाँ नहीं आए होते। लेकिन श्रीमान् एमोस टी० विल्टबैंक से मिले बग़ैर काम भी तो नहीं चलता था, क्योंकि राजनीतिक और व्यापारिक क्षेत्रों में उनकी धाक जमी हुई थी और वे अत्यन्त सम्भानित व्यक्ति थे और जो कुछ वे चाहते थे, वही होता था। उनकी पत्नी का स्वर्ग-वास हो चुका था।

श्रीमान् एमोस टी० का दफ़्तर, बिल्डिंग की सैंतीसवीं मंज़िल—बहुत ऊँचाई—पर स्थित था, जबकि टट एंड टट, वकीलों की एक फर्म का दफ़्तर काफी निचली मंज़िल पर मौजूद था। श्रीमान् एमोस टी० के दफ़्तर में हर चीज़ करीने से रखी रहती थी—वहाँ की रूप-सज्जा को कुर्दिस्तान के भव्य और सुन्दर कालीनों, बलूत की लकड़ी के बने हुए सुन्दर और मूल्यवान फर्नीचर, सीपियों के समान चमकीले पुश-बटनों और हरे रंग के उत्कृष्ट स्पेनिश कृत्रिम चमड़े के साज़-सामान ने चार-चाँद लगा रखे थे और उस स्वर्गिक वातावरण में वे महानुभाव निवास किया करते थे। दूसरी ओर वृद्ध वकील के दफ़्तर में 'न्यूयार्क अपराध रिपोर्ट' और 'एबट' की 'क़ानूनी कार्रवाई और उसके रूप' आदि कानून सम्बन्धी पुस्तकों पर धूल-मैल अटी रहती थी और उनके बीच घिरे हुए मि० एफ्रेम टट सस्ते और लम्बे सिगार का जहरीला धुआँ उड़ाते रहते थे। एक ही बिल्डिंग में स्थित उन दोनों दफ़्तरों में ज़मीन-आसमान का फ़र्क़ था—यदि एक जगह सुन्दर-सुसज्जित आलीशान ड्राइंग रूम के समान थी तो दूसरी घटिया किस्म के किचन की तरह नज़र आती थी।

उन दोनों दफ़्तरों में आपसी सम्बन्ध नहीं थे। एमोस टी० का कानूनी-रिश्ता 'वेडंरपोएल, कल्लाहन एंड लेविट्स्की' फर्म से था। वह फर्म राज-नीतिक और क़ानूनी क्षेत्रों में काफी प्रसिद्ध थी। यूँ कभी-कभी मि० टट की एमोस टी० से मुठभेड़ हो जाया करती थी, लेकिन कभी उन दोनों में कोई बातचीत नहीं हुई थी। वह मि० टट को जानता तक नहीं था लेकिन मि० टट उसके बारे में काफी कुछ जानते थे और उसे नापसन्द भी करते थे—

और यह सब एक मामूली और छोटी-सी घटना का प्रभाव था। एक दिन लिफ्ट से निकलते हुए एमोस टी० ने एक वृद्ध महिला को धक्का देकर आगे निकलने का प्रयत्न किया था, लेकिन मि० टट ने पीछे से पकड़कर उसे रोक दिया था और वृद्ध महिला गिरते-गिरते बच गई थी। एक फटे-हाल बूढ़े व्यक्ति ने उसके प्रति धृष्टता की थी, इस बात की प्रतिक्रिया में उसने सुबह-सुबह, अपने दफ्तर में पहुँचते ही, दो कर्मचारियों और एक सेल्ज़मैन को नौकरी से निकाल दिया था और एक स्टेनोग्राफर को बुरी तरह डाँटा था। हां, तो उसके चरित्र में निकृष्टता की रेखा विद्यमान थी और इस दाग़ के बावजूद भी वह लोगों की निगाह में एक लाजवाब आदमी था !

उसी बिल्डिंग में जहाँ काफी ऊँचाई पर वह लक्ष्मीवान व्यक्ति बैठता था, की काफी निचली मंजिल में ही टट एंड टट कम्पनी के दफ़्तर के बगल वाले कमरे में मि० मोजेज इस्कलबोम का भू-सम्पत्ति का साधारण-सा दफ़्तर था जहाँ भूमि, स्थायी सम्पत्ति, मौरूसी सम्पत्ति, किराया, बीमा सम्बन्धी कार्य होता था। उस दफ़्तर के उस मामूली कमरे में दो मेज़ें पड़ी रहती थीं, जिनमें से एक पर मि० मोजेज बैठते थे और दूसरी मेज़ पर, उनकी एकमात्र सहायक, बाईस वर्षीय मिस माग्रेट हेगर्टी बैठती थी। यूँ वह दफ़्तर मि० मोजेज का दफ्तर कहलाता था, लेकिन दरअसल वहाँ का सारा काम मैगी की सूझ-बूझ से होता था।

दरवाजे पर यह बोर्ड लगा हुआ था :

मोजेज इस्कलबोम
भू-सम्पत्ति और बीमा विशेषज्ञ
एम० हेगर्टी, नोटरी

परन्तु उस बोर्ड को दरअसल निम्नलिखित रूप में होना चाहिए था :

मार्ग्रेट हेगर्टी
भू-सम्पत्ति और बीमा विशेषज्ञ
एम० इस्कलबोम

श्रीमान् एमोस ने उन दोनों का नाम कभी पहले नहीं सुना था और कभी भी ऐसा मौक़ा नहीं आता—यदि एक आश्चर्यजनक घटना नहीं गुज़री होती, जिसमें मैगी हेगर्टी ने उस लक्ष्मीवान व्यक्ति के जीवन में तूफ़ान पैदा

कर दिया था और उसे फिर से इन्सान बना दिया था।

कुछ साल पहले एमोस टी० विल्टबैंक ने 'डचेस काउंटी' के पहाड़ी इलाके में बहुत बड़ी जायदाद ख़रीदी थी। हमेशा की तरह ही वहाँ भी उसने बिजनेस में अपनी तेज़ रफ़्तारी के कारण कई हज़ार एकड़ ज़मीन खरीदकर सब को पीछे छोड़ दिया था। वहाँ जितना हिस्सा अपने लिए अनेक लॉन, बाग़, फार्म और शिकारगाहें बनाने के बाद बच गया था, उसने दूसरे लोगों को बेच दिया था। ऐसे लोगों में एजरा कार्टर नाम वका एक नवयुवक किसान भी था, जिसने अपना घर, खेत-खलिहान बनाने के लिए पचास एकड़ ज़मीन ख़रीदी थी। यह क्रय-विक्रय मिसेज़ विल्टबैंक के दिनों में हुआ था और एमोस टी० ने दूरअंदेशी से काम लेते हुए, उस ज़मीन सम्बन्धी सारा लेन-देन अपनी पत्नी के नाम में किया हुआ था। कहने को तो वह ज़मीन मिसेज़ विल्टबैंक से बराए नाम ही ख़रीदी गई थी, क्योंकि सारा लेन-देन तो एमोस टी० स्वयं करता था, लेकिन फिर भी क़ानूनी कार्र-वाई पूरी करने के लिए यह ज़रूरी था कि उस ज़मीन के दस्तावेज़ में कार्टर की युवा पत्नी का नाम ज़रूर आ जाना चाहिए था।

उस लक्ष्मीवान व्यक्ति के लिए उस ज़रा-सी बेकार ज़मीन का सौदा एक तुच्छ-सा मामला था, लेकिन कार्टर के लिए वह भूमि अत्यधिक महत्त्व रखती थी। उस धरती पर उसकी ज़िन्दगी, उसकी रोज़ी, घर-परिवार और भविष्य, सभी-कुछ तो निर्भर करते थे और उसे ख़रीदने के लिए उसने नौ वर्षों की कमाई लगा दी थी। सौदा पक्का हो जाने के बाद, वह अमीर आदमी, उस मामूली-सी ज़मीन के दस्तावेज़ को अपनी मेज़ पर रखकर भूल गया था और जब कार्टर के कहने पर एक स्थानीय भू-सम्पत्ति व्यापारी ने उस दस्तावेज़ को पूरा करने के लिए मि० विल्टबैंक से प्रार्थना की तो उसने उसे अनसुना कर दिया था। फिर कार्टर ने उस महान् व्यक्ति से प्रार्थना की थी, लेकिन महाशय को फ़ुर्सत कहाँ थी ? वह तो अपने 'पालतू कुत्तों' के लिए एक घर बनवाने में अत्यधिक व्यस्त था और इस तरह उसे कार्टर की विनती याद ही नहीं रह पाई थी।

आख़िर एक दिन सुबह ही वह किसान, धन लेकर उसके घर पहुँच गया था। महान व्यक्ति ने अपनी पत्नी को बुलाकर दस्तावेज़ पर हस्ताक्षर

करवाए थे और स्वयं भी गवाह के रूप में हस्ताक्षर किए थे और फिर कार्टर द्वारा दिए गए मैले-कुचैले नोट अपनी जेब में भरकर, वह दस्तावेज़ कार्टर को दे दिया था। उसके बाद वह नवयुवक किसान अपनी युवा पत्नी को लेकर, फार्म पर आ गया था। और वहाँ पहुँच जाने के बाद उसके यहाँ एक बच्चे का जन्म हुआ था। उस व्यक्ति की जीवन की एकमात्र महत्त्वाकांक्षा यही थी कि उसके पास अपनी ज़मीन होती और वह ईमानदारी से जीवन-यापन करता—और जब ऐसा हो गया था, तब ही एक दिन वह अचानक बीमार पड़ा और सदा के लिए उस धरती को छोड़कर चला गया।

ये सब बीती हुई बातें थीं और इन बातों का हमारे इस सुखांत प्रहसन से उतना ही सम्बन्ध है जितना कि स्टेज पर सीनरी के पर्दे का होता है। और फिर उसके बाद मिसेज़ विल्टबैंक की मृत्यु हो गई थी और विल्टबैंक उस ग्रामीण निवास-स्थान को छोड़कर शहर में आ गया था और उसने दोबारा अपना रंग जमा लिया था।

पति की मृत्यु हो जाने के बाद, मिसेज़ कार्टर ने फार्म का काम चलाने की बेहद कोशिश की थी, लेकिन हारकर उसे बेचने के लिए तैयार होना पड़ा था—और फिर एक ख़रीदार भी आ गया था। जिस दिन ग्राहक के नाम अधिकार-पत्र बनने वाला था तो उसी दिन अदालत के क्लर्क ने मिसेज कार्टर को बताया था कि पहले दस्तावेज़ पर कार्टर ने अपनी पत्नी का नाम इन्दराज नहीं कराया था, इसीलिए उसे वह ज़मीन तब तक बेचने का हक़ नहीं था जब तक कि मिसेज विल्टबैंक, जिसने पहले हस्तान्तरण-पत्र के द्वारा उस भूमि के अधिकार कार्टर को सौंप दिए थे, दस्तावेज़-कमिश्नर के समक्ष पुनः इस तथ्य को स्वीकार न कर ले। इसीलिए कोई भी ग्राहक ज़मीन ख़रीदते वक्त ऐसी ज़मीन कैसे ख़रीदता जिसके मालिक के दस्तावेज़ में किसी तरह का शक-शुबहा मौजूद था। जब यह मालूम हो गया कि मिसेज विल्टबैंक की मृत्यु हो चुकी थी—तब भी क्या कोई रास्ता निकल सकता था? क्लर्क के अनुसार एक ही रास्ता था कि इस तरह के मामलों के अधि-नियम के अनुसार मिसेज़ कार्टर पहले दस्तावेज़ पर गवाह के रूप में हस्ता-क्षर करने वाले मि० विल्टबैंक से एक शपथ-पत्र लिखवाकर ले आए कि जिस समय उसकी पत्नी ने उस दस्तावेज़ पर हस्ताक्षर किए थे, तो उस

समय वह भी वहाँ मौजूद था।

पाठकगण ! आपको यह एक मामूली-सी बात नज़र आएगी, कि उस स्त्री को करना ही क्या था ? ट्रेन में बैठती और श्रीमान् एमोस टी० विल्ट-बैंक के पास पहुँचकर शपथ-पत्र ले आती। लेकिन इस मामूली-सी बात में ही क़ानून की बिडम्बना छिपी है। हमें जो 'हाँ' और 'नहीं' दो छोटे शब्द दिखाई देते हैं, और ऐसा महसूस होता है कि इन्हें लिखने के लिए, विशेष उपकरणों की आवश्यकता नहीं होती है—एक कागज हो, जरा हाथ उठे और क़लम झट से इन शब्दों को अंकित कर दे। काश, यह बात इतनी मामूली ही होती ! लेकिन 'नहीं' के अलावा जहाँ हस्ताक्षर अथवा सौगन्ध के साथ कुछ लिखवाना ज़रूरी हो, तो और भी अधिक मुश्किल का सामना करना पड़ेगा और जब प्रार्थी की अपनी स्थिति ही डाँवाडोल हो तो 'करेला नीम चढ़ा' वाली बात हो जाती है। प्रार्थी ग़रीब हो, उसे क़ानूनी मामलों का सामान्य ज्ञान तक न हो और वह प्रतिकूल परिस्थितियों में घिरा हुआ हो, तो यह मामूली-सा काम भी दुष्कर हो जायगा।

श्रीमान् एमोस टी० विल्टबैंक के लिए तो यह एक मामूली बात होती, क्योंकि वे अपने फर के सूट में सज-धजकर, साठ मील प्रति घंटे की रफ़्तार से अपनी कार में उड़ते हुए न्यूयार्क आते, अपने वकील को टेलीफोन करते और कैसा भी शपथ-पत्र, किसी से भी, यहाँ तक कि मेयर से भी, केवल आध घंटे में ही बनवाकर वापस लौट जाते; लेकिन मिसेज़ कार्टर के लिए यह बिलकुल दूसरी ही बात थी। खेत-खलिहान का इन्तज़ाम करना, मकान को ताला लगाना, रेलवे-स्टेशन तक पहुँचने के लिए सात मील का कच्चा रास्ता पार करना और फिर कैसे ही न्यूयार्क में पहुँच जाने पर भी उस महान् व्यक्ति से दर्शन-लाभ उठाने की आज्ञा प्राप्त करना और फिर हाथ-पाँव जोड़ना कि वे महाशय उस ज़मीन के अधिकार-पत्र की खाना-पूरी करने के लिए एक शपथ-पत्र लिख दें—यह सब कराने में सफल हो पाना उस स्त्री के लिए कितना मुश्किल होगा जिसे जीवन में केवल दो बार शहर में आने का मौक़ा मिला था और क़ानून के बारे में उसका ज्ञान बिलकुल कोरा था। इन बातों से उस निस्सहाय स्त्री की दुर्दशा का अच्छी तरह अन्दाजा लगाया जा सकता है। परन्तु एक बात ज़रूर थी कि 'डचेस काउंटी' के स्थानीय भू-सम्पत्ति

एजेण्ट ने एक कागज़ पर मोजेज इस्कलबोम का नाम और पता लिख दिया था ताकि शहर में पहुँचकर उसकी सहायता से काम करा लिया जाए।

आइए, अब हम 'ब्राड्वे' की एक ऊँची बिल्डिंग के सामने चलते हैं, जहाँ से हम अपने पात्रों को, बिल्डिंग के घूमते हुए दरवाज़ों से, बारी-बारी से अन्दर जाते हुए देखेंगे, क्योंकि उन्हें अपने-अपने दफ़्तर में पहुँचकर हमारे इस प्रहसन की विभिन्न भूमिकाओं में अभिनय करना है। सबसे पहले मोजेज इस्कलबोम, दुबला-पतला, गंजा, बगल में अग्नि-बीमापत्र दबाए घबराया हुआ, तेज़ी से अन्दर चला जाता है; उसके बाद वृद्ध वकील टट, लम्बा रेशमी हैट पहने, हाथीदाँत की मूठ वाली छड़ी लिए हुए, अन्दर जाने से पहले ज़रा रुककर 'चूहे' की पूँछ जैसा लम्बा-पतला सिगार, माचिस सुलगाकर जलाते हैं और फिर अन्दर तशरीफ़ ले जाते हैं; फिर मि० टट की मुख्य क्लर्क और विश्वसनीय सहायक और जिसे वृद्ध वकील प्रायः अपनी 'क़ानूनी चेतना' कहा करते थे—मिस मिनर्वा विगिन, जो हल्के काले रंग के कपड़े पहने हुए है और जिसके हाथ में चमड़े का छोटा बैग है, तेज़ी और चुस्ती के साथ अन्दर चली जाती है और उसके बाद श्रीमान् एमोस टी० विल्टबैंक का आविर्भाव होता है—होशियार ! ख़बरदार ! सिगार का धुआँ छोड़ते हुए, शान और दबदबे के साथ, ओवरकोट में और आँखों पर गॉगल लगाए हुए वे महान् व्यक्ति कार से उतरकर अन्दर पधार रहे हैं।

आइए, हम भी उनके साथ चलते हैं। देखिए लिफ़्टमैन, राजसी ठाठ से चलते हुए उस महान् व्यक्ति को देखकर अपनी टोपी को छूकर सलाम करता है। ध्यान दीजिए, ऐसा लगता है कि ज़रा-सी देर में वह लिफ़्ट उस स्वर्ग की ओर उठती जाएगी जिसे आज तक साधारण व्यक्ति कभी भी कलंकित नहीं कर पाए हैं।

"जिम ! सीधे सैंतीसवीं मंज़िल पर।" उसने आज्ञा दी। किस शान के साथ एमोस अपने दफ़्तर में दाख़िल होता है, उसका भी अवलोकन कीजिए। किस अभिमान के साथ वह अपनी प्रजा के अभिवादन का उत्तर देता है और फिर जब एक विनम्र क्लर्क, दफ़्तर के पहले कमरे में उसका ओवरकोट उतारता है तो उसका गर्व देखिए—और जब मिस मेडन, उसकी सोशल सेक्रेटरी, चुस्ती और बेताबी के साथ उसे उस दिन की डाक

के सम्बन्ध में छोटी-बड़ी सब सूचनाएँ देती है, तो उस महान् व्यक्ति का विशिष्ट व्यवहार दर्शनीय है। आप इस बात पर ज़रूर ग़ौर फ़रमाएँ कि उसके कक्ष के चारों ओर अत्यधिक शान्तिपूर्ण वातावरण विद्यमान है। हमारा विश्वास है कि आपने इस बात को भी ज़रूर ध्यान से देखा होगा कि जैसे ही वह दफ़्तर में दाख़िल हुआ था वैसे ही सारा वातावरण स्तब्ध रह गया था। क्या एमोस टोड्हंटर—महानता की महानतम जीवित मूर्ति नहीं थे ? क्यों नहीं ? इतने बड़े दफ़्तर में उनका एकछत्र राज्य था। उनकी महानता के प्रति किसे शंका हो सकती थी ?

"मैं हूँ 'आजूमाँदिया'—महाराजाधिराज !
देख—महत्ता, प्रतिभा मेरी : क्यों हुए हताश ?"

मैगी हेगर्टी को दफ़्तर पहुँचने में देर हो गई थी, लेकिन उसे देर हो जाने पर भी, पुलिस अधिकारी डेनिस ओ' लीरी से कुछ देर हँसी-मज़ाक करना हमेशा अच्छा लगता था—क्योंकि वह अच्छी तरह जानती थी कि किसी दिन उसका और डेनिस का विवाह हो जाएगा। शायद ऐसा तब होगा जब वह कप्तान बनेगा, लेकिन फिर भी वह उसे आसानी से अपना हाथ पकड़ने देना नहीं चाहती थी, क्योंकि जो सहज पके, वह फल मीठा होता है। इसीलिए वह समीप आकर भी दूरी बनाए रखती थी।

"आज क्या काम से छुट्टी है, मैगी ?" उसने कहा और यातायात संगम पर हाथ के इशारे से ट्रैफिक रोक दिया और बालिकाओं के एक झुंड को जाने का इशारा करते हुए, वह आगे बोला, "आज क्या बात है ? इतनी सुन्दर क्यों नज़र आ रही हो ? अगर ब्राड्वे की बजाय कहीं और मिलते तो मैं···मैं एक चुम्बन चुराए बग़ैर नहीं रह सकता था।"

मैगी ने उसकी मज़बूत पसलियों में नर्मी से कोहनी चुभोते हुए कहा, "कुछ अक़्ल है भी या नहीं—" और फिर हँसते हुए आगे बोली, "हमने तो सुना था कि तुम्हारा काम चोर पकड़ना है, चोरी करना नहीं। तुम···चुम्बन चुराओगे ! अपनी शक्ल भी देखी है ?"

उसने मैगी को पकड़ लिया।

"अब देखते हैं, कैसे बचती हो !" उसने मुस्कराते हुए कहा और फिर छोड़ दिया।

मैगी ने पटरी की ओर तेज़ी से बढ़ते हुए, मुक्का तानकर उसे चिढ़ाया, फिर ज़रा रुककर बोली, "बारह बजे ड्यूटी ख़त्म करके क्यों नहीं मेरे दफ़्तर आते ?"

उसने गर्दन हिलाकर उसकी बात मान ली और फिर हाथ के इशारे से ट्रैफिक को जाने की अनुमति देते हुए, मुस्कराहट के साथ उसकी ओर देखता रहा। डेनिस ओ' लीरी का क़द छः फुट चार इंच था—मज़बूत, हट्टा-कट्टा, सुन्दर-सजीला जवान। उस पुलिसमैन का व्यक्तित्व इतना प्रभावशाली था कि श्रीमान् एमोस टी० विल्टबैंक जैसे महान् व्यक्ति भी उसे महीने में एक बार 'हवाना' सिगारों का एक डिब्बा भेंट किया करते थे और समझते थे कि अगर कभी कोई यातायात नियम भंग हो गया, तो वह बचा लेगा—खूब ! धनी का अहंकार भी खूब था। लेकिन क्या एक युवती के प्रेम के सामने धनी का अहंकार टिक सकेगा ?

हमें यह तो मानना ही होगा कि श्रीमान् टोड्हंटर का अभिमान भी चरम सीमा पर था। और उनके अहंकार के सामने सभी छोटे हो जाते थे। वे चाहे अपने दफ़्तर में बलूत की लकड़ी की बनी हुई सुन्दर मेज़ पर अथवा कारडोवा के हरे चमड़े की आरामकुर्सी पर बैठे हों या मुँह में सिगार लिए, कुर्दिस्तान के मूल्यवान क़ालीनों पर चिन्तामग्न हो, चहलक़दमी कर रहे हों, उनके हाव-भाव में चिड़ियाघर के शेर जैसी शान और अकड़ बनी रहती थी और जैसे शेर की मामूली-सी दहाड़ सुनकर अन्य जीव-जन्तुओं के दिल दहलने लगते हैं, बिलकुल उसी तरह श्रीमान् टोड्हंटर के भयभीत कर्मचारी उनकी ओर आँख चुराकर ही देख पाते थे—सीधे तौर से आज तक किसी ने उनसे आँख नहीं मिलाई थी। उनके निजी कक्ष तक पहुँचने के लिए छोटे-बड़े कमरों की क़तार में से होकर जाना पड़ता था और उनकी रक्षा करने के लिए उन कमरों में क्रूर पशु उपस्थित रहते थे—जिनसे बच निकलना नामुमकिन था।

दरअसल श्रीमान् टोड्हंटर तक पहुँचना मैटरहोर्न पर्वत[1] पर चढ़ने के

1. मैटरहोर्न पर्वत—आल्पस पर्वत-शृंखला की एक शाखा, जिसकी ऊँचाई लगभग 15,000 फुट है। 11,000 फुट से ऊपर, उसकी शक्ल एक बर्फ़ीले मीनार की तरह है, जिस पर चढ़ पाना दुःसाध्य है।

बराबर था। मामूली व्यक्तियों की क्या श्रौक़ात थी जो उन तक पहुँच पाते ? बिल्ली तो शायद शेर की ग्रोर नज़र भी उठा ले, लेकिन सामान्य जीव-जन्तुश्रों की क्या मजाल थी कि उस ग्रोर निगाह भी उठा लेते ! दफ़्तर के बाहरी भाग में बनी हुई खंदकों को पार कर सकना बीमा अथवा पुस्तकों के एजेण्टों, बिल लेने वालों, मिशनरी अथवा हुंडियों के दलालों के बस की बात न थी। खंदकों के बाद एक तीक्ष्ण श्राँखों वाला व्यक्ति अगली प्रेक्षण-चौकी पर जमा रहता था और जैसे ही कोई शत्रु—श्रीमान् टोड्हंटर का दर्शनाभिलाषी—वहाँ आता था, उसे झट से वापस खदेड़ दिया जाता था—

"किससे मिलना चाहते हैं ? क्या आपने उनसे मिलने की अनुमति प्राप्त की हुई है ? नहीं ? मि० विल्टबैंक कभी भी किसी से पूर्व-सूचना के बग़ैर नहीं मिलते। हमें खेद है, हम उन्हें इस वक्त परेशान नहीं कर सकते। अब एक ज़रूरी मीटिंग में बैठे हैं—हाँ, हाँ, आप कृपा करके उन्हें पहले एक पत्र लिखें।"

मान लीजिए, पूर्व-सूचना की बात कहकर, आप कैसे ही प्रेक्षण-चौकी भी पार कर गए हैं तो उसके बाद आपको कमरा सं० 1 में अवज्ञापूर्ण स्थिति में बैठे रहना पड़ेगा और काफी देर गुज़र जाने के बाद आपको बताया जाएगा कि कुछ मिनट में मि० विल्टबैंक से मिल पाएँगे। उस कमरे में फिर यूँही आने का बहाना करते हुए कुछ व्यक्ति पधारेंगे जो आपकी ओर शक-शुबे की निगाह से देख, यह अन्दाजा लगाना चाहेंगे कि कहीं आपको हत्या करने की सनक तो नहीं है, अथवा आपको कोई छूत की बीमारी तो नहीं है या कहीं आपकी जेब में कोई सम्मन, आदेश या वारंट गिरफ्तारी तो नहीं है। अगर किसी चीज़ से श्रीमान् एमोस टी० अत्यधिक घृणा करते थे तो वह थी—सम्मन आने की सूचना। उसे देखते ही उन्हें पसीना आ जाता था—क्योंकि उनका ख़याल था कि एक बार भी कठघरे में खड़े हो जाने के बाद, गवाह के बुरी तरह परखच्चे उड़ाए जाते हैं और क़ानूनी कार्रवाई के व्यूहचक्र से निकलना तो उन्हें दुनिया का सबसे मुश्किल काम नज़र आता था।

एमोस टी० का यह मत था कि कोई भी उसके निजी मामलों में क्यों टाँग फँसाए ? यदि वह परस्पर मिली-जुली कुछ कम्पनियों का डायरेक्टर

था और दूसरी कम्पनियों के साथ उसकी सौदेबाज़ियाँ चलती रहती थीं, या वह दोनों राजनीतिक पार्टियों के प्रचार फंड में धन जमा कराता रहता था या उसने किसी की पत्नी के चचेरे भाई के भतीजे से यह वायदा कर रखा था कि यदि उसे नया सरकारी ठेका मिल गया तो वह उसे नौकरी दे देगा, तो इन बातों में दूसरों का क्या आता-जाता था ! वे उसके निजी मामले थे। उसने अपनी इस धारणा के पक्ष में एक दलील तैयार कर रखी थी कि जब अमरीकी सरकार का आधारभूत उद्देश्य ही यह था कि व्यक्ति की स्वतंत्रता की रक्षा की जाए, तो तब उसकी ही स्वतन्त्रता का खंडन करने का प्रयत्न करने वाले व्यक्तियों को स्वतन्त्रता के मूल नियम का उल्लंघन करने का दोषी क्यों नहीं माना जाएगा ?

और उस तक कभी भी कोई नहीं पहुँच पाया था—सम्मन पहुँचाना तो बहुत दूर की बात थी। कभी भी कोई उसे अदालत के कठघरे में बुलाकर वचन-बद्ध नहीं कर सका था कि वह पूर्ण सत्य बोलेगा, अन्य कुछ नहीं। और ऐसा नज़र आता था कि कभी भी कोई ऐसा नहीं कर पाएगा ! क्योंकि आपको पहले कमरे से आगे, कमरा नं० 2 में ले जाया जाएगा, फिर कमरा नं० 3 में पहुँचेंगे तो मालूम होगा कि आपके पीछे सारे दरवाज़ों को ताले लग चुके हैं और अन्ततः आप आमने-सामने हो पाएँगे—वह भी मि० विल्टबैंक से नहीं ! बल्कि इतना सब कुछ हो जाने पर भी, सिर्फ उसके व्यापार सेक्रेटरी, मि० बायर के दर्शन कर सकेंगे। अब आप ही बताइए क्या दरअसल मि० टोड्हंटर के दर्शन करना सम्भव था ?

बायर भी अपने मालिक की तरह ही उस्ताद था। उसे भी कोई कभी सम्मन नहीं दे पाया था। वह ही आख़िरी खाई था, 'सरबरुस'[1] था अथवा मन्दिर का मुख्य पुजारी था जिसकी आज्ञा के बिना उस कक्ष में जहाँ भगवान् की मूर्ति स्थापित थी, जाना असम्भव था—उस कक्ष में एमोस टी० विल्टबैंक सिगार पीते हुए विद्यमान रहते थे। अब आपने देखा, उस महान् व्यक्ति के चरणों में पहुँचना, अपने-आप में ही, एक साधना थी ! मान लीजिए,

1. सरबरुस—रोमन पौराणिक कथाओं के अनुसार एक तीन सिरों वाला ऐसा कर्कश कुत्ता जो नरक-लोक के द्वार का पहरा देता है। इसे कठोर और निष्ठुर द्वारपाल का प्रतीक माना जाता है।

दर्शनाभिलाषी वहाँ तक पहुँच भी गया तो भी, वे महानुभाव, यदि आवश्यक समझते, तो चोर-दरवाज़े से अन्तर्धान भी हो जाया करते थे। इसीलिए क़ानूनी आदेश-वाहकों ने बहुत पहले ही उनका पीछा करना छोड़ दिया था।

o o o

वसन्त की एक सुन्दर सुबह से हमारी कहानी शुरू होती है। श्रीमान् एमोस टोड्हंटर विल्टबैंक पचपन सैंट का सिगार मुँह में दबाए, सैंतीसवीं मंज़िल के अपने निजी कक्ष में, छः सौ डालर की क़ीमत वाले बलूत की लकड़ी के बने हुए सोफ़े पर, आनन्दपूर्वक विराजमान थे। इसके विपरीत, उसी समय वहाँ से सत्ताईस मंज़िल नीचे मि० टट, सिर्फ .009 डालर में एक हज़ार की दर से मिलने वाला लम्बा-पतला सिगार होंठों में दबाए, सस्ते और घिसे-पिटे सोफ़े पर बैठे थे, जिसे लिबर्टी स्ट्रीट की नीलामी में केवल 3.70 डालर में ख़रीदा गया था।

"मि० टट !" मिस मिनर्वा विगिन ने दरवाज़े में से आते हुए कहा।

"हाँ, क्या बात है ?" मि० टट ने सिगार का नीला धुआँ उड़ाया और मुस्कराते हुए उत्तर दिया।

"आप हमेशा ही लोगों की सहायता करने के लिए तैयार रहते हैं न ?"

"हाँ, क्यों नहीं ?"

"क्या आप मेरी दोस्त मिस हेगर्टी की सहायता करेंगे ? वह बग़ल वाले कमरे में नोटरी का काम करती है, मोजेज इस्कलबोम के साथ।"

"अब कहाँ है ?"

"बाहर बैठी है। उसके साथ एक ग़रीब और मजबूर औरत भी है। उस बेचारी को कोई क़ानूनी परेशानी नहीं है, लेकिन उसकी दिक़्क़त बहुत बड़ी है—जो इस दुनिया में हमेशा ही तब सामने आती है जब ग़रीब और महत्त्वहीन मनुष्य को मजबूर होकर किसी धनवान और शक्तिशाली व्यक्ति से कोई काम कराने के लिए जाना पड़ता है। आप तो यह सब जानते ही हैं।"

"उसे यहाँ भेज दो !" मि० टट ने उछलते हुए कहा।

"लीजिए, दोनों यहाँ मौजूद हैं।" मिस विगिन ने नवागन्तुकों को

आगे करते हुए कहा, "मि० टट, यह मैगी है और ये हैं 'वैली फेयर' की मिसेज़ कार्टर।"

मि० टट ने शिष्टाचारपूर्वक दोनों से हाथ मिलाया और कुर्सी पर बैठने के लिए प्रार्थना की।

"अब बताइए।" अपनी कुर्सी की ओर आते हुए मि० टट ने कहा, "मैं आपकी अथवा मिसेज़ कार्टर की क्या सेवा कर सकता हूँ ?"

मिस हेगर्टी के चेहरे पर हल्के-भूरे रंग की चित्तियाँ उसके हल्के लाल रंग में छिपी हुई-सी नज़र आ रही थीं। उसका क़द पाँच फुट के लगभग था और शरीर पुष्ट एवं सुगठित था।

"मुझे बहुत चिन्ता है," उसने कहा, "ये ग़रीब बेचारी मिसेज़ कार्टर हैं। इनके पति की मृत्यु हुए कुछ ही महीने हुए हैं। ये बड़ी मुसीबत में फँस गई हैं। अपनी परेशानियों की वजह से अपनी ज़मीन बेचना चाहती हैं, लेकिन वह तब तक नहीं बिक सकती जब तक कि उसका दस्तावेज़ ठीक नहीं हो जाए—उसी दस्तावेज़ को ठीक कराने के लिए 'डचेस काउंटी' से चलकर इतनी दूर आई हैं। लेकिन जिसे वह दस्तावेज़ ठीक करना है, वह व्यक्ति नज़दीक ही नहीं फटकने देता—अब बेचारी करें तो क्या करें ?"

"वह व्यक्ति कौन है ?"

"एमोस टी० विल्टबैंक।"

"अच्छा," मि० टट ने उत्सुकतापूर्वक कहा, "क्या आपका मतलब टोड्हंटर से है ?"

"वही है।"

वृद्ध वकील ने मिसेज़ कार्टर की ओर देखते हुए प्रश्न किया, "आपको इस आदमी से क्या काम पड़ गया है ?"

मिसेज़ कार्टर ने बच्चे को दूसरे हाथ में सँभालते हुए उत्तर दिया, "बात यह है" और बच्चे को चुप कराते हुए आगे कहा, "चुप—चुप कर एज़रा—मि० विल्टबैंक की पत्नी ने हमें एक फार्म बेचा था और उसके दस्तावेज़ पर हस्ताक्षर किए थे, लेकिन अपनी अभिस्वीकृति नहीं दी थी, इसीलिए काउंटी के क्लर्क ने ऐतराज़ उठाया है।"

"लेकिन अभी तक अभिस्वीकृति क्यों नहीं दी है उसने ?" उन्होंने

पूछा।

"उसकी मृत्यु हो चुकी है," मिसेज़ कार्टर ने सरलता से उत्तर दिया, लेकिन मि० विल्टबैंक के सामने उसने हस्ताक्षर किए थे और इन साहब ने भी गवाही दी थी। अब भी सारा मामला ठीक हो सकता है अगर मि० विल्टबैंक इस सम्बन्ध में एक शपथ-पत्र लिख दें—लेकिन बहुत प्रयत्न करने पर भी उनसे अभी तक मेरा मिलना नहीं हो सका है।"

मि० टट के उदास चेहरे पर कठोरता उभर आई।

"आपने उसे इस सम्बन्ध में अब तक क्यों नहीं लिखा ?"

"कई बार लिखा, लेकिन उन्होंने कभी जवाब ही नहीं दिया।"

"मुझे उस आदमी पर सख़्त ग़ुस्सा आ रहा है," मैगी हेगर्टी ने बीच में कहा, "आप ही सोचिए, मिसेज़ कार्टर एक छोटे बच्चे को गोद में लिए हुए मारी-मारी फिर रही हैं और इन्हें वापस अपने घर पहुँचने की जल्दी भी है—लेकिन किसी तरह उस आदमी से, जो इस बिल्डिंग में ही मौजूद है, मिल सकना सम्भव नहीं है। ये वहाँ जाती हैं तो कोई अन्दर घुसने तक नहीं देता और मैं वहाँ जाती हूँ तो मुझे ऐसे टरखा देते हैं, मानो मैं कोई भिखारिन हूँ।"

"क्या आपने यह बताने की कोशिश की थी कि आप किस सिलसिले में मि० विल्टबैंक से मिलना चाहती हैं ?" मि० टट ने पूछा।

"क्यों नहीं ? ज़रूर बताया, लेकिन कोई सुनता ही नहीं। उस दफ़्तर के आदमी तो ऐसे चिकने घड़े हैं कि किसी बात का असर ही नहीं होता है उन पर—मैं तो पहले ही शपथ-पत्र बनाकर ले गई थी, लेकिन वहाँ तो यह भी पता नहीं चलता है कि वे महाशय दफ़्तर में मौजूद हैं भी या नहीं। इस मामले में कोई भी परेशानी नहीं है और बग़ैर किसी डर के इस पर हस्ताक्षर कर देने चाहिए, लेकिन वहाँ तो कोई सुनता ही नहीं। सब ऐसी बातें करते हैं, जैसे जीवन में पहली बार उस आदमी का नाम सुन रहे हैं, जिस आदमी के दफ़्तर में स्वयं काम करते हैं। मेरे साथ तो ऐसा व्यवहार किया है जैसे मैं किताबें बेचने वाली एजेंट हूँ।"

मि० टट अपने मुख पर हाथ फिराते रहे।

"मैं जहाँ तक समझ पाया हूँ, आप चाहती हैं कि विल्टबैंक एक ऐसा

शपथ-पत्र लिख दे कि उसने अपनी स्वर्गवासी पत्नी को उस ज़मीन, जो उसने मिसेज कार्टर को बेची थी, के दस्तावेज़ पर, हस्तान्तरण-कर्त्ता के रूप में हस्ताक्षर करते हुए देखा था, और इस शपथ-पत्र की आवश्यकता इसलिए पड़ी है क्योंकि मिसेज़ विल्टबैंक ने इस दस्तावेज़ को किसी नोटरी अथवा दस्तावेज़-कमिश्नर के सामने अभिस्वीकृति प्रदान नहीं की थी।"

"बात बिलकुल यही है," मिस हेगर्टी ने सहमति प्रकट की, "और अधिनियम के अनुसार गवाह के शपथ-पत्र का भी उतना ही महत्त्व है जितना कि हस्तान्तरण-कर्त्ता की अभिस्वीकृति का होता है।"

"क्या मैं शपथ-पत्र देख सकता हूँ ?" मि० टट ने कहा और नोटरी ने वह उनकी ओर बढ़ा दिया।

न्यूयार्क राज्य
न्यूयार्क काउंटी } मुहरें।

दिनांक सत्ताईस अप्रैल, उन्नीस सौ सत्ताईस को एमोस टी० विल्टबैंक जिसने पूर्वगत दस्तावेज़ में गवाह के रूप में योग दिया था और जिससे मैं व्यक्तिगत रूप से परिचित हूँ, ने मेरे समक्ष सौगन्ध उठाकर यह साक्षी दी और कहा कि वह न्यूयार्क नगर का रहने वाला है और वह सारा एम० विल्टबैंक जिसने पूर्वगत दस्तावेज़ का निष्पादन किया था, को व्यक्तिगत रूप से जानता था और वह गवाह के रूप में उस समय उपस्थित था जबकि सारा एम० विल्टबैंक ने दस्तावेज़ का निष्पादन किया था और उस, उपर्युक्त गवाह, ने उस समय, उस दस्तावेज़ पर गवाह के रूप में हस्ताक्षर किये थे।"

"बिलकुल ठीक है," मि० टट ने प्रशंसा करते हुए कहा, "अगर आपको मेरी ज़रूरत महसूस हो तो आप यहाँ तशरीफ ले आएँ।"

"लेकिन इस शपथ-पत्र पर हस्ताक्षर कराने के लिए मिसेज़ कार्टर किस तरह मि० विल्टबैंक के पास पहुँच सकेंगी ?" मिस हेगर्टी ने प्रश्न किया, "मैं अच्छी तरह जानती हूँ, वे महाशय इस वक़्त भी अपने दफ़्तर में मौजूद हैं। मैंने यह उन लोगों की बातों से पता लगा लिया है, इसके अलावा लिफ़्ट-मैन ने भी मुझे बताया है कि उसने मि० विल्टबैंक को वापस जाते हुए नहीं देखा है और अक्सर वे साहब लंच दफ़्तर में ही करते हैं। ऐसी स्थिति में क्या किया जाए ? कैसी विडम्बना है कि एक व्यक्ति के बिलकुल पास पहुँच

जाने पर भी आप उससे मिल नहीं सकते हैं, मानो वह व्यक्ति यहाँ होने की बजाय हजारों मील दूर चीन में बैठा हुआ है।"

मि० टट टेलीफोन डायरेक्टरी के पृष्ठ उलट पलट रहे थे। उन्होंने टेलीफोन उठाकर कहा, "कृपा करके 'वेस्ट 9991' मिलाइए।"

"यह एमोस टी० विल्टबैंक का दफ़्तर है।" एक मधुर नारी-स्वर सुनाई दिया।

"मैं मि० विल्टबैंक से बात करना चाहता हूँ।"

"कौन साहब टेलीफोन कर रहे हैं?"

"एफ्रेम टट – एक वकील।"

"क्या आप मि० विल्टबैंक को जानते हैं?"

मि० टट ने दाँत पीसते हुए, सख़्ती से कहा, "हाँ, मैं ज़रूर जानता हूँ।"

"अच्छा, क्या वे आपको जानते हैं?" टेलीफोन पर अवज्ञापूर्ण हँसी सुनाई दी।

वृद्ध वकील ने दीवार पर टंकी हुई लार्ड एलडन की तसवीर की ओर मुक्का दिखाते हुए उत्तर दिया, "मेरा ख़्याल है, उन्होंने शायद मेरा नाम सुना है!"

उस हँसी ने मख़ौल उड़ाया। "कृपा करके पहले यह बताइए, आप को काम क्या है?"

"मुझे एक दस्तावेज़ के सम्बन्ध में बात करनी है।"

"अच्छा, दस्तावेज़?"

"हाँ, मैं चाहता हूँ कि वे जनाब एक शपथ-पत्र पर हस्ताक्षर कर दें।"

"मि० विल्टबैंक शपथ-पत्रों पर हस्ताक्षर नहीं करते हैं।"

"पर उन्हें इस पर करने होंगे।" मि० टट ने सख़्ती से कहा, "क्या आप उन्हें कृपा करके यह सूचना देने का कष्ट करेंगी कि वह एक बहुत ज़रूरी मामला है और कहिए कि घोर अन्याय···"

"मि० विल्टबैंक शहर से बाहर गए हुए हैं।" वाणी ने अन्तिम निर्णय देते हुए कहा।

"कब लौटकर आएँगे ?"

"हमें मालूम नहीं है। अच्छा तो यह होगा कि आप एक पत्र लिखकर भेज दें।" और टेलीफोन कट गया।

मि० टट तिलमिला उठे और उनका सारा शरीर एकाएकी तन उठा।

उन्होंने अपनी तर्जनी, नाक की नोक पर रखकर, मैगी हेगर्टी को सम्बोधित करते हुए कहा, "आप कह रही थीं कि वह दफ़्तर में मौजूद है।"

"मेरा पूर्ण विश्वास है—"

"क्या आपने धारा 305 के विषय में कुछ सुना है ?"

"नहीं, उसमें क्या है ?" मिस हेगर्टी ने उत्सुकतापूर्वक प्रश्न किया, "क्या मैं जान सकती हूँ ?"

मि० टट ने इस प्रश्न का उत्तर नहीं दिया।

"मैं उसे एक मौक़ा और दूँगा," मि० टट ने बड़बड़ाते हुए कहा, "सिर्फ़ एक मौक़ा।"

पाँच मिनट में ही, एक अजीब-सी टोली लिफ़्ट से उतरकर महान् व्यक्ति—मि० विल्टबैंक, के दफ़्तर के दरवाज़े पर पहुँच गई। सबसे पहले दुबले-पतले तेज़-तरार मि० टट जो पुराना लम्बा कोट और ढीली-ढाली बिरजिस पहने हुए थे और उनके हाथ, बिल्लौरी बटनों वाली आस्तीनें, जो फटी हुई थीं, के बीच से झाँक रहे थे और उन्होंने एक हाथ में लम्बा-पतला रेशमी हैट पकड़ा हुआ था। उनके पीछे-पीछे गोद में बच्चा लिये, मिसेज कार्टर, पुराने लेकिन साफ-सुथरे कपड़ों में, उदास-सी चल रही थीं और अन्त में मैगी हेगर्टी, क्रुद्ध पक्षी की तरह उछल-उछलकर आगे बढ़ रही थी और ऐसा लगता था—न जाने कब वह क्रुद्ध पक्षी चोंच मारने के लिए झपट पड़े।

अधेड़ उम्र वाले रक्षक ने जो दामनदार कोट पहने हुए था, सावधानीपूर्वक नवागन्तुकों की ओर देखा।

"क्या मि० विल्टबैंक अन्दर हैं ?" मि० टट ने प्रश्न किया।

"क्या मैं जान सकता हूँ, उनसे कौन मिलना चाहते हैं ?" मि० होजमेर, गुप्तचर अधिकारी, ने कहा।

"आप उनसे कहिए कि 'वैनी फेयर' की मिसेज कार्टर का प्रतिनिधि

एफ्रेम टट उनसे मिलना चाहता है। उन्हें सिर्फ इतना करना है कि अपनी पत्नी द्वारा इन महिला को बेची गई ज़मीन के सम्बन्ध में जो दस्तावेज़ तैयार किया गया था, इस बात की पुष्टि करने के लिए एक शपथ-पत्र पर हस्ताक्षर कर दें।"

मि० होजमेर को यह सब सुनकर हैरानी हो रही थी।

"क्या आपने उनसे इस सिलसिले में पहले बात की हुई है ?"

"नहीं, मेरी मुवक्किल बहुत दूर से चलकर मि० विल्टबैंक से मिलने के लिए आई हैं और इन्हें आज ही वापस लौट जाना है। आप ही बताइए अगर इस कागज़ पर मि० विल्टबैंक हस्ताक्षर नहीं करते हैं, तो मेरे मुवक्किल की सारी मेहनत बेकार हो जाएगी। और इतने समय और धन के नष्ट हो जाने के लिए कौन जिम्मेदार होगा ? और क़ानूनी दृष्टि से—"

मि० टट की बातों ने मि० होजमेर को प्रभावित कर दिया था।

"आप ज़रा इन्तज़ार कीजिए," उसने कहा, "मैं देखता हूँ कि आपके लिए क्या कुछ किया जा सकता है। विलियम ! कुछ देर के लिए तुम यहाँ आ जाओ।"

बराबर वाली मेज़ से उठकर, एक हृष्ट-पुष्ट युवक वहाँ आकर बैठ गया और होज़मेर दफ़्तर के पिछले भाग में चला गया। साधारणतया वह ऐसा नहीं करता था, लेकिन इस बार उसे ऐसा करना ज़रूरी हो गया था, क्योंकि वह मि० टट के बारे में जानता था और फिर मिसेज कार्टर तो वहाँ पहले भी चक्कर लगा चुकी थी। उसने सोचा, शायद मि० विल्टबैंक को समझाया जा सके।

"अच्छा रहेगा, अन्दर मत जाओ," मि० बायर ने चेतावनी दी, "आज मालिक गुस्से में है। तुम्हारी हालत बुरी हो जाएगी।"

लेकिन मि० होजमेर ने नर्मी से दरवाज़ा खटखटाया।

"क्या है ?" अन्दर से सवाल किया गया।

वह अन्दर चला गया। श्रीमान् एमोस टी० विल्टबैंक ने दबदबे के साथ पूछा, "क्या काम है ?"

"श्रीमान्—" उसने डरते हुए कहा, "एक औरत बाहर बैठी हुई है··· जो बहुत दूर से आई है। उसके साथ मि० टट एक प्रसिद्ध वकील भी है।

वह चाहती है कि आप एक शपथ-पत्र पर हस्ताक्षर कर दें।"

श्रीमान् टोड्हंटर का भरा हुआ भारी चेहरा फट पड़ने के लिए तैयार नज़र आने लगा।

"क्या मतलब है तुम्हारा—" उन्होंने क्रुद्ध स्वर में पूछा, "ज़रूरी काम करते हुए परेशान करने का कौन-सा तरीक़ा है? क्या तुम्हें मालूम नहीं, मेरी क्या आज्ञा है? मैं किसी भी आदमी से पूर्व-सूचना के बग़ैर नहीं मिलता। इनसे जाकर कह दो कि पहले मि० वेंडरपोएल से बात करें। अगर मेरे लिए कुछ ज़रूरी होगा, तो वह मुझे पत्र लिख देगा।"

होजमेर लौट आने में झिझका।

"मुआफ करें, श्रीमान्," उसने दोबारा कहना शुरू किया, "सिर्फ इस बार मेहरबानी करके, आप अपनी आज्ञा में थोड़ी तबदीली कर दें तो अच्छा रहेगा। यह मि० टट कुछ टेढ़ा आदमी है।"

"मैं भी कुछ कम नहीं हूँ!" टोड्हंटर ने खड़े होकर, गुस्से में काँपते हुए, चीखकर कहा, "उससे कह दो—न्यूयार्क शहर में मुझसे ज़्यादा टेढ़ा आदमी कोई नहीं है। उसे बात करनी है तो वेंडरपोएल से करे, नहीं तो जो कुछ बिगाड़ना चाहे, बिगाड़ ले।"

o o o

"यह लिखिए—" मि० टट ने मिस सोंधीम, स्टेनोग्राफर से कहा, "और इसे लंच करने से पहले ही टाइप कर दीजिए।"

"न्यूयार्क राज्य की जनता की ओर से एमोस टी० विल्टबैंक के नाम।

अभिवादन :

आपको आदेश दिया जाता है कि सारे व्यक्तिगत कार्यों और बहानों को छोड़कर आप, मेरे मार्ग्रेट हेगर्टी जो न्यूयार्क राज्य द्वारा अधिकार और योग्यता प्राप्त नोटरी है के सामने, बिल्डिंग सं० 61 ब्राड्वे, बोरो आफ मैनहट्टन, न्यूयार्क नगर के कमरा सं० 11,012 में, दिनांक 29 अप्रैल को तत्काल उपस्थित हो जाएँ और एक दस्तावेज़ जिसके अनुसार आरा एम० विल्टबैंक, हस्तान्तरण-कर्त्ता ने एमिली पी० कार्टर, हस्तान्तरण प्राप्त करने वाली को कुछ ज़मीन बेची थी और आपने उस दस्तावेज़ के निष्पादन में गवाह के रूप में योग दिया था, के सम्बन्ध में आपको मेरे सामने सौगन्ध

उठाकर उपर्युक्त तथ्य की पुष्टि करनी होगी। यदि आप उपस्थित होने और साक्षी देने में असफल रहे तो आपको उपरिलिखित एमिली पी० कार्टर को एक सौ डालर जुर्माना देना होगा और साथ ही आपको न्यूयार्क नगर के जेल अधिकारियों को सुपुर्द कर दिया जाएगा और जब तक आप सौगन्ध उठाकर क़ानून के अनुसार उपर्युक्त कार्रवाई पूरी नहीं करेंगे तब तक आपको जेल में बन्द रहना होगा और जेल सुविधाओं तक से वंचित रहना पड़ेगा और किसी भी सूरत में आपकी ज़मानत नहीं हो पाएगी।

मार्ग्रेट हेगर्टी, नोटरी, न्यूयार्क काउंटी।

एफ्रेम टट, मार्ग्रेट हेगर्टी का वकील, 61 ब्राड्वे, न्यूयार्क नगर।"

मैगी ने आश्चर्य के साथ पूछा, "मैं सम्मन कैसे भेज सकती हूँ ?"

"तुम बहुत कुछ कर सकती हो—" मि० टट ने उत्तर दिया, "तुम इस ज़ालिम को जेल भिजवा सकती हो !"

"मैं ?" उसने घबराकर पूछा, "ऐसा कैसे हो सकता है ?" मैंने ऐसी बात आज तक नहीं सुनी है।"

"बहुत कम वकील ही इस बात को जानते हैं या यूँ कहा जाए कि वे लोग इसे भूल चुके हैं," मि० टट ने उसे बताया, "मैं तुम्हें यह अधिनियम सुनाता हूँ—यह भू-सम्पत्ति कानून की धारा 305 है, ज़रा सुनो :

"भू-सम्पत्ति क़ानून, धारा 305, गवाहों को साक्षी देने के लिए बाध्य करना।

"हस्तान्तरण के सम्बन्ध में, हस्तान्तरण प्राप्त करने वाले अथवा उसके वारिस अथवा उसके प्रतिनिधि अथवा ऐसा कोई भी व्यक्ति जो ऐसा होने का हक़ पेश करता हो, के द्वारा शपथ उठाकर, यदि प्रार्थना-पत्र द्वारा यह दावा किया जाता है कि दस्तावेज़ में योग देने वाला कोई गवाह जो उसी काउंटी में निवास करता है जहाँ प्रार्थना-पत्र दिया गया है और जिसकी साक्षी के बगैर हस्तान्तरण की कार्रवाई का पूरा होना सम्भव नहीं है, आवश्यक साक्षी देने से इन्कार करता है, तो ऐसे गवाह को कोई भी ऐसा अधिकृत अधिकारी जिसे उस राज्य में भू-सम्पत्ति की अभिस्वीकृति अथवा हस्तान्तरण की कार्रवाई को पूरा करने के अधिकार प्राप्त हैं, सम्मन भेजकर, दस्तावेज़ के निष्पादन के लिए, उपस्थित होने और साक्षी देने के लिए

बाध्य कर सकता है। एक ऐसा व्यक्ति जिसे ऐसा अधिकृत सम्मन प्राप्त हुआ है, यदि बिना किसी उचित कारण के, उपस्थित होने से मना कर देता है या लापरवाही करता है या हस्तान्तरण के निष्पादन के सम्बन्ध में सौगन्ध उठाकर साक्षी देने से इन्कार करता है तो उसे एक सौ डालर जुर्माना प्रार्थी को देना होगा और सम्मन भेजने वाले अधिकारी को उसे जेल भेजने का अधिकार होगा जहाँ उसे जेल सुविधाएँ प्राप्त नहीं होंगी और तब तक ज़मानत नहीं हो सकेगी जब तक कि वह इस धारा के अनुसार सौगन्ध उठा कर, साक्षी नहीं दे देगा।"

मि० टट ने आगे कहा, "हाँ, तो अब मैं इस नासमझ ज़ालिम आदमी को सबक़ सिखाना चाहता हूँ जो इतना तक नहीं समझना चाहता है कि एक मनुष्य होने के नाते दूसरे व्यक्तियों के प्रति भी उसका कुछ कर्त्तव्य है।"

"बहुत खूब, मि० टट," मिस विगिन ने ज़ोर से कहा, "उस आदमी को ज़रूर मज़ा चखाना चाहिए—मुझे भी उससे बहुत ज़्यादा नफ़रत है।"

"यदि," वकील ने संजीदगी से कहा, "हमारे मित्र टोड्हंटर ने इस क़ानून के बारे में कुछ नहीं जानने के कारण हमारी बात मानने से इन्कार कर दिया तो हम उसके अज्ञान का लाभ उठाएँगे और उसे जेल की सैर करने के लिए भेज देंगे—चाहे कुछ देर के लिए ही ऐसा हो सकेगा।"

"क्या आप सचमुच ही···" मैगी ने हकलाते हुए कहा।

"सचमुच ? हाँ, क्यों नहीं ? मैं सचमुच ऐसा करना चाहता हूँ।" मि० टट ने जोश के साथ कहा, "मिस सोंधीम, यह भी लिख लीजिए—

"न्यूयार्क नगर और काउंटी की मुहरें :

एमोस टी० विल्टबैंक द्वारा क़ानून की अवमानना करने के सम्बन्ध में निर्णय।

"दिनांक 29 अप्रैल, 1927, मध्याह्न, उपरिलिखित एमोस टी० विल्टबैंक को मैं, अधोहस्ताक्षरी, ने एक अधिकृत सम्मन भेजा था, ताकि वह मेरे सामने उपस्थित होकर यह साक्षी दे कि उसने सारा एम० विल्टबैंक हस्तान्तरण-कर्त्ता और एमिली पी० कार्टर, हस्तान्तरण प्राप्त करने वाली, के बीच होने वाले हस्तान्तरण में गवाह के रूप में योग दिया था। लेकिन उपर्युक्त एमोस टी० विल्टबैंक ने बग़ैर किसी उचित कारण के उपस्थित होने

और साक्षी देने से इन्कार किया है, इसीलिए यह आदेश दिया जाना है कि एमोस टी० विल्टबैंक तत्काल एमिली पी० कार्टर को जुर्माने की शक्ल में एक सौ डालर देने की व्यवस्था करे और तुरन्त उसे न्यूयार्क नगर की जेल में क़ैद कर दिया जाय और वहाँ उसे जेल सुविधाओं से वंचित रखा जाए और तब तक उसे ज़मानत पर भी नहीं छोड़ा जाए जब तक कि वह भू-सम्पत्ति क़ानून की धारा 305 के अनुसार सौगन्ध उठाकर साक्षी देने के लिए तैयार नहीं हो जाए।

मार्ग्रेट हेगर्टी, नोटरी, न्यूयार्क काउंटी।"

"ऐसा हो जाए," मैगी ने उत्साह के साथ कहा, "तो कमाल हो जाएगा।"

"क्या तुम किसी पुलिसमैन को जानती हो ?" मि० टट ने गम्भीरता-पूर्वक पूछा।

"हाँ, मैं ज़रूर जानती हूँ।"

"तो उसे बुलाओ।" मि० टट ने उत्तर दिया।

o o o

पुलिस अधिकारी डेनिस ओ' लीरी ड्यूटी समाप्त करने के बाद, अपने उच्च अधिकारी की आज्ञानुसार, मोजेज इस्कलबोम के दफ़्तर की ओर आ रहा था कि उसी क्षण, रास्ते में, नंगे सिर ही जल्दी से आती हुई वह मिल गई।

"क्या तुम मुझे प्यार करते हो, डेनिस ?" उसने प्रश्न किया।

"हाँ, क्यों ?" डेनिस ने चकित होकर कहा।

"तुम्हें यह सिद्ध करना होगा, नहीं तो मैं तुमसे कभी नहीं बोलूंगी—शादी-वादी कुछ नहीं करूँगी।"

"मुझे मौक़ा तो दो" उसने बात काटते हुए कहा, "आख़िर बात क्या है ?"

"मैं चाहती हूँ तुम एक आदमी को पकड़ लो।"

डेनिस के मुख पर मुस्कराहट नाच उठी, "सिर्फ इतनी सी बात है, मुझे उस तक पहुँचा दो।" उसने रोब के साथ कहा।

"मैं जानती थी तुम मेरी बात ज़रूर मान लोगे।" मैगी ने उत्कण्ठा-

पूर्वक कहा।

"कौन है वह ?" उसने उत्सुकता के साथ पूछा।

"एमोस टि० विल्टबैंक।" वह ज़ोर से बोली।

ओ' लीरी उदास-सा हो गया और बहकी-बहकी दृष्टि से उसकी ओर देखने लगा, "आखिर ऐसा किस लिए ?" उसने घबराकर कहा।

"डेनी, प्रिय," उसने दृढ़तापूर्वक आग्रह किया, "मेरे लिए तुम्हें ऐसा करना ही होगा।"

o o o

दस मिनट बाद, मि० बायर, जो किसी काम के सिलसिले में दफ़्तर के बाहर वाले भाग में आया था, ने युवक पुलिसमैन को लिफ़्ट से निकलते हुए देखा। डेनी के उस दफ़्तर में हर महीने आने के कारण, उसका चेहरा, वहाँ के कर्मचारियों के लिए काफी परिचित हो गया था। फिर आप स्वयं नहीं जानते कि कब आपको भी पुलिसमैन की सहायता की ज़रूरत पड़ जाए।

"हेलो," उसने पुलिसमैन का मित्रतापूर्वक स्वागत किया, "क्या मालिक से मिलने के इरादे हैं ?"

"हाँ," पुलिस अधिकारी ने उत्तर दिया, "क्या अन्दर हैं ?"

बायर ने "हाँ" कहने के लिए गर्दन हिलाई और आगे कहा, "आप रास्ता तो जानते हैं न ? मिस मेडन आप ज़रा मि० विल्टबैंक को सूचना दे दें कि पुलिस अधिकारी ओ' लीरी उनसे मिलने आ रहे हैं।"

जैसे ही डेनी दरवाज़ा खोलकर कमरे में दाख़िल हुआ, तो उस समय श्रीमान् एमोस टी० विल्टबैंक उसके लिए निचले ड्रॉअर से सिगारों का एक डिब्बा निकालने में व्यस्त थे।

"फरमाइए—" मि० विल्टबैंक ने नवागन्तुक के आने पर प्रसन्नता का दिखावा करते हुए कहा, "क्या हाल हैं जनाब के ? किस लिए कष्ट किया आपने···लीजिए···सिगार लीजिए।"

"मुझे नहीं चाहिए, महाशय !" डेनी ने कहा।

डेनी की आवाज़ में कुछ ऐसी बेरुख़ी थी कि एमोस टी० को बुरा लगा, क्योंकि आज तक कोई ऐसा पुलिसमैन नहीं देखा था जिसने किसी चीज़ को लेने से मना कर दिया हो।

"तब क्या लेना चाहते हैं—"

"मैं आपको एक कागज़ देना चाहता हूँ, महाशय !" उसने आहिस्ता से उत्तर दिया।

उसी वक्त श्रीमान् टोड्हंटर झटके के साथ उठ खड़े हुए।

"सुनिए, आपको मालूम नहीं है क्या ? यहाँ बग़ैर इजाज़त अन्दर आना मना है। आपको बाहर अपना मतलब बताना चाहिए था। मैं बग़ैर पूर्व-सूचना के किसी से नहीं मिलता। अब आप बाहर मि० बायर से बात कर लीजिए।"

"इस कागज़ का मि० बायर से कोई मतलब नहीं है," डेनी ने बताया, "आपके नाम का सम्मन है।"

एमोस टोड्हंटर का बुरा वक्त आ चुका था। उसे चारों ओर अँधेरा दिखाई दिया और वह घबरा उठा।

"मुझे कुछ मतलब नहीं है—" उसने चीख़ते हुए कहा, "तुम यहाँ से फौरन चले जाओ।"

"सुनिए मि० विल्टबैंक," डेनिस ने उसे समझाने का निष्फल प्रयत्न करते हुए कहा, "आपने कार्टर नाम के आदमी को कुछ ज़मीन बेची थी।"

"मेरे वकील से बात करो, मैं इस बारे में कुछ नहीं जानता," टोड्हंटर ने चिल्लाकर कहा, "मैंने आज तक सारी ज़िन्दगी में कभी कोई ज़मीन नही बेची है।"

"आपकी पत्नी ने—" डेनिस ने कहना शुरू किया।

"मेरे दफ़्तर से बाहर निकल जाओ," टोड्हंटर ने दोहराया, "नहीं तो मैं पुलि···"

वह आगे नहीं बोल सका, पुलिस तो पहले ही वहाँ आ चुकी थी।

"आपको यह सम्मन तो लेना ही पड़ेगा।" पुलिसमैन ने ऐलान किया।

"मैं नहीं लूँगा।" टोड्हंटर चिल्लाया, "निकल जाओ यहाँ से।"

डेनिस को भी क्रोध आ गया था।

"तुम्हें ही क्या, तुम्हारे फ़रिश्तों को भी लेना पड़ेगा।" उसने गरजते हुए कहा।

उसने बलूत की लकड़ी की मेज़ के बीच में हाथ रखा और उछलकर

दूसरी ओर पहुँच गया—बेलमोंट पार्क में पुलिस विभाग की ओर से होने वाले खेलों में उसे एक बार 'हर्डल' दौड़ में इनाम भी मिल चुका था—और उसने वह घिनावनी वस्तु टोड्हंटर की छाती में स्थित सूर्य-चक्र (स्नायु-समूह का नाम) पर ज़ोर से मारते हुए आज्ञा दी, "राज़ी खुशी इसको ले लो।"

टोड्हंटर ने वह कागज़ पकड़ लिया।

"इसे पढ़ो।" उसने हुक्म दिया।

"मैं बगैर चश्मे के नहीं पढ़ सकता।" टोड्हंटर ने शिकायत की, "यह किस सिलसिले में है?"

"यह सम्मन है जिसके अनुसार तुम्हें एक दस्तावेज़ के बारे में साक्षी देनी है।"

"किसने भेजा है?"

"मिस हेगर्टी ने।"

"मिस हेगर्टी कौन है?"

"वह एक बहुत अच्छी औरत है।"

"मेरा मतलब है," टोड्हंटर, जो अब तक संभल चुका था, ने बात काटते हुए कहा, "क्या काम करती है वह औरत? उसे सम्मन भेजने का क्या अधिकार है?"

"वह नोटरी है।"

टोड्हंटर ने एक सिगार का किनारा छीला और फिर जलाया और इस बीच वह ज़ोर-ज़ोर से हँसता रहा।

"नोटरी को सम्मन भेजने का कोई अधिकार नहीं है।"

डेनिस ने उसकी ओर आक्रमण करने की दृष्टि से देखते हुए ने घोषणा की, "उसी ने भेजा है और तुम्हें यह लेना पड़ेगा।"

"मैं उसकी आज्ञा मानने के लिए तैयार नहीं हूँ।" टोड्हंटर उत्तर दिया, "किसने तुम्हें यहाँ भेजा है?"

"इस बात से तुम्हारा कोई मतलब नहीं है।" पुलिसमैन ने जवाब दिया, "सम्मन आखिर सम्मन है—"

"सम्मन की तब तक कोई मान्यता नहीं है जब तक कि वह किसी

विशिष्ट अधिकारी या किसी जज की ओर से नहीं भेजा गया हो।" टोड्हंटर, जो अब यह समझ बैठा था कि उसका कुछ नहीं बिगड़ेगा, ने उत्तर दिया, "अगर तुमने ज़्यादा चक्कर डाला तो तुम्हें परेशानी उठानी पड़ जाएगी। मैं कमिश्नर को जानता हूँ, उससे कहते ही तुम्हारा सारा नशा उतर जाएगा।"

श्रीमान् एमोस टी० की ओर एक फौलादी हाथ बढ़ा और उस हाथ ने उनकी पैंट को सामने से पकड़ लिया और उन्हें ज़मीन से ऊपर उठा लिया।

"तुम सीधी तरह मेरे साथ आओ," ओ' लीरी ने गरजते हुए कहा, "अब देखते हैं किसका नशा उतरता है।"

टोड्हंटर का गला घुटने लगा और उसने अपने को छुड़ाने का प्रयत्न किया। उसका पवित्र और कोमल शरीर इस प्रकार के हिंस्र-व्यवहार का अभ्यस्त नहीं था।

"मुझे छोड़ दो," उसने हकलाते हुए कहा, "कहीं कुछ ग़लती ज़रूर है।"

लेकिन डेनी ने अपनी पकड़ ढीली नहीं की।

"तुम्हें अब मेरे साथ बिलकुल इसी तरह चलना होगा, आओ।" उसने आज्ञा दी।

टोड्हंटर का सिर चकराने लगा था। कितना अपमान होगा! अपने कर्मचारियों की व्यंग्यपूर्ण हँसी और उनकी तिरस्कार करती हुई आँखों—बायर, वाडम्स, मिस मेडन, लिफ़्टमैन आदि के सामने से इस तरह अपमानित होकर चलना पड़ा तो उसकी सारी इज़्ज़त खाक में मिल जाएगी और वह फिर कभी सिर ऊँचा करके नहीं चल सकेगा।

"ज़रा रुको!" उसने तरक़ीब से काम बनाने की कोशिश करते हुए नर्मी से कहा, "मैं तुम्हारे साथ चलता हूँ। तुम एक अच्छे आदमी हो, देखो इस मामले के बारे में मैं बिलकुल कुछ नहीं जानता हूँ। अच्छा, एक बात बताओ, क्या किसी और तरीके से फैसला नहीं हो सकता? बीस डालर ठीक रहेंगे, क्यों?"

"एक हज़ार डालर भी तुम्हें नहीं बचा सकेंगे, समझे।" डेनी ने फुफकारते हुए कहा, "अब कुछ नहीं हो सकता। ज़्यादा तीन-पांच मत करो। सीधी तरह बाहर आ जाओ, वहाँ जितना सोचना हो, सोच लेना।"

"अच्छा, तुम इस सम्मन को वापस ले लो और भूल जाओ कि कभी मुझे दिया था···" टोड्हंटर बड़बड़ाया, "नहीं तो समझ लो, तुम्हारी नौकरी चली जाएगी ! मैं तुम्हें मिट्टी में मिला दूँगा।"

प्रत्युत्तर में डेनिस ने क़ैदी को ज़ोर से दरवाज़े की ओर घसीट लिया।

"ऐसा क्यों करते हो ?" टोड्हंटर ने रिरियाते हुए कहा, "मैं चल तो रहा हूँ।"

"तो सीधी तरह चलो।" ओ' लीरी ने उत्तर दिया।

वे दोनों, पर्दों में छिपे हुए गुप्त आश्रय-स्थल अर्थात् कमरा सं० 3 और उसके बाद अत्यन्त आडम्बरपूर्ण वातावरण से भरे हुए कमरा सं० 2 और फिर सरल रूप-सज्जा वाले कमरा सं० 1 को पार करते हुए दफ़्तर के बाहरी भाग में आ पहुँचे थे। जहाँ आकर टोड्हंटर को ऐसा प्रतीत हुआ जैसे कम से कम पचास जोड़ी उपहासपूर्ण आँखें उसी पर केन्द्रित थीं।

दफ़्तर के सारे कर्मचारी जिनमें क्लर्क, एकाउण्टेण्ट, मुनीम, स्टेनोग्राफ़र, चपरासी और दूसरे नौकर-चाकर शामिल थे, वहाँ मौजूद थे और उनके बीच में एक लम्बा, दुबला-पतला, ढीला-ढाला झुर्रीदार बूढ़ा आदमी, जो लम्बे कोट में लिपटा हुआ एक लैम्प-पोस्ट की तरह दिखाई दे रहा था, खड़ा हुआ था और अपमानित लक्ष्मीवान को ऐसा महसूस हुआ जैसे उस बूढ़े को उसने पहले भी कहीं देखा था। उस क्षीणकाय नेमेसिस (प्रतिकार के देवी-देवता) की सजीव मूर्ति के समीप ही एक छोटी-सी क्रुद्ध स्त्री भी खड़ी थी।

"मैंने सम्मन भेजा है," उस स्त्री ने दृढ़ और स्पष्ट स्वर में घोषणा की, "आप मेरे समक्ष उपस्थित होकर एक हस्तांतरण के दस्तावेज़, जिसमें आपने गवाह के रूप में योग दिया था, के सम्बन्ध में अब साक्षी देने के लिए तैयार हैं या नहीं ?"

टोड्हंटर ने देखा कि सारे ऑफिस में ख़ामोशी छाई हुई थी। कर्मचारियों और टाइप-राइटरों की आवाज़ें सब चुप थीं। किसी के भी होंठ हिलते हुए दिखाई नहीं दे थे—ऐसा लगता था जैसे जंगल में एकाएकी हवा चलनी बन्द हो गई थी और जंगल का पत्ता-पत्ता ख़ामोश था, रुका हुआ था—जैसे हर चीज़ की गति स्थिर हो गई थी।

"देखिए, " टोड्हंटर ने कम्पित स्वर में कहा, "मैं इस तरह के व्यवहार को कभी मुआफ नहीं करूँगा। मुझे उस मामले के बारे में कुछ याद नहीं है, जिसका आपने अभी जिक्र किया है और अब इस मामले में किसी तरह की सहायता देने का सवाल ही नहीं उठता। अब मैं किसी तरह भी इस मामले में कुछ नहीं करूँगा।"

मि० टट के दुबले-पतले चेहरे पर व्यंग्यपूर्ण मुस्कान उभर आई थी, लेकिन उन्होंने उसे दूर करते हुए, धीरे से, क्रोध में तिलमिलाई हुई स्त्री से कहा, "ठीक है, आगे बढ़ो।"

"तब" मैगी ने नाटकीय ढंग से कहा, "मैं आप पर सौ डालर जुर्माना और जेल में, बग़ैर जेल की सुविधाएँ दिए, क़ैद कर देने का निर्णय देती हूँ और आप तब तक क़ैद रहेंगे, जब तक साक्षी देने के लिए तैयार नहीं हो जाएँगे। समझे पुलिस अधिकारी—" उसकी वाणी में मामूली-सा कम्पन आ गया था, "अधिकारी ! इस आदमी को पकड़ लो और 'टूम्ज़' जेल में ले जाओ।"

चारों ओर छाई हुई ख़ामोशी को टोड्हंटर ने धृष्टतापूर्वक हँसते हुए तोड़ दिया।

"यह क्या बकवास है," उसने कहा, "तुम पागल हो गई हो क्या ? तुम्हें तो कुत्ते को भी जेल में भेजने का अधिकार नहीं है, मुझे तो क्या भेजोगी !"

"तुम्हें तो भेज ही सकती हैं।" लम्बे वृद्ध वकील ने उसके ऊपर झुकते हुए कहा।

"तुम कौन हो ?" श्रीमान् टोड्हंटर ने झट से कहा।

"मेरा ख़्याल है लोग मुझे एक ही नाम से जानते हैं," मि० टट ने नर्मी से व्यंग्य करते हुए कहा, "इतना ही काफ़ी है कि मैं इस महिला का वकील हूँ। आपको यह सलाह देना चाहता हूँ कि इस महिला को आप जैसे आदमियों को जेल भेज देने का अधिकार प्राप्त है। यह रहा आवश्यक निर्णय जिस पर इसके हस्ताक्षर भी हैं और इस निर्णय को पूर्ण करने के लिए पुलिस अधिकारी भी उपस्थित है। अगर आप चाहें तो अपने मित्रों आदि को संदेश दे सकते हैं। चलने से पहले क्या आप टूथ-ब्रुश अथवा कोई और वस्तु

लेना पसन्द करेंगे ?"

श्रीमान् टोड्हंटर का चेहरा गर्दन की ओर ऐसे झुक गया जैसे सूर्यास्त हो रहा था—क्षितिज में चारों ओर लाली छाई हुई थी और ज्योतिष्मान् सूर्य डूब रहा था। अपने दफ़्तर के कर्मचारियों के सामने कितना बड़ा अपमान हो गया था—उसका मज़ाक बन रहा था और वे सब लोग जो उसकी ओर दृष्टि तक नहीं उठा पाते थे, अब तमाशा देख रहे थे। वह गुस्से से बौखला उठा था, लेकिन उसे कोई रास्ता ही नज़र नहीं आ रहा था। आखिर में उसने मिस मेडन को आदेश दिया—

"मि० वेंडरपोएल को टेलीफोन करो।"

ज़रा-सी देर में टेलीफोन रिसीवर उसके हाथ में था।

"वेंडरपोएल ? हाँ, मैं विल्टबैंक बोल रहा हूँ। सुनो, क्या एक नोटरी किसी आदमी को सिर्फ इसलिए जेल भेज सकता है कि वह आदमी एक भू-सम्पत्ति के मामले में बात-चीत करना नहीं चाहता है?"

"नोटरी—क्या कहा—नोटरी—किसी को जेल करा सकता है," वेंडरपोएल सहसा बोल उठा, "नहीं—कभी नहीं। ऐसी बात मैं पहली बार ही सुन रहा हूँ। जज के अलावा कोई भी आदमी जेल का हुक्म नहीं दे सकता।"

"लेकिन एक नोटरी मुझे जेल भेज देने के लिए तैयार है।" टोड्हंटर ने उत्तर दिया।

"तुम्हें—क्या कहा, तुम्हें ! अच्छा मज़ाक है," विद्वान वेंडरपोएल ने हँसते हुए कहा, "उससे पूछो—क्या उसके होश-हवास ठीक हैं ?"

श्रीमान् एमोस टी० विल्टबैंक ने रिसीवर रखते हुए मिस हेगर्टी से कहा, "मेरे वकील ने मुझे राय दी है कि मैं आपसे यह सवाल करूँ—क्या आपके होश-हवास ठीक हैं ?"

"अच्छा, इसे ले चलो ! पुलिस अधिकारी !" उसने आज्ञा दी !

इतना सुनते ही पुलिसमैन डेनिस ओ' लीरी ने लक्ष्मीवान के कंधे पर ज़ोर से हाथ मारा और सख़्ती से उसका कालर पकड़कर, उसे लिफ़्ट की ओर घसीटते हुए ले चला। तत्काल पचास व्यक्तियों के मुख से एकसाथ आश्चर्य और भय के कारण ठंडी साँस निकल गई—महान विल्ट बैंक के

साथ ऐसा दुर्व्यवहार ! इतना अपमान !!

"बचाओ।" लक्ष्मीवान चिल्लाया। "सुनो।"

"क़ानून के अनुसार—" मि० टट ने शान्तिपूर्वक कहा, "आपको जेल भेजा जा सकता है। मैं आपको अधिनियम दिखाता हूँ, अगर आप देखना पसन्द करें तो। मैं यह मानता हूँ कि यह अधिनियम आजकल कुछ अप्रचलित है, लेकिन फिर भी आपको जेल भेज देने के लिए काफ़ी है। भू-सम्पत्ति क़ानून की धारा 05 को ज़रा देखने का कष्ट कीजिए। लेकिन जेल जाने से आपकी जो बदनामी होगी, उससे बचने का एक ही तरीका है कि आप इनकी बात मान जाएँ और यह शपथ-पत्र लेकर, इस पर अपने हस्ताक्षर कर दें।"

श्रीमान् एमोस टी० विल्टबैंक झिझके और उन्होंने सोचा—अपने कर्मचारियों की उपस्थिति में घोर अपमान हो जाने के बाद और अधिक झुकना ठीक नहीं होगा, क्योंकि तब दफ़्तर में कोई उसकी परवाह ही नहीं करेगा ! बिलकुल वैसी ही अवस्था हो जाएगी—जैसे फटे हुए गुब्बारे, टूटी हुई मूर्ति अथवा सूखे पत्ते की होती है। और अपने कर्मचारियों द्वारा इतनी बेअदबी वह कभी नहीं सह सकेगा !

"आओ—" डेनिस गुर्राया और उसे अधिक अपमानित करते हुए झटका दिया।

अपमान और विवशता के कारण, महान् व्यक्ति की आँखों में आँसू निकल आए। पुलिसमैन की उँगलियों के दबाव से उसकी गर्दन में दर्द होने लगा था। उसकी कालर उस मजबूत हाथ के बोझ में उसे ही चुभ रही थी।

"चलो।"

अगर यह जान भी लिया जाता कि वह कार्य क़ानूनी था या गैर-क़ानूनी, तो क्या फर्क पड़ जाता ! एक पुलिस अधिकारी उसे घसीटकर लिफ़्ट में ले जाने के लिए तैयार था और अगर ज़रूरत पड़ेगी तो उसे ब्राड्वे में भी घसीटता हुआ ले जाया जायगा। अगर उसे मारा-पीटा, चीरा-फाड़ा नहीं गया, तब भी बातों और व्यवहार से उसका और ज़्यादा अपमान किया जाएगा। सार्वजनिक मार्ग में, जहाँ लोग उसका मज़ाक उड़ाएँगे, उसे

हाथ से पकड़कर घसीटते हुए ले जाया जायगा। कितना बड़ा अपमान होगा! उसे जेल का, जेल में सुविधाएँ नहीं मिलने की बात का इतना डर नहीं था जितना वह बदनामी और अपमान के कारण डर रहा था। कैसा मजाक था। एक महान् आदमी जिसके नाम पर प्रसिद्ध सिगरेटों के नाम रखे गए थे, इतनी बुरी तरह अपमानित हो रहा था। बड़ी ही विचित्र बात थी! और कल तो सारे समाचार-पत्रों में इस घटना का ही बोल-बाला रहेगा—और वह सारी दुनिया के सामने अपमानित हो जाएगा!

लिफ़्ट आ गई थी और उसका दरवाज़ा खुल गया था।

लक्ष्मीवान के पाँव काँप उठे। वह पराजित हो चुका था। जीवन में पहली बार उस 'हरफ़न मौला' व्यक्ति की कोई चाल पकड़ी गई थी—और वह भी एक स्त्री के हाथों! उसका अहंकार टूट चुका था। उसने पराजय स्वीकार कर ली।

"नीचे चलना है?" लिफ़्टमैन ने पूछा।

"नहीं—" श्रीमान् एमोस टी० विल्टवैंक ने झेंपते हुए उत्तर दिया।

ग्रदालत की मानहानि

"व्यक्ति की मर्यादा ही मेरी कहानी की विषय-वस्तु है।"

—जूलियस सीज़र, ग्रंक 1, दृश्य 2।

"दूसरी नौकरानी—केटी कहाँ चली गई ?" मिस एल्थिया बीकमैन ने ग्रपने घर के काम-काज को सम्भालने वाली, डोकिंस से, चिकनी लकड़ी वाली मेज़ पर नाश्ता करने के लिए बैठते हुए प्रश्न किया, "कल रात ग्रौर ग्राज सुबह भी वह दिखाई नहीं दी है—क्या बात है ?"

डोकिंस, जो 'बीकमैन' परिवार में विक्टोरिया के शासन-काल के बीच के वर्षों से गृह-प्रबन्धक का काम कर रही थी, ने भड़कते हुए कहा—

"मालकिन जी, उसका चले जाना ही ठीक था," उसने निंदा करते हुए ग्रागे बताया, "ग्रब मैं ग्रापको कैसे बताऊँ, मुझे डर था कि उसके रहने से कहीं इतने बड़े घर की हवा खराब न हो जाए। उसकी वजह से दूसरी लड़कियों पर भी तो बुरा प्रभाव पड़ने का डर था। हमारे घर में काम करने वाली लड़कियाँ कितनी ग्रच्छी हैं—एकदम सभ्य ग्रौर शिष्टाचार की बारीकियाँ समझने वाली, लेकिन वह लड़की ठीक नहीं थी, मालकिन, इसीलिए मैंने उसका हिसाब चुकता किया ग्रौर उसे चले जाने के लिए कह दिया, तो क्या बुरा किया ? ग्राप ही बताइए।"

मिस बीकमैन को यह सुनकर हार्दिक कष्ट हुग्रा।

"तुम्हें इस तरह उसे निकाल देना नहीं चाहिए था, डोकिंस," उन्होंने प्रतिवाद किया, "वह कहाँ गई है ?"

डोकिंस परेशानी के साथ ग्रपने पैरों की ग्रोर देखती रही।

"मुझे यह मालूम नहीं था मालकिन जी, नहीं तो मैं उसे क्यों निकालती ? नौकर बड़ी मुश्किल से मिलते हैं, यह मैं तब भी जानती थी जब उसे निकाला था, लेकिन ग्राप चिन्ता न करें। मुझे ग्राशा है कि ग्राज शाम तक मिस हीले के यहाँ से दूसरी नौकरानी ग्रा जाएगी।"

मिस बीकमैन दरअसल बहुत उदास हो गई थीं।

"मुझे इस तरह की बातें नापसन्द हैं, डोकिंस ! मैं तुमसे बहुत नाराज़ हूँ। यह ठीक है कि मुझे अपने घर की लड़कियों की दुर्व्यवहार की बातें सुनकर कष्ट होता है, लेकिन इसका यह मतलब कभी नहीं है कि उन्हें घर से ही निकाल दिया जाए। मुझे इस तरह का व्यवहार अच्छा नहीं लगता है। आखिर सोचो, हम इतने निर्दयी कैसे हो सकते हैं ? आज तुमने बहुत परेशान कर दिया है, मुझे।"

"मुझे अफसोस है, मालकिन जी। लेकिन मैंने दूसरी लड़कियों के भले की बात सोचकर ही ऐसा किया था।"

"यह मैं जानती हूँ, अब हम कुछ नहीं कर सकते ! लेकिन मुझे बहुत दुःख है, डोकिंस। आखिर अपने घर में काम करने वालों के प्रति हमारी भी कुछ ज़िम्मेदारियाँ हैं। फिर भी—आज वीरवार है न ? आज भी हर रोज़ की तरह लंच के लिए 'वील' तैयार किया जाए। एक बात ज़रूर है : वह लड़की थी, सुन्दर-सलोनी !" मिस बीकमैन ने अप्रासंगिक ढंग से बातें कहीं।

"यही तो उसके साथ परेशानी थी," गृह-प्रबन्धक ने नाक-भौं सिकोड़ते हुए कहा, "अच्छा ही हुआ जो वह चली गई। आखिर इन लड़कियों को कम से कम मालिक के मान-सम्मान का ध्यान तो रखना ही चाहिए, मेरे विचार में तो वे घर की मेहमान होती हैं और उन्हें मेहमानों की तरह ही व्यवहार करना चाहिए।"

"तुम ठीक कहती हो।" मालकिन ने स्वीकार किया, "हाँ, भोजन के बाद 'ब्राउन बैटी' ठीक रहेगी। अच्छा !"

इस साधारण बात-चीत के पर्दे के पीछे, एक मेलोड्रामा खेला जा चुका था, जो शेक्सपियर के दुःखान्त नाटकों के समान ही मौलिक और मार्मिक था। जिस दिन डोकिंस ने केटी ओ'कोनल को 'जिस कारण' से नौकरी से निकाला था और कहा था कि जहाँ सींग समाएँ, चली जाए, तो उसी दिन केटी के भाई शेन ने भी रेड मकगुर्क को उसी 'कारण' के आधार पर बुरी हरकतें छोड़ देने के लिए ललकारा था अर्थात् केटी के प्रति दुर्व्यवहार न करने के लिए चुनौती दी थी, और फिर 'रेड' मकगुर्क को पुनः दुर्व्यवहार करने पर 'मकमानस' के शराबखाने में जाकर, उसने गोली मार दी थी।

लेकिन मिस बीकमैन को इस घटना की सूचना कैसे मिलती ?

जैसा कि पहले ही अन्दाज़ा लग चुका होगा कि मिस एल्थिया संवेदनशील, सरल और दयालु स्वभाव की महिला थीं। वे जान-बूझकर कभी किसी को तकलीफ नहीं पहुँचाती थीं और उनका इस बात में क़तई विश्वास नहीं था कि अगर भगवान ने उन्हें सुख-सुविधाएँ देने की कृपा की थी तो वे भी अपने पर आश्रित व्यक्तियों के प्रति कोई कर्तव्य अनुभव नहीं करें बल्कि उन्हें अपने नौकर-चाकरों का विशेष ध्यान रहता था।

फिर भी, वे उन सबको अपने से भिन्न ही मानती थीं, क्योंकि उनकी 'विशिष्ट परिवार-परम्परा' थी। लेकिन यह बात समझ नहीं आती कि जब केटी ओ' कोनल और एल्थिया बीकमैन एक प्रकार से समकालीन थीं, तो उन दोनों की परम्पराओं में क्या भेद हो सकता था ? अगर यही प्रश्न मिस बीकमैन के मित्र, कोलम्बिया विश्वविद्यालय के प्रोफेसर, एबीलार्ड सामोथरेस से किया जाता तो शायद वे कहते कि जब दोनों पाँचवें मार्ग के एक ही मकान में—स्तर की बात को छोड़ दीजिए, साथ रह चुकी हैं तो ज़रूर प्रागैतिहासिक काल में, उन दोनों के पूर्वज एक साथ ही एक गुफा में रहे होंगे, हमारे विचार में सम्भवतः ऐसा नहीं हुआ होगा, और साथ-साथ सुबह-सवेरे ही, बर्फ ढँके रास्तों पर ठिठरते हुए, गुफा में रहने वाले रीछ, हाथी और बालों वाले गैंडों की तलाश में निकलते रहे होंगे और दोपहर बाद मनोरंजन करने के लिए, पत्नियों की खोज में, बालदार हाथों में छड़ी की बजाय पत्थर की गदा पकड़कर चलते होंगे।

इसी लिए उस काल में उन दोनों परिवारों की परम्पराओं में कुछ भी फर्क रहा हो, लेकिन स्वाभिमान, मनोरंजन की इच्छा और कबीले के प्रति कर्त्तव्य की भावना अथवा चेतना की बपौती पर तो उन दोनों का एक-जैसा ही अधिकार था। यह बात ठीक थी कि मिस केटी के पूर्वज केल्ट जाति के थे जो कुछ अवसरों पर, शरीर पर केवल नीले रंग के भीने आवरण का प्रयोग किया करते थे, जबकि मिस एल्थिया के पूर्वज, एल्बी के गीले दलदली प्रदेश में रहा करते थे और निस्सन्देह ट्यूरानी थे, लेकिन इसके बावजूद भी भेद-विभेद का यह अभिशाप हज़ारों वर्षों से प्रचलित अन्तर्जातीय विवाहों के कारण, काफी हद तक समाप्त हो चुका था।

शताब्दियों पुरानी परम्परा की अपेक्षा, व्यक्ति पर युगीन परम्पराओं का अधिक प्रभाव पड़ता है। नहीं तो, केटी में भी आयरलैंड की उस संस्कृति के गुण विद्यमान होने चाहिएँ थे जब वहाँ साँप रेंगा करते थे और 'टारा' की इमारत के पास कोयले की दलदलें मौजूद थीं और मिस एल्थिया में उनके पूर्वजों जिनका 'टेसीटस'[1] ने इस प्रकार वर्णन किया था कि समूर से शरीर ढाँपने वाली उन बर्बर जातियों के लोग, मनोविनोद के लिए जुआ खेला करते थे, शराब पिया करते थे और पत्थर के हथौड़ों से एक-दूसरे की खोपड़ियाँ फोड़ा करते थे, आदि विकारों का होना जरूरी था लेकिन उन सब गुणों से मिस एल्थिया बीकमैन वंचित रह गई थीं और उनके मन में यह त्रुटिपूर्ण धारणा काफी गहरी जड़ पकड़े हुए थी कि वे बीकमैन परिवार की थीं और सैन्ट्रल पार्क के सामने पत्थर की बनी हुई भव्य इमारत में निवास करती थीं, इसी लिए न केवल ओ' कोनल से ही, बल्कि 'स्मिथ', 'पास्क्वेल', 'इवानोविच' और 'गिंसबर्ग' परिवारों के व्यक्तियों—जिनकी अपनी भी अत्यधिक प्राचीन परम्पराएँ थीं, से भी निश्चित रूप से अलग थीं और इसी कल्पित भिन्नत्व के कारण, उन्हें अपनी परम्पराओं पर बहुत ज़्यादा गर्व था।

मिस बीकमैन दरअसल गलती पर थीं, क्योंकि जहाँ तक पूर्वजों की परम्पराओं को महत्ता देने का सवाल था, वे उन परम्पराओं पर नहीं चलती थीं, बल्कि ओ' कोनल लोगों में 'बीकमैन' और 'गिंसबर्ग' परिवारों की अपेक्षा पुरानी परम्पराओं, अर्थात् जब पत्थर का जवाब पत्थर से देने का सिद्धान्त न्यायपूर्ण माना जाता था और कबीले के रीति-रिवाजों को ही क़ानून समझा जाता था, के प्रति अधिक मोह था और इसी मोह के प्रभाव में ही तो शेन ओ' कोनल ने 'रेड' मकगुर्क को स्वर्ग भेज दिया था ! प्रतिदिन होने वाली घटनाओं के समान ही, यह भी एक असाधारण घटना थी, लेकिन उसके इतना महत्त्वपूर्ण बन जाने का एक कारण था कि मकगुर्क, राजनीतिक दृष्टि से अत्यन्त प्रभावशाली पिता का पुत्र था और स्वयं भी वह अनुशासनहीन नवयुवकों के एक दल का नेता था। आवश्यकता पड़ने पर

(1) टेसीटस (Tacitus) सन् 117 ईसवी के बाद का एक प्रसिद्ध रोमन इतिहासविद्।

उसे चुनाव के मौक़ों पर 'अनुचित ढंग' से बैलट बक्सों को भरने के लिए अथवा जनता को प्रभावित करने के लिए बुलाया जाता था। 'गिड्योन' में मकगुर्क की धाक जमी हुई थी—इसलिए उसका दुनिया से कूच कर जाना अपने-आप में एक महत्त्वपूर्ण घटना थी और सारे 'चेरी-हिल' के इलाक़े में इस घटना ने हलचल मचा दी थी।

"अगर तुमने मेरे जवान लड़के के हत्यारे को मौत की कुर्सी पर नहीं बिठाया तो तुम्हारी ख़ैर नहीं है, समझे।" मकगुर्क के पिता ने जिला अटार्नी, पेखम, को धमकी देते हुए कहा था, "मैं पुलिस को तो पहले ही बता चुका हूँ—कौन हत्यारा है। अब बाकी काम तुम्हें करना है। अगर चूक गए तो···देख लो !"

पेखम कैसे उस बात को नहीं समझता ? बड़े मकगुर्क के चेहरे की कठोरता देखकर, उसकी बात नहीं मानने का नतीजा क्या होगा—यह बात तो किसी मूर्ख को भी अच्छी तरह समझ आ सकती थी।

"आप चिन्ता न करें, आपका हुक्म सिर आँखों पर।" पेखम ने दुःखी पिता के प्रति पूर्ण सहानुभूति प्रकट करते हुए कहा। उसके हाव-भाव में यह धारणा भी प्रस्फुटित हो रही थी कि क़ानूनी प्रतिशोध लेकर, जैसे मकगुर्क के नाम को वह अमर बना देगा—चारों ओर मकगुर्क का ही जिक्र होगा और मृत व्यक्ति की, उसके परिवार की, और उसके घर की तसवीरें सब पत्र-पत्रिकाओं के पहले पृष्ठ पर छपेंगी।

"हम हत्यारे को भी वहीं पहुँचाकर दम लेंगे।"

"देख लेना, नहीं तो !" आगन्तुक ने अपना अभिप्राय भली-भाँति प्रकट करते हुए कहा।

यद्यपि किसी ने भी शेन ओ' कोनल को हत्या करते हुए नहीं देखा था, लेकिन 'रेड्' मकगुर्क के अपराध में उसी को पकड़ लिया गया था क्योंकि मकगुर्क को एक-दो बार उसने मार डालने की धमकी तो दी ही थी।

फिर इस बात का इतना प्रचार हुआ कि सब को यह मालूम हो गया था कि शेन ने ही वह हत्या की थी। लेकिन एक बात ज़रूर थी कि अगर कोई किसी से यह जानना चाहता कि यह सूचना किससे मिली थी—तो कोई नहीं बता सकता था, फिर भी सभी को यह विश्वास हो गया था कि

शेन ही हत्यारा था। जब सब ही यह जानते थे, तो पेखम के लिए भी राजनीतिक दृष्टि से, यह ज़रूरी हो गया था कि वह भी हत्यारे को पूरी शान-शौकत ग्रौर एलानिया तौर से गिरफ़्तार कराए जिससे कि मौत की कुर्सी पर हत्यारे को ग्रासानी से बिठाया जा सके। उसने भी मौक़े की नज़ाकत को पहचानते हुए वैसा ही किया था।

लेकिन पकी-पकाई खीर में एक घटना के कारण मक्खी भी गिर गई थी—जैसे ही ग्रो' कोनल ने वह ग्रफवाह सुनी थी तो वह स्वयं ही ज़िला ग्रटार्नी के दफ्तर में पहुँच गया था ग्रौर उसने केवल इतना कहते हुए ही ग्रपने-ग्रापको गिरफ़्तार करा दिया था, "मैंने सुना था कि ग्रापको मेरी ज़रूरत है। लीजिए, मैं ग्रा गया हूँ।"

उसे घण्टों सताया गया, हर ढंग से ग्रपराध स्वीकार करने के लिए प्रलोभन दिए गए, सुराग़ लगाने के लिए ग्रपने ही एक ग्रादमी को उसके साथ कोठरी में बन्द रखा गया ग्रौर हर तरह से फंदा डालने की कोशिश की गई ग्रौर ज़िला ग्रटार्नी के दफ्तर द्वारा ग्रपराधी से ग्रपराध स्वीकार करवा लेने की जितनी तरकीबें थीं, काम में लाई गई लेकिन कोई भी तरकीब कारगर साबित नहीं हुई ग्रौर वह एक ऐसा मुकदमा बन गया था जिसके लिए कोई प्रमाण या कोई गवाह ही नहीं जुट पा रहा था। पेखम परेशान था क्योंकि वह ग्रच्छी तरह जानता था कि ग्रगर ग्रो' कोनल को सज़ा नहीं दिलवाई गई तो उसकी मुसीबत ग्रा जाएगी। लेकिन हमारी इस कहानी का सम्बन्ध ग्रो' कोनल परिवार की प्रतिष्ठा की ग्रपेक्षा बीकमैन परिवार से ग्रधिक है।

मिस एल्थिया ग्रपनी परिवार शृङ्खला की ग्रंतिम कड़ी थीं। यद्यपि वे ग्रपने बारे में, इस मत के प्रकट किए जाने पर कि "शत प्रतिशत ग्रमरीकी थीं", ग्रवश्य ही नाराज़ हो जातीं, लेकिन वे थीं पूर्ण रूप से ग्रमरीकी ही—चाहे उनके मन में ग्रभी तक 'दिवंगत महारानी की स्नेहपूर्ण स्मृति' विद्यमान थी। फिर भी उनके विषय में उपर्युक्त बात ही वस्तुतः ठीक थी। उनकी मां के पिता एक प्रसिद्ध क्रान्तिकारी राजनीतिज्ञ थे जिन्होंने स्वतंत्रता घोषणा-पत्र पर हस्ताक्षर किए थे ग्रौर जो सुप्रीम कोर्ट के जज ग्रौर राजदूत भी रहे थे। उनके ग्रपने पिता भी एक प्रसिद्ध समाचार-पत्र के यशस्वी सम्पादक रहे थे।

उनका जन्म 'ग्रेमसी पार्क' में हुआ था, जहाँ आजकल 'प्लेयरज़ क्लब' है और वह औपनिवेशिक काल का बना हुआ सुन्दर मकान था जिसे सफेद झालरों और बढ़िया लोहे के काम की सजावट ने अनोखा और आकर्षक रूप दे दिया था और जहाँ अक्सर संस्कृति और सभ्यता के प्रसिद्ध प्रवर्त्तकों—एमेरसन्, लोवेल और जार्ज विलियम कर्टिस—ने आतिथ्य ग्रहण किया था। मिस एल्थिया ने 'गृह-युद्ध'[1] के अनेक योद्धाओं की स्मृतियाँ संजो रखी थीं, जिन्होंने उनके पिता के साथ, महोगनी की लकड़ी की बनी हुई सुन्दर मेज़ पर बैठकर बहुत बार भोजन किया था और उस समय उनके बीच, प्रायः चर्चा के विषय हुआ करते थे—विधान अथवा अमरीका में पहले आकर बस जाने वालों का भविष्य, जिनमें ऐसे व्यक्तियों का वर्णन होता था जिन्होंने अमरीका में पहुँचकर धूर्त आदिवासियों से शराब और शीशे की मालाओं के बदले में भू-सम्पत्ति एकत्र कर ली थी। उनकी आयु अब इक्यावन वर्ष थी। वे 'औपनिवेशिक महिला' और 'अमरीकी क्रान्ति की सुपुत्री' होने के अतिरिक्त विभिन्न धमर्थि संस्थाओं के संचालक-मण्डलों की सदस्या थीं। रेल-रोड सिक्योरिटियों के अनुसार उनकी लाखों डालर की हैसियत थी। वे प्रत्येक रविवार को 'स्टाइवेसन्ट स्क्वेयर' में स्थित गिरजाघर, जहाँ अनेक वर्षों से उनका परिवार जाता रहा था, जाया करती थीं और 1907 तक तो वे बीकमैन परिवार की विशेष बग्घी, जिसे एक नीग्रो कोचवान चलाया करता था, में बैठकर गिरजाघर जाती थीं।

मिस एल्थिया, जो प्रायः कल्याणकारी कामों में व्यस्त रहती थीं और जिनका अत्यधिक सुशील स्वभाव था, के सुन्दर नैन-नक्श जो इतनी उम्र हो जाने पर भी अपना आकर्षण नहीं खो पाए थे, को देखकर आश्चर्य होता था कि वे अपने चारों ओर मंडराने वाले पुरुषों द्वारा किए गए 'विवाह-प्रस्तावों' के आक्रमणों से किस तरह बच सकी होंगी। उनका मकान पाँचवें मार्ग पर था जिसमें अनेक देशभक्तों की मूर्तियाँ मौजूद थीं। उन्हें अपने मृत पिता, जो सम्पादक थे, से विरासत में एक ऐसी लाइब्रेरी मिली थी जिसमें भरी हुई पुस्तकें देखकर कोई भी साम्यवादी उनसे घृणा करने

1. अमरीकी गृह-युद्ध जो 1861-65 ईसवी के बीच संयुक्त राज्य अमरीका और दक्षिण के ग्यारह राज्यों के बीच हुआ था।

लगता ग्रौर ग्रगर कहीं ट्राटस्की मैनहट्टन की सोवियट (परिषद) का ग्रध्यक्ष हो जाता तो मिस एल्थिया का नाम, ढोल बजा-बजाकर कोर्ट-मार्शल किए जाने वाले लोगों की सूची में सबसे पहले होता।

वे धार्मिक सिद्धान्तों ग्रौर कांग्रेस[1] के नियमों को पूर्ण मान्यता देती थीं। क़ानून के लिए उनके मन में पूर्ण श्रद्धा थी। उनके विचार में ग्रनुशासनहीन विधायकों द्वारा बनाए गए विचित्र ग्रधिनियमों का महत्व भी 'माउंट साईनाई' में रहस्यपूर्ण ढंग से ग्रवतरित हुए 'दस ईश्वरीय ग्रादेशों' के समान ही था।

क़ानून का उल्लंघन करने वालों के प्रति उन्हें ग्रत्यधिक घृणा थी ग्रौर उनके निजी नीति-शास्त्र में एक-मात्र कमी यह थी कि वे विभिन्न ग्रपराधों के ग्रापसी भेद की बारीकियों को कोई महत्त्व नहीं देती थीं। उनकी दृष्टि में 'वोलस्टीड ग्रधिनियम'[2] को भंग करना भी बड़ी चोरी ग्रथवा भूठी गवाही देने के समान ही दण्डनीय ग्रपराध था। उनकी धारणा थी कि प्रत्येक जज को विद्वान, बुद्धिमान ग्रौर ईमानदार होना चाहिए क्योंकि उसे ही देश के क़ानून को लागू करना होता है। उन्होंने कभी भी क़ानून के प्रति कोई शंका प्रकट नहीं की थी।

मिस एल्थिया को ग्राधुनिकता का भूत सवार नहीं था, वे इस प्रकार की उत्साहपूर्ण, सुसंस्कृत, निष्ठावान, सरल ग्रौर विनीत स्वभाव की नागरिक-महिला थीं, जिन्हें देश का मेरु-दण्ड माना जाता है। उनकी यह विशिष्टता थी कि उन्होंने ग्रपने वसीयतनामे, जो उनके परिवार के वकील द्वारा लिखा

---

1. कांग्रेस—ग्रमरीका में सर्वोच्च राष्ट्रीय संसद जिसके दो भाग हैं—(1) सीनेट: जिसमें 96 सीनेटर होते हैं ग्रौर जिनका निर्वाचन 6 वर्ष के लिए होता है। (2) प्रतिनिधि सदन के 465 सदस्य 2 वर्ष की ग्रवधि के लिए चुने जाते हैं। राष्ट्रपति कांग्रेस द्वारा प्रस्तावित किसी भी ग्रधिनियम को 'वीटो' कर सकते हैं, लेकिन उसके बाद भी कांग्रेस के दो-तिहाई सदस्य उसका पुनः समर्थन करते हैं तो वह कानून बन जाता है।

2. वोलस्टीड ग्रधिनियम—18 ग्रक्तूबर 1919 को श्री ए० जे० वोलस्टीड (1860-1946) जो एक प्रसिद्ध कांग्रेस-सदस्य थे, ने विधान में ग्रठारहवां संशोधन मंजूर करवाया था, जिसके ग्रनुसार सारे ग्रमरीका में शराब की बिक्री को रोक दिया गया था। लेकिन इस ग्रधिनियम को राष्ट्रपति विल्सन ने 5 दिसम्बर, 1933 को 'वीटो' द्वारा मंसूख कर दिया था।

गया था, के साथ एक प्रार्थना एक पर्ची पर लिखकर संलग्न कर रखी थी, जिसमें उन्होंने अपने उत्तराधिकारियों और सगे-सम्बन्धियों से यह आग्रह किया था कि मृत्यु के बाद, उनके ताबूत को अमरीकी झण्डे में लपेटा जाए और उनके जनाज़े के बैंड पर राष्ट्रीय गान की धुन बजाई जाए।

उनके व्यवहार में क़ानून भंग करने वालों के प्रति एक असाधारण विरोधाभास बना रहता था, जैसा कि प्रायः देखने में नहीं आता है। अपराधी के प्रति बनी रहने वाली घृणा, एक बार उसके जेल में पहुँचने के बाद, करुणा का रूप धारण कर लेती थी और वे अक्सर 'टूम्ज़' जेल में अपराधियों से मिलने जाया करती थीं। क़ैदियों के आत्मिक सुख के साथ-साथ उनके शारीरिक कष्टों का निवारण करने की दिशा में भी वे क्रियाशील रहती थीं। उनकी सहानुभूति पाने का अधिकार उन ही क़ैदियों को हो पाता था जिनके नाम की सिफारिश जेल अधिकारी अथवा ज़िला अटार्नी किया करते थे। अभि-योजक पेखम ने उन्हें इस सिलसिले में काफ़ी सुविधाएँ दे रखी थीं और उसका यह उद्देश्य था कि वह बीकमैन जैसे प्रतिष्ठित परिवार की एक प्रसिद्ध महिला से मित्रता बढ़ाना चाहता था, इसीलिए वह अक्सर ऐसे मौक़ों की तलाश में रहता था जबकि वह क़ैदियों को मिस एल्थिया की सहानुभूति का प्रसाद दिलवाने के लिए बुला सके और साथ ही साथ स्वयं भी उनका कृपा-पात्र बन सके। उसने अपने अधीनस्थ कर्मचारियों को यह आदेश दे रखा था कि वे हर प्रकार से मिस बीकमैन के कल्याणकारी कार्यों में सहायता करें। मिस बीकमैन ने जेल में जब-तब आते-जाते रहने के कारण, टट एंड टट कम्पनी का नाम भी सुन रखा था और बड़े सहयोगी से तो उनका सामान्य-सा परिचय भी था।

"वह ओ'कोनल तो पक्का घोंघा है—कुछ बताकर ही नहीं देता," मि० टट ने कठोरतापूर्वक कहा और अपना हैट चौखटे की एक खूँटी पर टाँग दिया और दूसरे हाथ से वास्कट की जेब में माचिस तलाश करते रहे। यह बात उस दिन की दोपहर बाद की है, जिस दिन सुबह मिस बीकमैन और डोंकिस में, कहानी के आरम्भ में वर्णित बात-चीत हुई थी।

"देश का प्रभाव तो पड़ता ही है। आखिर है भी तो आयरलैंड का रहने वाला न," बोनी डून ने माचिस देते हुए कहा, "वह अपने पक्ष के

वकील को अपने अपराध के बारे में कैसे बता सकता है ? शायद उसे यह डर है कि कहीं कुछ बता दिया तो बाद में आप ही उसका विरोध न करने लगें और उसे अपराधी मान लें। फिर आप तो जानते ही हैं—आयरलैंड का रहने वाला कभी भी अपने अपराध को स्वीकार नहीं करता है।''

''मुझे तो आज तक किसी देश का भी प्रतिवादी ऐसा नहीं मिला, जो अपने ऊपर लगाए गए अभियोग को आसानी से स्वीकार कर ले,'' मि० टट ने उत्तर दिया, ''फिर भी इस लड़के ओ' कोनल की वजह से मैं उलझन में पड़ा हुआ हूँ—कहने लगा, 'मुझे बचाना है, तो बचा लो, लेकिन मुझसे कुछ मत पूछो। मैं कुछ नहीं बताऊँगा···' मैं तो उससे हार मान गया हूँ। वह तो यहाँ तक भी नहीं बताना चाहता कि क़त्ल वाले दिन वह कहाँ था।''

बोनी ने सन्देहपूर्वक कहा, ''बड़ी सीधी-सी बात है, मि० टट ! जैमी अफवाह सुनी गई है—वह मकगुर्क की तलाश में घूमता रहा था और जिसे देखते ही उसने गोली मार दी थी।''

''अगर अफवाह को सही मान लिया जाए,'' टट, जो तब तक वहाँ आ चुका था, ने बात को बढ़ावा दिया, ''तो उस लड़के ने कमाल कर दिखाया है। नहीं तो मकगुर्क जैसे धूर्त, लम्पट और अपराधियों के ख़लीफा को काबू में करना मामूली से आदमी के बस की बात न थी। स्त्रियों के साथ दुर्व्यवहार करने में तो मकगुर्क अव्वल नम्बरी था। इस मामले में भी किसी लड़की का चक्कर है क्या ?''

बोनी ने कंधे उचकाकर, उदासीनतापूर्वक कहा, ''सुनते हैं—मामला कुछ ऐसा ही था। अभी तक कुछ पक्का पता नहीं चला। वैसे ओ' कोनल परिवार की प्रशंसा ज़रूर सुनने में आई है।''

''यही तो सबसे बड़ी परेशानी है,'' मि० टट ने मत प्रकट किया, ''आख़िर तुम मौखिक क़ानून के आधार पर, बग़ैर उस प्रतिष्ठा को कलंकित किए, जिसे बचाने का स्वयं प्रयत्न कर रहे हो, प्रतिवाद भी तो नहीं कर सकते !''

'टट एंड टट' कम्पनी के बड़े सहयोगी अपनी पहिएदार घूमने वाली कुर्सी को खिड़की के पास ले गए और फिर अपने दोनों पाँव, जिनमें वे टख़नों तक ऊँचे जूते पहने हुऐ थे, खिड़की की चौखट पर फैलाकर, कुर्सी पर आराम

से बैठते हुए, विचार-मग्न हो, समुद्री जहाज़ों की ओर देखने लगे।

"मौखिक क़ानून !" टट ने व्यंग्य के साथ कहा, "कम से कम इस देश में तो इस नाम का कोई जानवर नहीं है ?"

"तुम ग़लती कर रहे हो," मि० टट ने तत्काल उत्तर दिया, "लगभग हमारा सारा क़ानून ही मौखिक है। एक लिखित अधिनियम की व्याख्या के लिए सौ मौखिक नियमों की आवश्यकता पड़ती है, नहीं तो अधिनियम निरर्थक सिद्ध हो सकता है। इन मौखिक नियमों का सम्बन्ध कर्तव्य, प्रतिष्ठा और मर्यादा की भावनाओं से होता है—हमारी चेतना से होता है।"

"क्या तुम इस बात को नहीं मानते, टट ?" बोनी ने पूछा, "यूँ समझ लो कि प्रत्येक व्यक्ति की चेतना में उसका निजी क़ानून निहित है।"

टट दुविधा में पड़ गया।

"क्या आप यह कहना चाहते हैं कि प्रत्येक व्यक्ति की न्याय के प्रति अपनी अलग-अलग चेतना होती है ?" उसने प्रश्न किया।

"चेतना का अर्थ जहाँ तक मैं समझती हूँ—यह है : व्यक्ति की अपनी मान-मर्यादा के प्रति सजगता और इसी के आधार पर व्यक्ति अपना जज स्वयं बनकर निर्णय देता रहता है।" मिस विगिन ने घोषणा की।

"इस उलझन को सुलझाने का आसान तरीका तो यह है," टट ने आग्रहपूर्वक कहा, "कि हम क़ानून की महत्ता को स्वीकार कर लें और कहें कि वही आदमी सभ्य है जो क़ानून की इज़्ज़त करता है।"

"आप तो क़ानून से डर कर कोई आसान-सा तरीका ढूँढ़ लेना चाहते हैं," मिस विगिन ने विरोध प्रकट किया, "मान लीजिए, क़ानून की माँग है कि आप कोई ऐसा काम करें जिसे आप नैतिक दृष्टि से न केवल ग़लत ही समझते हैं बल्कि घृणित भी – तब क्या आप क़ानून की बात मान लेंगे ?"

"क़ानून ऐसा क्यों करने लगा ?" टट ने मुँह बनाते हुए दृढ़तापूर्वक विरोध प्रकट किया, "क़ानून तो विवेक का उत्कृष्ट रूप है। यूँ तो यह शब्दों के साथ खेलना है, लेकिन फिर भी जहाँ तक मेरी मामूली-सी समझ काम करती है, मैं समझता हूँ कि हम जिस प्रकार राज्य को व्यक्ति से अधिक मान्यता देते हैं और इसकी पुष्टि में बहुत से प्रमाण भी दिए जा सकते हैं, उसी तरह व्यक्ति की न्यायपरता और क़ानून के बीच भेद अथवा अदालत

में शपथ उठाने के बाद व्यक्ति का क्या कर्त्तव्य होता है, इन बातों के सम्बन्ध में अगर आप कहें तो लाइब्रेरी से लाकर अनेक विद्वानों के मत प्रस्तुत कर सकता हूँ।"

"आप ज़रूर ऐसा कर सकते हैं—इस बात में कोई शक नहीं है," मिस विगिन ने बात काटते हुए कहा, "यही तो परेशानी है कि आप जिस पक्ष की पुष्टि में चाहें, विद्वानों के मत प्रस्तुत कर सकते हैं और इसीलिए तो कहा जाता है कि क़ानून की तुलना में मनुष्य की न्यायपरता अधिक विश्वसनीय है। आखिर क़ानून है क्या ? एक जज जो कुछ कहे, वही क़ानून है और उसी रूप में तब तक प्रतिष्ठित रहता है जब तक कि उसका खण्डन न हो जाए। क्या आप यह चाहते हैं कि मैं न्याय के प्रति अपनी धारणा को एक ऐसे जज, जो मेरी अर्थात् एक व्यक्ति की मर्यादा की नाम-मात्र को भी परवाह नहीं करता है, के सामान्य निर्णय के लिए तिलांजलि दे दूँ—नहीं, मैं ऐसा नहीं कर सकूँगा।"

"आपको अदालत की मानहानि करने के अपराध के लिए जेल में बन्द कर दिया जाएगा !" टट ने चेतावनी दी।

"सच्ची बात तो यह है," मि० टट ने बहस को ख़त्म करने के इरादे से कहा, "व्यक्ति की मर्यादा और क़ानून दोनों ही अलग-अलग बातें हैं और शुरू से लेकर आज तक अदालतों ने भी इस बात की ओर बहुत बार संकेत किया है, फिर भी जज लोग अपनी इच्छानुसार जब-तब दोनों को मिलाते भी रहे हैं। लेकिन जहाँ तक मुझे याद है, सन् 1743 में भी किसी मुकदमे में चीफ बेरन बोवेस ने कहा था, 'अदालत यह निर्धारित नहीं कर सकती कि व्यक्ति की मर्यादा क्या है?' मेरे विचार में भी दोनों अलग-अलग बातें हैं और इस फर्क के कारण हमेशा ही परेशानी पैदा होती रहेगी, इस बात में भी कोई शक नहीं···क्या चाय का वक्त नहीं हो गया है ?"

o o o

अगले दिन दोपहर बाद जैसी ही मिस बीकमैन जेल, जहाँ वे क़ैदियों से भेंट करने जाया करती थीं, की लिफ़्ट से पहली मंजिल पर उतर रही थीं कि तब ही उनकी मुलाकात मि० टट से हो गई।

मिस बीकमैन ने विनम्रतापूर्वक उनसे अभिवादन किया, "आशा है

आपका दिन सफल रहा होगा।" यद्यपि वे फौजदारी वकीलों को नापसंद करती थीं, लेकिन उन्हें उस ढीले-ढाले वृद्ध वकील के झुर्रीदार चेहरे की सरलता और सौम्यता पसंद आती थीं।

"आज तो मैं बदक़िस्मत ही साबित हुआ हूँ," उन्होंने उत्तर दिया, "मेरा मुवक्किल बहुत ज़िद्दी स्वभाव का है—कुछ बताता ही नहीं। आप मेरी सहायता करें, शायद आप को वह कुछ बता दे।"

"हाँ, यह बात सच है कि ये क़ैदी मुझे सब कुछ बता देते हैं," उन्होंने सरलता से कहा, "मैं समझती हूँ—इसका कारण है—उन्हें पक्का विश्वास है कि मैं कभी भी उनके लिए हानिकारक सिद्ध नहीं हो पाऊँगी। क्या नाम है उसका ?"

"शेन ओ' कोनल।"

"उसका क्या अपराध है ?"

"उस पर हत्या करने का अपराध लगाया गया है।"

"अच्छा !"

मिस एल्थिया झिझकीं। उनकी कल्याणकारी भावनाएँ हत्यारों के निमित्त नहीं थीं, क्योंकि हत्यारों के नाम के साथ बहुत ज़्यादा बदनामी जुड़ी रहती थी और बदनामी से उन्हें सख़्त नफ़रत थी।

"मेरा आग्रह है कि आप उससे ज़रूर बात करें," मि० टट ने उत्सुकता के साथ कहा, "अपराधी के पक्ष के सम्बन्ध में कुछ भी नहीं जानते हुए, उसे बचाना बहुत ज़्यादा मुश्किल है—आप तो जानती ही हैं। क्या आप मेरी सहायता नहीं करेंगी ?"

मिस एल्थिया कुछ देर चुप रहीं और फिर उन्होंने परेशानी के साथ जवाब दिया, "अच्छा मैं देखूंगी, मैं इस मामले में क्या कर सकती हूँ। शायद उसे दवाई या चिट्ठी वग़ैरा की ज़रूरत हो। अच्छा मैं जेल के वार्डेन से आज्ञा लेकर अभी उससे मिलने जाती हूँ।"

बीस मिनट बाद, खिन्न-मुख वाला शेन ओ' कोनल मंत्रणा-कक्ष में मिस बीकमैन से मिलने आया। ढलते हुए सूर्य की किरणें मोटी-मोटी सलाखों से ढँकी हुई खिड़की में से होकर क़ैदी के चेहरे पर पड़ रही थीं और वह चेहरा उस वातावरण में अक्सर नज़र आने वाले चेहरों से एकदम अलग था,

क्योंकि उसके हाव-भाव को देखकर कोई भी यह ग्रंदाज़ा नहीं लगा सकता था कि वह बुरी ग्रादतों वाला ग्रथवा बदचलन था ग्रौर कारावास भी ग्रभी तक उसके चेहरे की लाल रंगत ग्रौर ग्राँखों की चमक को नष्ट-भ्रष्ट नहीं कर पाया था।

वह हत्यारा एक सुन्दर नवयुवक था ग्रौर उसकी चाल-ढाल ग्रौर हाव-भाव में 'काउंटी केरी' के युवकों के सामान ही रौब ग्रौर ग्रकड़ थी।

"मुझे यहाँ बुलाने की क्या ज़रूरत पड़ गई थी, मिस बीकमैन ?" उसने सवाल किया।

एक हत्यारे के मुख से ग्रपना नाम सुनकर, मिस बीकमैन सिर्फ़ चकित ही नहीं हुई, बल्कि उन्हें सदमा भी पहुँचा। उसे उनका नाम कैसे मालूम हुग्रा ? शायद रक्षक ने उसे बता दिया हो—उन्होंने सोचा। सामान्यतः उनके हाव-भाव में झलकने वाला धैर्य, ग्रात्म-विश्वास ग्रौर सबसे ग्रलग बने रहने की इच्छा के साथ-साथ विनम्रतापूर्ण मधुर व्यवहार ग्रादि—उनके सारे गुण उनका साथ छोड़ चले थे—

"मैंने सोचा," उन्होंने रुक-रुककर कहा, "शायद···मैं···तुम्हारी कुछ सहायता कर सकूँ।"

"ग्राप जितना मेरा ग्रब तक बिगाड़ चुकी हैं—उसी नुकसान को पूरा करना ग्रब नामुमकिन है ग्रौर क्या करेंगी ग्राप मेरे लिए ?" उसकी दर्दभरी काली ग्राँखों ने उनके दिल पर ग्रसर कर दिया था।

"मैं," उन्होंने कंपित स्वर में कहा, "मैंने क्या बिगाड़ा है तुम्हारा ?"

"क्या मेरी बहन ग्रापके यहाँ काम नहीं करती थी ?" उसने पूछा, "ग्रापने उसका बहुत ग्रच्छी तरह ख्याल रखा था न ! कभी यह भी देखा था, वह कब घर से जाती थी, कब ग्राती थी ? उसका ही यह फर्ज़ था कि ग्रापकी सेवा करे, लेकिन ग्राप उसके बारे में क्यों सोचतीं ? उसकी उम्र ही क्या थी ! कभी ग्रापने सोचा था—सिर्फ सोलह साल ! ग्रौर ग्राप···"

ग्रन्ततः वे हत्या के मामले में, न चाहने पर भी, फँस गई थीं !—यह सोचकर वे ग्रातंकित हो उठीं। यह लड़का केटी का भाई है। उस केटी का जिसे उनके घर से निकाल दिया गया था। कितनी विचित्र बात थी ! लेकिन उसका ग्राक्षेप ग्रसंगत था—फिर भी उनका चेहरा, न जाने क्यों,

लाल हो उठा और उन्होंने अपना मुँह फिरा लिया था।

"कितनी अजीब बात है !" उन्होंने हिम्मत करते हुए कहा, "नहीं··· नहीं···उसके प्रति मेरा कोई कर्त्तव्य नहीं था ! मैं उसकी क्या सहायता कर सकती थी ?"

उसकी तीखी आँखें बड़े गौर से उनकी कँपकँपाहट को देख रही थीं।

"क्या आपने उस रात जब वह मकगुर्क के साथ नृत्य में गई थी, उसे घर में नहीं घुसने दिया था न ?"

"नहीं, यह झूठ है।"

लेकिन एकाएकी वे हतोत्साह हो उठीं। एक अस्पष्ट-सी स्मृति उभरी और उन्हें बेहोश-सी कर गई। उस रात गृह-प्रबन्धक ने उन्हें बताया था कि एक लड़की अपनी मर्ज़ी से एक नृत्य में जाना चाहती थी और उस पर उन्होंने यह आज्ञा दी थी कि घर के दरवाज़े हर रोज़ की तरह ठीक दस बजे बन्द कर दिए जाएँ। यदि उस लड़की ने बीकमैन गृह-प्रबन्ध के नियमों का उल्लंघन किया था और उसे बाहर सोना पड़ा था···तब उसकी ग़लती के लिए उन्हें कैसे ज़िम्मेदार ठहराया जा सकता था ?—बुरे कामों का बुरा नतीजा तो होता ही है !

उसके बाद, संयोगवश शेन ओ' कोनल ने ऐसी बात कही थी, जिसके अप्रत्यक्ष प्रभाव ने उसका जीवन बचा दिया था और आश्चर्यजनक बात तो यह थी कि शेन ओ' कोनल का यह कथन, डोकिंस द्वारा मिस एल्थिया से पिछली बार कही गई बात से मिलता-जुलता था।

"केटी आपके घर में रहती थी—आपको भी तो उसके बारे में कुछ सोचना चाहिए था।" उसने कटुतापूर्वक अपनी बात पर ज़ोर देते हुए कहा।

डोकिंस ने कहा था, "इन लड़कियों को कम से कम मालिक के मान-सम्मान का ध्यान तो रखना ही चाहिए···मेरे विचार में तो वे घर की मेह-मान होती हैं और उन्हें मेहमानों की तरह ही व्यवहार करना चाहिए।"

यह भी कोई बात थी ? कोई समानता अथवा सदृशता कैसे हो सकती थी ? आखिर मेहमान मेहमान ही होते हैं और घर की नौकरानियाँ मेहमान कैसे बन सकती हैं ! चाहे वे मेहमानों की तरह ही व्यवहार क्यों न करती रहें। मिस बीकमैन इस बात को अच्छी तरह समझती थीं, लेकिन फिर भी

कोई बात ज़रूर थी जो उन्हें परेशान कर रही थी—उन नौकर-चाकरों के प्रति, जो उनके साथ एक ही मकान में रहते थे, क्या दरअसल उनका कोई कर्त्तव्य नहीं था ?

''आप तब उसके साथ हमदर्दी दिखलातीं तो अच्छा रहता। अब मेरी मदद करने से क्या होगा ?''

अभिमानिनी मिस एल्थिया, जो प्रसिद्ध पूर्वजों की सन्तान थीं, का चेहरा कड़वी बात को सुनकर लाल हो उठा। उन्हें अपनी सत्यता और मानवीय स्वतन्त्रता के सम्बन्ध में सोच-समझकर बनाए गए निजी आदर्शों पर अत्यधिक विश्वास था, लेकिन उन्हें ऐसा महसूस हुआ जैसे उस कठोर हृदय वाले युवक अपराधी के कटु आरोपों के कारण वे शर्मिंदा हुए बग़ैर नहीं रह सकती थीं।

''तुम ठीक कहते हो,'' उन्होंने स्वीकार किया और एकाएकी उनकी आँखों में आँसू आ गए, ''मुझसे अनजाने में ग़लती हो गई। मुझे खेद है, लेकिन मैं चाहती हूँ, मैं तुम्हारी सहायता करूँ और केटी की भी। अगर बहुत ज्यादा देर नहीं हुई हो तो मुझे अपनी मनोव्यथा सुनाओ।''

शेन ओ' कोनल को पश्चाताप हुआ। आखिर एक भद्र महिला के प्रति इस तरह कटु व्यवहार करना उचित नहीं था। और वह एक स्त्री—विशेष रूप से एक सुन्दर स्त्री—का रोना कभी भी सहन नहीं कर पाया था।

''मुझे क्षमा करें, मैडम !'' उसने अपना सिर झुकाते क्षमायाचना की।

''तुम्हें वह सब कहने का अधिकार था,'' उन्होंने उसे आश्वासन देते हुए कहा, ''कृपा करके मुझे सारी बातें बताओ। मैं जिला अटार्नी और कई दूसरे व्यक्तियों को जानती हूँ। इस बात में कोई शंका नहीं है कि मैं तुम्हारी सहायता कर सकूँगी। तुम मुझ पर विश्वास करो और सारी बातें मुझे बता दो।''

शेन ओ' कोनल ने उनकी विश्वास छलकाती हुई भूरे रंग की सरल आँखों में झाँकते हुए सोचा कि वह उन पर विश्वास कर सकता था और फिर उसने आहिस्ता-आहिस्ता, रुक-रुककर, कठिनतापूर्वक सारी घटना सुना दी कि क्यों और किस प्रकार उसने 'रेड्' मकगुर्क की हत्या की थी।

जब मिस एल्थिया ने शेन ओ' कोनल के कंधे पर हाथ रखकर विदा ली और 'रात्रि मंगलमय हो' कहा, उस समय सूर्य डूब चुका था। यद्यपि उन्होंने उसे अपराध करने के लिए डाँटा-फटकारा भी था, लेकिन वे यह अनुभव करती रहीं कि किसी न किसी तरह वे भी उसके अपराध के लिए ज़िम्मेदार थीं और उन्हें यह बात भी समझ आ गई थी कि शेन ओ' कोनल परिवार की मान-मर्यादा के अनुसार, शेन ने वही कुछ किया था, जिसे वह उचित समझता था और ऐसा मौक़ा फिर सामने आने पर, वह फिर आगे भी वैसा करने में नहीं चूकेगा।

वे लौटकर मि० टट के पास आ गईं जो वार्डेन के दफ़्तर के पास एक बेंच पर बैठे थे।

"क्या हुआ ?" उन्होंने पूछा।

"आपके लिए कोई अच्छी खबर नहीं है," मिस एल्थिया ने उत्तर दिया, "उसने मेरे सामने अपराध स्वीकार कर लिया है। उसने मुझे सब कुछ बता दिया है कि क्यों उसने गोली मारी थी और कहाँ से पिस्तौल खरीदा था। फिर भी, वह एक अच्छा लड़का है, लेकिन आप ऐसे लोगों की क्या सहायता कर सकते हैं जो अपराध करने पर भी अपने-आपको ठीक समझते रहते हैं। यह एक करुणाजनक मामला है।"

जब वे उपर्युक्त बातें कह रही थीं तो ज़िला अटार्नी के दफ़्तर का एक गुप्तचर, ऐडी कनरोए, खम्बे के साथ खड़ा हुआ सब कुछ सुन रहा था और वे उसके सिगार जलाने और उसके मुस्कराते हुए वहाँ से चले जाने तक किसी भी बात को नहीं देख पाई थीं।

o o o

एक घंटे बाद, ओ' ब्रियन, जिसे ज़िला अटार्नी के दफ़्तर का पीला कुत्ता भी कहा जाता था, ने ज़िला अटार्नी को खुशी के साथ बताया, "बात बन गई, जनाब ! ऐडी कनरोए बड़ी अच्छी खबर लाया है—उसने मिस बीकमैन को बूढ़े टट से 'टूम्ज़' जेल में, यह कहते हुए सुना है कि ओ' कोनल ने उसके सामने अपराध स्वीकार कर लिया है। एक अच्छी गवाही मिल गई है।"

"इससे क्या फायदा होगा ?" पेखम ने भौं चढ़ाते हुए, अपनी मेज़ पर

बैठे-बैठे ही पूछा, "मिस बीकमैन हमारी गवाह नहीं बनेंगी—यह तुम भी अच्छी तरह जानते हो।"

"अगर हम गवाही देने के लिए उन्हें बुलाएँगे, क्या तब भी नहीं आएँगी?" सहायक ने पूछा।

ज़िला अटार्नी मेज़ को उंगलियों से बजाता रहा।

"आ तो जाएँगी," उसने स्वीकार किया, "लेकिन एक महिला को बिना चेतावनी दिए ही कठघरे में गवाही देने के लिए बुलाना—क्या अनुचित नहीं होगा?"

"लेकिन यही तरीका तो है," ओ' ब्रियन ने मुँह बिचकाते हुए तत्काल उत्तर दिया, "अगर उन्हें पहले यह मालूम हो गया कि हम उन्हें कठघरे में बुलाने वाले हैं, तो शहर छोड़कर ही चली जाएँगी।"

"यह बात ठीक है," मुख्य अधिकारी ने स्वीकार किया, "क्योंकि क़ानून का इतना उल्लंघन तो वे कर ही सकती हैं···लेकिन मुझे इस तरह की बातें पसन्द नहीं हैं, और फिर तुम भी अच्छी तरह जानते हो कि बीकमैन परिवार का अच्छा-खासा रसूख भी है। अगर नाराज़ हो गईं तो हम लोगों के लिए मुसीबत खड़ी हो जाएगी; लेने के देने पड़ जाएँगे। इसीलिए अच्छा तो यह होगा कि हमें इस अपराधी के ऊपर मिस बीकमैन को नाराज़ नहीं करना चाहिए।"

ओ' ब्रियन की भँवें तन गईं।

"वह हत्यारा नहीं है, क्या? आप अच्छी तरह जानते हैं, अगर उन्हें गवाही के लिए नहीं बुलाया गया तो वह साफ़ बच जाएगा। हमें अपनी ड्यूटी को पूरा करना चाहिए। मैं तो यही उचित समझता हूँ।"

"तुम्हारी बातें हमेशा ही चक्कर वाली होती हैं। मैं यह नहीं कहता कि हम ऐसा नहीं करेंगे, लेकिन इस बात में ख़तरा ज़रूर है।" पेखम ने संदेह-पूर्वक कहा।

आपके लिए तो दूसरी तरह भी ख़तरा है। पतझर के मौसम में होने वाले चुनाव में आपकी उम्मीदवारी खटाई में पड़ जाएगी," सहायक ने तत्काल उत्तर दिया, "आप चिन्ता न करें—मैं मिस बीकमैन को ज़रा भी शक नहीं होने दूँगा। मुकदमे के बिलकुल आखिर में उन्हें कठघरे में बुलाऊँगा और फिर आप देखिएगा—जीत हमारी होगी। उन्हें तो यह भी

मालूम नहीं हो पाएगा कि किस पक्ष ने उन्हें बुलाया था। शायद मैं जज बेब्सन को इस बात के लिए तैयार कर लूँगा कि वे मिस बीकमैन को किसी ग्रौर बात के सिलसिले में कठघरे में बुला लेंगे ग्रौर मौक़ा पाते ही वे साहब ग्रपराधी द्वारा जुर्म मान लेने की बात कह देंगे ग्रौर मैं उस बात को लेकर पूछ-ताछ शुरू कर दूँगा। इस तरह हमारे ऊपर कोई ग्राँच नहीं ग्राएगी। ग्राप चिन्ता नहीं करें, मैं सब सँभाल लूँगा।"

"सब इंतज़ाम कर लेना, नहीं तो तुम जानते ही हो। समाचार-पत्रों वाले हमारा हुलिया बिगाड़ देंगे ग्रौर ग्रगर कहीं मिस एल्थिया बीकमैन को क्रोध ग्रा गया तो समझ लो, तुम्हारी जान सही-सलामत नहीं रह सकेगी।"

"ग्रौर मकगुर्क ग्रापको खा जाएगा, सोच लीजिए।" ग्रो' ब्रियन ने ज़िला ग्रटार्नी की दुखती रग पर ढिठाई के साथ उंगली रखते हुए कहा।

शेन ग्रो' कोनल का मुकदमा धीमी गति से चलते-चलते निष्प्राण हो जाता, लेकिन ग्रनजाने ज़िला ग्रटार्नी के हाथ में एक प्रमाण ग्रा गया था ग्रौर वह एक सनसनीदार मुकदमा बन गया ग्रौर ग्रपराधी को सज़ा दिलवाने के लिए सारे ग्रावश्यक तत्त्व उपलब्ध हो गए—ग्रपराध के तत्त्व थे: प्रतिवादी द्वारा दी गई धमकी, उद्देश्य, मौक़ा ग्रौर ग्रपराध की स्वीकृति। क़ानून के ग्रनुसार, ग्रपराधी का बयान, 'उसे सज़ा दिलवाने के लिए काफी नहीं होता है, उसके साथ-साथ, उसे ग्रपराधी सिद्ध करने के लिए ग्रौर प्रमाणों की ग्रावश्यकता भी होती है,' ग्रौर उस मुकदमे में ग्रन्य प्रमाणों की कोई कमी नहीं थी। लेकिन ग्रगर ग्रपराधी द्वारा ग्रपने ग्रपराध की स्वीकृति वाली बात सामने नहीं ग्राती तो इस बात की पुष्टि कदापि नहीं हो पाती कि प्रतिवादी ने वह ग्रपराध किया था।

इस प्रकार मिस बीकमैन को यह मालूम नहीं हो पाया था कि वे उस मुकदमे में मुख्य गवाह बन गई थीं ग्रौर दरग्रसल सारा मुकदमा उन पर ही निर्भर करता था, वे ही मुकदमे की जान थीं।

मुकदमे का दिन ग्राया ग्रौर मकगुर्क परिवार के सगे-सम्बन्धी, मित्र ग्रौर चेले-चाँटे, हर तरीके से तैयार होकर ग्रदालत में उपस्थित थे। ऐसा लगता था जैसे सारे 'चेरी हिल' इलाक़े के लोग-बाग उत्सव देखने के लिए सुप्रीम कोर्ट के पहले भाग में एकत्र हो गए थे। सारे वातावरण को देखकर

ऐसा प्रतीत होता था, जैसे सारी भीड़ घुड़-दौड़ अथवा मुक्केबाज़ी के मैदान में तमाशा देखने के लिए आई हुई थी। उनके लिए दरअसल वह सारा मुकदमा तमाशा ही था, क्योंकि वे सब 'पर्ल बट्टन किड्स' नामक संस्था के हीरो के हत्यारे से क़ानूनी प्रतिशोध लेना चाहते थे और उनके लिए वह दिन प्रतिशोध-उत्सव का दिन था।

पेखम ने स्वयं मकगुर्क को आश्वासन दिया था कि हर तरह से अभि-योजक पक्ष तैयार था।

"समझ लो कि अपराधी के दिन पूरे हुए···।" उसने हँसते हुए कहा था।

और मकगुर्क, जो रोब और उमंग से फटा जा रहा था, ने शान के साथ अपनी जेब से सिगार निकाले थे और दोनों ने आनन्दपूर्वक धुआँ उड़ाना शुरू कर दिया था।

पाठकगण, आप मुकदमे की कार्रवाई की बारीकियों में उलझना पसन्द नहीं करेंगे, इसलिए इतना बता देना ही काफ़ी होगा कि मुकदमे के लिए ऐसी जूरी का चयन किया गया था जिनके बारे में उनके पहले कृतित्व को देखकर, यह राय दी जा सकती थी कि वे फाँसी और सहानुभूति—दोनों के प्रति तटस्थ थे। उसके बाद गवाहों ने अपने-अपने बयान दिए और पर्ल बट्टन किड्स' संस्था के सदस्यों का रवैया सारी कार्रवाई के दौरान ऐसा चल रहा था कि वे छिप-छिपकर बैंचों के नीचे थूकते रहे और सारी बातें बड़े ध्यान से सुनने का बहाना करते रहे। मि० टट के लिए कुछ करने को ही नहीं था और उन्होंने किसी बात का प्रतिवाद नहीं किया। शनैः शनैः मुकदमे की कार्रवाई बढ़ती गई। शेन ओ' कोनल चुपचाप बैठा रहा और सारी कार्रवाई में उसकी कोई दिलचस्पी नज़र नहीं आती थी। गवाहियों में ओ' कोनल परिवार की प्रतिष्ठा पर आक्षेप करने की गुंजाइश नहीं थी। उसने अपने परिवार की मान-मर्यादा की रक्षा करने के लिए वह क़दम उठाया था और उसे कोई अफसोस नहीं था। वह हर तरीके से अपने अप-राध के लिए दण्ड भुगतने के लिए तैयार था, यदि क़ानून उसे अपराधी सिद्ध करने में सफल हो जाए। लेकिन वह ऐसा मान चुका था कि उसका जुर्म साबित हो जाएगा और मि० टट की भी यही धारणा थी।

लेकिन जब मुकदमे के तीसरे दिन तक भी उसके अपराध की पुष्टि के लिए कोई विशेष प्रमाण अभियोजक की ओर से प्रस्तुत नहीं किए जा सके, तो टट ने मि० टट की ओर झुकते हुए, धीमे से कहा, "मुझे तो ऐसा लग रहा है जैसे मुकदमा बिल्कुल बेजान है!"

मि० टट ने अस्पष्ट संकेत द्वारा उस मत को स्वीकार कर लिया।

"कुछ लगता तो ऐसा ही है," उन्होंने आहिस्ता से कहा, "शायद वे लोग आखिर में सारे प्रमाण प्रस्तुत कर अंतिम आक्रमण द्वारा हमें चकित करना चाहेंगे।"

उस समय कठघरे से पुलिस का एक गवाह उतरा था और ओ'ब्रियन ने आगे बढ़कर जज से कुछ काना-फूसी की थी और जज ने दीवार-घड़ी की ओर देखकर, गर्दन हिलाई थी। उस समय चार बजने में बीस मिनट बाकी थे और जूरी के सदस्य बेचैन हो रहे थे, क्योंकि सारा मुकदमा निर्जीव प्रतीत होने लगा था और नीरस कार्रवाई ने सब को परेशान कर दिया था।

मिस बीकमैन, जो अदालत के कमरे के आखिर में बैठी थीं, ने अचानक ही ओ'ब्रियन द्वारा पुकारा गया अपना नाम सुना और वे हैरान रह गईं और उनके सारे शरीर में सनसनी दौड़ गई। किसी भी क़ानूनी कार्रवाई में वे आज तक शामिल नहीं हुई थीं और इतनी भीड़ के सामने, कठघरे में जाना और बयान देना होगा, यह सब सोचकर वे घबरा उठीं। लेकिन ऐसा भी तो हो सकता था कि इस प्रकार ओ'कोनल का कुछ लाभ हो जाए—

"एल्थिया बीकमैन," कप्तान फेलन ने गर्जना की, "गवाही देने के लिए आ जाए।"

एल्थिया बीकमैन! संभ्रांत महिला को ऐसा लगा जैसे उन्हें वस्त्रहीन किया जा रहा था। एल्थिया! क्या क़ानून में इतनी शिष्टता की गुंजाइश नहीं थी कि उनके नाम के पहले 'मिस' शब्द जोड़ दिया जाता? उन्हें बुलाया जा रहा था, इसीलिए उन्हें जाना ही होगा—यह सोचकर वे हिचकिचाती हुई, दर्शकों के बेंचों के पास से, समाचार-पत्रों के प्रतिनिधियों की मेज़ के पीछे से और जूरी-कक्ष का चक्कर लगाकर कठघरे में पहुँच गईं।

जज महोदय, जो वृद्ध थे और शक्ल से भले आदमी मालूम देते थे, ने

उनका अभिवादन करने के लिए गंभीरतापूर्वक गर्दन झुकाई और बैठ जाने के लिए कहा। उसके बाद स्वयं ही, इस बात पर ज़ोर देते हुए कि वे 'पूर्ण सत्य' बोलेंगी, शपथ दिलवाई और आकाश की ओर दृष्टि उठाकर, प्रभावशाली ढंग से घोषणा की, "सत्य बोलने में भगवान् आपकी सहायता करे!"

"मैं ऐसा करूँगी।" मिस बीकमैन ने भी औपचारिकता के साथ 'पूर्ण सत्य' बोलने की कसम उठाई और उस समय दृढ़-निश्चयात्मकता की भावना उनके हृदय में विद्यमान थी।

उनके पीछे, अदालत के कमरे की दीवार के पर्दों में से, न्याय-देवी की भव्य-मूर्ति, आँखें बन्द किये और हाथों में इन्साफ की तराज़ू को ऊँचा उठाए हुए, दिखाई दे रही थी। उस मूर्ति के साए में और उनके समीप ही, रेशमी कपड़े पहने हुए, वह जज बैठा था जिसने बड़ी होशियारी के साथ, क़ानून के नाम पर, अपनी तथा अपने राजनीतिक सहयोगियों की स्वार्थ-सिद्धि करने का निश्चय किया हुआ था। उनके सामने गोल सिर वाला ओ'ब्रियन खड़ा था, जो बड़ी ही कृतघ्नता के साथ मुस्करा रहा था। काफी दूर, एक मेज़ पर कोहनियाँ टिकाकर, मि० टट अपने मुवक्किल, शेन ओ'कोनल की ओर झुके हुए थे। वे उन दोनों की ओर देखकर हल्के-से मुस्कराईं।

"मिस बीकमैन," ओ'ब्रियन ने अपनी ओर से अत्यधिक शिष्टतापूर्वक कहा, "आप इस काउंटी और शहर के पाँचवें मार्ग में रहती हैं न?"

"हाँ, मैं वहीं रहती हूँ।" उन्होंने दृढ़तापूर्वक उत्तर दिया।

"क्या आपका परिवार हमेशा से न्यूयार्क में रहता आया है?"

"सन् 1630 से।" उन्होंने तिरस्कारपूर्वक परन्तु अधिक आत्मविश्वास के साथ उत्तर दिया।

"क्या आप बहुत सारे जन-हितैषी, धार्मिक और नागरिक क्षेत्रों की प्रसिद्ध समाज-सेविका हैं?"

"प्रसिद्ध नहीं हूँ, दिलचस्पी रखती हूँ!" उन्होंने ओ'ब्रियन के कथन में संशोधन करते हुए कहा।

"क्या आप अक्सर 'टूम्ज़' जेल में क़ैदियों से मिलने के लिए जाती रहती हैं?"

वे झिझकीं, आखिर वह क्या चाहता था ?

"क्या आप प्रतिवादी शेन ओ' कोनल को जानती हैं ?"

"हाँ, जानती हूँ।"

"क्या आप पिछले महीने की तेईस तारीख को उससे मिलने जेल में गई थीं ?"

"हाँ, गई थी। अगर वही दिन आप बता रहे हैं तो !"

"आप किस दिन का ज़िक्र कर रही हैं ?"

"जिस दिन मैंने उससे कुछ बातें की थीं।"

"अच्छा, आपने कुछ बातचीत भी की थी ?"

"हाँ।"

"आपने उससे कहाँ बातचीत की थी ?"

"जेल के मंत्रणा-कक्ष में।"

ओ' ब्रियन ज़रा रुका। उसकी नीच आत्मा ने भी अगला क़दम उठाने का विरोध किया।

"उसने आपसे क्या कहा था ?" उसने आँखें चुराते हुए प्रश्न किया।

ओ' ब्रियन की नीच प्रकृति की झलक उसके चेहरे पर भी उभर आई थी और जिसे देखकर मिस बीकमैन को ऐसा अनुभव हुआ था, जैसे उनके साथ धोखा किया जा रहा था। इससे पहले कि वे उत्तर देतीं, मि० टट ने खड़े होकर ज़ोर से कहा—

"ज़रा रुकिए, क्या मैं एक बुनियादी सवाल कर सकता हूँ ?"

कोर्ट ने उनकी बात मान ली।

"क्या आप और प्रतिवादी के बीच जो कुछ बातचीत हुई—वह गोपनीय नहीं है ?"

"मुझे एतराज़ है," ओ' ब्रियन ने तत्काल कहा, "क़ानून के अनुसार, अपराधी से गोपनीय बातचीत करने का विशेष अधिकार केवल पादरी, डाक्टर अथवा वकील को ही प्राप्त है और यह गवाह इन तीनों में से कोई नहीं है। इसलिए यह सवाल अनावश्यक और महत्त्वहीन है।"

"क़ानून तो यही है," जज ने घोषणा की, "लेकिन वर्तमान परिस्थितियों में, मैं गवाह को इस प्रश्न का उत्तर देने की अनुमति देता हूँ।"

मिस बीकमैन ने कुछ देर रुकने के बाद कहना शुरू किया, "दरअसल वह बातचीत गोपनीय ही है, मिस्टर टट। अगर ओ' कोनल को यह मालूम होता कि जो कुछ वह मुझे बता रहा था, मैं उसे दूसरे लोगों के सामने बताऊँगी तो वह मुझसे बात तक नहीं करता। इसके अलावा, मैंने उसे यह आश्वासन भी दिया था कि मैं उसकी सहायता करूँगी। निस्सन्देह हमारी वह बातचीत गोपनीय थी।"

"मुझे खेद है," ओ' ब्रियन ने दुष्टतापूर्वक कहा, "लेकिन मैं उन बातों को ज़रूर जानना चाहता हूँ।"

"यह कोई प्रश्न नहीं है," मिस्टर टट ने शान्ति के साथ कहा।

"पिछले महीने की तेईस तारीख को, 'टूम्ज़' जेल में, प्रतिवादी ने आपको क्या बताया था ?" ओ' ब्रियन ने सतर्कतापूर्वक अपने प्रश्न में संशोधन किया।

"मुझे एतराज़ है," मिस्टर टट ने सीधे खड़े होकर, गरजते हुए कहा। उनकी ऊँचाई न्याय-देवी की मूर्ति के समान प्रतीत हो रही थी, "क़ानून कभी भी यह सहन नहीं कर पाएगा कि अदालत में कोई किसी के साथ विश्वासघात करे और अगर इस प्रश्न का उत्तर दिया गया तो मिस बीकमैन भी क़ैदी के साथ विश्वासघात करेंगी।

जज वेब्सन ने विनम्रतापूर्वक मिस बीकमैन की ओर देखते हुए कहा, "मुझे बहुत अधिक खेद है कि मैं आपसे यह आग्रह कर रहा हूँ कि अपराधी ने जो कुछ आपको बताया, वह सब-कुछ आप अदालत के सामने रखें। यह तो आप जानती ही हैं कि आपने स्वयं ही उस दिन की बातें बताने के लिए इच्छा प्रकट की थी, नहीं तो,—" जज ने उठती हुई खाँसी को रोकने के लिए मुँह पर हाथ रख लिया था—"हमें इस बात के बारे में कैसे मालूम होता। एक प्रतिवादी जो बातें किसी को भी बता सकता है, तो उन बातों को सुनने से अदालत क्यों वंचित रहे ? क़ानून के अनुसार गोपनीयता की बात यहाँ उपयुक्त नहीं है। यह संभव है कि आपको इस प्रश्न का उत्तर देना अप्रिय लगे, लेकिन आपको उत्तर तो देना ही होगा।"

"लेकिन," मिस बीकमैन ने विरोध प्रकट किया, "विश्वासघात करने के लिए आप कैसे आग्रह कर सकते हैं ! मैंने ओ' कोनल को आश्वासन दिया

था कि मैं उसकी मदद करूँगी ग्रौर उसने मुझ पर विश्वाम कर लिया था।"

"लेकिन ग्रापका क़ानून के प्रति भी कुछ कर्त्तव्य है !" जज ने झिड़कते हुए कहा।"

मिस एल्थिया को क्रोध ग्राना तब ही से शुरू हो गया था, जब उन्हें ग्रो'ब्रियन की बुज़दिली ग्रौर धोखेबाज़ी का पता चला था ग्रौर ग्रब तो उनका ग्राक्रोश बढ़ता ही जा रहा था क्योंकि उन्हें यह भी ग्रच्छी तरह मालूम हो गया था कि जज महोदय के मुख में राम-नाम था लेकिन बगल में छुरी थी। उन्होंने ग्रपना सफेद चेहरा मिस्टर टट की ग्रोर घुमाया।

"क्या क़ानून के ग्रनुसार मुझे उत्तर देना होगा, मि० टट ?" उन्होंने प्रश्न किया।

"प्रश्न मत पूछो, उत्तर देना ज़रूरी है।" जज ने ग्रशिष्टता के साथ ग्राज्ञा दी ग्रौर मिस बीकमैन के व्यवहार में परिवर्तन देखकर ग्रागे कहा, "तुम सरकार की गवाह हो, प्रतिवादी की नहीं, समझ ग्राया..."

"मैं इतना ज़रूर जानती हूँ कि मैं ग्रो' कोनल के विरुद्ध गवाही नहीं दे सकती," उन्होंने घोषणा की, "इस ग्रादमी को" ग्रो' ब्रियन की ग्रोर घृणापूर्वक संकेत करते हुए ग्रागे कहा, "न जाने यह बात कैसे मालूम हो गई है। जहाँ तक मैं समझती हूँ, क़ानून इतनी निकृष्ट बात करने के लिए मुझसे कभी नहीं कहेगा।"

चारों ग्रोर खामोशी छा गई। न्याय के रथ के पहिए स्वार्थ-सिद्धि की दलदल में फँस गए थे।

"प्रश्न का उत्तर दो।" श्रीमान् जज ने कटुता के साथ कहा।

मिस बीकमैन के प्रतिष्ठित ग्रौर सम्मानित पूर्वज क़ब्रों में मचल उठे। बीकमैन राजदूत, महान सम्पादक, स्वतन्त्रता-घोषणापत्र के हस्ताक्षरकर्त्ता—उन सबकी ग्रात्माएँ जाग उठीं ग्रौर ग्रपनी-ग्रपनी क़ब्रों से निकलकर उस ग्रदालत में ग्रा गईं ग्रौर मिस एल्थिया बीकमैन की रगों में दौड़ने वाला रक्त, जो ग्रो' कोनल के समान साधारण नहीं था, बल्कि कुलीनता का प्रतीक था, मचल उठा ग्रौर क्रोध से उनका चेहरा लाल हो गया।

"मैं विश्वासघात नहीं कर सकूँगी," वे क्रोधपूर्वक चिल्ला उठीं।

"मेरा ग्रादेश है, उत्तर दिया जाए।" जज ने ग्राज्ञा दी।

"अदालत द्वारा गवाह को धमकी देने पर मुझे एतराज़ है," मि० टट ने बीच में कहा, "मैं चाहता हूँ कि रिकार्ड में इस बात का उल्लेख अवश्य होना चाहिए कि गवाह के प्रति अदालत का व्यवहार पक्षपातपूर्ण और हानिकारक है।"

"अपनी जगह पर बैठ जाइए, जनाब !" बेन्सन, जिसका चेहरा क्रोध से तमतमाया हुआ था, ने कर्कश स्वर में कहा, "आप अदालत का अनादर कर रहे हैं।"

जूरी के सदस्य एकाग्रचित होकर सारी कार्यवाही को सुनने लगे थे। वे सब न जाने कितनी बार कितने ही अपराधियों को फाँसी दिलवा चुके थे, लेकिन इस बार न जाने क्यों उन्हें उस महिला की निडरता और वृद्ध वकील का झगड़े में उलझना पसंद आ रहा था। पिछली दीवार पर टँगी हुई स्वतः परिचालित दीवार-घड़ी की टिक-टिक जो कितने ही व्यक्तियों को बिजली की मृत्यु-कुर्सी में बैठने के लिए विवश कर चुकी थी, अपने पीले चेहरे में से नेत्रहीन न्याय-देवी की ओर व्यंग्यपूर्ण दृष्टि से देख रही थी।

"मैडम ! आप जल्दी से उत्तर दीजिए। क्योंकि आप अपने-आपको देशभक्त मानती हैं, इसीलिए आपको इस देश के क़ानून और नियमों की इज़्ज़त करनी चाहिए और अपनी निजी धारणाओं के आधार पर क़ानून का, देश का अपमान नहीं करना चाहिए। मेरा आदेश है कि आप प्रश्न का उत्तर दें, नहीं तो मुझे मजबूर होकर आपके विरुद्ध क़ानूनी कार्यवाही करनी पड़ेगी।"

चारों तरफ गहरी खामोशी छाई हुई थी। मिस बीकमैन के शिष्टाचार-भवन की ईंटें, घड़ी की प्रत्येक टिक-टिक के साथ ढह रही थीं और वह पल दूर नहीं था, जब उस भवन का नाम-निशान तक बाकी नहीं बचेगा। उन्होंने बार-बार देश के क़ानून के सामने नतमस्तक होने का प्रयत्न किया, लेकिन उनकी आत्मा, इस बात का विरोध कर रही थी—उन्हें ऐसा अनुभव हो रहा था, जैसे न्याय और देश के नाम पर उनके साथ अन्याय किया जा रहा था।

वे होंठ भींचे हुए, कुर्सी पर चुपचाप बैठी थीं। पत्रकार अपने-अपने समाचार-पत्रों को सनसनीदार खबर भेजने के लिए, मज़े से उस मुकदमे

की रिपोर्ट तैयार कर रहे थे। मिस एल्थिया बीकमैन ने, जो देश के एक प्रतिष्ठित परिवार की सदस्या थीं और जिस परिवार को उन परिवारों में से एक माना जाता था जिन्होंने सबसे पहले अमरीकी भूमि पर पाँव रखे थे, कुलीन शिष्टाचार को तिलांजलि देकर, जज बेब्सन का, अदालत का अपमान किया था, इसीलिए उन्होंने अपने-अपने सम्पादकों से आग्रह किया था कि जल्दी से फोटोग्राफर भेज दिए जाएँ ताकि समाचार-पत्रों में मिस बीकमैन का फोटो पहले पृष्ठ पर छप सके। ओ' ब्रियन बेचैनी के साथ बेब्सन की ओर देख रहा था। उसके ख्वाब-ख़्याल में भी नहीं था कि मिस बीकमैन जैसी शिष्ट महिला क़ानून की इस प्रकार अवज्ञा करेंगी! जज ने चाल बदलते हुए कहा—

"आप शायद जिस स्थिति में अब हैं, उसकी ऊँच-नीच से अनभिज्ञ हैं।" जज ने व्याख्या करते हुए कहा, "आपका क़ानून के प्रति भी कर्त्तव्य है, जिसका आप किसी भी हालत में तिरस्कार नहीं कर सकती हैं। इसके विपरीत इस प्रतिवादी के प्रति आपकी कोई ज़िम्मेदारी नहीं है—आप चाहें भी, तो भी उसकी सहायता नहीं कर पाएँगी, क्योंकि यह मामला अब क़ानून के हाथों में आ चुका है। इसलिए आपके लिए यह ज़रूरी हो जाता है कि आप क़ानून की इज़्ज़त करते हुए, दुविधा को त्याग कर, इस प्रश्न का उत्तर दें।"

मिस एल्थिया की सरल बुद्धि विचलित हो उठी, लेकिन स्वतन्त्रता-घोषणापत्र के हस्ताक्षरकर्त्ता की आत्मा ने उनकी हिम्मत बढ़ाई।

"मुझे खेद है," उन्होंने कहा, "लेकिन मैं इस प्रश्न का उत्तर नहीं दूँगी क्योंकि मुझे भी अपने आत्म-सम्मान की रक्षा करनी है।"

"अगर यह बात है," बेब्सन ने ब्रह्मास्त्र का प्रयोग किया, "तो मुझे आपके विरुद्ध अदालत की मानहानि करने के अपराध में मजबूर होकर कार्रवाई करनी पड़ेगी।"

पत्रकारों की मेज़ पर सनसनी फैल गई। आखिर उन्हें एक मज़ेदार कहानी मिल गई थी।

"ठीक है," मिस बीकमैन ने स्वाभिमानपूर्वक उत्तर दिया, "आप अपने कर्त्तव्य को निभाते हुए, मेरे विरुद्ध जो भी कुछ करना चाहें—करें, जरूर

करें।"

जज को गहरी चोट लगी थी। लेकिन मिस एल्थिया को जेल में बन्द कर देना भी तो ठीक नहीं था। लेकिन पहले कहे गए शब्दों को पूरा करना भी तो ज़रूरी था। नहीं तो, हमेशा के लिए कलंक लग जाएगा।

"मैं कल सुबह साढ़े दस बजे तक, गवाह को सोच-विचार कर क़दम उठाने का मौका देता हूँ।" जज ने ओ'ब्रियन के साथ सलाह-मशविरा करने के बाद ऐलान किया, "अदालत आज के लिए समाप्त होती है।"

मिस बीकमैन सारी रात नहीं सो पाई। काफी देर तक वे अपने मकान की लाइब्रेरी में, अपने वृद्ध वकील, जो उनके पिता के चचेरे भाई थे और उन्हें बहुत पसन्द करते थे, से परामर्श करती रही थीं। उन वृद्ध महोदय ने बड़े रहस्यपूर्ण ढंग से, समाचार-पत्रों के सम्पादकों को टेलीफोन द्वारा इस बात के लिए राज़ी कर लिया था कि वे प्रातःकालीन संस्करणों में 'अदालत की मानहानि' हो जाने वाली बात का उल्लेख नहीं करेंगे। और उन्होंने विदा लेते वक्त मिस एल्थिया से कहा था—

"अगर यह जज हिम्मत वाला है तो तुम्हें जेल भिजवा सकता है। यह बात दूसरी है कि वह ऐसा करता है या नहीं और यह भी इस बात पर निर्भर करता है कि मकगुर्क को नाराज़ करना पसन्द करेगा या जनता को। लेकिन मुझे तुम्हारा व्यवहार बहुत पसन्द आया। तुम भी हो अजीब—आखिर सोचो, मान-मर्यादा साथ लेकर भी कहीं अदालतों में जाया जाता है! वहाँ अपनी बात पर अड़े रहने से तो अपने लिये ही मुसीबत पैदा करना होता है। झूठी गवाही देने से कम-से-कम अपने ऊपर तो आँच नहीं आती है।"

"झूठी गवाही बेईमान ही तो दे सकता है।" उन्होंने कहा।

"हाँ, मैं यह बात भूल गया था," वृद्ध वकील ने उत्तर दिया, "लेकिन होता यही है, चाहे हम इसे पसन्द करें या नहीं। क़ानून की माँग के सामने गोपनीयता अथवा निजी मान-मर्यादा की बातें नहीं चलतीं! बल्कि किसी व्यक्ति को धोखा देकर, उससे अपराध की स्वीकृति प्राप्त कर लेना तक क़ानून की दृष्टि में अनुचित नहीं है।"

"आपकी इन बातों के बावजूद भी, मैं अदालत के सामने झुक नहीं

पाऊँगी।"

"बहुत खूब," वकील ने उत्तर दिया, "ग्राखिर बीकमैन हो न! जान जाए, पर ग्रान न जाए! लेकिन एक बात मैं जरूर कहूँगा कि टट ने तो तुम्हें बिल्कुल ग्रकेला छोड़ रखा है, मैं तो ग्रब तक उसे बहुत चालाक वकील समझता रहा हूँ, लेकिन ऐसा लगता है, ग्रब मुझे उसके बारे में ग्रपनी राय बदलनी होगी। कोई ग्रौर वकील होता तो तुम्हारे दरवाज़े पर धरना देकर बैठा रहता ग्रौर विनती करता रहता कि तुम ग्रपना नेक इरादा न छोड़ो जिससे उसका मुवक्किल बच जाए लेकिन उसने ऐसा कुछ नहीं किया. बल्कि सारे मुकदमे में उसका व्यवहार शिष्टतापूर्ण ही रहा है।"

"शायद उन्हें एक न्यायप्रिय महिला को पहचानना ग्राता है।" उन्होंने तत्काल उत्तर दिया।

"न्यायप्रियता" वे दरवाज़ा बन्द करते हुए बड़बड़ाए, "इस नाम पर न जाने कितने ग्रन्याय प्रति दिन होते रहते हैं।"

लेकिन सीढ़ी उतरते हुए, उन्होंने स्नेहपूर्वक एक बार फिर लाइब्रेरी की ग्रोर मुड़कर देखा ग्रौर ग्रपने-ग्रापसे कहा, "ग्राखिर—एल्थिया है साहसी! ग्रपनी ग्रान-बान पर मर मिटने वाली!"

o o o

उसी वक्त एक ग्रौर जगह भी विचार-विमर्श हो रहा था। 'पस्साम-क्योडी' क्लब के कॉफ़ी-हाउस में जज बेब्सन ग्रौर सहायक ज़िला ग्रटार्नी दोनों चिन्तामग्न थे।

"वह हार मान लेगी," ग्रो'ब्रियन ने गिलास खाली करते हुए घोषणा की, "एक संभ्रान्त महिला कभी भी जेल जाना पसन्द नहीं करेगी। ग्रौर ग्रगर तुम ढीले पड़े तो लोग तुम पर यह तोहमत लगाएँगे कि तुमने दबाव में ग्राकर घुटने टेक दिए। तुम सच्चाई पर हो, तब किस बात का डर। यह तो समझो, तुम्हारे हाथों में सुनहरी मौक़ा है। सिद्ध कर दो कि तुम ग्रपना फर्ज निभाने में किसी से नहीं डरते।"

बेब्सन बेचैनी से सिगार के कश पर कश लगा रहा था।

"शायद तुम ठीक कह रहे हो," उसने कहा, "लेकिन मुझे एक बात का डर है—ग्रगर ग्रपील करने पर वह बच गई तो मुझे लेने के देने पड़

जाएँगे।"

"ग्रपील सुनने वाले जज ऐसा ग़लत कदम क्यों उठाएँगे ? क्या वे क़ानून की इज़्ज़त बचाना पसंद नहीं करेंगे ?"

"उन जजों से मेरा वास्ता पड़ता रहता है। मैं जानता हूँ, कई बार वे बड़े ग्रजीब फैसले सुना देते हैं," विद्वान जज ने कहा, "ग्रौर फिर तुम जानते ही हो, 'बीकमैन' बहुत ज़्यादा प्रभावशाली परिवार है।"

"लेकिन मकगुर्क भी कुछ कम प्रभावशाली नहीं है।" ग्रो' ब्रियन ने चेतावनी देते हुए कहा।

o o o

ग्रगली सुबह जूरी के सदस्यों के जूरी-कक्ष में ग्रौर मिस बीकमैन के गवाह की कुर्सी पर बैठ जाने के बाद, जज वेब्सन ने विनम्रतापूर्वक कहा, "मिस बीकमैन, हमें ग्राशा है कि ग्राज ग्राप गवाही देना पसंद करेंगी ग्रौर ग्रापने भी उस प्रश्न का उत्तर देने का निर्णय किया होगा।"

मिस एल्थिया दृढ़तापूर्वक ग्रपने होंठ भींचे बैठी रहीं।

"ग्राप ग्रपने निर्णय के सम्बन्ध में ग्रदालत को सूचित करें, इससे पहले, ग्राप इस विषय में कुछ क़ानूनी बातें सुन लीजिए," श्रीमान् जज ने शान्तिपूर्वक कहा, "मूलतः ग्राप जैसे कुछ व्यक्तियों की यह धारणा बनी रहती है कि उनकी मर्यादा के सामने उनका कर्त्तव्य ग्रौर क़ानून का निर्णय कोई महत्त्व नहीं रखते। जो कुछ वे सोचते हैं, वही उचित है। लेकिन वे सब पुरानी बातें थीं—सोलहवीं ग्रौर सत्रहवीं शताब्दियों की। ग्राधुनिक काल में इस धारणा का कोई महत्त्व नहीं है। ग्रच्छा ग्राप सन् 1707 में हुए 'हिल' के मुकदमे में एक गवाह द्वारा वे बातें बताने से इन्कार कर देने पर, जो उसे ग्रपराधी ने बताई थीं, बैरन होथम ने जो मत प्रकट किया था, वह सुन लीजिए—

" 'प्रतिवादी उस गवाह को ग्रपना पक्का मित्र समझता था, इसीलिए तो उसने—प्रतिवादी ने—सारी बातें उसे बताई थीं। इसीलिए ऐसी जानकारी को छिपाने का ग्रधिकार उस गवाह को कदापि नहीं दिया जा सकता। नहीं तो प्रतिदिन कितने ही भीषण ग्रपराधी सज़ा पाने से बचते रहेंगे। इसीलिए क़ानून व्यक्ति की मर्यादा को कोई महत्त्व नहीं देता।' "

मिस बीकमैन शिष्टतापूर्वक जज की बातें सुनती रहीं।

"मुझे खेद है," उन्होंने शान के साथ कहा, "मैं अपना निर्णय नहीं बदल सकूँगी। मैं उस प्रश्न का उत्तर देने से इन्कार करती हूँ और आप मेरे विरुद्ध जो भी कार्रवाई करना पसन्द करते हैं, वही करें।"

"आपको मालूम है, इस तरह आप पर अदालत की मानहानि करने का दोष लग जाएगा। अब बताइए, क्या आप अब भी अदालत के प्रति अपना विरोध प्रकट करना चाहती हैं?"

"हाँ, मैं इस अदालत का विरोध करती हूँ।"

चारों ओर हँसी गूँजने लगी और पिछली बैंच पर बैठे हुए किसी मूर्ख ने ताली बजाना शुरू कर दिया।

जज बेब्सन के चेहरे पर कठोरता उभर आई और उनकी आँखों में क्रोध की लपटें उठने लगीं।

"गवाह ने अदालत की मानहानि की है," जज ने कटुतापूर्वक घोषणा की, "इस अपराध के लिए मेरा यह निर्णय है कि गवाह को तीस दिन की क़ैद और ढाई सौ डालर जुर्माने की सज़ा दी जाती है। मैडम, पुलिस अधिकारी के साथ जाने के लिए तैयार हो जाओ।"

मिस एल्थिया उठीं और उसी समय स्वतन्त्रता के घोषणापत्र के हस्ताक्षर-कर्त्ता की आत्मा उनकी रक्षा करने के लिए वहाँ अवतरित हो चुकी थीं।

मि० टट तब तक उठ खड़े हुए थे, क्योंकि उन्हें यह ज्ञात था कि स्वतन्त्रता-घोषणापत्र के हस्ताक्षर-कर्त्ता की आत्मा अदालत में विद्यमान थी।

"क्या मैं अदालत से यह प्रार्थना कर सकता हूँ कि गवाह, जिसे अदालत की मानहानि करने के अपराध में सज़ा दी गई है, को अदालत की कार्यवाही समाप्त होने तक अदालत में रहने की आज्ञा प्रदान की जाए ताकि वे अपने कुछ निजी मामलों की व्यवस्था कर सकें?"

"मैं उन्हें इतनी सुविधा देता हूँ," जज बेब्सन ने बात मानते हुए कहा, "प्रार्थना उचित ही है। कप्तान फेलन, आप उन्हें मेरे कक्ष में ले जाइए।"

अपना छोटा-सा सुन्दर चेहरा शान के साथ ऊपर की ओर उठाकर,

कंधों को पीछे की ओर तानकर, आत्म-विश्वासपूर्वक पाँव रखती हुई, मिस एन्थिया जूरी-कक्ष के पीछे चली गई।

जूरी के बारह सदस्य दुविधा में थे। बेब्सन और ओ' ब्रियन भी चिन्ता-ग्रस्त थे।

"अपना और गवाह बुलवाइए," अन्ततः जज ने कहा।

"लेकिन मेरी ओर से कोई और गवाह नहीं है।" ओ' ब्रियन बड़बड़ाया, "और मूर्ख—तुम यह अच्छी तरह जानते हो!" उसने चुपके से कहा।

"अगर सरकार का इतना ही मुकदमा है, तो मैं तत्काल प्रतिवादी की रिहाई की माँग करता हूँ," मि० टट ने उछलकर, चिल्लाते हुए कहा, "उसके अपराध के सम्बन्ध में कोई प्रमाण उपलब्ध नहीं है।"

मकगुर्क क्रोध के साथ आगे बढ़ा।

"जज, एक मिनट रुको, सुनो—मैं सौ गवाह पेश कर सकता हूँ।"

"बैठ जाओ।" एक पुलिस अधिकारी ने उसे पीछे धकेलते हुए, चिल्लाकर कहा, "चुप रहो!"

बेब्सन ने उत्सुकतापूर्वक ओ' ब्रियन की ओर देखा और फिर उस द्वारा विवशता के साथ कंधे झटक देने पर, जूरी की ओर निगाह उठाते हुए, उसने क्षमा-याचना से भरे हुए स्वर में कहा—

"जूरी के सदस्यगण, जब अभियोजक प्रतिवादी के अपराध के सम्बन्ध में आवश्यक प्रमाण प्रस्तुत करने में असफल हो जाता है तो अदालत के लिए यह ज़रूरी होता है कि निर्णय के सम्बन्ध में अपना मत प्रकट करे। इस मुक़दमे में कुछ गवाहियाँ अपराधी के विपक्ष में ज़रूर प्राप्त हुई हैं, लेकिन कोई स्पष्ट प्रमाण नहीं होने के कारण—मुझे अत्यधिक खेद के साथ ऐसा कहना पड़ रहा है—मैं अपराधी को निर्दोष घोषित करने का आदेश देने के लिए बाध्य हूँ।"

फैसला सुनाए जाने के बाद, चारों ओर खलबली-सी मच गई थी। तब ही भीड़ के बीच में से बड़ी मुश्किल से निकलता हुआ एक संदेशवाहक मि० टट के समीप आया और उन्हें एक मुड़ा हुआ काग़ज़ सौंप दिया। मि० टट ने तत्काल वह काग़ज़ अदालत के क्लर्क को दे दिया। अदालत के कर्मचारी ने काग़ज़ पढ़ा और वह हैरान रह गया। फिर उसने वह काग़ज़ जज

को दे दिया।

"क्या है ?" बेब्सन ने प्रश्न किया, "मुझे छोटी-छोटी बातों के लिए परेशान मत करो।"

"श्रीमान् यह तो जज विन्थ्रोप के हस्ताक्षर-सहित समादेश-पत्र है, जिसके अनुसार वार्डेन को, सुप्रीम कोर्ट के पहले भाग में मिस बीकमैन को तत्काल उपस्थित करने की आज्ञा दी गई है," मि० मकगुरी ने भयभीत वाणी में फुसफुसाते हुए कहा, "इसकी अवहेलना करना असम्भव है।"

"क्या," बेब्सन चिल्लाया, 'इतनी जल्दी समादेश-पत्र भी आ गया—यह असम्भव है।"

"श्रीमान् !" मि० टट ने शिष्टतापूर्वक कहा, "क्योंकि मैं मिस बीकमैन के पिता से परिचित रहा हूँ, इसलिए मैं जानता था कि मिस बीकमैन किस तरह व्यवहार करेंगी और वैसा ही उन्होंने किया भी है—यही सब सोचकर मैंने आज सुबह ही आवश्यक काग़ज तैयार कर लिये थे और जैसे ही आपने निर्णय सुनाया, वैसे ही मेरे सहयोगी, टट, ने जो जज विन्थ्रोप के कक्ष में प्रतीक्षा कर रहा था, उनके समक्ष प्रस्तुत कर दिए और जज से हस्ताक्षर कराने के बाद टैक्सी में यहाँ तक पहुँचा दिए।"

उसके बाद ओ' कोनल में किसी की रुचि नहीं बची थी। पत्रकारों ने अपनी-अपनी जगह छोड़ दी थी और वे जज के उच्च आसन के पास एकत्र हो गए थे। कमरे के पिछले भाग में 'पर्ल बट्टन किड्स' संस्था के सदस्य शोर मचा रहे थे और ओ' ब्रियन और पेखम को बुरा-भला कह रहे थे और ओ' ब्रियन उन्हें तसल्ली देने की हरचन्द कोशिश कर रहा था, लेकिन वे उसकी कोई बात सुनना ही नहीं चाहते थे। पुरानी और पीले चेहरे वाली दीवार-घड़ी ने इस प्रकार का कोलाहल पहली बार सुना था। अदालत के अधिकारियों ने शान्ति बनाए रखने के सारे प्रयत्न छोड़ दिए थे और वे स्वयं भी उत्सुक जन-समुदाय के साथ मिलकर मि० टट के चारों ओर एकत्र हो गए थे।

"क्या श्रीमान्, यह पसन्द करेंगे कि यह मामला सुप्रीम कोर्ट के सामने पेश हो," मि० टट ने नर्मी से पूछा, "अगर ऐसा है तो मैं क़ैदी को अभिवचन के आधार पर रिहा कराना चाहूँगा। जज विन्थ्रोप हमारी प्रतीक्षा

कर रहे हैं।"

बेब्सन पीला पड़ चुका था। एक दर्जन पत्रकारों की घूरती हुई आँखों के सामने वह हिम्मत हार चुका था—अगर इस तमाशे को और अधिक बढ़ाया तो ये समाचार-पत्रों के प्रतिनिधि उसे कालिख लगाकर ही मानेंगे। इसीलिए यह उचित होगा कि वह झुक जाए। उसने क्षमा-याचना करने के उद्देश्य से चेहरे पर मुस्कराहट लाने का प्रयत्न किया, लेकिन मुस्कराहट तो आई नहीं, बल्कि उसका चेहरा बिगड़कर बेहूदा दिखाई देने लगा। फिर उसने जूरी के सदस्यों, वकीलों और पत्रकारों को सम्बोधित करते हुए कहा—

"महानुभाव, मेरा मिस बीकमैन के प्रति कठोर व्यवहार करने का कोई इरादा नहीं था—आप विश्वास कीजिए। इस बात में कोई सन्देह नहीं है कि उन्होंने पूरी ईमानदारी और सच्चाई के साथ व्यवहार किया हैं। आप तो जानते ही हैं कि वे हमारी सोसायटी की एक प्रतिष्ठित महिला है। मि० टट, मेरा विचार है कि अब जज विन्थ्रोप के सामने उपस्थित होने की कोई आवश्यकता नहीं। मिस एल्थिया बीकमैन को रिहा किया जाता है।"

डायन

"मुझे एक ऐसा वकील चाहिए जो एक दस्तावेज़ तैयार कर सके। खर्च चाहे कितना ही हो जाए, मुझे चिंता नहीं है। क्या आपसे इस सिलसिले में मैं बात कर सकती हूँ?"

उस डरावनी शक्ल-सूरत वाली औरत ने मेज़ के ऊपर से मि० एफ्रेम टट की ओर अर्थपूर्ण दृष्टि से देखा।

"ज़रूर कीजिए," वकील ने बहुत शिष्टता के साथ उत्तर दिया, "काम की ही तलाश तो रहती है मुझे और जहाँ तक मैं जानता हूँ—मैं ही क्या प्रत्येक वकील काम की तलाश में लगा रहता है।"

"अच्छा सुनिए," वह कुछ झिझकी और उसने उनके उस झुर्रीदार वृद्ध चेहरे जिसने पिछले पचास वर्षों में अच्छे से अच्छे वकीलों, जजों और पोकर[1] के खिलाड़ियों को चुनौती दी थी, के रहस्य को समझने का प्रयत्न करते हुए आगे कहा, "आपने केबिल, मेरे पति, का वसीयतनामा तैयार किया था और उसमें आपका नाम निष्पादक के रूप में मौजूद है। उसने ही मुझे यह सब बताया है। वह अब इस वसीयतनामे में कुछ परिवर्तन कराना चाहता है, परन्तु सबसे बड़ी दिक़्क़त की बात यह है कि वह वृद्ध और कमज़ोर होने के साथ ही साथ बदमिजाज और शक्की भी हो गया है। किसी पर विश्वास नहीं करता। लेकिन मुझे उम्मीद है कि वह आपकी बात ज़रूर सुनेगा और फिर आप ही तो उसके वसीयतनामे के निष्पादक भी हैं। आपके द्वारा इस काम का होना ठीक रहेगा।"

"हाँ, क्यों नहीं," मि० टट ने संकट में पड़ने की बात को स्वीकार करते हुए नर्मी से कहा, "मैं तो आपको पहले ही बता चुका हूँ।"

"इसीलिए तो मैं आपके पास आई हूँ और फिर आपकी तारीफ भी तो बहुत सुनी है कि मेरी और आपकी अच्छी निभेगी।"

"ज़रूर निभेगी," वकील ने मुस्कराते हुए कहा, "मैं तो हमेशा ही सब

1. पोकर—ताश का एक खेल जो अमरीका में प्रचलित है।

को खुश रखने की कोशिश में लगा रहता हूँ।"

"आप यक़ीन रखिए, आपकी फीस मिलने में ज़रा-सी भी देर नहीं होगी और शायद कुछ ज़्यादा ही मिले।" उसने अर्थपूर्ण दृष्टि से उनकी ओर देखते हुए अपनी बात समाप्त कर दी।

मि० टट ने उसके चेहरे से उसके आशय का पता लगाने का प्रयत्न किया।

"क्या मि० बाल्डविन की बजाय आप मेरी मुवक्किल होंगी ?" उन्होंने साफ तौर से पूछा।

मिसेज़ अल्फ्रेडा बाल्डविन अपने-आप ही मुस्कराई—चालाक वृद्ध चक्कर में डालने का प्रयत्न कर रहा था, लेकिन वह इतनी आसानी से चक्कर में आने वाली नहीं थी। और फिर वह वकील की फीस अपनी जेब से देना नहीं चाहती थी।

"नहीं, बिल्कुल नहीं !" उसने तुरन्त उत्तर दिया, "मेरा पति स्वयं ही कुछ तबदीली कराना चाहता है···उसी का वसीयतनामा है और वही आपका मुवक्किल है, मैं नहीं हूँ। इतना आश्वासन मैं ज़रूर दे सकती हूँ कि आप फीस की चिन्ता बिल्कुल नहीं करें। वैसे हम दोनों में से कोई भी मुवक्किल हो, इस बात से कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता।"

मि० टट ने अपनी मेज़ पर रखे हुए एक लम्बे डिब्बे में से छाँटकर एक सिगार निकाला, जो देखने में ऐसा लगता था जैसे चूहे की लम्बी-पतली दुम हो।

"क्या मैं सिगार पी सकता हूँ ?" उन्होंने औपचारिक ढंग से पूछा, "आपकी बात के सिलसिले में मैं तो यही कहूँगा कि इस बात से बहुत फ़र्क़ पड़ता है कि मुवक्किल कौन है।"

"क्या मतलब है आपका ?" उसने पूछा, "आप सिगार ज़रूर पीजिए। मैं धुएँ से परेशान नहीं हो पाती हूँ।"

मि० टट ने उस पतले-लम्बे सिगार जिसे उन्होंने उसके अन्य भाई-बन्धुओं के बीच में से निकाला था, को सावधानीपूर्वक सुलगाया।

"वकील को अपनी फीस का तो पूरा-पूरा ख्याल रखना ही होता है, यह बात दूसरी है कि कई बार वह भी उसे नहीं मिलती है।" उन्होंने हरे-

भूरे रंग के धुएँ का विषाक्त बादल उड़ाते हुए आगे कहा, "वकील का यह तो फर्ज़ होता ही है कि वह अपने मुवक्किल के लिए ईमानदारी के साथ काम करे और इसके साथ-साथ मुवक्किल का भी यह फ़र्ज़ हो जाता है कि वह भी वकील को उसकी सेवाओं के लिए मुआवज़ा दे। लेकिन कई बार ऐसा हो जाता है कि उसके और अन्य व्यक्ति के हितों में संघर्ष आरम्भ हो जाता है, तो···"

"मैं इन सब बातों को समझती हूँ," उसने बीच में टोकते हुए कहा, "यहाँ कोई ऐसी बात नहीं है। मि० बाल्डविन ही आपके मुवक्किल हैं। मुझे तो आप उनकी ओर से संदेशवाहक समझिए अथवा प्रतिनिधि, क्योंकि वे ही आपकी फीस देंगे। लेकिन एक बात ज़रूर है—मेरे और उनके लाभ और इच्छाएँ एक समान हैं।"

मि० टट, जो सिगार के धुएँ में छिपे हुए से नज़र आ रहे थे, ने गर्दन हिलाते हुए कहा, "तब ठीक है।"

वह एकटक उनकी ओर देखती रही। उसने सोचा कि मि० टट ने कोई शर्त नहीं लगाई थी और "कुछ और भी मिलेगा!" इस बात की ओर किये गए इशारे को भी वे हज़म कर गए थे।

"मैं चाहती हूँ कि मि० बाल्डविन को सिर्फ उतना ही परेशान किया जाए, जबकि उनके बगैर काम ही नहीं चले," उसने आगे कहा, "हम दोनों ने इस बारे में पहले सोच रखा है और उनकी इच्छानुसार आप वसीयतनामे के लिए एक परिशिष्ट तैयार कर दीजिए और उसे लेकर हमारे घर तशरीफ ले आइए ताकि मि० बाल्डविन उस पर हस्ताक्षर कर सकें। क्यों, क्या यह सबसे ज्यादा सीधा और आसान तरीका नहीं है? सिर्फ एक परिशिष्ट तैयार करना है आपको?"

"आप बिल्कुल ठीक कह रही हैं," मि० टट ने स्वीकार किया, "इसमें कोई मुश्किल नहीं है, लेकिन क्या आप यह जानती हैं कि वे क्या-क्या तबदीलियाँ कराना चाहते हैं? क्योंकि यह बड़ी दिक़्क़त की बात है कि पहले से ही परिशिष्ट तैयार करके ले जाओ और बिना हस्ताक्षर हुए ही वापस ले आओ और फिर दोबारा बनाओ।"

"कम से कम हमारे साथ आपको यह परेशानी नहीं उठानी पड़ेगी।

क्योंकि जो कुछ मैं आपको बताऊँगी वही मि० बाल्डविन की इच्छा है। इस सिलसिले में मेरी और उनकी बातें हो चुकी हैं और जो कुछ वे चाहते हैं, वह सब इन काग़ज़ों पर लिखा हुआ है।"

उसने काले मनकों से बने हुए एक बैग से कुछ काग़ज़ निकाल लिये थे जिन पर छोटे-छोटे अक्षरों में कुछ लिखा हुआ था। मि० टट ने अपनी ओर एक पीले रंग का पैड खींचा और अनिच्छापूर्वक सिगार रखकर एक पेंसिल हाथ में ले ली। मिसेज़ बाल्डविन ने मोटे शीशे वाली एक ऐनक आँखों पर लगाई जिससे उसके बाज़ जैसे चेहरे में भयानकता की अभिवृद्धि हो गई और वह अपनी कुर्सी में पीछे की ओर झुक गई।

"सबसे पहले, वे अपने वसीयतनामे में यह लिखवाना चाहते हैं कि उनकी धन-दौलत में से दस-दस हज़ार डालर कला संग्रहालय, प्राकृतिक इतिहास संग्रहालय, बाल सहायता समिति, अनाथालय, सेंट ल्यूक हस्पताल और कोलम्बिया विश्वविद्यालय को दिए जाएँ।"

"कुल साठ हज़ार डालर हुए," मि० टट ने जल्दी से नाम दर्ज करते हुए कहा, "आगे फरमाइए !"

"फिर वे एंगलवुड, न्यू जर्सी में रहने वाले एल्विन एच० स्पीयरमैन को तीस हज़ार डालर देना चाहते हैं···"

"वह कौन है ?" वकील ने पूछा और चलती हुई पेंसिल ठिठक गई।

"उनके एक पुराने दोस्त हैं," उसने उत्तर दिया, "और तीस हज़ार डालर उनकी पत्नी, रोवेना होवेल स्पीयरमैन के नाम···"

"इनका जोड़ भी साठ हज़ार डालर हो गया।" मि० टट ने कहा।

"एल्विन स्पीयरमैन के पुत्र अल्फ्रेड स्पीयरमैन; ट्रेंटन के वासी ऐस्थर एस० बोमैन; स्क्रैन्टन की रहने वाली एन्ना एस० रौमन और न्यूयार्क नगर की जोसेफिन एम० ब्रिग्ज़—इन सब में प्रत्येक को बीस-बीस हज़ार डालर।"

"अब आपके पास दो सौ चालीस हज़ार डालर हो गए।"

मिसेज़ बाल्डविन ने संदिग्ध दृष्टि से उनकी ओर देखा और तत्काल कहा, "क्यों क्या बात है ?"

"मेरा मतलब है—व्यक्तिगत दाय के रूप में—" उन्होंने जल्दी से व्याख्या करते हुए कहा, "अब तक उन्होंने दो सौ चालीस हज़ार डालर बाँट

दिए हैं···"

मिसेज़ बाल्डविन ने ग्रपनी गोद में पड़े हुए कागज़ों में कुछ देखा।

"इसके बाद वे इन व्यक्तियों में से प्रत्येक को दस हज़ार डालर देना चाहते हैं—जर्सी नगर की ग्रलमीना बोस्टविक ; फलैटबुश, लोंग ग्राइलैंड की जार्जिना एच० हिब्बर्ड ; फ्लशिंग, लौंग ग्राईलैंड की इसाबेल एफ० होकिंस ; रिवरडेल, न्यूयार्क की मैरी पा० डॉली ; योंकर्स, न्यूयार्क की एडिथ सिटवेल ग्रौर रिंगवुड, न्यू जर्सी की एल्थिया डब्ल्यू० रोज़।"

"साठ हज़ार ग्रौर हो गए," मि० टट ने लिखते हुए कहा, "ग्रौर कुल जोड़ तीन सौ हज़ार डालर हो चुका है, ग्रब ग्रागे बताइए।"

'पच्चीस हज़ार नर्स हितकारी क्लब को।"

"यह कौन-सी क्लब है ?"

"एक धर्मार्थ संस्था है," उसने छोटा-सा जवाब देकर ग्रागे कहा, "इसके बाद डॉक्टरों की बारी है—लिखिए डॉक्टर सैमुग्रल वुडमैन ग्रौर डॉक्टर ऐस्पाईनल को पन्द्रह-पन्द्रह हज़ार···"

"लिख लिया, ग्रब ?" वकील ने उत्तर दिया।

"कुछ छोटी-छोटी धनराशि की वसीयतें इस प्रकार है—पाँच हज़ार डालर बिजेट मलग्राई, बावर्ची को ; पाँच हज़ार पैट्रिक मोएनाह्न, खानसामाँ को ; पाँच हज़ार पियर लारे, निजी नौकर ग्रौर पाँच हज़ार एग्नेस रूनी, नौकरानी को—वे नौकर-चाकरों पर खास मेहरबानी रखते हैं।"

"हाँ यह तो नज़र ग्रा रहा है," मि० टट ने कहा, "ग्रौर डाक्टरों पर भी कुछ कम मेहरबानी नहीं है।"

"यही बात है—डॉक्टर वुडमैन ग्रौर डॉक्टर ऐस्पाईनल को वे बहुत चाहते हैं" मिसेज़ बालडविन ने उन्हें विश्वास दिलाते हुए कहा, "उनकी इन डॉक्टरों से पुरानी दोस्ती है।"

"ग्रागे बताइए—"

"ग्रब मेरे लिए बचे—दो सौ पचास हज़ार ग्रौर इसके ग्रतिरिक्त उनकी बाकी सम्पत्ति भी मुझे दाय के रूप में मिलेगी," उन कागज़ों को लपेटते हुए मिसेज बालडविन ने ग्रागे कहा, "ग्राप ही वसीयननामे के निष्पादक बने रहेंगे—ग्रच्छा, ग्रब ग्राप यह बताइए—कब तक ग्राप वसीयतनामे के

परिशिष्ट को तैयार कर देंगे ?"

"कल दोपहर बाद तक," उन्होंने जवाब दिया, "इसे बनाना तो मामूली काम है।"

"तब आप इसे कल शाम को ले आएँ ताकि मि० बाल्डविन से इस पर हस्ताक्षर करा लिए जाएँ।" उसने आदेशपूर्ण स्वर में कहा, "लगभग नौ बजे तक आ जाएँगे न आप ?"

"अगर आपके पति के लिए यहाँ आने में असुविधा है तो जैसा आप चाहती हैं, वैसा ही होगा।" मि० टट ने सहमति प्रकट की।

"उनका यहाँ आना तो एकदम मुश्किल है," उसने दृढ़तापूर्वक कहा, "वे तो बीमार होकर बिस्तर में पड़े हुए हैं।"

मिसेज़ बाल्डविन उठ खड़ी हुई और उसने अपनी काली जाकिट, जो झट-से ऊपर की ओर खिसक जाती थी, को नीचे की ओर खींचा। मि० टट भी उठ खड़े हुए। उसके हाव-भाव में कुछ ऐसा तत्त्व था जिसके कारण मि० टट को उसके प्रति अनजाने ही घृणा हो गई थी। ऐसा क्यों हुआ था, वे व्याख्या नहीं कर पा रहे थे और वह घृणा बढ़ती ही जा रही थी। शायद उनकी ऊपर की ओर बेढंगे तरीके से उठी हुई नाक, कसे हुए होंठों, तंग चोली वाला विस्तृत वक्ष, ठोड़ी के नीचे लटकती हुई त्वचा जो झूलते हुए ढीले गालों से मिली हुई थी—यह सब देखकर उन्हें ऐसा लग रहा था, जैसे वह एक बूढ़े शरीर वाले कुत्ते के समान थी। एकदम खूंखार! जालसाज़!!—ऐसी औरत से तो भगवान् बचाए! कोई भी समझदार आदमी उसे पत्नी के रूप में कैसे स्वीकार कर सकेगा? शायद, जिस आदमी ने इससे विवाह किया है, उसके होश-हवास ही ठीक न हों!

o o o

"इन देवीजी को कहाँ से बुला लाए थे—आप ?" छोटे टट ने मिसेज़ बाल्डविन के चले जाने पर, दरवाज़े में से ही, अपने बड़े सहयोगी की ओर देखकर, चहचहाना शुरू कर दिया, "उसके पास आपको अकेला छोड़कर, मुझे तो बहुत चिन्ता हो रही थी।"

मि० टट के लम्बे-झुर्रीदार चेहरे पर अपने-आप ही विस्तृत मुस्कान खिल उठी।

"क्यों, एक भयानक औरत के दर्शन अच्छी तरह कर लिये हैं न !" वे सहसा बोल उठे।

"मगरमच्छ जैसी," छोटे टट ने अपनी बात पर ज़ोर देते हुए कहा, अब मुझे उस आदमी की बात पर यक़ीन आया है, जिसने कहा था कि औरत नस्ल मर्दों से कहीं ज़्यादा खतरनाक होती है ! हमारे किस मेहरबान दोस्त ने उसे हमारे पास भेजा था ?"

"किसी ने नहीं—वह अपने-आप ही आई थी।" बड़े सहयोगी ने उत्तर दिया, "क्यों क्या ख़्याल है ? मेरी शक्ल-सूरत उसे ज़रूर पसन्द आ गई होगी न !"

"उफ-ऽ-ऽ-ऽ-ऽ !" टट काँप उठा और भयातुरता का प्रदर्शन करते हुए, उसने हाथों से अपने चेहरे को ढाँप लिया और आगे कहा, "भगवान् करे, कम-से-कम मुझ पर तो उसकी मेहरबानी न हो !"

"तुम चिन्ता मत करो !" बड़े सहयोगी ने हँसते हुए कहा, "मिसेज़ जार्जी एलीसन ने तो तुम्हें स्त्री-जाति के आकर्षण से एकदम मुक्ति दिला रखी है।"

"आपको किसने बताया ?" टट ने नाराज़गी जाहिर करते हुए कहा।

"घबराओ मत ! इसमें इतना परेशान होने की क्या बात है !" वृद्ध वकील ने जल्दी से आगे कहा, "इश्क और मुश्क कहीं छिपाए छिपते हैं !"

"मैं जानता हूँ—ज़रूर मिस विगिन की कारस्तानी है," टट ने बड़-बड़ाते हुए कहा, "अच्छा हमारी क्या बात चल रही थी ? हाँ···यह तो बताइए, उस डायन का नाम क्या है ?"

"मिसेज़ केबिल बाल्डविन।"

"वह क्या उस बूढ़े व्यक्ति की पत्नी है, जिसने अपनी ट्रेंड नर्स से शादी कर ली थी ?"

मि० टट हैरान रह गए।

"क्या !" उन्होंने उत्सुकता के साथ पूछा, "तुम्हें कैसे मालूम हुआ ?"

"क्या आपने 'नर्स स्पीयरमैन' का किस्सा समाचार-पत्रों में नहीं पढ़ा था—इससे तो काफी सनसनी फैली थी। उस बूढ़े व्यक्ति को न्युमोनिया या कोई और बीमारी लगी हुई थी—तो उस हालत में भी, 'जसों'

नगर में पहुँचकर, बिना अपनी लड़की को बताए ही, उसने नर्स से मजिस्ट्रेट के सामने पेश होकर शादी कर ली थी। यह क़रीब-क़रीब तीन साल पहले की बात है। तब बूढ़े की उम्र बहत्तर वर्ष और नर्स की अड़तालीस···और अब बूढ़े की पचहत्तर और नर्स की पचास वर्ष उम्र होगी।"

"होगी क्या ? यूँ कहो है," मि० टट ने सहमति प्रकट की, "शायद ज़्यादा ही हो !"

"इस घटना से बहुत हलचल मची थी," टट ने आगे कहा, "लेकिन कोई कुछ नहीं कर सका था। विधान ने हरेक व्यक्ति को यह पक्का अधिकार दे रखा है कि कोई चाहे तो अपनी ट्रेंड नर्स से शादी कर ले और कोई भी उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकेगा। लेकिन उसकी शक्ल-सूरत तो बिलकुल ठगों जैसी है। ऐसा लगता है जैसे शादी करने से पहले उसने बूढ़े को क्लोरोफार्म सुँघाकर बेहोश कर दिया होगा और शादी रचा ली होगी ! इससे पहले भी वह दो शादियाँ कर चुकी है।"

"अच्छा यह बात है ! हाँ, तब तो यह वही नर्स थी।"

मि० टट ने आगे सवाल किया, "अच्छा, तुम अभी बता रहे थे कि उस बूढ़े व्यक्ति की एक सौतेली लड़की भी है ?"

"जहाँ तक मुझे याद है—शादी के वक्त बूढ़े की एक अच्छी बड़ी लड़की भी थी, जो किसी कालेज या दूसरी जगह गई हुई थी···मुझे सारी बातें याद नहीं हैं। लेकिन हमें इस नर्स से सावधान रहना चाहिए ! आख़िर वह करने क्या आई थी ?"

"अपने पति के वसीयतनामे के लिए एक परिशिष्ट लिखवाना चाहती है।"

"अच्छा तो यह बात है !" टट ने ज़ोर से कहा, "तो अब सारा माल हज़म कर जाने के इरादे हैं।"

"यूँ कहा जाए तो ठीक रहेगा—आधा माल खुद और बाकी धर्म-कर्म और जान-पहचान के लोगों में बाँट देने के इरादे हैं।"

"बहुत अच्छे !" छोटे टट ने होंठ सिकोड़ते हुए कहा, "जब सारा माल इसका है, तब दूसरों में बाँटने की मेहरबानी किस लिए ?"

मि० टट अपनी घूमने वाली कुर्सी में ऊपर-नीचे उचके, नये सिगार के

किनारे को छीलकर जलाया और दोनों पाँव जिनमें, टखनों तक ऊँचे जूते पहने हुए थे, मेज़ पर रखकर, कुर्सी के पीछे की ओर झुक गए और दोनों हाथ गर्दन के पीछे बाँध लिये—

"सिर्फ इसलिए बाँट रही है क्योंकि यह एक अच्छा और सुरक्षित ढंग है," उन्होंने कहा, "क्या तुम्हें ब्लोजेट का मामला याद नहीं है? जब ब्लोजेट महाशय की आयु इक्यानवे वर्ष थी और मृत्यु उन महाशय के चारों ओर परिक्रमा लगाया करती थी और पिछले पन्द्रह वर्षों से बुढ़ापे में हो जाने वाले मानसिक विकृति के रोग ने उनको परेशान कर रखा था··· ऐसे दिनों में एक स्त्री—जो युवती ज़रूर थी!—ने उन्हें चकमे में डालकर विवाह कर लिया और वसीयतनामा अपने नाम में लिखवा लिया। उन महाशय के साथ युवती को करना ही क्या होता था? संगीत-गोष्ठियों में ले जाना और बग्घी में बिठलाकर, पार्क के चारों ओर सैर करा लाना। जब वृद्ध महाशय की मृत्यु हुई तो पता चला कि अपनी दौलत का काफी ज़्यादा हिस्सा—बीस लाख उस युवती के लिए छोड़ गए थे और सिर्फ यही नहीं, बल्कि बड़ी चाल तो यह थी कि दस लाख डालर तीन विश्वविद्यालयों—हार्वर्ड, येल और प्रिंसटन—में बाँट दिए गए थे। इस तरकीब का यह परिणाम निकला कि जब अन्य उत्तराधिकारियों और सगे-सम्बन्धियों ने अधिप्रमाण के लिए दावा किया तो उनके विरुद्ध देश के तीन प्रसिद्ध विश्वविद्यालयों ने अपने वकीलों और न्यायसभा के नेताओं की सहानुभूति प्राप्त कर, उस युवती के पक्ष में खड़े होकर, मुकदमा जीत लिया था और उस सुन्दर नेत्रों वाली युवती को भी वसीयतनामे के अनुसार बीस लाख डालर मिले थे, जिस धनराशि से उसने जेनेवा झील के किनारे एक खूबसूरत बंगला खरीदा था और साथ एक विदेशी राजकुमार भी।"

"वाह, खूब रही।" टट ने गर्दन हिलाते हुए कहा, "अब वही खेल यह बूढ़ी खूसट खेलना चाहती है।"

"यह रहा उस खेल का विवरण, पहले इसे तो पढ़ो," मि० टट ने अपने जूते की नोंक से पीला पैड अपने सहयोगी की ओर बढ़ा दिया और आगे कहा, "इसने पहली तरकीब यह निकाली है कि सबसे पहले हमारी कुछ प्रतिष्ठित संस्थाओं जैसे, कला संग्रहालय और सेंट ल्यूक हस्पताल को

घूस देकर अपने साथ शामिल कर लिया जाए।"

"वाह, एकदम धार्मिक बेईमानी!" टट ने पीले पैड को आँखें फाड़-फाड़कर देखते हुए कहा, "मुझे तो ऐसा लग रहा है कि वही युवती—जेनेवा झील पर उस राजकुमार के साथ रहते-रहते उकता जाने के कारण—यहाँ चली आई है और एक बार फिर अपनी करामात दिखलाना चाहती है।"

"लेकिन ऐसा कैसे हो सकता है?" बड़े सहयोगी ने कहा, "इसका बीस लाख डालर लेकर ग़ायब होना मुश्किल ही नज़र आता है।"

"वाह, यह क्या?" टट ने मि० बाल्डविन की प्रस्तावित दान-दक्षिणा के विवरण की जाँच-पड़ताल करते हुए, ज़ोर से चिल्लाकर कहा, "लीजिए, एक मज़ाक और सुनिए—बीस हज़ार डालर नौकर-चाकरों और तीस हज़ार डालर डॉक्टरों के लिए! उसने सब गवाहों के मुँह बन्द करने की अच्छी तरकीब निकाली है। वह बूढ़ा चाहे एकदम पागल ही क्यों न हो, लेकिन इस बात को सिद्ध कौन करेगा—कौन गवाही देगा? कौन ऐसा मूर्ख डॉक्टर होगा जो मुफ़्त में पन्द्रह हज़ार डालर देने वाले व्यक्ति को स्वयं ही पागल क़रार देगा? हमें भी अलफ्रेडा के साथ साँठ-गाँठ कर लेनी चाहिए!"

"लेकिन अभी तुमने सारी बातें कहाँ पढ़ी हैं? आगे पढ़ो—" मि० टट ने कहा, "मैं शर्त लगाने को तैयार हूँ कि अगर हम इस मामले की छानबीन करें तो हमें मालूम होगा कि मिसेज़ बाल्डविन ने न केवल अपने लिए ही ढाई लाख डालर और बाकी सम्पत्ति का इन्तज़ाम किया है, बल्कि इतनी दूरदर्शिता से काम लिया है कि अगर कैसे ही अपना हिस्सा मिलने में दिक़्क़त पड़ जाए, तो ऐसी सूरत में भी उसके हाथ खाली न रहें, इसीलिए ढाई लाख डालर ऐसे लोगों में बाँट देने का तरीका निकाला है, जिनसे धन वापस लेने में उसे बाद में किसी मुश्किल का सामना नहीं करना पड़े, जैसे अपने माता-पिता में प्रत्येक के लिए तीस हज़ार डालर और छोटे भाई-बहनों में अस्सी हज़ार और इनके अलावा भी अपनी आधी दर्जन सहपाठिनें और नर्सों की एक संस्था जिसकी शायद वही सर्व-सर्वा है को भी खूब दिल खोलकर बाँटा गया है।"

"आपको अबकी बार खूब तेज़-तरार मुवक्किल से वास्ता पड़ा है।" टट ने उनकी बात की पुष्टि करते हुए अपना मत प्रकट किया।

मि० टट ने सिर हिलाया।

"उससे हमारा कोई वास्ता नहीं है···क्योंकि हमारा मुवक्किल तो कोई और ही है।"

"कौन है ?"

"उसका पति।"

"एक ही बात है," छोटेटट ने निश्चयपूर्वक कहा, "आप इस वसीयत-नामे के परिशिष्ट के चक्कर में आसानी से दस-पन्द्रह हज़ार डालर बना सकते हैं ! आप उस बखेड़े के बारे में भी सोचिए जो इस बूढ़े की मृत्यु के बाद उठेगा और इस चक्कर में ऊँट चाहे इस करवट बैठे, चाहे उस करवट, हमें कोई फ़र्क़ नहीं पड़ेगा। अगर वह बूढ़े से किसी तरह इस परिशिष्ट पर दस्तख़त करा लेती है तो हमें बूढ़े की मानसिक विकृति की बात का खंडन कर, सगे-सम्बन्धियों और उत्तराधिकारियों से इसे बचाना होगा, अगर वह बूढ़ा इस पर हस्ताक्षर नहीं करता है तो उसकी मानसिक विकृति की पुष्टि कर, पहले की गई उसकी सारी वसीयतों का विरोध करना होगा। हमारे लिए तो दोनों ही तरह फायदा है···पूरे तीस हज़ार डालर का। आप ही सोचिए। इस मामले में तो, अदालत में पहुँच जाने के बाद भी पूरे छः महीने लग जाएँगे।"

"क्या तुम अब इस तरह सोचने लगे हो ?" बड़े सहयोगी ने बड़बड़ाते हुए कहा, "लेकिन तीस हज़ार डालर ! सचमुच बहुत बड़ी रक़म है !"

वकीलों की नैतिकता—या यूँ कहिए अनैतिकता—आज ही नहीं, बल्कि उन दिनों से हँसी-मज़ाक का विषय रही है, जब एक व्यक्ति को पढ़ा-लिखा होने के कारण, अपराध से मुक्ति मिल जाया करती थी। 'पादरी होने का लाभ' जैसे कथन को जैसे उपहासजनक माना जाता था, उसी तरह क़ानून के साथ भी मज़ाक चलते रहे हैं—जैसे 'लायर' (वकील) और 'लायर' (झूठा आदमी), अंग्रेज़ी के समान उच्चारण वाले दोनों शब्दों के

आधार पर वकीलों का जो मज़ाक उड़ता रहा है, 'फालस्टाफ'[1] के दिनों से बहुत पहले से प्रचलित रहा है। न केवल क़ानून के सम्बन्ध में कहे गए बम्बल[2] के कथन, कि वह 'एक गधा, एक मूर्ख' है, को ही सत्य माना जाता रहा है, बल्कि इस बात में भी लोगों का खूब यक़ीन रहा है कि वकील लोग जन्मजात चालबाज़, चोर, ठग और धूर्त व्यक्ति होते हैं। एक ईमानदार वकील ? इस नाम का जानवर क्या दुनिया के किसी कोने में मिल पाएगा !

हमारी यह इच्छा नहीं है कि हम प्रस्तुत कहानी में न्यायालय के अपने बन्धुओं के चाल-चलन की बात को लेकर, उनकी तरफ़दारी करें, लेकिन यह बात ज़रूर है कि कई मामलों में वकील को भी साधारण व्यक्ति की तुलना में अधिक बुरा-भला क्यों कहा जाए ? आखिर साधारण व्यक्ति के कृतित्व के आधार पर ही तो वकील की सारी कार्रवाई निर्भर करती है, उस मौक़े का उचित अथवा अनुचित फायदा उठाकर, वह अपनी जीविका चलाता है। क्या दुनिया में चाबुक बनने इसलिए बन्द हो जाएँगे कि कुछ व्यक्ति उनसे अपनी पत्नियों को पीटते हैं ? अथवा हथौड़े-छैनियाँ इसलिए बनने बन्द हो जाएँगे, क्योंकि कुछ लोग उनके ज़रिए सेंधमारी करते हैं ? क्या मोची इसलिए जूते नहीं बनाएँगे कि कोई मनचला बदचलन व्यक्ति किसी शर्मीली शरीफ लड़की की ओर जूता उछाल देता है ! धत्त-धत्त··· इस दुनिया में कोई कोना, कोई ज़र्रा, कोई चीज़ ऐसी नहीं है, जहाँ शैतान की काली छाया नहीं मँडरा रही हो ! आप ही सोचिए···अगर किसी विषाक्त मछली को खा लेने से एक ही साथ दो व्यक्तियों की मृत्यु हो जाए तो क्या इस कारण से लोग मछलियाँ खाना छोड़ देंगे ?

पाठकगण ! हमारे इस तर्क-वितर्क को आप ज़रूर समझ गए होंगे। क्या दावतें होनी इसलिए बन्द हो जाएँगी कि परोसी हुई कचौड़ियों को

1. फालस्टाफ—शेक्सपियर के दो नाटकों 'मैरी वाइव्ज़ ऑफ विंडसर' और 'हेनरी IV' का एक प्रसिद्ध पात्र—'श्रीमान् जॉन फालस्टाफ'—जिसका भारी-भरकम शरीर था और जो खुशमिजाज और हँसमुख होने के साथ ही बहुत ज़्यादा धूर्त और दुराचारी था।

2. बम्बल—चार्ल्स डिकन्स (मृत्यु 1870 ईसवी) प्रसिद्ध अंग्रेज़ी उपन्यासकार कृत 'ऑलीवर टिवस्ट' का एक पात्र जो पादरी-प्रदेश का एक अधिकारी था।

फेंक-फेंककर किसी दिन मेहमानों का ग्रापस में लड़ने का मौक़ा ग्रा सकता है ? ग्रगर कोई इसी तरह वसीयतनामा, बांड, ग्रथवा कोई ग्रन्य दस्तावेज़ बुरी नीयत से लिखवाता है, तो क्या निष्कपट वकील ग्राइन्दा दस्तावेज़ लिखना ही बन्द कर देंगे ? कोई भी दस्तावेज़ लिखते हुए, उसे ग्रपने मुवक्किल के प्रति सन्देह हो सकता है जैसे बूढ़े हार्डस्क्रैबल की नीयत खराब है ग्रौर वह पर्किंस की विधवा को धोखा देना चाहता है ग्रथवा मि० जॉन्स के लिए, बन्दूक़ों की बिक्री के सम्बन्ध में, जो बिल तैयार किया गया है, उसे दरग्रसल मि० विल्ला के नाम में होना चाहिए था, लेकिन क़ानून, जिसके ग्राधार पर ही वकील जीवन-यापन करता है, के ग्रनुसार सन्देह का लाभ ग्रपराधी को मिलता है ग्रौर शुरू से ही उसे निर्दोष मानकर क़ानूनी कार्यवाही ग्रागे बढ़ती है, तो ऐसी स्थिति में वह वकील भी बूढ़े हार्डस्क्रैबल ग्रौर मि० जॉन्स ग्रथवा ग्रपने-ग्रापको भी निर्दोष क्यों नहीं मान ले ? ग्राखिर इन सबको सन्देह का लाभ क्यों नहीं मिलना चाहिए ?

ग्रगर एक वकील इसलिए वसीयतनामा लिखने से इन्कार कर देता है, क्योंकि वह जानता है कि उसका मुवक्किल लम्बे ग्रर्से तक मनोरोग विशेषज्ञों से इलाज कराता रहा है ग्रौर बाद में इसी ग्राधार पर उसे वसीयत लिखने के ग्रयोग्य घोषित कर दिया जाएगा, तो उन परिस्थितियों में वकील का, नैतिकता के ग्राधार पर यह सोचकर—वह ग्रपने व्यावसायिक परिश्रम को बुरे कामों में इस्तेमाल नहीं करेगा—काम नहीं करने का नतीजा यह निकलेगा कि उसका काम-काज ठप्प हो जाएगा ग्रौर उसकी ग्रौलाद को ठीक तरह से रोटी तक नसीब नहीं हो सकेगी। ग्रपने मुवक्किलों के मन की गहराई तक पहुँचने के लिए क्या वकीलों को भी ग्रपने दफ़्तरों में हस्पताल ग्रथवा गुप्तचर विभाग खोलने होंगे ? इस तरह के निष्कर्ष पर पहुँचना निरर्थक है। वकील को ग्रपने व्यवसाय को चलाने के लिए ग्रपने मुवक्किल की छान-बीन करने या उसके बुरे इरादों की कलई खोलने की कोई जरूरत नहीं है।

ग्रगर टट एण्ड टट कम्पनी ने मि० बाल्डविन को वसीयतनामे का परिशिष्ट बनाने से मना कर दिया होता तो ग्रल्फ्रेडा बड़ी ग्रासानी से यह काम किसी दूसरे वकील को सौंप देती। इस बात को वे ग्रच्छी तरह जानते

थे कि वसीयतनामा उनके यहाँ नहीं बनेगा तो कहीं और बन जाएगा। ज़रा सोचिए आम दुकानों पर मिल जाने वाले मसालेदार कबाब को अगर कोई व्यक्ति इसलिए खरीदकर ले जाता है कि वह कम आयु वाले एक छोटे बच्चे को खिलाएगा और ऐसा करने से बच्चे की मृत्यु हो जाने की पूर्ण आशंका बनी रहती है. ऐसी स्थिति में क्या सारे दुकानदार मसालेदार कबाब बेचना बन्द कर देंगे ? कभी नहीं। इसी तरह अगर कोई व्यक्ति वसीयतनामा अथवा परिशिष्ट एक वकील से इस इरादे के साथ बनवाना चाहता है कि बाद में वह एक जड़बुद्धि व्यक्ति से धोखे के साथ उन दस्तावेज़ों पर हस्ताक्षर करवा लेगा, तो क्या वकील को ऐसा दस्तावेज तैयार नहीं करना चाहिए ? नहीं, वकील को इस दिशा में सोचना ही नहीं चाहिए। जिस तरह मसालेदार कबाब खरीदने वाले ग्राहक पर दुकानदार शक नहीं करना है, उसी तरह वकील को भी अपने मुवक्किल पर शक करने के लिए कोई गुंजाइश नहीं है।

हम बग़ैर किसी झिझक के यह स्वीकार कर लेते हैं—चाहे पाठक इस बेमानी बात पर विश्वास करें अथवा नहीं। वैसे हमारा यह विचार है कि हमारी बात तर्क-वितर्क और क़ानूनी वाद-विवाद के समान ही ज्ञानवर्द्धक और आधारपूर्ण है कि टट और यहाँ तक कि मि० टट ने एक बार भी यह नहीं सोचा था कि मिसेज बाल्डविन के लिए वसीयतनामे का परिशिष्ट बनाने से इन्कार कर दिया जाए। क्योंकि यह काम किसी भी वकील के लिए फ़ायदेमन्द काम था और मि० टट के जमे-जमाए दफ़्तर में तो वह सिर्फ बीस मिनट का ही काम था। मि० टट मिस सोंधीम को प्रस्तुत विषय के बारे में इबारत लिखवा देंगे, जिसे टाइप कर दिया जाएगा और उसके बाद मि० टट उसे ठीक-ठाक कर देंगे और अगर ज़रूरी समझा गया तो वे उसमें संशोधन कर, स्क्रैग्स, दस्तावेज़ लिखने वाला क्लर्क जो हमेशा ही नशे में धुत्त रहता था और दफ़्तर के बाहरी भाग में बने हुए जालीदार कठघरे में बैठा करता था, को दे देंगे और वह अपनी खूबसूरत स्पेंसरी[1] ढंग की

1. स्पेंसरी लिखावट—कवि एडमंड स्पेंसर (मृत्यु 1599 ई०) की सुन्दर हस्तलिखित पाण्डुलिपियों के आधार पर उनकी लिखावट बहुत प्रसिद्ध थी और इसी आधार पर सुन्दर लेखन के लिए 'स्पेंसरी' शब्द का प्रयोग होने लगा।

लिखावट में चिकने कृत्रिम चर्म-पत्र पर उस दस्तावेज़ को अंकित कर देगा। उसके बाद, मिस विगिन, मुख्य क्लर्क, विल्ली, चपरासी और मिस सोंधीम द्वारा उस दस्तावेज़ को एक नवजात शिशु के समान, एक कोमल, सुन्दर, नीले रिबन से सजाया जाएगा और गर्दन के गिर्द एक लाल मुहर बाँध दी जाएगी और फिर टिशू पेपर में लपेटकर, सुलाने के लिए उस समय तक मेज़ की ऊपर वाली दराज़ में लिटा दिया जाएगा और वह वहाँ तब तक लेटा रहेगा जब तक कि कोई व्यक्ति उसे मृत्यु-शय्या पर पड़े हुए एक मृत प्रायः व्यक्ति के समक्ष प्रस्तुत करने के लिए वहाँ से ले जाएगा और उसके बाद दस्तावेज़ के अन्तिम पैरे, जहाँ 'जिसकी पुष्टि में' लिखा होगा की ओर इशारा करते हुए, मरने वाले के काँपते हुए हाथों में क़लम थमाकर, कहेगा, "मि० बाल्डविन, यह आपका वसीयतनामा है। हाँ...हाँ...आपका वसीयत-नामा...इसकी पुष्टि करने के लिए यहाँ अपने हस्ताक्षर कर दीजिए।"

और टट एण्ड टट कम्पनी को निष्पादकों की ओर से यथासमय एक हज़ार डालर का चैक मिल जाएगा, जिस धनराशि में से नौ सौ तिरानवे डालर कमाई के होंगे। एक ऐसे अच्छे काम, जिसमें हींग लगे न फटकड़ी और रंग चोखा आए, को लेने से मि० टट कैसे इन्कार कर देते? व्यावसायिक दृष्टि से जो काम मि० टट के लिए लाभदायक था, उसे स्वीकार कर लेने पर, क्या उनकी निन्दा करना उचित होगा?

फिर भी, उस वसीयतनामे के परिशिष्ट के पीछे जो धोखा छिपा हुआ था, उसी की वजह से, मि० टट का उसमें दिलचस्पी लेना स्वाभाविक ही था। हर प्रकार के आक्रमणों से, उस दस्तावेज को सुरक्षित रखने के लिए, जितनी बातें ज़रूरी थीं सब पूरी कर दी गई थीं फिर इस मामले में इस शक की कोई ऐसी विशेष गुंजाइश भी तो नहीं थी कि उस सारी कार्रवाई में वसीयत करने वाले वृद्ध का हाथ नहीं था। बहुत से वसीयत करने वाले, वसीयत पाने वालों के लिए ऐसी भयंकर और चक्र-व्यूह के सामने दुर्जेय वसीयतें लिख जाते हैं, जिनके अनुसार दाय का प्रचुर भाग किसी धर्मार्थ संस्था के नाम में होता है। ऐसी स्थिति में अगर वसीयतनामे को सरकारी प्रमाण-पत्र नहीं मिलेगा तो उस संस्था को भी परिणामस्वरूप कुछ नहीं मिलेगा। लेकिन उस मामले में तो कुछ ऐसी बातें थीं जो साफ तौर से यह

ज़ाहिर कर रही थीं कि मिसेज बाल्डविन बड़ी ही कुशलता के साथ अपना घर भरने की सोचे हुए थी और साथ-ही-साथ वह अपने उस घर को असली वारिसों और सगे-सम्बन्धियों से बचाए रखने की पूरी व्यवस्था भी करना चाहती थी।

उन दिनों मि० टट की आर्थिक स्थिति ऐसी थी कि दरअसल उन्हें धन की कोई विशेष ज़रूरत नहीं रहती थी। वे तो शौकिया तौर पर ही वकालत करते थे। मिसेज बाल्डविन की बातें सुनकर उन्हें एक ऐसे षड्यन्त्र का आभास हुआ था जो एक जासूसी कहानी के समान रोचक था। इसीलिए उन्होंने बोनी इन, जो एक समझदार और शिष्ट युवक था और प्रायः टट एंड टट कम्पनी के लिए सहायक सिद्ध होता रहता था, को आदेश दिया था कि वह किसी न किसी तरह, मिसेज केबिल बाल्डविन अर्थात् एंगलवुड, न्यू जर्सी के निवासी श्रीमान् एल्विन स्पीयरमैन की सुपुत्री अल्फ्रेडा स्पीयरमैन की पिछली जिन्दगी के बारे में ब्यौरा लगाए।

o o o

"ऑस्कर से कहो कि वह कार के बग़ैर ही, मुझसे आकर मिले." लाइब्रेरी में अपनी मेज़ पर बैठी हुई मिसेज़ बाल्डविन ने बीच वाली बड़ी मेज़ पर बैठी हुई एक जड़-मूर्ति-सी लड़की जिसके दोनों हाथ उसकी गोद में टूटे हुए से पड़े थे, से कहा, "किसी और को मत भेज देना···खुद जाकर उससे कहो। बाक़ी नौकरों को भी कह दो कि आज शाम के लिए उन सबकी छुट्टी है और वे बाहर जा सकते हैं।"

लड़की चुपचाप उठी। शिथिल शरीर, पीले चेहरे वाली और मुरझाई हुई और व्याकुल शक्ल-सूरत वाली उस लड़की की दोनों आँखों के नीचे काले साए उभरे हुए थे, लेकिन फिर भी उसके हाव-भाव में आत्म-सम्मान की ज्योति विद्यमान थी।

"जब भी तुमसे बोला जाता है, तो तुम जवाब क्यों नहीं देती हो?" बूढ़ी स्त्री ने कड़कते हुए कहा, "तुम्हारी इन्हीं बातों को देखकर, कोई भी यही समझेगा कि मेरी बजाय तुम ही इस घर की मालकिन हो!"

"मुझे ऐसी कोई भ्रान्ति नहीं है," लड़की ने बुझे हुए स्वर में उत्तर दिया, "मैं आपका सन्देश पहुँचा दूँगी। बाक़ी, यह तो आप जानती ही हैं

कि अगर मुझे अपने पिता की चिन्ता नहीं होती तो मैं इस घर में एक दिन भी न रुकती।"

"हाँ, क्यों नहीं ? तुम बहुत अच्छी तरह जानती हो, तुम्हें कहाँ से सौग़ात मिलेगी," सौतेली माँ ने ताना देते हुए ज़ोर से कहा, "तुम्हारी औक़ात क्या है ? जानती हो, तुम्हें तो हमेशा ही मेरे टुकड़ों पर पलना होगा। यह बात कान खोलकर सुन लो, तुम्हारे लिए यही अच्छा है कि इस घर में तुम अपने काम-धाम से ही मतलब रखो।"

"बताइए, मैं ऑस्कर से क्या कहूँ—आप उसे किस काम के लिए यहाँ बुला रही हैं ?" लड़की ने पूछा।

"वाह," वृद्ध स्त्री ने कहा, "कितनी चालाक हो ! अब बातें मालूम करना चाहती हो। सुना तुमने, इन बातों से तुम्हारा कोई वास्ता नहीं है।"

लड़की ने अपने कंधे उचकाए और वह धीमी चाल से दरवाज़े की ओर चल पड़ी।

"और फिर वापस यहीं आ जाना," मिसेज बाल्डविन ने आज्ञा दी, "मैं नहीं चाहती कि तुम हर वक्त अपने पिता के साथ चिपकी रहो···उन्हें तुम्हारा रोना-धोना, हर वक्त आँसू बहाते रहना, पसन्द नहीं है।"

लड़की ने बड़ी मुश्किल से अपनी रुलाई रोकी, लेकिन लाइब्रेरी से बाहर हॉल में आते ही, एकान्त में वह फूट-फूटकर रोने लगी। उसे इस तरह के दबाव में तब से रहना पड़ रहा था जब से वह अपने कालिज से उपाधि ग्रहण करके लौटी थी, जहाँ उसे उसके पिता ने चार साल पहले, उसकी माँ की मृत्यु हो जाने पर भेज दिया था। जब वह अपने घर से गई थी तो उसका पिता उसकी माँ की मृत्यु के कारण बहुत दुःखी रहा करता था, फिर भी पिता का बेटी के प्रति अपार स्नेह था। लेकिन एक वर्ष बाद उसे अचानक एक तार मिला था जिसके अनुसार उसके पिता ने 'जर्सी' नगर में किसी अज्ञात स्त्री से विवाह कर लिया था जो विवाह-पूर्व, वृद्ध पिता के अचानक न्यूमोनिया से बीमार पड़ जाने के कारण, देख-भाल करने के लिए बतौर नर्स नियुक्त की गई थी।

उसे विवाह की बात सुनकर ही सदमा नहीं पहुँचा था, बल्कि उसे

बहुत दुःख था कि क्यों उसके पिता ने इतनी जल्दी उसकी माँ को भुला दिया था। इसके अलावा उस अनुचित मृत्य के कारण, परिवार की बहुत बदनामी हुई थी। घर वापस लौट आने के बाद उसने वृद्ध पिता को मानसिक विकृति और शारीरिक क्षय के कारण अत्यधिक दयनीय स्थिति में पाया तो उसे बहुत गहरी चोट लगी थी और वह पीड़ा से छटपटाती रही थी। उसका पिता जो सुन्दर, तेजवान, स्वस्थ वृद्ध व्यक्ति था, अब सूखकर दुबला-पतला और कुबड़ा बन गया था। हर बात पर बीमार और चिड़चिड़े स्वभाव के रोगी की तरह खीज उठता था और डरपोक इतना हो गया था कि उसे अपनी परछाईं तक से भी डर लगने लगा था। कभी-कभी वह अपनी बेटी के साथ पहले दिनों जैसा ही व्यवहार करना चाहता था, लेकिन अक्सर वह बेचैन और शक्की बना रहता था और उस अजीब-सी डरावनी शक्ल वाली औरत के इशारों पर नाचता रहता था। और उस औरत के सामने उसकी ज़बान पर ताले पड़ जाते थे। उसकी भूतपूर्व नर्स ने वृद्ध पर न जाने कैसा जादू-टोना किया था कि उसकी आवाज़ सुन लेने मात्र से ही वृद्ध के शरीर का अंग-अंग काँपने लगता था। जब कभी भी वह मकान के निचले भाग में होती थी तो वृद्ध के बिस्तरे से उठकर कमरे में इधर-उधर चहलक़दमी करने की ध्वनि सुनकर वहीं से चिल्ला उठती थी और वृद्ध चुपचाप फिर अपने बिस्तरे में आ दुबकता था।

लिडिया बाल्डविन अपने पिता के घर में रहते हुए भी आधी नौकरानी और आधी बन्दिनी बनकर रह गई थी अगर उसे अपने पिता का ख्याल नहीं होता तो वह कभी की उस घर को छोड़कर चल देती, लेकिन वह ऐसा समझती थी कि उस घर में उसकी उपस्थिति वृद्ध पिता के लिए शायद लाभदायक सिद्ध हो सके। अपनी उस क्रूर जेलर की आज्ञानुसार उसे अपने वृद्ध पिता, जो दिन प्रतिदिन कमज़ोर होता जा रहा था, से दूर ही रहना पड़ता था और बिना आज्ञा वह अपने पिता से मिल तक नहीं पाती थी। उस घर के सारे नौकर-चाकर उसी औरत के साथ मिले हुए थे और हालत यह थी कि बग़ैर उस औरत की आज्ञा लिये, उस घर में परिन्दा तक भी नहीं आ सकता था। वृद्ध पिता को देखने के लिए वही डॉक्टर आते थे, जिन्हें सौतेली माँ ने स्वयं बुलाया था और जिनके साथ विगत दिनों में उसके

रहस्यपूर्ण सम्बन्ध रह चुके थे। उस जाल में फँसकर, धनहीन और निस्सहाय लिडिया बाल्डविन, अपने घर में रहते हुए भी, बेघरबार हो गई थी··· उसकी प्रत्येक बात पर गुप्तचर दृष्टि रखते थे और सारा विवरण सौतेली माँ तक पहुँच जाता था।

कभी-कभी लिडिया बाल्डविन का पिता किसी भयानक स्वप्न से जाग उठता था और ऐसा महीने में मुश्किल से एक बार ही होता था। तब वह कुछ-कुछ होश में आकर, दुःखी वाणी में अपनी शोचनीय स्थिति का मज़ाक उड़ाने का प्रयत्न किया करता था और ऐसे असामान्य अवसर इस बात के सूचक होते थे कि तत्काल ही वृद्ध रोगी को दौरा पड़ने वाला था और दौरे के दौरान वह अक्सर बेबस-सा यातना की दलदल में डूबता जाता था और उसे ऐसा अनुभव होता रहता था जैसे उसका अन्तिम समय आ गया था और तब वह अपनी पत्नी के सामीप्य के लिए अत्यधिक आग्रह किया करता था और ऐसा लगता था जैसे उसकी दृष्टि में वही एकमात्र सहारा थी। ऐसे मौक़े लिडिया के लिए असहनीय हो उठते थे, क्योंकि वह अपने पिता को सान्त्वना देने के लिए एक शब्द भी नहीं कह पाती थी···ऐसे क्षणों में उसे अपने प्रिय मित्र हेनरी होलबोर्न के विवाह-प्रस्ताव की याद आती रहती थी और वह सोचा करती थी कि क्यों नहीं वह उससे विवाह करके इस घर-रूपी कारागार से निकलकर दूर चली जाए। वह तेईस साल की थी और हेनरी पच्चीस का था। हेनरी एक भवन-निर्माण कार्यालय में अच्छी आय वाली नौकरी करता था और उसमें वे सब गुण विद्यमान थे जिनके आधार पर यह कहा जा सकता था कि उसका भविष्य उज्ज्वल था। लिडिया यह अच्छी तरह जानती थी कि उस घर में उसका कोई हिस्सा नहीं था, क्योंकि सौतेली माँ उसके लिए पिता द्वारा फूटी कौड़ी भी नहीं छोड़ने देगी, जबकि उसकी माँ की मृत्यु हो जाने के बाद, पिता ने उसे एक बार बताया था कि उसे बहुत धन मिलेगा और बड़ी अमीर बन जाएगी, लेकिन दूसरे विवाह के बाद, उसने एक बार भी लिडिया से उस बात का जिक्र तक नहीं किया था।

o o o

ठीक नौ बजे जब मि० टट ने बाल्डविन भवन के चबूतरे की सीढ़ियाँ

चढ़कर घंटी बजाई, तो तत्काल ही मिसेज बाल्डविन ने स्वयं आकर दरवाज़ा खोला।

"संध्या मंगलमय हो," उसने शिष्टतापूर्वक अभिवादन किया और उनकी ओर अपना हाथ बढ़ाते हुए, उसके चेहरे पर कुटिल मुस्कान नाच उठी, "मुझे खुशी हुई कि आप ठीक वक़्त पर तशरीफ ले आए—मैं आपका इन्तज़ार ही कर रही थी।"

उसके कंधों के ऊपर से वृद्ध वकील को एक मुरझाई हुई शक्ल-सूरत वाली लड़की दिखाई दी, जो दूसरी मंज़िल की ओर जाने वाले ज़ीने के दूसरे किनारे पर असहाय-सी खड़ी थी। जैसे ही उन्होंने अपने कोट और हैट उतारे, उतनी ही देर में वह अन्धकार में छिप-सी गई।

"लिडिया, नीचे आ जाओ।" मिसेज बाल्डविन ने कहा, "मुझे तुम्हारा अपने पिता को बार-बार परेशान करना पसन्द नहीं है। यहाँ आओ और मि० टट से मिलो।"

लड़की आज्ञानुसार एक बार फिर प्रकट हुई और वह थकी हुई-सी, ज़ीने के रेलिंग का सहारा लेकर नीचे उतरने लगी। सीढ़ियाँ उतरते समय, धुँधली रोशनी में अंधकारपूर्ण पृष्ठभूमि के समक्ष, उसका पीला और मुरझाया हुआ चेहरा देखकर, उन्हें 'बर्न जोन्स'[1] के एक भावपूर्ण चित्र, जिसमें लिली-पुष्पों से ढँके हुए एक तालाब के पास एक आकृति चित्रित थी, की याद आई। जिस तरह दिन भर की तपिश में झुलसते रहने के बाद, मुरझाए हुए पेड़ के पत्ते ठंडी हवा के लिए लालायित रहते हैं, उसी तरह मि० टट की वृद्ध आत्मा भी उस लड़की की विषादपूर्ण आकृति देखकर बेचैन हो उठी।

"जल्दी करो," मिसेज़ बाल्डविन ने आज्ञा दी, "क्या हमें सुबह तक तुम्हारा इन्तज़ार करना होगा?"

लड़की ने स्वाभिमानपूर्वक अपनी ठोड़ी ऊपर की ओर उठाई और उसे वृद्ध व्यक्ति की दृष्टि में स्नेह-सिक्त चमक दिखाई दी। उनकी आँखों में उसके प्रति केवल दया ही नहीं थी, बल्कि सद्भावना विद्यमान थी। यह देखकर वह धीरे-से मुस्करा उठी।

---

1. बर्न जोन्स—सर एडवर्ड बर्न जोन्स (मृत्यु 1898 ई०) इंग्लैण्ड के एक प्रसिद्ध रोमांटिक और स्वच्छन्दतावादी चित्रकार।

"यह है मेरी सौतेली लड़की, लिडिया।" मिसेज बाल्डविन ने कहा।

मि० टट ने आगे बढ़कर, ज़रा झुकते हुए, अपने लम्बे-लम्बे हाथों में लड़की के हाथ थाम लिये और उसके हाथ पकड़े हुए ही, उन्होंने उसे ज़ीने की बाकी सीढ़ियों से उतरने में सहारा दिया। दोनों में कोई बात नहीं हुई, फिर भी उन दोनों के बीच में स्नेह-सम्बन्ध स्थापित हो गया था और मन-ही-मन दोनों ने यह अभिव्यक्त कर दिया था, "हम दोनों एक-दूसरे के मित्र हैं।"

"लिडिया, मैं चाहती हूँ कि तुम यहाँ बैठक में बैठी रहो," मिसेज़ बाल्डविन ने कहा, "और जब मैं ऑस्कर को तुम्हारे पिता के शयनकक्ष में भेज देने के लिए कहूँ, तो तुम उसे भेज देना। अगर कोई और आदमी आए तो उसे तुम ही यह जवाब दे देना—सारे नौकर-चाकर बाहर गए हुए हैं।"

"अच्छा !" लिडिया ने उदासीनतापूर्वक उत्तर दिया।

"अब," मिसेज़ बाल्डविन ने मि० टट से कहा, "अगर आप तैयार हैं तो हम ऊपर चलें," और फिर धीमे से फुसफुसाकर आगे बोली, ताकि लिडिया, जो तब तक बैठक में जा चुकी थी, को कुछ भी सुनाई नहीं दे सके, "क्या आप वसीयतनामे का परिशिष्ट तैयार कर लाए हैं ?"

मि० टट ने गर्दन हिलाकर सहमति प्रकट की और उसके पीछे-पीछे ज़ीना चढ़ने लगे। ज़ीना पार कर लेने के बाद उस औरत ने एक दरवाज़े को आहिस्ता से खोला। कुछ व्यक्ति ऐसे होते हैं जिनके हाव-भाव से यह झलकता रहता है कि मौक़ा लगते ही वे शिकार करने के लिए झपटे बग़ैर नहीं रह सकेंगे। अक्सर देखा गया है कि पुरुष ही स्त्री का शिकार करने का प्रयत्न करते हैं, लेकिन इस बार एक स्त्री एक पुरुष का चुपके-चुपके शिकार करने की कोशिश कर रही थी।

वे दोनों एक ऊँची छत वाले कमरे में पहुँचे, जहाँ हरे शेड वाले लैम्प की धुंधली रोशनी में, बिस्तरे पर पड़ा हुआ एक वृद्ध व्यक्ति दिखाई दे रहा था। उसका चेहरा मुरझाया हुआ था और उसकी ज्योतिहीन आँखें और म्लान होंठ थे। उसके दोनों हाथ चादर पर बेजान से पड़े हुए थे।

"तुमसे कोई मिलने आए हैं, बाबा !" मिसेज़ बाल्डविन ने अपने पति से कुछ इस तरह कहा जैसे किसी बच्चे को ठीक तरह से व्यवहार करने के लिए फुसलाने के साथ-साथ चेतावनी भी दी जा रही थी।

वृद्ध व्यक्ति ने अपने होंठों पर जीभ फिराई और उसके शरीर में मुश्किल से दृष्टिगोचर होने वाला कम्पन फैल गया।

"वकील साहब आए हैं," पत्नी ने घोषणा की, "मि० टट हैं। तुम इन्हें अच्छी तरह जानते हो।"

बुढ़ापे के कारण, उन बुझी-बुझी-सी आँखों में परिचय की, जान-पहचान की एक धुँधली-सी चमक आई और उसके बाद वृद्ध व्यक्ति आतंकित हो उठा।

"हाँ," उसने मुश्किल से बड़बड़ाते हुए कहा, "मैं जानता हूँ।"

"इन्होंने तुम्हारे वसीयतनामे के लिए एक परिशिष्ट तैयार किया है, जिस पर तुम्हें हस्ताक्षर करने हैं।" वह इससे आगे भी कहना चाहती थी—"अच्छे लड़के की तरह चुपके से हस्ताक्षर कर दो, समझे!"—लेकिन उसने इतना सब नहीं कहा।

मि० बाल्डविन ने कोई उत्तर नहीं दिया। ऐसा लगा जैसे वह यह भूल गया था कि उसके पास अन्य दो व्यक्ति भी मौजूद थे।

"केबिल!" मिसेज़ बाल्डविन ने उसके बिस्तरे पर झुकते हुए, भारी आवाज़ में कहा, "केबिल, ध्यानपूर्वक सुनो।"

वृद्ध व्यक्ति ऐसे हड़बड़ा उठा जैसे किसी ने उसे थप्पड़ मार दिया था।

"मैं सुन तो रहा हूँ," उसने आँखें झपकाते हुए विरोध किया।

"उठकर बैठो," पत्नी ने आदेश दिया, "आज कुछ ज़रा ज़्यादा धुत्त है, लेकिन है बिलकुल ठीक-ठाक! आप चिन्ता न करें! आप बिस्तरे की पास वाली कुर्सी पर आ जाएँ, तो अच्छा रहेगा।"

मि० टट ने वैसा ही किया। उस आतंककारी मर्मस्पर्शी स्थिति में क्या रहस्य छिपा हुआ था? उस वृद्ध रोगी की दरअसल क्या हालत थी? क्या उसकी स्मरण-शक्ति, बुद्धि और चेतना सब स्वस्थ थी?

मिसेज़ बाल्डविन अपने पति के पाँवों के पास जाकर खड़ी हो गई और उसकी ओर एकटक देखने लगी।

"केबिल, अब मेरी बात सुनो!" उसने स्पष्ट स्वर में, प्रत्येक शब्द पर ज़ोर देते हुए कहा, "तुम्हें अपने वसीयतनामे के परिशिष्ट पर हस्ताक्षर

करने हैं—समझे ?"

वृद्ध व्यक्ति ने अपनी अन्दर धँसी हुई आँखों से उसकी ओर गौर से देखते हुए बड़बड़ाकर कहा, "मैं तो वसीयतनामा पहले ही तैयार कर चुका हूँ।"

"अब तुम्हें उसके परिशिष्ट पर हस्ताक्षर करने हैं, क्यों ठीक है न !" उसने उसकी ओर एकटक देखते हुए कहा, "बाबा, तुम ज़रा ठीक तरह उठ बैठो न···तुम्हारे कहने के मुताबिक वकील साहब परिशिष्ट तैयार कर लाए हैं।"

"वसीयतनामे का परिशिष्ट !" मि० बाल्डविन ने अस्पष्ट स्वर में कहा, "हाँ, ठीक तो है। मुझे एक परिशिष्ट की ज़रूरत है। कहाँ है वह ?"

"वकील साहब के पास है," वह बोली, "यह रही कलम, इसे लो और झट से हस्ताक्षर कर दो।" उसके बाद मि० टट की ओर देखते हुए उसने आगे कहा, "आप इस काग़ज़ को उसके सामने रख दीजिए।"

"लेकिन पहले मैं पढ़कर सुनाना चाहूँगा।" मि० टट ने आग्रहपूर्वक कहा, "हस्ताक्षर तब ही तो हो सकते हैं जब यह मालूम हो जाए कि यह उनकी इच्छानुसार ही तैयार किया गया है।"

"यह जानना ज़रूरी नहीं है," उसने जल्दी से उत्तर दिया, "मैं पहले ही इस बारे में बहुत बार बात कर चुकी हूँ। आप देख तो रहे हैं, उससे कोई भी काम करा लेना कितना मुश्किल है। मुझे ही पूरा एक सप्ताह लग गया था यह जानने में कि आखिर इसकी इच्छा क्या है। मेरे ख़्याल में जितनी जल्दी हम इस काम को करेंगे उतना ही अच्छा होगा।"

"लेकिन यह बहुत ज़रूरी है कि मैं इन्हें पढ़कर सुनाऊँ।" वकील ने विरोध करते हुए आगे कहा, "अगर ऐसा नहीं किया गया तो यह एक अनुचित कार्य होगा। मि० बाल्डविन, मैं आपको आपके वसीयतनामे के परिशिष्ट का विवरण सुनाने जा रहा हूँ, जिसे मैंने उन बातों के आधार पर तैयार किया है जो आपके नाम पर मुझे बताई गई हैं। क्या आप मेहरबानी करके, मेरी बात गौर से सुनेंगे ?"

मि० बाल्डविन ने मि० टट की ओर बहकी-बहकी दृष्टि से देखा।

"मैं पहले ही वसीयतनामा तैयार कर चुका हूँ।" उसने दोबारा कहा।

"लेकिन यह वसीयतनामे का परिशिष्ट है।"

"अच्छा, परिशिष्ट है।"

मि० बाल्डविन ने सारी कार्रवाई से सहमति प्रकट करने के लिए एक-दो बार गर्दन हिलाई।

"क्या मैं पढ़कर सुनाऊँ?" मि० टट ने ज़रा बेचैनी के साथ प्रश्न किया।

"हाँ, मुझे पढ़कर सुनाइए," मि० बाल्डविन ने कहा।

मि० टट ने उस क़ानूनी दस्तावेज़ को सावधानीपूर्वक हाथ में लेकर, लैम्प की रोशनी में पढ़ना शुरू किया :

"भगवान् के नाम में, तथास्तु! मैं, केबिल बाल्डविन, जिसकी स्मरण-शक्ति और चेतना दोनों ठीक हैं, यहाँ अपने अन्तिम वसीयतनामे और इच्छा-पत्र के परिशिष्ट को बनाता हूँ, प्रकाशित करता हूँ और घोषणा करता हूँ और—"

अचानक वृद्ध महानुभाव ने रिरियाना शुरू कर दिया।

"मेरा दूध कहाँ है?" वृद्ध रोगी ने शिकायत की, "मुझे गर्म दूध चाहिए, कहाँ है मेरा दूध?"

मिसेज़ बाल्डविन भड़क उठीं।

"क्या ज़रा-सी देर इन्तज़ार नहीं कर सकते?" उसने क्रोधपूर्वक कहा, "इस काम में सिर्फ़ एक मिनट लगेगा। ज़रा-सी देर सन्तोष करो!"

"मुझे दूध चाहिए! उसके बग़ैर मैं कुछ नहीं कर सकता!" वृद्ध रोगी ने चिड़चिड़े स्वर में शिकायत की।

"ठीक है, मैं अभी लाती हूँ," वह चिल्लाकर बोली और फिर मि० टट से कहा, "मैं अभी आती हूँ।"

उसे गर्म दूध का एक गिलास लाने में पाँच मिनट लगे और वहाँ आकर, उसने वह गिलास वृद्ध रोगी के होंठों से लगा दिया।

"क्या आप वसीयतनामा पढ़कर सुना चुके हैं?" उसने वापस आते ही प्रश्न किया।

"नहीं," मि० टट ने उत्तर दिया, "मैं आपकी प्रतीक्षा करता रहा।"

"भगवान् के नाम में, तथास्तु! मैं, केबिल बाल्डविन, जिसकी स्मरण-शक्ति

श्रौर चेतना दोनों ठीक हैं, यहाँ श्रपने वसीयतनामे श्रौर इच्छा-पत्र के परिशिष्ट को बनाता हूँ, प्रकाशित करता हूँ श्रौर घोषणा करता हूँ श्रौर इस सम्बन्ध में पूर्ण रूप से यह प्रमाणित करता हूँ कि :

"प्रथम—मैं निजी सम्पत्ति में से निम्नलिखित को श्रलग-श्रलग दस हज़ार डालर देने की वसीयत कर रहा हूँ—'राजधानी कला संग्रहालय ।' "

मि० टट ने श्राहिस्ता से श्रौर सावधानीपूर्वक सारे दस्तावेज़ को पढ़कर सुनाया, लेकिन यह कहना मुश्किल था कि मि० बाल्डविन ने वह सारा विवरण सुना था या नहीं ।

"जो कुछ मैंने पढ़कर सुनाया है, श्रापने सब सोच-समझ लिया है ?" मि० टट ने पूछा ।

"हाँ, यह मेरे वसीयतनामे का परिशिष्ट है," मि० बाल्डविन ने सहमति प्रकट की, "श्रच्छा, इस परिशिष्ट पर श्रब मुझे हस्ताक्षर भी करने हैं ।"

"श्रब," पत्नी ने व्याकुलता के साथ कहा, "साक्षी देने के लिए श्रब मैं ड्राइवर को बुला लेती हूँ ।" वह जल्दी से दरवाज़े की श्रोर बढ़ी श्रौर उसने चिल्लाकर कहा, "लिडिया ! श्रॉस्कर को ऊपर भेज दो ।"

लगभग उसी वक्त जीने पर चढ़ते हुए किसी व्यक्ति की पग-ध्वनि सुनाई देने लगी श्रौर फिर एक वर्दीधारी व्यक्ति कमरे में श्रा गया ।

"यह दूसरा गवाह है," मिसेज़ बाल्डविन ने मि० टट को बताया "यह है श्रॉस्कर बोयनटन—हमारा ड्राइवर ।"

मि० टट उठे श्रौर उन्होंने दस्तावेज़ का श्रन्तिम पृष्ठ खोलकर, वृद्ध व्यक्ति की गोद में, बिस्तरे की चादर पर फैला दिया ।

"यह उनके श्रन्तिम वसीयतनामे और इच्छा-पत्र का परिशिष्ट है श्रौर मि० बाल्डविन चाहते हैं कि आप दोनों इस पर उनके गवाहों के रूप में हस्ताक्षर करें," उन्होंने कहा, "सबसे पहले मि० बाल्डविन, फिर मिसेज़ बाल्डविन श्रौर उसके बाद श्राप हस्ताक्षर करेंगे । श्राप सबको एक-दूसरे के सामने हस्ताक्षर करने होंगे । मि० बाल्डविन, श्राप श्रच्छी तरह जानते हैं न, कि यह श्रापके वसीयतनामे का परिशिष्ट है ? क्या श्राप इन दोनों गवाहों से इस दस्तावेज़ की तसदीक़ भी करवाना चाहते हैं ?"

"हाँ, ज़रूर !" वृद्ध व्यक्ति ने फुसफुसाते हुए कहा।

"तब," मि० टट ने कहा, "आप अन्तिम पैरे की खाली जगह, जिससे पहले 'जिसकी पुष्टि में' लिखा हुआ है, पर अपना नाम लिख दें।"

मि० टट ने पत्नी द्वारा दी गई क़लम मि० बाल्डविन की ओर बढ़ाई, लेकिन ऐसा लग रहा था जैसे उसे वह क़लम नज़र ही नहीं आ रही थी।

मि० टट ने नर्मी से वह क़लम मि० बाल्डविन के दाएँ हाथ, जिस पर नीली नसें उभरी हुई थीं, में थमा दी।

"यहाँ," उन्होंने बताया, " 'जिसकी पुष्टि में' के नीचे लिखिए।"

मि० बाल्डविन की उंगलियाँ क़लम को जकड़े हुए थीं और ऐसा लग रहा था जैसे वह जो कुछ उसे करना था, उसे समझने की कोशिश में जुटा हुआ था। असहाय बालक के समान उसने मि० टट की ओर देखा और फिर आँखें झुकाकर अपनी उंगलियों में पकड़ी हुई क़लम को देखने लगा।

"लिखो !" पत्नी ने बेरुखी के साथ आज्ञा दी।

"लिखो !" वृद्ध व्यक्ति ने दोहराया, "हाँ, लिखो !"

दस्तावेज़ की ओर देखते हुए, उसने क़लम को सख्ती से पकड़ते हुए, कष्टपूर्वक लिखना आरम्भ किया, "केबि..."

मिसेज़ बाल्डविन लोलुप-दृष्टि से उसकी ओर देखती रही। इतनी देर प्रतीक्षा करना, उसे बेचैन कर रहा था।

"यहाँ," वह चिल्लाई और उसके समीप जाकर, उसकी काँपती हुई उंगलियों को ज़ोर से अपने हाथ में पकड़ लिया। "मैं तुम्हारी मदद करती हूँ।" उसके बाद, उसने दस्तावेज़ पर 'जिसकी पुष्टि में' शब्दों से शुरू होने वाले पैरे के नीचे, टेढ़े-मेढ़े अक्षरों में केबिल बाल्डविन के हस्ताक्षर करवा दिए।

मि० टट ने स्याहीचूस से स्याही को सुखाया और परिशिष्ट लेकर एक मेज़ पर आ गए जहाँ मिसेज़ बाल्डविन और बोयनटन ने गवाहों के रूप में दस्तावेज़ पर हस्ताक्षर कर दिए। फिर उसे मोड़ा और तहें करने के बाद वापस उसी लिफ़ाफ़े में रख लिया, जिसमें से उसे निकाला था। मि० बाल्ड-विन ने थककर आँखें बन्द कर लीं और तकिए का सहारा लेकर बिस्तरे पर लेट गए।

"बताइए, अब परिशिष्ट का क्या किया जाए ?" मि० टट ने पूछा, "क्या मैं अपने पास रख लूँ ?"

"नहीं," मिसेज़ बाल्डविन ने कठोरतापूर्वक कहा, "आप इसे यहीं छोड़ जाइए···बाकी मैं सम्भाल लूँगी।"

O O O

मिसेज बाल्डविन की आशा के विपरीत, उसे मि० बाल्डविन की मृत्यु की प्रतीक्षा करते-करते काफ़ी समय गुज़ारना पड़ा। अन्ततः जब वृद्ध व्यक्ति की मृत्यु हुई, उसी दिन से लिडिया बाल्डविन उस मकान को हमेशा के लिए छोड़कर चली गई थी और अपने पिता की शवयात्रा के दो-चार दिन बाद ही उसने हेनरी होलबोर्न से मजिस्ट्रेट के सामने उपस्थित होकर विवाह कर लिया था। जिस दिन लिडिया का विवाह हुआ था, उसी दिन दोपहर बाद बाल्डविन की विधवा टट एण्ड टट कम्पनी के दफ़्तर में बड़े सहयोगी से आकर मिली।

मि० टट ने चुपचाप खड़े होकर उसका स्वागत किया।

"ठीक है न ?" उसने अभिवादन करते हुए कहा। वह मातमी लिबास में पहले से भी ज़्यादा खूँखार नज़र आ रही थी और उसकी दृष्टि में गीध जैसी क्रूरता भरी हुई थी। वह आगे बोली, "मेरा विचार है कि अब हम वसीयतनामे और परिशिष्ट को सरकार से प्रमाणित करा लेने की कार्रवाई शुरू कर दें। बताइए, मुझे इस सिलसिले में क्या करना होगा ?"

मि० टट ने उसे बैठने तक के लिए नहीं कहा। वे उदासीनतापूर्वक बोले, "मिसेज़ बाल्डविन, मैं आपके लिए कोई भी काम नहीं करूँगा।"

"क्यों क्या बात है ?" उसने कड़वाहट के साथ पूछा, "क्या मेरा धन कुछ कम क़ीमत का है ?"

उन्होंने अपने रूखे और लम्बे बालों वाला सिर हिलाया।

"नहीं, बात यह नहीं है," उन्होंने रुखाई के साथ जवाब दिया, "एक वकील को अपने मुविक्कल छाँटने का हक़ हासिल है और साफ़-साफ़ सुन लीजिए मैं आपका वकील नहीं बनना चाहता हूँ।"

"वाह यह भी खूब रही !" वह भड़कते हुए चिल्लाई, "पिछली बार वसीयतनामे का परिशिष्ट बनाने के लिए तो आप झट से तैयार हो गए थे—

क्यों अब क्या बात हो गई है ? आपको कोई तकलीफ हुई है क्या ? आखिर अब मेरा साथ नहीं छोड़िए !" उसने पैंतरा बदलते हुए प्रार्थना की, "आप जो चाहेंगे वही फीस आपको दी जाएगी।"

"शायद आपको याद होगा," मि० टट ने सख्ती से उत्तर दिया, "उस बार भी मैंने साफ तौर से यह पूछा था कि मुझे किसके लिए काम करना होगा और आपने सीधा जवाब दिया था कि मुझे आपका नहीं बल्कि आपके पति का काम करना था। मैंने अपने मुवक्किल की प्रार्थना पर उसके वसीयतनामे का परिशिष्ट तैयार किया और उसके निष्पादन-कार्य का निरीक्षण किया और बदले में मुझे फीस मिल गई थी। वह मामला वहीं समाप्त हो गया था। मैं तो अब यह सोच रहा हूँ कि तत्काल उस वसीयतनामे को, जो मेरे पास मौजूद है और जिसमें मेरा नाम निष्पादक के रूप में विद्यमान है, अधिप्रमाण के लिए प्रस्तुत कर दूं और इस प्रकार मैं आपका नहीं बल्कि आपके पति की सम्पत्ति का प्रतिनिधित्व करूँगा। हाँ, एक बात ज़रूर है—अगर आप क़ानूनी तौर से कुछ पाने की हक़दार हैं, तो आपको आपका हिस्सा ज़रूर मिलेगा।"

वह हैरानी के साथ उनकी ओर घूरती रही।

"कुछ हिस्सा ! क्यों, मुझे पूरे बीस लाख मिलने वाले हैं।"

"क्या कहा आपने ?" मि० टट ने तत्काल बेरुखी से पूछा।

"आपने ही तो वसीयतनामे का परिशिष्ट तैयार किया था न ? नहीं तो आपने ज़रूर वह दस्तावेज़ बदल दिया है।"

वृद्ध वकील ने कठोरतापूर्वक कर्कश स्वर में कहा, "विश्वास रखिए, मैंने ऐसा नहीं किया है।"

"तब आपको क्या दिक़्क़त है ?"

"मिसेज़ बाल्डविन अगर आप जानना ही चाहती हैं, तो सुनिए—मैं आपसे कोई भी वास्ता नहीं रखना चाहता हूँ।"

मिसेज़ बाल्डविन बेचैनी से तिलमिलाने लगी और उसके भारी-भरकम शरीर का कण-कण क्रुद्ध हो उठा।

"मैंने कभी भी इस तरह के दुर्व्यवहार की बात नहीं सुनी है !" उसने गुस्से से कहा। उसके चेहरे पर हवाइयाँ उड़ने लगी थीं, कैसे ही उसने आगे

कहा, "अगर आपने मेरे साथ कोई धोखा किया है···तो मैं···" उसने विवशता से अपने कंधे झटके और भयातुर हो बोल उठी, "क्या आपने कोई चालाकी की है।" घबराहट के कारण उसके होश-हवास उड़ गए थे।

"आप पहले पूरी बात तो सुन लीजिए···" मि० टट ने उदासीनता-पूर्वक कहा, "मैं आपको यह बता देना चाहता हूँ कि आपके पति के शयन-कक्ष में वसीयतनामे का जो परिशिष्ट लिखा गया था, उसका कोई मूल्य नहीं है।"

"यह क्या बकवास है!" उसका धैर्य टूट चुका था और उसने चिल्लाते हुए कहा, "मैं जानती हूँ, मामला क्या है—दरअसल तुम एक डरपोक आदमी हो। तुम इस बात से डर गए हो कि इस दस्तावेज़ के विरोध में यह कहा जाएगा कि केबिल, जिसे बुद्धि-विकृति का रोग था, को बहकाकर यह परिशिष्ट लिखवाया गया है, जबकि वह क़ानूनी तौर से वसीयतनामा लिखने के क़ाबिल नहीं था। हाँ, ठीक तो है···जब अदालत में यह सिद्ध हो जाएगा कि एफ्रेम टट ने एक ऐसे जड़-बुद्धि बूढ़े से वसीयतनामा लिखवाया और हस्ताक्षर करवाए जबकि उस व्यक्ति को इतना होश भी नहीं था कि वह जान सकता कि उसने किस कागज़ पर हस्ताक्षर किये थे···इन सब बातों से एफ्रेम टट का इतना बड़ा नाम मिट्टी में मिल जाएगा! कोई बात नहीं—बुज़दिल! इस शहर में ऐसे वकीलों की कमी नहीं है, जिनके पास हिम्मत और दिमाग दोनों हैं। देख लेना, जब मेरे नाम में लाखों डालर बैंक में जमा होंगे, तो तब तुम पछताओगे।"

मि० टट धीरे से अवज्ञापूर्ण हँसी हँस दिए। उन्होंने सिगारबक्स से छाँटकर एक लम्बा-पतला सिगार निकाला और विचारमग्न हो, उसे जलाया।

"मुझे याद है···आप धुएँ से परेशान नहीं होती हैं," मि० टट ने पिछली बातें याद करते हुए कहा, "या कहें तो, मैं इसे नहीं पिऊँ।" फिर उन्होंने कड़वे धुएँ का ग़ुबार उड़ाते हुए आगे कहा, "मैं कह रहा था कि आप वाले दस्तावेज़ की सरकार कभी तसदीक़ नहीं करेगी। अगर किसी दस्तावेज का मूल्य है, तो वह है—जो मैंने आपके विवाह के छः महीने बाद तैयार किया था और जिसके अनुसार क़रीब-क़रीब सब धन-सम्पत्ति मृत व्यक्ति की लड़की लिडिया को मिलेगी।"

○ ○ ○

जब अगले शुक्रवार की सुबह साढ़े दस बजे पेशकार सेम्पसन 'प्लेग्ब-भवन' की अदालत के कमरे में दाखिल हुए, तो उन्हें और दिनों की निस्बत उस दिन कुछ ज़्यादा भीड़ दिखाई दी। उन्हें ऐसा लगा जैसे उन्होंने इतने प्रतिष्ठित वकीलों को एक साथ उस अदालत की चमड़े से मढ़ी हुई हत्थेदार कुर्सियों पर और महोगनी की लकड़ी की बनी हुई लम्बी मेज जिसकी निराली चमक को पिछली कई पीढ़ियों से विख्यात वकीलों की कोहनियों की रगड़ आबदार बनाती रही थी, के सामने बैठे हुए, उस दिन से पहले कभी नहीं देखा था। पेशकार को हमेशा ही प्रसिद्ध वकीलों का उस अदालत में आना पसन्द आता था, क्योंकि इस बात से उनका अपना महत्त्व बढ़ जाता था और ऐसे लम्हों में उन्हें अपनी शान का एहसास होने लगता था।

"प्रातः मंगलमय हो, मि० फिलब्रिक!" उन्होंने अदालती कुर्सी पर गाउन समेत ही बैठते हुए, नर्मी से अभिवादन किया, "आज क्या विशेष बात है जो मि० गुडविन, मि० लाउन्थल जैसे नामी-गिरामी वकील यहाँ तशरीफ लाए हुए हैं?"

मि० फिलब्रिक, मि० लाउन्थल और क़ानूनी क्षेत्र के अन्य प्रतिष्ठित व्यक्ति पूर्ण ताल-मेल के साथ, पेशकार का सम्मान करने के लिए मुस्कराए और आगे की ओर झुके। पेशकार सेम्पसन ने अपने प्रश्न, जो केवल एक उत्साहवर्द्धक प्रश्न ही था, का उत्तर पाने की प्रतीक्षा किये बिना ही, एक हाथ से नाक छूते हुए और दूसरे हाथ से कैलेंडर उठा लिया और अपना गला भी साफ किया।

"अच्छा, तो बाल्डविन का मुकदमा है?" उन्होंने जोश के साथ कहा।

साथ ही साथ जूरी के निर्वाचित सदस्य उठे और उन्होंने पेशकार के सामने हूबहू सैनिकों के समान एक साथ हाथ उठा लिये और तत्काल ही पिछली क़तारों में बैठी हुई भीड़, जो अदालत में ठसाठस भरी हुई थी, ने भी वैसा ही किया। उस भीड़ में क्लर्क, चपरासी, सहायक और जूनियर वकील आदि शामिल थे, सब थैले, पुस्तकें, लिफ़ाफ़े या काग़ज़ों के बण्डल लिए हुये थे।

"श्रीमान्।" मि० फिलब्रिक, जो एक पक्ष का अग्रणी था, ने खुशामदाना

अन्दाज़ में कहना शुरू किया, "इस नगर के एक प्रतिष्ठित नागरिक, स्वर्गीय केबिल बाल्डविन, के वसीयतनामे और इच्छापत्र के परिशिष्ट के अनुसार स्वर्गीय बाल्डविन अपनी सम्पत्ति का प्रचुर भाग इस नगर की विभिन्न सार्वजनिक संस्थाओं को दान कर गए हैं और जिनमें से एक संस्था का प्रतिनिधित्व मैं कर रहा हूँ।"

"विपक्ष में कौन है ?" पेशकार ने अपनी ऐनक के ऊपर से देखते हुए प्रश्न किया, "मैं चाहता हूँ इस मुकदमे को सीधे तौर पर शुरू किया जाए क्योंकि आपके पक्ष में बहुत सारे व्यक्ति दिखाई देते हैं।"

एक क्षण तक किसी ने उत्तर नहीं दिया, लेकिन फिर जूरी-कक्ष के पीछे से मि० एफ्रेम टट धीरे-धीरे आगे बढ़े।

"मैं मिसेज़ हेनरी होलबार्न, जो पहले लिडिया बाल्डविन थीं, की ओर से उपस्थित हूँ।" उन्होंने आहिस्ता से कहा, "मृत व्यक्ति की वे ही अकेली सन्तान हैं और एकमात्र उत्तराधिकारी और सम्बन्धी भी। वसीयत के अनुसार वे ही प्रमुख हक़दार हैं।"

"मि० टट," पेशकार सेम्पसन ने अपनी राय देते हुए कहा, "आपने अपने आक्षेप तो पहले ही प्रस्तुत कर दिए होंगे ?"

"अवश्य श्रीमान् !" वृद्ध वकील ने उत्तर दिया और उनके हाव-भाव में कुछ ऐसा तत्त्व ज़रूर था जो किसी अमंगल की सूचना दे रहा था, "मैंने मि० बाल्डविन का पहला वसीयतनामा तैयार किया था और उसमें निष्पादक के रूप में मेरा ही नाम मौजूद है। मैंने उसी वसीयतनामे को सरकारी अधि-प्रमाण के लिए प्रस्तुत किया है और जहाँ तक मुझे ज्ञात है, इस सम्बन्ध में किसी ने कोई एतराज़ नहीं उठाया है। ऐसी स्थिति में जबकि वसीयतनामे को, उसके विरोध में कोई एतराज़ नहीं होने के कारण मान्यता प्राप्त हो जाती है तो यह परिशिष्ट जिसके अधिप्रमाण के लिए ये प्रतिष्ठित महानुभाव यहाँ उपस्थित हैं, अपने-आप ही रद्द हो जाता है।"

"ठीक है," जज ने गर्दन हिलाते हुए कहा, "क्या मैं वसीयतनामा देख सकता हूँ ?"

तत्काल ही एक क्लर्क ने वह दस्तावेज़ मि० फिलब्रिक को दिया, जिसने वह एक अधिकारी की ओर बढ़ा दिया, और अधिकारी ने एक चप-

रामी को दिया, जिसने वह श्रीमान् की सेवा में प्रस्तुत किया। उधर मि० टट जन-समुदाय के बीच में से रास्ता बनाते हुए उच्च ग्रासन के समीप ग्रा गए।

श्रीमान् ने दस्तावेज़ को सरसरी निगाह से देखकर ग्रपना मत प्रकट किया, "वसीयतनामा काफी स्पष्ट रूप में तैयार किया गया है। वसीयत-कर्त्ता ने पहले के तमाम वसीयतनामों को मंसूख़ कर दिया है ग्रौर ग्रपनी पत्नी के लिए विधवादाय की व्यवस्था करने के बाद, ग्रपनी भू-सम्पत्ति का प्रचुर भाग जिसका पूर्ण विवरण उपलब्ध है, ग्रपनी एक-मात्र संतान, लिडिया, के नाम में लिखा है ग्रौर वही मृत व्यक्ति की कुल सम्पत्ति जिसमें निजी ग्रौर भू-सम्पत्ति दोनों शामिल हैं, के बाक़ी हिस्से की भी उत्तराधिकारी है। ग्रापका नाम निष्पादक के रूप में लिखा गया है। यथा-रीति तैयार किये गए गवाहों के शपथ-पत्र भी मौजूद हैं। ग्रब ग्राप सब ही बताइए. मैं किस ग्राधार पर इस वसीयतनामे को ग्रधिप्रमाणित नहीं करूँ?"

जज ने उस मेज़ की ग्रोर देखा जहाँ प्रतिष्ठित वकील-समुदाय विद्य-मान था। इन परिस्थितियों में यह तो स्पष्ट ही था कि कोई भी वसीयतनामे पर एतराज़ नहीं उठाएगा क्योंकि उसी की स्वीकृति पर ही तो परिशिष्ट का प्रवेश निर्भर करता था।

"मैं वसीयतनामे को ग्रधिप्रमाण के लिए स्वीकार करता हूँ," पेशकार ने घोषणा की, "ग्रब हमें परिशिष्ट पर विचार करना है। उसे कौन प्रस्तुत कर रहा है?"

"मुझे करना है," मि० फिलब्रिक ने उत्तर दिया, "मृत व्यक्ति की विधवा जो प्रमुख उत्तराधिकारी है ग्रौर जिसे ही बाक़ी हिस्सा मिलना है. की ग्रोर से प्रस्तुत करता हूँ।"

"क्या वह ग्रदालत में उपस्थित है?"

मि० फिलब्रिक ने पीछे की ग्रोर देखते हुए एक ग्रोर इशारा किया।

"जी, श्रीमान्।"

"मैडम, कृपा करके यहाँ ग्रा जाइए। ग्रापका गवाह की कुर्सी पर बैठना ग्रदालत के लिए सुविधाजनक रहेगा।" उन्होंने नर्मी से कहा।

मिसेज़ वाल्डविन ग्रपने उस मातमी लिबास में भी हमेशा की तरह ही

क्रूर दिखाई दे रही थी, यद्यपि वह अपनी डरावनी शक्ल-सूरत पर चिन्ता और दुख का झूठा पर्दा डालने का पूरा प्रयत्न कर रही थी। वह अपनी जगह से उठी और संकेतित कुर्सी पर आ बैठी।

"क्या आप स्वर्गीय केबिल बाल्डविन की विधवा हैं ?"

"हाँ," उसने ज़ोर से कहा।

"आप वसीयतनामे का परिशिष्ट अधिप्रमाण के लिए प्रस्तुत कर रही हैं ?"

"हाँ।"

"क्या मैं परिशिष्ट देख सकता हूँ ?"

मि० फिलब्रिक ने तत्काल वह दस्तावेज़ दे दिया।

"अच्छा, यह बात है।" श्रीमान् ने ज़ोर से कहा, "यह काफी बड़ा दस्तावेज़ है, इसलिए इसे बाद में पढ़ूँगा।" कुर्सी में पीछे की ओर झुककर, उन्होंने अपनी ऐनक के शीशे साफ किये और उन्हें एक रोचक मुक़दमे के आसार नज़र आने लगे थे। उन्होंने आगे प्रश्न किया, "मि० टट० आपको इन परिशिष्ट के अधिप्रमाणित किये जाने पर क्या आक्षेप है ?"

"क्योंकि हमारे अधिनियमों के अनुसार यह प्रस्तावित-पत्र उपयुक्त रूप में प्रमाणित नहीं किया गया है।"

पेशकार ने परिशिष्ट, जो उनकी मेज़ पर रखा था, का अन्तिम पृष्ठ खोला।

"दो गवाहों के हस्ताक्षर मौजूद हैं," उन्होंने कहा, "क़ानून को और क्या चाहिए ?"

"लेकिन गवाहों में एक तो यही महिला है जो इस परिशिष्ट के अनुसार प्रमुख उत्तराधिकारी है और जिसे ही बाक़ी सम्पत्ति मिलने वाली है। उसके स्वयं इस मामले से सम्बद्ध होने के कारण उसे गवाह नहीं माना जा सकता—हाँ, यह एक ही सूरत में हो सकता है, अगर वह अपने हिस्से जिसमें ढाई लाख डालर के अतिरिक्त दस लाख से भी ऊपर की बाक़ी सम्पत्ति भी शामिल है, पर अपने अधिकार को छोड़ दे!" मि० टट ने आहिस्ता से घोषणा की।

मिसेज बाल्डविन के होश काफूर हो गए थे। फिर भी वह हिम्मत

करके पेशकार की ओर देखती रही जो परिशिष्ट को गौर से पढ़ रहा था।

"नज़र तो कुछ ऐसा ही आता है," उन्होंने हैरानी के साथ कहा, "मि० टट की बात तथ्यपूर्ण है। इस परिशिष्ट के दो गवाह हैं जिनमें से एक इस मामले से सम्बद्ध व्यक्ति है और उस व्यक्ति से ज़्यादा किसी का भी इस मुकदमे में हित निहित नहीं है। मैडम, क्या आप सारी स्थिति ठीक तरह समझ गई हैं? क़ानून के अनुसार आप तब तक इस परिशिष्ट में गवाह के रूप में स्वीकार नहीं की जा सकतीं, जब तक कि आप अपने सारे हिस्से को तिलांजलि नहीं दे देतीं और यदि आपको गवाह के रूप में मान्यता प्राप्त नहीं हो पाती है, तो मुझे इस परिशिष्ट को केवल एक गवाह होने के आधार पर, इसके यथारीति प्रमाणित नहीं होने के कारण, अस्वीकार करना पड़ेगा।" और फिर अपने-आपसे कहा, "वाह, एकदम अनोखा मुकदमा है!"

सारे जनसमुदाय में मुकदमे के प्रति बहुत ज़्यादा दिलचस्पी पैदा हो गई थी। उच्च आसन के समीप बैठे हुए वकीलों ने गौर से सारी कार्रवाई को सुनना शुरू कर दिया था। मिसेज़ बाल्डविन की सारी उम्मीदों पर पानी फिर गया था।

मि० फिलब्रिक ने जज की ओर मैत्रीपूर्ण दृष्टि से देखा और वह मुस्करा दिया।

"आप बजा फरमा रहे हैं," उसने कहा, "मिसेज़ बाल्डविन ने अपने वकील से परामर्श करने के बाद यह फैसला किया है कि वे अपनी वसीयत छोड़ती हैं और चाहती हैं कि उन्हें परिशिष्ट के गवाह के रूप में मान्यता दी जाए।"

"क्या यह बात ठीक है, मैडम?" पेशकार ने ऐनक के ऊपर से मिसेज बाल्डविन की ओर घूरते हुए कहा, "अगर यह परिशिष्ट अधिप्रमाणित हो जाता है, तो उस स्थिति में क्या आप दो सौ पचास हज़ार डालर और बाक़ी सम्पत्ति पर अपने अधिकार को संमुख करती हैं?"

"अगर क़ानून यही चाहता है तो मुझे ऐसा करना ही होगा!" उसने कटुतापूर्वक तत्काल उत्तर दिया, "लेकिन इतना मैं ज़रूर कहूँगी—मेरे साथ बड़ा धोखा किया गया है। फिर भी बाकी लोगों को तो धन मिलना ही चाहिए!"

पेशकार ने घबराकर वकील-समुदाय की ओर और देखा मि० टट को सम्बोधित करते हुए कहा :

"इन परिस्थितियों में जबकि गवाह ने अपनी वसीयत का परित्याग कर दिया है, तो क्यों न इस परिशिष्ट को अधिप्रमाणित कर दिया जाए ? आपका यह एतराज़ तो अब ख़त्म हुआ। आपको आगे कुछ और भी कहना है क्या ?"

"जहाँ, तक इस महिला का सम्बन्ध है, इस प्रकार यह कार्रवाई विध्यतिरिक्त ही बनी रहेगी और इसका कोई परिणाम नहीं निकलेगा," वृद्ध वकील ने कहा और यह सुनकर, अदालत के कमरे में, आधी रात के वक्त के गिरजाघर जैसी ख़ामोशी छा गई, "दो वर्ष पहले, मि० बाल्डविन के कहने पर, मैंने वह वसीयतनामा तैयार किया था जिसे कुछ देर पहले अधिप्रमाणित करने के लिए आपने स्वीकार किया है और जैसा कि आपने भी उसमें देखा होगा कि विधवा-दाय की व्यवस्था करने के बाद, मृत व्यक्ति अपनी सारी सम्पत्ति अपनी पुत्री, जो मेरी मुवक्किल हैं, के नाम छोड़कर गया है। मेरी मुवक्किल भी यहाँ मौजूद हैं। मिसेज होलबोर्न, ज़रा खड़े होने का कष्ट कीजिए।"

जूरी-कक्ष के समीप ही, पीले चेहरे वाली लिडिया, जो काला मातमी लिबास पहने हुए थी, उठ खड़ी हुई। उसके पास ही एक लम्बा नवयुवक खड़ा था और ऐसा लग रहा था जैसे वह दर्शकों की दृष्टि से उस लड़की को सुरक्षित रखना चाहता था। गवाह की कुर्सी पर बैठी हुई स्त्री ने उन दोनों की ओर विषाक्त दृष्टि से घूरा।

"धन्यवाद" मि० टट ने आगे कहा, "अब आप बैठ जाइए। श्रीमान् ! आप दस्तावेज को पढ़ेंगे तो आप यह देखेंगे कि मि० बाल्डविन ने अपने बारे में लिखा है कि वह, 'मसाच्यूसेट्स' राज्य के 'फाल रिवर' नगर का रहने वाला है। यही उनका स्थायी क़ानूनी पता था। उनका वहाँ व्यापार था, वहीं उन्होंने सारा जीवन बिताया, वोट दिए, और अपने निजी टैक्स दिए। न्यूयार्क नगर में तो वे केवल सर्दियों में विश्राम करने के लिए थे और तब ही उनकी पत्नी की मृत्यु हो गई थी।"

"क्या पहली पत्नी भी थी ?" पेशकार ने प्रश्न किया।

"हाँ, पूरे पन्द्रह साल तक," मि० टट ने कहा, "उनकी सारी सम्पत्ति—भू और निजी—उनके स्थायी निवास-स्थान अर्थात् 'मसाच्यूसेट्स' में मौजूद है, सिवाय कुछ थोड़े से धन को छोड़कर, जो यहाँ, पाँचवें मार्ग के एक बैंक में जमा है। उनकी भू-सम्पत्ति में प्रमुख रूप से ज़मीन और 'फाल रिवर' नगर में स्थित दफ्तरों की बिल्डिंगें शामिल हैं। और वे उन्होंने स्पष्ट रूप में अपनी बेटी, लिडिया के नाम लिखी हैं और जो वसीयतनामा मैंने तैयार किया है, उसमें, 'मसाच्यूसेट्स' के क़ानून के अनुसार तीन गवाहों ने हस्ताक्षर किये हैं। जो तालिकाएँ मैंने बनाई हैं, उनके अनुसार, उनकी निजी सम्पत्ति पन्द्रह हज़ार डालर से ज्यादा नहीं है।"

विस्मित वकील-समुदाय में सनसनी फैल गई और मि० फिलब्रिक के आडम्बरपूर्ण चेहरे पर क्रोध और निराशा के भाव झलकने लगे।

"अब," मि० टट ने सद्भावनापूर्वक कहा, "अगर यह महिला जो प्रशंसनीय उद्देश्य की पूर्ति के लिए ढाई लाख डालर का परित्याग करने के लिए तैयार है और साथ ही साथ परिशिष्ट के अनुसार मिलने वाली सम्पत्ति को भी ग्रहण नहीं करना चाहती है, ताकि धर्मार्थ संस्थाओं—जिनका प्रतिनिधित्व मेरे मित्र फिलब्रिक और अन्य सहयोगी कर रहे हैं—तथा इसके अनेक सम्बन्धियों और मित्रों जिनका उल्लेख परिशिष्ट में उत्तराधिकारियों के रूप में किया गया है, को मिलने वाली सम्पत्ति दूसरों को मिलने के बावजूद, इस महिला के हाथों में ही रहेगी, इसीलिए तो यह झट से अपने अधिकार का परित्याग कर, गवाह बनने को तैयार हो गई है और इसके इस महान् कार्य के परिणामस्वरूप अगर श्रीमान् परिशिष्ट को अधिप्रमाणित कर देते हैं, तब भी इन सब वसीयतों की पूर्ति किस तरह होगी, क्योंकि," और उनके मुख पर हल्की-सी अवज्ञापूर्ण मुस्कान खिल उठी, "वसीयत-कर्त्ता ने स्पष्ट रूप में बार-बार अभिव्यक्त किया है कि इन वसीयतों में हरएक की पूर्ति उनकी निजी सम्पत्ति में से होनी चाहिए जबकि निजी सम्पत्ति के रूप में तो कुछ है ही नहीं!"

जन-समुदाय चकित रह गया।

"लेकिन," मि० फिलब्रिक ने चमत्कारपूर्ण ढंग से कहा, "भू-सम्पत्ति से उन सबकी अदायगी हो सकती है और समान मूल्य के आधार पर अदल-

बदल करने के सिद्धांत के अनुसार···"

"नहीं, ऐसा कैसे हो सकता है ?" पेशकार ने तेज़ी के साथ विरोध किया, "यदि परिशिष्ट को अधिप्रमाणित कर भी दिया जाए, फिर भी वसीयत के अनुसार लड़की को मिलने वाली भू-सम्पत्ति को बिल्कुल भी नहीं छुआ जाएगा।"

गवाह की कुर्सी पर बैठी हुई स्त्री काँप उठी।

"मुझे लूट लिया···हाय रे···ठगों ने मुझे लूट लिया···" वह दाँत पीसते हुए, गुस्से से चिल्लाई।

"मैडम, चुप रहो," पेशकार ने डाँटते हुए कहा, "यहाँ तमाशा खड़ा करने की कोई ज़रूरत नहीं है !"

"फिर भी···" उसने पेशकार की ओर क्रुद्ध दृष्टि से देखते हुए कहा, "विधवा होने के नाते मुझे 'मसाच्यूसेट्स' राज्य के क़ानून के अनुसार, एक तिहाई हिस्से की हक़दार मान लेना चाहिए। इतना हिस्सा तो मुझे मिलेगा ही।"

"इस बात का फैसला 'मसाच्यूसेट्स' की अदालतें करेंगी।" पेशकार ने कठोरतापूर्वक उत्तर दिया।

"यह प्रश्न वहाँ भी नहीं उठेगा, क्योंकि—" मि० टट लापरवाही से बीच में ही बोल उठे, "यह औरत जो श्रीमान् के समीप गवाह की कुर्सी पर बैठी हुई है, को कानूनी तौर से केबिल बाल्डविन की विधवा के रूप में स्वीकार नहीं किया जा सकता है। इसका पहला पति जो रेलवे में ब्रेकमैन है, अभी जीवित है और दोनों के बीच क़ानूनी तलाक़ भी नहीं हुआ है। मेरे पास इस बात की पुष्टि में शपथ-पत्र हैं कि उस व्यक्ति के विरुद्ध तलाक़ के लिए कोई कार्रवाई नहीं की गई और साथ-ही-साथ इस औरत को अपनी दूसरी शादियों की क़ानूनी मान्यता भी सिद्ध करनी पड़ेगी। मैंने अभी-अभी कहा है, शादियाँ—जिन्हें रचाने का कुछ ज्यादा ही शौक़ है, इस औरत को ! इससे पहले भी वह अपने दो मरीज़ों से शादी कर चुकी है और यह भी कहूँ तो गलत नहीं होगा कि उन दोनों की सारी ज़मीन-ज़ायदाद, धन-दौलत हड़प करने के बाद अब तीसरे पति पर मेहरबानी की जा रही है।"

भूतपूर्व नर्स बेचैनी के साथ अपनी कुर्सी से उठ खडी हुई। मि० फिल-ब्रिक के होश फाख्ता हो गए थे।

"अगर ऐसा है तो,—" उसने धीरे से कहना शुरू किया।

"यह सब झूठ है!" वह औरत तीखे स्वर में चिल्लाई, "सरासर झूठ है! मैं केबिल बाल्डविन की विधवा हूँ और मैं यह साबित कर दूँगी! जो कुछ भी यह बूढ़ा मक्कार कह रहा है, मुझे उसकी कोई परवाह नहीं है!"

"चुप रहो, मैडम!" पेशकार ने हथौड़ी बजाते हुए, क्रुद्ध स्वर में कहा, "मैं इस मुकदमे को एक सप्ताह के लिए स्थगित करता हूँ।" अपने कागज़-पत्र बटोरते हुए, कुछ रुककर उन्होंने पूछा, "मैं यह जानना चाहूँगा कि इस परिशिष्ट को किसने तैयार किया था?"

"मैंने तैयार किया था।" मि० टट ने दृढ़तापूर्वक कहा।

चारों ओर खामोशी छा गई और गवाह की कुर्सी पर बैठी हुई बाल्डविन की निशानी अर्थात उसकी विधवा का प्रमादपूर्ण विलाप सुनाई देता रहा।

"आपने तैयार किया था।" पेशकार ने हैरानी के साथ कहा, "और आप अब अपने ही काम का स्वयं खण्डन कर रहे हैं? यह तो हतबुद्धि कर देने वाला मामला है!"

"बात यही है," मि० टट ने अविचलित स्वर में उत्तर दिया, "मैंने इस परिशिष्ट जिसे इस औरत ने अधिप्रमाण के लिए प्रस्तुत किया है, को केवल तैयार ही नहीं किया था, बल्कि मैंने इसे कार्यान्वित भी कराया था।"

"यह जानते हुए भी कि उसे इस परिशिष्ट के अनुसार कुछ नहीं मिलेगा?" जज ने आग्रहपूर्वक पूछा।

"यह जानते हुए भी कि इसे एक फूटी कौड़ी भी नहीं मिलेगी।"

पेशकार सेम्पसन ने अपनी कुर्सी में पीछे की ओर झुकते हुए, विस्मित होकर, अपनी ऐनक हाथ में ले ली।

"क्या आपने यह सब वसीयत-कर्त्ता की सलाह से किया था?" उन्होंने प्रश्न किया।

मि० टट ने अपना लम्बा रेशमी हैट उठाते हुए, विजयपूर्ण मुस्कान साथ कहा :

"मुझे और मेरे मुवक्किल के बीच, इस परिशिष्ट को तैयार कर समय, जो बातें हुई थीं, उन्हें वकीलों को क़ानून द्वारा दिए गए विशेष धिकार के अनुसार, यहाँ बतलाना व्यावसायिक दृष्टि से उचित न होगा !"

||